उसके सर्वोच्च
के लिए मेरा सर्वोत्तम

पुस्तक के आवरण की परिकल्पना
कार्यभार : जॉन टेन टेन
क्योंकि
ऐसा लगता है कि ऑसवल्ड चेम्बर्ज़ यह संकेत दे रहे हैं कि मेरा सर्वोत्तम सबसे उत्तम ढंग से हमारे समर्पण में व्यक्त होता है, विशेष रूप से हमारी इच्छा के समर्पण में; और उसका सर्वोच्च, विशेषकर उसका प्रेम, सबसे उत्तम ढंग से उसके क्रूस में व्यक्त होता है।

जेकोब्ज़ डिज़ाईनरी ने चित्र के द्वारा इस भाव को बड़ी सुन्दरता से निष्पादित किया है।

उसके सर्वोच्च के लिये मेरा सर्वोत्तम

ऑस्वल्ड चेम्बर्ज़

अनुवादिका - ग्रेस चक्रवर्ती
Translator - Grace Chakravarty

माए अटमोस्ट फॉर हिज़ हाएस्ट (पंजीकृत)
कॉपीराईट ऑस्वल्ड चेम्बर्ज़ पब्लिकेशन्स एसोशिएशन (लिमिटेड) द्वारा।
मूलसंस्करण कॉपीराईट 1935 में डॉड, मीड एवं कम्पनी द्वारा।

नवीनीकरण ऑस्वल्ड चेम्बर्ज़ पब्लिकेशन्स द्वारा।

डिस्करवरी हाऊस पब्लिशर्स
3000 क्राफ्ट ऐवन्यू एस ई ग्रैंड रैपिड्स,
मिशीगन, 49512, यू एस ए

के साथ विशेष समझौते से
इण्डियन इवेन्जेलिकल मिशन, बैंगलोर द्वारा प्रकाशित

सर्वाधिकार सुरक्षित

भारत में मुद्रित
पवित्रशास्त्र उद्धरण बाइबल सोसायटी ऑफ इण्डिया द्वारा मुद्रित पवित्र बाइबल से लिया गया है।

इन्टरनैशनल स्टेंन्डर्ड बुक नम्बर
978-81-909506-0-2

My Utmost For His Highest (Regd.)
Copyright by Oswald Chambers Publications Association Ltd.
Original Edition Copyright 1935 by Dodd, Mead and Company, Inc.
renewed By Oswald Chambers Publications Association Ltd.

Published by Indian Evangelical Mission,
Bangalore by special arrangement with

Discovery House Publishers
3000 Kraft Avenue SE,
Grand Rapids, Michigan 49512 USA.
All rights reserved

First Edition – 2010 3000 copies
Reprint – 2012 1500 copies

Printed in India
Unless otherwise indicated Scripture quotations are from Holy Bible printed by Bible Society of India
International Standard Book Number: 978-81-909506-0-2

Printed at Matha Prints, Bangalore
Tel: 080 4131 0081, e-mail: mathapritns@gmail.com

उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम
हिन्दी और मलयालम

आभार

ऑसवल्ड चेम्बर्ज़ पब्लिकेशन्स एसोसिएशन लिमिटेड, लन्दन

डिस्कवरी हाऊस पब्लिशर्स, ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन

इण्डिया इवेन्जेलिकल मिशन, बैंगलोर

एलिज़ाबेथ कोशी, अनुवादक, मलयालम, कोट्टायम

ग्रेस चक्रवर्ती, अनुवादक, हिन्दी, दिल्ली

लोगोस मिनिस्ट्रीज़, दिल्ली

जेकोब्स डिज़ाईनरी, बैंगलोर

जॉन टेन टेन, बैंगलोर एवं कोट्टायम
(अवैतनिक परामर्श एवं अनुवाद का समन्वयन, प्रकाशन, और वितरण)

प्रकाशकों से

प्रिय मित्रों,

इण्डियन इवेन्जेलिकल मिशन **उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम** को हिन्दी और मलयालम में प्रकाशित करते हुए हर्षित हैं । हम आशा करते हैं कि जल्दी ही हम इसे अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रस्तुत कर सकेंगे । हम विश्वास करते है कि यह महान पुस्तक आई ई एम के घोषित मिशन और लध्यों के साथ अद्‌भुत रीति से मेल खाती है ।
हम हृदय से जॉन टेन टेन (नीना और योहन जॉन कुनेनकेरिल)के आभारी हैं कि उन्होंने **उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम** के हिन्दी और मलयालम अनुवाद, प्रकाशन और वितरण में प्रभावशील परामर्श और समन्वयन उपलब्ध कराया । उन्होंने यह कार्य आर्थिक अपेक्षा के बिना और अवैतनिक आधार पर केवल इस दृढ़ विश्वास से प्रेरित होते हुए सम्पन्न किया कि **उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम** को क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराना कितना महत्त्वपूर्ण है ।

उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम के वितरण के द्वारा प्राप्त अनुदानों का प्रयोग आई ई एम की सेवकाई को बढ़ाने के लिए किया जाएगा । आई ई एम अपनी सेवकाई के द्वारा हमारे त्रिएक परमेश्वर के बारे में बताने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसकी सबसे महान आज्ञा यह है कि ''परमेश्वर से प्रेम रखो, और दूसरों से वैसे प्रेम रखो जैसे तुम अपने आप से रखते हो'' ।

आई ई एम 1965 में अपनी स्थापना से अब तक परमेश्वर की कृपा से सभी स्तरों पर उसकी महिमा के लिए अग्रसर होने में समर्थ रहा है । कृपया जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट www.iemoutreach.org पर सम्पर्क करें ।

हम आपसे निवेदन करते हैं कि आप आई ई एम की सेवकाई के लिए प्रार्थना करें और इसमें भाग लें ।

हमें विश्वास है कि **उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम** आपके लिए आशीष का कारण होगा ।
प्रभु की सेवकाई में आपका
रेव्ह. पी. जॉन वेस्ली
प्रधान सचिव
इण्डियन इवेन्जेलिकल मिशन
38, लैंगफोर्ड रोड, बैंगलोर 560 025
iemhq@vsnl.com
www.iemoutreach.org

प्राक्कथन

ऑस्वल्ड चेम्बर्ज़ के **उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम** के इस अनुवाद को आपको प्रदान करने में मुझे अत्यन्त खुशी है। यह एक अद्भुत बात है कि यह उत्कृष्ठ रचना, जिसका अनुवाद फ्रेन्च, यूनानी, इब्रानी, और तमिल सहित 37 भाषाओं में हो चुका है, अब हमारी राष्ट्र भाषा, हिन्दी, और मलयालम में भी उपलब्ध है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में यह हमारे महान देश की अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हो जाए।

पवित्र बाइबल का नियमित और उद्देश्यपूर्ण पठन हमारी एक मौलिक आवश्यकता है, जिसके अतिरिक्त इस अत्यन्त गहरी पुस्तक, **उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम,** का दीर्धकालिक पठन आपको हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ और अधिक गहरे और फलदायी सम्बन्ध में ले जाएगा।

मैं नीना और योहन जॉन कुनेनकेरिल की प्रशंसा करता हूँ जिन्होंने जॉन टेन टेन के नाम के अन्तर्गत प्रेम की इस सेवा का कार्यभार सम्भाला। मेरी पत्नी, रागिनी, और मैं उन्हें दो दशकों से जानते हैं और प्रार्थनापूर्वक विश्वास करते हैं कि यह कार्य फल लाएगा, ऐसा फल जो सदा रहेगा।

प्रभु में
राजकुमार रामचन्द्रन
कार्यकारी निदेशक, लोगोस मिनिस्ट्रीज़, नई दिल्ली।
www. logos-ministries.com

प्रस्तावना

यह हमारे लिए एक सौभाग्य और आशीष है कि हमने **उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम** के हिन्दी और मलयालम अनुवाद, प्रकाशन और वितरण के लिए सलाहकार और समन्वयक के रूप में काम किया। हम आशा करते हैं कि आनेवाले वर्षों में हम ये काम और भाषाओं में भी कर सकेंगे।

हम उन सभी के आभारी हैं जिनके साथ जुड़कर कार्य करने का हमें आनन्द मिला, विशेष रूप से ऑसवल्ड चेम्बर्ज़ पब्लिकेशन्स एसोसिएशन लिमिटेड, डिस्कवरी हाऊस पब्लिशर्स, हमारे प्रिय अनुवादक - हिन्दी के लिए ग्रेस चक्रवर्ती और मलयालम के लिए एलिज़ाबेथ कोशी, और प्रकाशक, इण्डिया इवेन्जेलिकल मिशन के। रेव्ह, जैफ़ बेनेट, रेव्ह. जॉन वेस्ली, और उनके सहकर्मियों, और श्रीमती सोसन्ना कुरविल्ला को विशेष धन्यवाद।

12 वर्ष निगम क्षेत्र में, कुछ समय के लिए सहकारी दुग्ध क्षेत्र में, 16 वर्ष धार्मिक क्षेत्र (बाइबल सोसयटी ऑफ इण्डिया)में काम करने ने, जिसका अधिकांश भाग इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में कटा, परमेश्वर की कृपा से हमें यह योग्यता प्रदान की कि हम जॉन टेन टेन के अपने नाम के अन्तर्गत साहस जुटाते हुए इस परियोजना को लेकर अपने बल-बूते पर आगे बढ़ें और इसका कार्यभार उठाएँ !

जॉन टेन टेन इसलिए क्योंकि हम परमेश्वर के वचन से और अपने व्यक्तिगत अनुभव से जानते हैं कि, और सब बातों की अवहेलना करते हुए, अपने त्रिएक परमेश्वर, परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, यानि हमारा प्रभु यीशु मसीह, और परमेश्वर पवित्र आत्मा, के साथ सम्बन्ध रखने के द्वारा सब के लिए एक उत्तम जीवन उपलब्ध है।

यह पुस्तक हमारे लिए आशीष का कारण रही है, और हमें विश्वास है कि यह आपके लिए भी आशीष का कारण होगी।

नीना एवं योहन जॉन कुनेनकेरिल
जॉन टेन टेन
"हिल क्रेस्ट" मारियाथुरुथ्थु, कोट्टायम 686 027, भारत
yohankjohn@gmail.com

उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम के पाठकों की बढ़ती हुई संगति का अंग बनने के लिए लॉगऑन और पंजीकरण करें।

www.myutmost.info

Other Oswald Chambers books
from Discovery House Publishers:
Biblical Ethics

Biblical Psychology
Christian Disciplines
Complete Works of Oswald Chambers
Conformed to His Image and The Servant As His Lord
Faith: A Holy Walk
If You Will Ask
The Love of God
Our Brilliant Heritage
Our Ultimate Refuge (formerly Baffled to Fight Better)
Prayer: A Holy Occupation
So Send I You
Studies in the Sermon on the Mount

My Utmost for His Highest Daily Devotional Journal:
A Journal Companion to the Golden Book of Oswald Chambers

Oswald Chambers-Abandoned to God:
The Life Story of the Author of My Utmost for His Highest
(by David McCasland)

For details: http://www.dhp.org
yohankjohn@gmail.com

My Utmost For His Highest is also available in
- Tamil, Kannada, Malayalam, Telugu (all Paperback)

- in Updated English Version
(leather bound, large print, study edition, and more)

- and in special adaptations (English) for Children, Young Adults

For further details write to
generalsecretary@iemoutreach.org
yohankjohn@gmail.com

जनवरी 1

विषय पर स्थिर रहें

मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊँ, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसी ही अब भी हो।
फ़िलिप्पियों 1:20।

उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम। "मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊँ।" यीशु ने हमारे जीवन के जिन क्षेत्रों में समर्पण की माँग की है, यदि हम उनमें समर्पण न करें, तो हम बहुत ही लज्जित होंगे। पौलुस मानो हमसे यह कह रहा है, "यह मेरा दृढ़ इरादा है कि मैं परमेश्वर के सर्वोच्च के लिए अपना सर्वोत्तम होऊँ - उसकी महिमा के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ।" दृढ़ता के इस स्तर तक पहुँचना इच्छा का मामला है, वाद-विवाद या तर्क-वितर्क का नहीं, बल्कि इच्छा के समर्पण का, उस मुद्दे पर एक सम्पूर्ण और अटल समर्पण का। अपने आप को ज़रूरत से ज़्यादा महत्त्व देना ही वह बात है जो हमें ऐसा फ़ैसला करने से रोकती है, हालाँकि हम जताते हैं कि हम दूसरों की सोच रहे हैं। जब हम इस बात पर ध्यान देते हैं कि यदि हम यीशु की बुलाहट को मानें, तो दूसरों को इसकी क्या कीमत चुकानी पड़ेगी, तो एक तरह से हम परमेश्वर से यह कहते हैं कि वह नहीं जानता कि आज्ञा-पालन का परिणाम क्या होगा। विषय पर स्थिर रहें। सच तो यह है कि परमेश्वर सब जानता है। बाकी सारे विचारों को अपने मन से बाहर निकालें और अपने आप को परमेश्वर के आगे एक बात के लिए ही रखें - परमेश्वर के सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम। मैंने यह दृढ़ इरादा कर लिया है कि मैं सम्पूर्णता से और पूरी तरह से उस के लिए और केवल उसी के लिए रहूँगा।

परमेश्वर की पवित्रता के लिए मेरा दृढ़ इरादा जिसे कोई रोक नहीं सकता। "चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ" (पद 21) पौलुस ने इरादा कर लिया है कि परमेश्वर जो चाहता है, वह करने से पौलुस को कोई चीज़ नहीं रोकेगी। परन्तु इससे पहले कि हम परमेश्वर की इच्छा को मानने का चुनाव करें, ज़रूरी है कि परमेश्वर हमारे जीवन में एक संकट की स्थिति पैदा करे क्योंकि हम कोमलता के तरीक़े की ओर ध्यान नहीं देंगे। वह हमें उस स्थान पर ले आता हैं जहाँ वह हमसे यह माँग करता है कि हम उसके लिए अपना सर्वोत्तम हों, और हम तर्क-वितर्क करना शुरू कर देते हैं। फिर वह एक संकट की स्थिति पैदा करता है जिसमें हमें फ़ैसला करना पड़ता है - उसके पक्ष में या उसके विरुद्ध, और इसी क्षण से हमारे जीवन का एक महान दोराहा शुरू हो जाता है।

यदि किसी भी क्षेत्र में आपके सामने संकट की स्थिति आई है, तो अपनी इच्छा को सम्पूर्ण और अटल रूप से परमेश्वर को समर्पित कर दें।

जनवरी 2

क्या आप निकल जाएँगे, यह जाने बिना भी कि आप किधर जा रहे हैं ?

वह निकल गया ... और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ।
इब्रानियों 11:8 ।

क्या आप कभी इस तरह से "निकले" हैं ? यदि हाँ, तो किसी के यह पूछने पर कि आप क्या कर रहे हैं, कोई तार्किक बयान देना सम्भव नहीं है। मसीही सेवकाई की कठिनाइयों में से एक है यह प्रश्न - "आप क्या करने की प्रत्याशा करते हैं ?" आप नहीं जानते कि आप क्या करने जा रहे हैं; जो एकमात्र बात आप जानते हैं वह यह है कि परमेश्वर जानता है कि वह क्या कर रहा है। परमेश्वर के प्रति अपने रुख को लगातार संशोधित करते रहें और जाँचें कि क्या आप पूरी तरह परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखते हुए अपने जीवन के हर क्षेत्र में "निकल जाने" के लिए तैयार हैं। यह वह रुख है जो आपको अनन्त आश्चर्य में रखता है - आप नहीं जानते कि परमेश्वर आगे क्या करने जा रहा है। हर सुबह जब आप जागते हैं, तो इसे, परमेश्वर पर विश्वास को बढ़ाते हुए, एक "निकलना" होना है। "अपने प्राण की चिन्ता न करो ... न अपने शरीर की " - उन सारी बातों की चिन्ता मत करो जिनकी तुम "निकल जाने" से पहले किया करते थे।

क्या आप परमेश्वर से पूछते रहे हैं कि वह क्या करने जा रहा है ? वह आपको कभी नहीं बताएगा। परमेश्वर आपको यह नहीं बताता कि वह क्या करने जा रहा है; वह आपको यह दिखाता है कि वह कौन है। क्या आप एक चमत्कार करनेवाले परमेश्वर में विश्वास करते हैं, और क्या आप अपने आप को उसे समर्पित करते हुए तब तक निकलते जाएँगे जब तक आपको उसके द्वारा किए जानेवाले कार्यों पर आश्चर्य होना बिलकुल बन्द न हो जाए ?

विश्वास करें कि परमेश्वर हमेशा वही परमेश्वर है जैसा आप उसे तब जानते हैं जब आप उसके सबसे ज़्यादा करीब होते हैं। फिर सोचें कि क्या चिन्ता करना निरादरपूर्ण नहीं ! जीवन के रुख को निरन्तर परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए एक "निकल जाना" होने दें, और आपके जीवन में एक अवर्णनीय आकर्षण होगा जो यीशु के लिए सन्तोषजनक होता है। आपको अपनी धारणाओं, अपने धर्ममतों, और अनुभवों में से निकलना सीखना होगा, जब तक कि, जहाँ तक आपके विश्वास का सवाल है, आपके और परमेश्वर के बीच कुछ न रहे।

जनवरी 3

बादल और अन्धकार

बादल और अन्धकार उसके चारों ओर हैं।
भजन संहिता 97:2।

जिस व्यक्ति का परमेश्वर के आत्मा की इच्छा से जन्म नहीं हुआ है, वह आपसे कहेगा कि यीशु की शिक्षाएँ सरल हैं। परन्तु जब आप पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाते हैं, तो देखते हैं कि "बादल और अन्धकार उसके चारों ओर हैं।" जब हम यीशु मसीह की शिक्षाओं के क़रीबी सम्पर्क में आते हैं, तो हमें इस पहलू की पहली अन्तर्दृष्टि मिलती है। यीशु की शिक्षा को समझना केवल तब ही सम्भव है जब परमेश्वर के आत्मा की ज्योति हमारे भीतर हो। यदि हमें अपनी धार्मिकता के घिसे-पिटे जूतों को अपनी धार्मिकता के घिसे-पिटे पैरों से उतारने का और परमेश्वर के पास आने की अनुचित बेपरवाही को छोड़ने का अनुभव कभी नहीं हुआ है, तो यह सन्देहात्मक है कि क्या हम कभी भी परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े हुए हैं। जो लोग परमेश्वर के पास आने में छिछोरा और निरादरपूर्ण रुख अपनाते हैं, वे ऐसे लोग हैं जिनका अभी तक यीशु मसीह से परिचय नहीं कराया गया है। यीशु मसीह क्या करता है, इस एहसास के अद्‌भुत आनन्द और स्वतन्त्रता के बाद एक और एहसास का अभेद्य अन्धकार आता है कि वह *है* कौन।

यीशु ने कहा: "जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।" एक समय था जब बाइबल हमारे लिए केवल ढेर सारे शब्द थी - "बादल और अन्धकार' - फिर, अचानक, ये शब्द आत्मा और जीवन बन जाते हैं क्योंकि यीशु एक विशेष परिस्थिति में हमसे ये शब्द फिर से बोलता है। परमेश्वर इस तरीके से हमसे बातचीत करता है, दर्शनों और स्वप्नों के द्वारा नहीं बल्कि शब्दों के द्वारा। जब एक मनुष्य परमेश्वर के पास आता है, तो यह शब्दों के बहुत ही सरल माध्यम से होता है।

जनवरी 4

“मैं अभी तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता ?”

पतरस ने उससे कहा, “हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता ?”
यूहन्ना 13:37।

कभी-कभी ऐसे मौके आते हैं जब आप यह नहीं समझ पाते कि आप वे काम क्यों नहीं कर सकते जो आप करना चाहते हैं। जब परमेश्वर ठहरने का समय लाता है, और लगता है कि वह कोई उत्तर नहीं दे रहा है, तो उस समय को व्यस्थता से न भरें, सिर्फ़ ठहरे रहें। प्रतीक्षा का समय आपको पवित्रीकरण सिखाने के लिए आ सकता है; या यह पवित्रीकरण की प्रक्रिया शुरू होने के बाद आ सकता है ताकि आपको सिखाए कि सेवा का अर्थ क्या है। जब तक परमेश्वर आपको अपनी ठहराई हुई दिशा नहीं बताता, दौड़ना शुरू न करें। यदि आपके मन में थोड़ा सा भी सन्देह हो, तो इसका अर्थ यह है कि वह आपका मार्गदर्शन नहीं कर रहा। जब भी सन्देह हो, प्रतीक्षा करें।

शुरू-शुरू में शायद आप स्पष्टता से देख सकें कि परमेश्वर की इच्छा क्या है - एक मित्रता का टूट जाना, एक व्यापारिक सम्बन्ध का टूट जाना, या कोई और ऐसी बात जिसके बारे में आप स्पष्टता से महसूस करते हैं कि वह आपके लिए परमेश्वर की इच्छा है। लेकिन कभी भी सोच-विचार किए बिना उन बातों पर कार्यवाही न करें जो आप महसूस कर रहे हैं। यदि आप ऐसा कर बैठते हैं, तो आप ऐसी परिस्थितियाँ खड़ी कर देंगे जिन्हें सुलझाने में सालों साल लग जाएँगे। परमेश्वर के सही समय की प्रतीक्षा करें और वह उसे मनोव्यथा और निराशा के बिना करेगा। जब भी परमेश्वर की इच्छा का सवाल हो, परमेश्वर की कार्यवाही की प्रतीक्षा करें।

पतरस परमेश्वर के लिए नहीं ठहरा। उसने अपने मन में पहले से निश्चय कर लिया था कि परीक्षा कहाँ आएगी, और वह तब आई जब पतरस उसकी प्रत्याशा नहीं कर रहा था। पतरस का यह कहना कि “मैं तो तेरे लिए अपना प्राण दूँगा“ सच्चा तो था परन्तु अनजानपन में कहा गया था। यीशु ने उत्तर दिया, “... मुर्ग़ बाँग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इनकार न कर लेगा” (यूहन्ना 13:38)। यीशु ने यह पतरस के बारे में इतनी गहरी जानकारी रखते हुए कहा जो पतरस को खुद के बारे में भी नहीं थी। वह यीशु के पीछे नहीं जा सकता था क्योंकि वह न तो अपने आप को और न ही अपनी योग्यताओं को जानता था। स्वाभाविक भक्ति हमें यीशु की ओर आकर्षित करने के लिए काफ़ी हो सकती है, लेकिन यह हमें शिष्य कभी नहीं बनाएगी। स्वाभाविक भक्ति कहीं न कहीं यीशु का इनकार ज़रूर करेगी।

जनवरी 5

सामर्थ्य का आनेवाला जीवन

जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता ! परन्तु इस के बाद मेरे पीछे आएगा।
यूहन्ना 13:36।

"और यह कहकर, उस से कहा, मेरे पीछे हो ले" (यूहन्ना 21:19)। तीन वर्ष पहले यीशु ने कहा था, "मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 4:19), और पतरस बिना हिचकिचाए उसके पीछे हो लिया था। वह यीशु के अत्यन्त लुभावने आकर्षण के प्रभाव में आ गया था और उसे यीशु के पीछे हो लेने के लिए पवित्र आत्मा की मदद की ज़रूरत नहीं थी। आगे चलकर, वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उसने यीशु का इनकार किया, और उसका हृदय टूट गया। फिर उसने पवित्र आत्मा पाया और यीशु ने उससे फिर से कहा, "मेरे पीछे हो ले" (यूहन्ना 21:19)। इस समय पतरस के सामने प्रभु यीशु मसीह को छोड़ और कोई नहीं है। पहले "मेरे पीछे हो ले" में कोई रहस्यपूर्ण बात नहीं थी; वह बाहरी रूप से पीछे हो लेना था। अब यीशु एक भीतरी बलिदान और समर्पण की माँग कर रहा है (21:18 देखें)।

इन दो घटनाओं के बीच में पतरस ने धिक्कारों और शपथों के साथ यीशु का इनकार किया (मत्ती 26:69-75 देखें)। लेकिन इसके बाद वह अपने और अपनी आत्म-निर्भरता के अन्त पर पहुँच गया। अब उसका कोई अंग नहीं रह गया था जिसपर वह फिर से भरोसा कर सकता। अन्त में, अपनी इस असहाय स्थिति में वह उस सब को ग्रहण करने के लिए तैयार था जो जी उठे प्रभु के पास उसके लिए था। "... उस ने उन पर फूँका और उन से कहा, "पवित्र आत्मा लो" (यूहन्ना 20:22)। परमेश्वर ने आपके जीवन में जो भी परिवर्तन किए हैं, उनपर भरोसा न करें। सिर्फ़ एक व्यक्ति, यानि प्रभु यीशु मसीह पर, और जो आत्मा वह देता है, उसपर निर्माण करें।

हमारी सारी प्रतिज्ञाओं और संकल्पों का अन्त इनकार में होता है क्योंकि हमारे पास इन्हें पूरा करने का सामर्थ्य नहीं। जब हम अपने आप के अन्त पर पहुँच जाते हैं, काल्पनिक रूप से नहीं बल्कि वास्तविक रूप से, तो हम पवित्र आत्मा ले सकते हैं। "पवित्र आत्मा *लो*" - इसमें घुस आने का भाव पाया जाता है। अब एक ही जन है जो आपके जीवन के पथ का निर्देशन करता है, और वह है प्रभु यीशु मसीह।

जनवरी 6

आराधना

फिर वहाँ से कूच करके, वह उस पहाड़ पर आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है; और अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया जिसकी पच्छिम की ओर तो बेतेल, और पूर्व की ओर ऐ है, और वहाँ भी उस ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई और यहोवा से प्रार्थना की।
उत्पत्ति 12:8।

आराधना का अर्थ है जो परमेश्वर ने आपको दिया है, उसका सर्वोत्तम उसे देना। सावधान रहें कि आप अपने सर्वोत्तम का क्या कर रहे हैं। जब भी आपको परमेश्वर से कोई आशीष मिलती है, तो उसे प्रेम-दान के रूप में उसे लौटा दें। परमेश्वर के सामने चिन्तन करने में समय लगाएँ, और आराधना के एक सोचे-विचारे काम के रूप में उसे वह आशीष वापस लौटा दें। यदि आप उसकी जमाखोरी करेंगे, तो वह आत्मिक सड़न में बदल जाएगा, जैसे मन्ना को जमा कर के रखने से हुआ करता था (निर्गमन 16:20 देखें)। परमेश्वर आपको आत्मिक आशीष पूरी तरह से अपने लिए रखने नहीं देगा। उसे परमेश्वर को वापस देना ज़रूरी है ताकि वह उसे दूसरों के लिए आशीष बना सके।

बेतेल परमेश्वर के साथ संगति का प्रतीक है। ऐ संसार का प्रतीक है। अब्राम ने "अपना तम्बू" दोनों की बीच में "खड़ा किया"। परमेश्वर के लिए हमारी लोकहित सेवा के मूल्य का नाप है परमेश्वर के साथ संगति के समय में हमारी घनिष्ठता। हड़बड़ी में आराधना करना हमेशा ग़लत होता है - परमेश्वर की आराधना करने के लिए हमेशा बहुत समय उपलब्ध होता है। परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए दिन निर्धारित करना एक फन्दा बन सकते हैं। हमें अपने तम्बू वहाँ खड़े करने हैं जहाँ हम हर समय उससे अकेले में मिल सकते हैं, चाहे संसार के साथ हमारे समय में कितना भी शोरगुल क्यों न हो। आत्मिक जीवन के तीन स्तर नहीं हैं - आराधना, प्रतीक्षा, कार्य। लेकिन हम में से कुछ लोग ऐसे हैं जो आत्मिक मेंढकों की तरह आराधना से प्रतीक्षा, और प्रतीक्षा से कार्य की ओर छलांगें लगाते रहते हैं। परमेश्वर की योजना यह है कि तीनों चीज़ें एक साथ चलें। वे हमारे प्रभु के जीवन में हमेशा एक साथ थीं और पूरे तालमेल के साथ। यह एक ऐसा अनुशासन है जिसका विकास करना ज़रूरी है; यह रात-भर में नहीं हो जाएगा।

जनवरी 7

यीशु के साथ घनिष्ठता

यीशु ने उस से कहा, हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ,
और क्या तू मुझे नहीं जानता ?
यूहन्ना 14:9।

ये शब्द एक फटकार के रूप में नहीं कहे गए थे; न ही आश्चर्य व्यक्त करते हुए। यीशु फिलिप्पुस को अपने और क़रीब आने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। फिर भी, यीशु वह आखिरी व्यक्ति है जिससे हम घनिष्ठता बढ़ाते हैं। पिन्तेकुस्त से पहले, चेले यीशु को उस व्यक्ति के रूप में जानते थे जिसने उन्हें दुष्टात्माओं को वश में करने का और एक जागृति लाने का सामर्थ्य दिया था (लूका 10:18-20 देखें)। यह एक अद्भुत घनिष्ठता थी, लेकिन इससे भी बढ़कर घनिष्ठता आने वाली थी : "...मैंने तुम्हें मित्र कहा है ..." (यूहन्ना 15:15)। सच्ची मित्रता पृथ्वी पर मुश्किल से मिलती है। इसका अर्थ होता है किसी के साथ विचार, हृदय और आत्मा में एक होना। जीवन के सम्पूर्ण अनुभव को इस तरह बनाया गया है कि हम यीशु मसीह के साथ इस सबसे क़रीबी सम्बन्ध में आ सकें। हम उसकी आशीषें पाते हैं और उसका वचन जानते हैं, लेकिन क्या हम सचमुच उसे जानते हैं ?

यीशु ने कहा, "...मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है ..." (यूहन्ना 16:7)। उसने उस सम्बन्ध को छोड़ दिया ताकि उन्हें अपने और क़रीब ले आए। यीशु के लिए यह बड़े आनन्द की बात होती है जब उसका शिष्य उसके साथ और अधिक घनिष्ठता से चलने के लिए समय निकालता है। पवित्रशास्त्र में फलवन्त होने को हमेशा यीशु मसीह के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध के दिखाई देनेवाले परिणाम के रूप में दिखाया गया है (यूहन्ना 15:1-4 देखें)।

एक बार जब हम यीशु के साथ घनिष्ठ हो जाते हैं, तो हम कभी अकेलापन महसूस नहीं करते; न ही हमें हमदर्दी की ज़रूरत होती है। हम लगातार अपने हृदय उसके सामने उण्डेल सकते हैं और हमें अत्यधिक भावुक या दयनीय नहीं समझा जाएगा। जो मसीही यीशु के साथ सचमुच घनिष्ठ है, वह कभी अपनी ओर ध्यान आकर्षित नहीं करेगा बल्कि वह सिर्फ़ ऐसे जीवन का प्रमाण देगा जहाँ यीशु पूरी तरह नियन्त्रण में है। यीशु को जीवन के हर क्षेत्र की गहराई को सन्तुष्ट करने का मौका देने का नतीजा यही होता है। ऐसे जीवन में वह प्रबल शान्त सन्तुलन दिखाई देता है जो प्रभु उन्हें देता है जो उसके साथ घनिष्ठता के सम्बन्ध में हैं।

जनवरी 8

क्या मेरा बलिदान जीवित है ?

तब अब्राहम ने एक वेदी बनाकर ... अपने पुत्र इसहाक को बाँधकर वेदी पर की लकड़ी
के ऊपर रख दिया ... ।
उत्पत्ति 22:9 ।

यह घटना उस मूर्खता भरी भूल की तस्वीर है जो हम यह सोचने में करते हैं कि जो परम चीज़ परमेश्वर हमसे चाहता है वह है मृत्यु का बलिदान । परमेश्वर जो हमसे चाहता है, वह मृत्यु के *द्वारा* ऐसा बलिदान है जो हमें वह करने के योग्य बनाता है जो यीशु ने किया, यानि अपने जीवन का बलिदान देना । यह नहीं कि मैं मृत्यु तक तेरे साथ जाने के लिए तैयार हूँ, बल्कि यह कि मैं तेरी मृत्यु में तेरे साथ एक होना चाहता हूँ, ताकि मैं अपने जीवन को परमेश्वर को बलिदान करके चढ़ा दूँ ।

लगता है कि हम सोचते हैं कि परमेश्वर चाहता है हम चीज़ों का त्याग करें ! परमेश्वर ने अब्राहम को इस भूल से शुद्ध किया, और यही अनुशासन हमारे जीवन में भी चलता रहता है । परमेश्वर कहीं भी हमसे यह नहीं कहता कि हम चीज़ों का त्याग करने की ख़ातिर उनका त्याग करें । वह कहता है कि हम उनका त्याग उस एकमात्र पाने-योग्य चीज़ के लिए करें, यानि परमेश्वर के साथ जीवन । यह उन बन्धनों को खोलने का मुद्दा है जो जीवन में रुकावट लाते हैं और जैसे ही हम यीशु की मृत्यु में उसके साथ एक हो जाते हैं, ये बन्धन तुरन्त खुल जाते हैं । फिर हम परमेश्वर के साथ एक ऐसे रिश्ते में आ जाते हैं जिसके द्वारा हम अपने जीवन को उसे बलिदान करके चढ़ा सकते हैं ।

अपने जीवन को मृत्यु के लिए परमेश्वर को देने से उसके लिए इसका कोई मूल्य नहीं । वह चाहता है कि आप उसके लिए एक "*जीवित* बलिदान" हों, कि उसे अपनी उन सब शक्तियों को लेने दें जो यीशु के द्वारा बचाई और पवित्र की गई हैं । यह वह चीज़ है जो परमेश्वर को भावती है ।

जनवरी 9

प्रार्थनापूर्ण आत्मनिरीक्षण

और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह ... पूरे -पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।
1 थिस्सलुनीकियों 5:23।

"तुम्हारी पूरी-पूरी आत्मा ..." पवित्र आत्मा का महान रहस्यात्मक काम हमारे व्यक्तित्व के उन धुँधले क्षेत्रों में होता है, जिन तक हम पहुँच नहीं सकते। भजन 139 पढ़ें : भजनकार के कहने का अर्थ है - "हे प्रभु, तू भोर का परमेश्वर है, देर रात का परमेश्वर है, पहाड़ की चोटियों का परमेश्वर है, और समुद्र का परमेश्वर है : लेकिन, हे मेरे परमेश्वर, मेरे प्राण की सीमाएँ भोर के परे हैं, उसका अन्धकार पृथ्वी की रातों से ज़्यादा गहरा है, उसकी चोटियाँ किसी भी पहाड़ की चोटी से ज़्यादा ऊँची हैं, उसकी गहराइयाँ प्रकृति के किसी भी सागर से ज़्यादा गहरी हैं - तू जो इन सब का परमेश्वर है, मेरा परमेश्वर हो। मैं इन ऊँचाइयों या गहराइयों तक नहीं पहुँच सकता; ऐसे आन्तरिक उद्देश्य हैं जिनका मैं पता नहीं चला सकता, ऐसे स्वप्न जिन तक मैं पहुँच नहीं सकता - हे मेरे परमेश्वर, मुझे जाँच।"

क्या हम विश्वास करते हैं कि हम जहाँ तक पहुँच सकते हैं, परमेश्वर हमारी कल्पनाओं को उससे कहीं बढ़कर सुदृढ़ कर सकता और सुरक्षित रख सकता है। "यीशु मसीह का लोहू हमें सब पाप से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)। यदि इसका अर्थ सिर्फ़ चेतना की अवस्था के स्थर से है, तो परमेश्वर हम पर दया करे। जिस व्यक्ति को पाप ने मन्दबुद्धि बना दिया है, वह यह कहेगा कि उसे पाप का एहसास नहीं। यदि हम ज्योति में रहेंगे जैसे परमेश्वर ज्योति में है, तो पाप से शुद्धि हमारी आत्मा की सबसे अधिक ऊँचाइयों और गहराइयों तक है, और जिस आत्मा ने यीशु मसीह की आत्मा को भोजन कराया, वही हमारी आत्माओं के जीवन को भी भोजन कराएगा। जब हम पवित्र आत्मा की आश्चर्यजनक पवित्रता से परमेश्वर के द्वारा किलेबन्द हो जाते हैं, केवल तब ही आत्मा, प्राण, और शरीर , यीशु के आने तक, विशुद्ध खरेपन में सुरक्षित रखे जाते हैं - यानि परमेश्वर की दृष्टि में अब दोषी नहीं ठहरते।

हम अपने मनों को परमेश्वर की इन महान सच्चाइयों पर उतना सोच-विचार नहीं करने देते जितना उन्हें करना चाहिए।

खोली गई आँखें

उनकी आँखें खोले ... कि वे... पाएँ।
प्रेरितों के काम 26:18।

यह पद सारे नए नियम में यीशु मसीह के एक चेले के धर्मप्रचार का सबसे शानदार सार है। सम्पूर्ण नए नियम में यीशु मसीह के शिष्य के सन्देश का यह सबसे शानदार संक्षेप है।

परमेश्वर के प्रभुत्वसम्पन्न अनुग्रह के सबसे पहले कार्य का संक्षेप इन शब्दों में है - ''कि वे पापों की क्षमा पाएँ '' जब कोई जन व्यक्तिगत मसीही अनुभव में असफल होता है, तो यह लगभग हमेशा इसलिए होता है क्योंकि उसने कभी कुछ *पाया* ही नहीं था। एक व्यक्ति के बच जाने का अकेला चिह्न यह होता है कि उसने यीशु मसीह से कुछ पाया है। परमेश्वर के सेवक होने के नाते हमारा काम यह है कि हम लोगों की आँखों को खोलें ताकि वे अन्धकार से निकलकर ज्योति की ओर आएँ, लेकिन यह उद्धार नहीं, मन फिराव है - एक जगाए हुए मनुष्य की कोशिश। मेरे ख़्याल से, यह कहना ग़लत नहीं होगा कि ज़्यादातर नामधारी मसीही इसी श्रेणी में आते हैं; उनकी आँखें तो खुल गई हैं, लेकिन उन्होंने कुछ पाया नहीं है। मन फिराव नया जीवन नहीं। आज यह हमारे प्रचार में एक ऐसा विषय है जिसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। जब एक व्यक्ति का नए सिरे से जन्म होता है, तो वह जानता है कि यह उसके फ़ैसले के कारण नहीं, बल्कि इसलिए है क्योंकि उसने सर्वशक्तिमान परमेश्वर से वरदान के रूप में कुछ पाया है। लोग अपनी प्रतिज्ञाओं को अभिलिखित करते हैं, अपने प्रणों पर हस्ताक्षर करते हैं, और इनपर डटे रहने का संकल्प करते हैं, लेकिन ये सब उद्धार नहीं हैं। उद्धार का अर्थ यह है कि हम उस स्थान पर लाए जाते हैं, जहाँ यीशु मसीह के अधिकार के अधीन परमेश्वर से कुछ पा सकते हैं, यानि पापों की क्षमा।

इसके बाद, अनुग्रह का एक दूसरा शक्तिशाली काम होता है - ''उन लोगों के साथ जो पवित्र किए गए है, मीरास पाएँ।'' पवित्रीकरण में नया जीवन पाया हुआ प्राण अपनी इच्छा से अपने ऊपर अपने अधिकार को यीशु मसीह को सौंप देता है, और दूसरे लोगों में परमेश्वर की दिलचस्पी में पूरी तरह से उसके साथ एक हो जाता है।

जनवरी 11

परमेश्वर के प्रति मेरी आज्ञाकारिता का दूसरों को क्या मूल्य चुकाना पड़ता है

उन्होंने शमौन नामक एक कुरेनी को ... पकड़कर उस पर क्रूस लाद दिया।
लूका 23:26।

यदि हम परमेश्वर की आज्ञा मानेगे, तो इसका मूल्य हमसे ज़्यादा दूसरों को चुकाना पड़ेगा, और चुभन यहीं से शुरू होती है। यदि हमें अपने प्रभु से प्रेम है, तो हमें आज्ञाकारिता का कोई मूल्य नहीं चुकाना पड़ता, बल्कि आज्ञाकारिता हमारे लिए एक आनन्द का कारण होती है, लेकिन यह उन लोगों को बहुत महंगी पड़ती है जो परमेश्वर से प्रेम नहीं करते। यदि हम परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे तो इससे दूसरों की योजनाएँ बिगड़ जाएँगी, और वे हमें ताना देंगे कि क्या यही मसीहियत है ? हम उनके कष्ट की रोक-थाम तो कर सकते हैं, लेकिन यदि हमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना है, तो हमें ऐसा नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें इसका दाम चुकाने देना चाहिए।

हमारा मानवीय घमण्ड इस मामले में अड़ जाता है और हम कहते हैं कि हम किसी से कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे। लेकिन हमें स्वीकार करना पड़ेगा, या फिर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना पड़ेगा। हमें कोई अधिकार नहीं है कि, हमारा प्रभु खुद जिस रिश्ते में रहा (लूका 8:2-3 देखें), हम उससे फ़र्क रिश्ते में रहने की आशा रखें।

आत्मिक जीवन की प्रगति में रुकावट आ जाती है जब हम कहते हैं कि हम सारी क़ीमत खुद चुकाएँगे। हम ऐसा नहीं कर सकते। हम परमेश्वर के सर्वव्यापी उद्देश्यों से इतने जुड़े हुए हैं कि जैसे ही हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, इसका दूसरों पर असर पड़ जाता है। क्या हम परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में विश्वासयोग्य रहेंगे और स्वाधीन होने से इनकार करने के अपमान को सहने के लिए तैयार होंगे, या हम इसका बिलकुल उल्टा करेंगे और कहेंगे, "मैं दूसरों को कष्ट पहुँचाने का कारण नहीं बनूँगा"? यदि हम चाहें, तो परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर सकते हैं, और इससे स्थिति में तुरन्त आराम आ जाएगा, लेकिन इससे परमेश्वर को दुःख पहुँचेगा। दूसरी ओर, यदि हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, तो वह उन लोगों की सुधि लेगा जो हमारी आज्ञाकारिता के नतीजों को भुगत रहे हैं। हमें केवल आज्ञा का पालन करना है और नतीजों को उसके हाथों में छोड़ देना है।

परमेश्वर पर यह हुक्म चलाने की प्रवृत्ति से ख़बरदार रहें, कि यदि आप उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, तो आप किन बातों को होने की अनुमति देंगे।

जनवरी 12

क्या आप कभी परमेश्वर के साथ एकान्त में रहे हैं ?

परन्तु एकान्त में वह अपने निज चेलों को सब बातों का अर्थ बताता था।
मरकुस 4:34।

उसके साथ हमारा एकान्त। यीशु हमें हर समय एकान्त में ले जाकर बातों का अर्थ नहीं बताता। वह हमें बातों के अर्थ तब समझाता है जब हम उन्हें समझने के लायक हो जाते हैं। दूसरों के जीवन दृष्टान्तों के समान होते हैं। परमेश्वर हमसे हमारे मनों की जाँच करवा रहा है। यह काम धीरे-धीरे होता है - इतने धीरे कि एक स्त्री या पुरुष को अपने उद्देश्य के अनुसार बनाने में परमेश्वर को सारा अनन्तकाल लग जाता है। परमेश्वर के लिए उपयोगी होने का एक ही तरीका है, वह यह कि हम उसे अपने जीवन के हर छिपे हुए कोने में ले जाने दें। यह बहुत ही आश्चर्यजनक है कि हम अपने ही बारे में कितने अनजान हैं ! जब हम अपने आप में ईर्ष्या देखते हैं तो उसे पहचानते नहीं, न ही आलस्य या घमण्ड को ! यीशु हम पर वह सब प्रकट करता है जो उसके अनुग्रह का काम शुरू होने से पहले इस शरीर ने छिपा कर रखा हुआ था। हम में से कितनों ने साहस के साथ अपने भीतर देखना सीख लिया है ?

हमें इस विचार को दूर करना है कि हम अपने आप को समझते हैं, यह हमें छोड़नेवाला आखिरी घमण्ड होता है। एक अकेला व्यक्ति जो हमें समझता है, वह परमेश्वर है। आत्मिक जीवन का सबसे बड़ा शाप घमण्ड है। यदि हमें कभी भी इसकी झलक देखने को मिली है कि हम परमेश्वर की दृष्टि में क्या हैं, तो हम यह कभी नहीं कहेंगे, "हाय ! मैं कितना अयोग्य हूँ" क्योंकि हम जान जाएँगे कि हम सचमुच कितने अयोग्य हैं और इस सत्य को कहने की ज़रूरत ही नहीं है। जब तक हम पक्की तरह से नहीं जान जाते कि हम अयोग्य हैं, परमेश्वर हमें तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक वह हमें एकान्त में नहीं पा लेगा। जब तक घमण्ड या गर्व या एक कण भी बचा रहता है, यीशु एक बात भी नहीं समझा सकता। वह हमें बुद्धि के घमण्ड को ठेस पहुँचने की निराशा से ले जाएगा, हृदय की निराशा से ले जाएगा। वह अनुचित प्रीति को प्रकट करेगा - ऐसी चीज़ों को जिनके विषय में हमने कभी नहीं सोचा होगा कि उसे हमें अकेले में पाने की ज़रूरत होगी। हम अपनी कक्षाओं में बहुत सी बातें सुनते होंगे, लेकिन ये अभी तक हमारे लिए एक स्पष्टीकरण नहीं हैं। लेकिन जब परमेश्वर इनके विषय में हमें एकान्त में पकड़ेगा, तो ये स्पष्ट हो जाएँगी।

क्या आप कभी परमेश्वर के साथ एकान्त में रहे हैं ?

जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उससे... पूछा।
मरकुस 4:10।

हमारे साथ उसका एकान्त। जब हम अकेले में परमेश्वर के हाथ लगते हैं, कष्ट, दिल के टूट जाने या परीक्षा के द्वारा, घोर निराशा, बीमारी या प्रीति में अड़चन आने के द्वारा, मित्रता के टूटने, या एक नई मित्रता के द्वारा - जब वह हमें बिलकुल एकान्त में पकड़ पाता है, और हम स्तम्भित हो जाते हैं और एक प्रश्न भी नहीं पूछ पाते, तब वह समझाना शुरू करता है। यीशु मसीह के द्वारा बारह चेलों को दिए गए प्रशिक्षण की ओर ध्यान दीजिए। वह बाहर की भीड़ नहीं थी, बल्कि चेले थे जो उलझन में पड़ गए थे। वे उससे लगातार प्रश्न पूछते रहते थे, और वह लगातार उन्हें समझाता रहता था; लेकिन वे तब ही समझ पाए जब वे पवित्र आत्मा पा चुके (यूहन्ना 14:26 देखें)।

यदि आप परमेश्वर के साथ चल रहे हैं, तो आप एक ही बात को स्पष्टता से देख सकेंगे, और एक ही बात है जो परमेश्वर चाहता है कि आपके लिए स्पष्ट हो, और यह है वह तरीका जिससे परमेश्वर आपकी अपनी आत्मा से निपट रहा है। आपके भाई के दुःख और उसकी जटिल समस्याएँ आपको बड़ी उलझन में डाल देती हैं। हमें लगता है कि हम समझते हैं कि दूसरे व्यक्ति को क्या संघर्ष करना पड़ रहा है, जब तक कि परमेश्वर हमें हमारी आत्मा की विपत्तियाँ नहीं दिखाता। हममें से हर एक के जीवन में हठ और अज्ञान के महान क्षेत्र हैं जो पवित्र आत्मा को हमें दिखाने हैं, लेकिन यह तब ही हो सकेगा जब यीशु हमें एकान्त में पकड़ पाएगा। क्या हम अभी उसके साथ एकान्त में हैं, या हम अपनी ही विचारधाराओं, मित्रताओं, और शरीर की देखरेख के विचारों में ज़्यादा लीन हैं ? जब तक हम अपने दिमाग़ के इन ऊधमी प्रश्नों को छोड़कर उसके साथ शान्ति से अकेले में नहीं आते, तब तक वह हमें कुछ नहीं समझा सकता।

जनवरी 14

परमेश्वर का बुलाया हुआ

मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा ?" तब मैंने कहा, "मैं यहाँ हूँ ! मुझे भेज।"

परमेश्वर का यह बुलावा यशायाह को सम्बोधित करके नहीं दिया गया था ; यशायाह ने परमेश्वर को यह कहते सुना कि, "हमारी ओर से कौन जाएगा ?" परमेश्वर का बुलावा कुछ ख़ास लोगों के लिए नहीं है, यह सब के लिए है। मुझे परमेश्वर का बुलावा सुनाई देता है या नहीं, यह मेरे कानों की स्थिति पर निर्भर है; और मैं जो सुनता हूँ, वह मेरी मनोवृत्ति पर निर्भर करता है। "बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं, " यानि, कम ही हैं जो अपने आप को चुने हुए साबित करते हैं। चुने हुए वे हैं जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ एक रिश्ते में बँध गए हैं जिससे उनकी आत्मिक दशा बदल गई है और उनके कान खुल गए हैं, और वे हर समय दबी हुई धीमी आवाज़ को यह पूछते हुए सुनते हैं, "हमारी ओर से कौन जाएगा ?" यहाँ परमेश्वर के द्वारा एक आदमी को चुनकर यह कहने का सवाल नहीं है कि "अब तू जा।" परमेश्वर ने यशायाह के साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं की; यशायाह परमेश्वर की उपस्थिति में था और उसने परमेश्वर को यह बुलावा देते हुए सुना, और उसे एहसास हुआ कि उसके पास पूरी स्वतन्त्रता के साथ, यह कहने के सिवा और कुछ नहीं था कि "मैं यहाँ हूँ, मुझे भेज।"

अपने दिमाग़ से यह विचार दूर कर दें कि परमेश्वर आपके पास ज़बरदस्ती करते हुए या विनती करते हुए आएगा। जब हमारे प्रभु ने अपने चेलों को बुलाया, तो कोई बाहरी ज़ोर-ज़बरदस्ती का इस्तेमाल नहीं किया। उसका "मेरे पीछे हो ले" का सादा, भावपूर्ण आग्रह ऐसे आदमियों से किया गया था जिनकी हर चेतना ग्रहणशील थी। यदि हम परमेश्वर के आत्मा को हमें परमेश्वर के आमने-सामने लाने दें, तो हम भी उसी तरह की बात सुनेंगे जैसी यशायाह ने सुनी, यानि परमेश्वर की दबी हुई, धीमी आवाज़; और सम्पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ हम भी कहेंगे, "मैं यहाँ हूँ; मुझे भेज।"

क्या आप श्वेत में चलते हैं ?

उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।
रोमियों 6:4।

कोई भी व्यक्ति एक "श्वेत दफ़न", यानि पुराने जीवन को दफ़नाने की क्रिया से गुज़रे बिना सम्पूर्ण पवित्रीकरण का अनुभव नहीं कर सकता। यदि मृत्यु के द्वारा परिवर्तन की यह निर्णायक घड़ी कभी नहीं आई है, तो पवित्रीकरण एक पकड़ में न आनेवाला सपना बनकर रह जाएगा। एक "श्वेत दफ़न" का होना ज़रूरी है, यानि ऐसी मृत्यु जिस का एक ही पुनरुत्थान हो - यीशु मसीह के जीवन में पुनरुत्थान। ऐसे जीवन को कुछ भी हरा नहीं सकता। यह परमेश्वर के साथ एक ही उद्देश्य से एक है - उसका गवाह होने के लिए।

क्या आप सचमुच अपने आखिरी दिनों में आ पहुँचे हैं ? दिमाग़ी तौर से तो आप अकसर वहाँ आए हैं, लेकिन क्या आपने सचमुच उनका अनुभव किया है ? आप उत्तेजना की मनोदशा में न तो मर सकते हैं और न ही अपनी दफ़न-क्रिया के लिए जा सकते हैं। मृत्यु का अर्थ है आप अस्तित्व में नहीं रहते। क्या आप परमेश्वर के साथ सहमत हैं कि आप पहले की तरह एक घोर प्रयास करनेवाला मसीही बनना बन्द कर देंगे ? हम कब्रिस्तान से कतराते हैं और लगातार अपनी मृत्यु को अस्वीकृत करते रहते हैं। यह मृत्यु को जाने का घोर प्रयास करने के द्वारा नहीं, बल्कि अपने आप को मृत्यु के हवाले करने के द्वारा होगा। यह मरना है - "मृत्यु का बपतिस्मा"लेना" (रोमियों 6:3)।

क्या आपका "श्वेत दफ़न" हुआ है, या आप धर्मविधियों का पालन करके अपनी आत्मा से धोखा कर रहे हैं ? क्या आपके जीवन में एक ऐसी घड़ी आई है जिसे आप अब अपना आखिरी दिन मानते हैं ? क्या आपके जीवन में एक ऐसा स्थान है जिसे आप दीनता और अत्यधिक आभार से याद कर सकते हैं ताकि आप सच्चे हृदय से कह सकें कि, "हाँ, उस घड़ी अपने "श्वेत दफ़न" पर मैंने परमेश्वर के साथ एक समझौता किया था।"

"परमेश्वर की यह इच्छा है कि तुम पवित्र बनो ..." (1 थिस्सलुनीकियों 4:3)। जब आप सचमुच समझ जाते हैं कि परमेश्वर की इच्छा यही है, तो आप एक स्वाभाविक प्रत्युत्तर के रूप में पवित्रीकरण की प्रक्रिया में प्रवेश करेंगे। क्या आप अभी उस "श्वेत दफ़न" का अनुभव करने के लिए तैयार हैं ? क्या आप परमेश्वर के साथ सहमत हैं कि पृथ्वी पर यह आपका आखिरी दिन है ? सहमति की घड़ी आपके ऊपर निर्भर है।

परमेश्वर के स्वभाव की आवाज़

मैंने प्रभु का यह वचन सुना, मैं किसको भेजूँ ?
यशायाह 6:8 ।

जब हम परमेश्वर के बुलावे की बात करते हैं, तो अकसर सब से महत्त्वपूर्ण बात भूल जाते हैं, यानि, बुलानेवाले का स्वभाव । वैसे तो समुद्र का बुलावा भी होता है, पहाड़ों और बर्फ़ीले अवरोधों का भी, लेकिन ये बुलावे बहुत कम लोगों को सुनाई देते हैं । पुकार उस स्वभाव की अभिव्यक्ति होती है जहाँ से वह आती है, और हम इसे तब ही पहचान सकते हैं यदि यही स्वभाव हमारे भीतर भी हो । परमेश्वर की पुकार परमेश्वर के स्वभाव की अभिव्यक्ति है, हमारे स्वभाव की नहीं । परमेश्वर की पुकार के धागे हमारे जीवन के ताने-बाने में ऐसे काम करते हैं कि इन्हें हमें छोड़ कोई और नहीं पहचान सकता । हमें पुकारनेवाली परमेश्वर की आवाज़ किसी ख़ास मामले में ऐसे पिरोई हुई होती है, कि इसके बारे में किसी और से सलह-मशविरा करना बेकार है । हमें अपनी आत्मा और परमेश्वर के बीच उस गहरे रिश्ते को बनाए रखना है ।

परमेश्वर की पुकार मेरे स्वभाव की प्रतिध्वनि नहीं है; मेरी व्यक्तिगत अभिलाषाओं का और मेरे व्यक्तिगत स्वभाव का लिहाज़ नहीं किया जाता । जब तक मैं अपने व्यक्तिगत स्वभाव का ध्यान रखता हूँ और इसके बारे में सोचता हूँ कि मैं क्या करने के योग्य हूँ, तब तक मैं परमेश्वर की पुकार को कभी नहीं सुनूँगा । लेकिन जब मैं परमेशवर के साथ एक रिश्ते में लाया जाता हूँ, तब मैं उसी परिस्थिति में होता हूँ जिसमें यशायाह था । जिस संकट से यशायाह गुज़रा था उसके कारण उसकी आत्मा का सुर परमेश्वर के साथ ऐसा मिला हुआ था कि परमेश्वर की पुकार उसकी आत्मा की गहराई को छू गई । हममें से ज़्यादातर लोगों को अपनी ही सुनने के सिवा और कुछ सुनाई नहीं देता, हमें परमेश्वर की एक बात भी नहीं सुनाई देती । परमेश्वर की पुकार के क्षेत्र के भीतर लाए जाने का अर्थ है गहरे परिवर्तन का अनुभव करना ।

जनवरी 17

प्राकृतिक जीवन की बुलाहट

परमेश्वर की ... जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे ...
गलातियों 1:15-16

परमेश्वर की बुलाहट किसी ख़ास सेवा के लिए बुलाहट नहीं होती; मेरा ऐसा समझना इसलिए हो सकता है क्योंकि परमेश्वर के स्वभाव के साथ सम्पर्क ने मुझ में यह एहसास जगाया है कि मैं उसके लिए क्या करना चाहता हूँ। मुख्य रूप से, परमेश्वर की बुलाहट उसके स्वभाव की अभिव्यक्ति है; सेवा वह नतीजा है जो मेरे स्वभाव के अनुसार उपयुक्त है। पौलुस प्रेरित प्राकृतिक जीवन की बुलाहट का वर्णन करते हुए कहता है, "परमेश्वर की ... जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका *सुसमाचार सुनाऊँ* (यानि, *शुद्धता* और *गम्भीरता* से यीशु को *व्यक्त* करूँ)।"

सेवा एक भरपूर भक्ति का उमड़ना है; लेकिन यदि गहराई से देखा जाए, तो यह *बुलाहट* नहीं बल्कि मेरा अपना छोटा सा कार्य है और यह परमेश्वर के स्वभाव के साथ मेरे एक होने की प्रतिध्वनि है। सेवा मेरे जीवन का एक प्राकृतिक हिस्सा बन जाता है। परमेश्वर मुझे अपने साथ एक सही रिश्ते में बाँधता है जिसके द्वारा मैं उसकी बुलाहट को समझता हूँ, और फिर मैं उसके प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, अपनी इच्छा से उसकी सेवा करता हूँ। परमेश्वर की सेवा करना उस स्वभाव की सोच-समझकर दी गई प्रेम-भेंट है जिसने परमेश्वर की बुलाहट को सुना है। सेवा मेरे स्वभाव की अभिव्यक्ति है : परमेश्वर की बुलाहट उसके स्वभाव की अभिव्यक्ति है ; इसके फलस्वरूप, जब मैं उसका स्वभाव पाता हूँ और उसकी बुलाहट सुनता हूँ, तो ईश्वरीय स्वभाव की आवाज़ दोनों के स्वभावों में गूँजती है और दोनों एक साथ मिलकर काम करते हैं। परमेश्वर का पुत्र अपने आप को मुझमें प्रकट करता है, और उसके प्रति भक्ति के फलस्वरूप, सेवा मेरी दैनिक जीवन-शैली बन जाती है।

जनवरी 18

यह तो प्रभु है !

यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर !"
यूहन्ना 20:28 ।

"मुझे पानी पिला ।" हम में से कितने हैं जो यह आशा कर रहे हैं कि यीशु मसीह हमारी प्यास बुझाए, जब कि हमें उसे तृप्त करना चाहिए ? हमें अपना जीवन उसके आगे उण्डेल देना चाहिए, हमें अपनी तृप्ति के लिए उससे खींचकर निकालने के बजाय, आखिरी हद तक अपने आप को उसके लिए खर्च कर देना चाहिए । "तुम मेरे गवाह होगे" - इसका अर्थ है प्रभु यीशु के प्रति एक निष्कलंक, अटल, और असंयमित भक्ति, जो उसे सन्तुष्टि देगी चाहे वह हमें किसी भी स्थिति में क्यों न रखे ।

यीशु मसीह के प्रति हमारी स्वामिभक्ति के साथ मुक़ाबला करनेवाली हर चीज़ से सावधान रहें । यीशु के प्रति स्वामिभक्ति के साथ मुक़ाबला करनेवाली सबसे बड़ी चीज़ है उसकी सेवा । उसके लिए अपने जीवन को पूरी तरह उण्डेल देने से उसकी सेवा करना ज़्यादा आसान है । परमेश्वर की बुलाहट का एकमात्र उद्‌देश्य है परमेश्वर को सन्तुष्ट करना, यह नहीं कि हम उसके *लिए* कुछ करें । हम इसलिए नहीं भेजे जाते कि परमेश्वर के लिए लड़ाई लड़ें, बल्कि इसलिए कि हम उसकी लड़ाइयों में उसके काम आएँ । क्या हमारी भक्ति यीशु मसीह से ज़्यादा सेवा के प्रति हैं ?

दर्शन और अन्धकार

अत्यन्त भय और महा अन्धकार ने उसे छा लिया।
उत्पत्ति 15:12।

जब परमेश्वर एक मसीही विश्वासी को दर्शन देता है, तो वह उसे मानो अपने हाथ की आड़ में छिपा लेता है, और विश्वासी का काम यह होता है कि वह खामोश रहे और सुने। एक अन्धकार होता है जो अत्यधिक प्रकाश से आता है, और यही सुनने का समय होता है। जब अन्धेरा होता है, तो परमेश्वर के प्रकाश भेजने के लिए ठहरे रहने के बजाय अच्छी सलाह सुनने का एक अच्छा उदाहरण उत्पत्ति 16 में मिलता है। जब परमेश्वर एक दर्शन देता है और उसके बाद अन्धेरा छा जाता है, तो ठहरिए। यदि आप परमेश्वर के समय का इन्तज़ार करेंगे, तो वह आपको उस दर्शन के अनुकूल बनाएगा जो उसने दिया है। परमेश्वर को उसका वचन पूरा करने में उसकी मदद करने की कोशिश कभी न करें। इब्राहीम तेरह सालों की खामोशी से गुज़रा, लेकिन उन सालों में सारी आत्मनिर्भरता नष्ट हो गई; व्यावहारिक बुद्धि के तरीकों पर भरोसा करने की सम्भावना नहीं रही। खामोशी के वे साल एक अनुशासन का समय थे, असन्तोष का नहीं। यह दिखावा करने की कोई ज़रूरत नहीं कि आपका जीवन आनन्द और आत्मविश्वास से भरपूर है; सिर्फ़ परमेश्वर पर आशा लगाए रखें और अपने आप को उसमें दृढ़ करें (यशायाह 50:10,11 देखें)।

क्या मेरा शरीर पर कुछ भी भरोसा है ? क्या मैं अपने आप पर और परमेश्वर के लोगों पर, पुस्तकों, प्रार्थनाओं और जीवन के दूसरे आनन्दों पर भरोसा करने के परे हो गया हूँ ? या क्या मेरा भरोसा अब परमेश्वर पर है, उसकी आशीषों पर नहीं ? "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ" - एल-शेद्दाई, पिता-माता परमेश्वर। जिस बात के लिए हम अनुशासित किए जा रहे हैं, वह यह है कि हम जानें कि परमेश्वर सचमुच है। जैसे ही परमेश्वर वास्तविकता बन जाएगा, वैसे ही दूसरे लोग परछाइयाँ बन जाएँगे। दूसरे पवित्र लोग ऐसा कुछ भी नहीं कर या कह सकते हैं जो परमेश्वर पर दृढ़ व्यक्ति को अशान्त कर सके।

जनवरी 20

क्या आप हर बात के लिए ताज़ादम हैं ?

यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।
यूहन्ना 3:3।

कभी-कभी हम प्रार्थना-सभा के लिए तो ताज़ादम होते हैं, लेकिन जूते साफ़ करने के लिए नहीं !

पवित्र आत्मा के द्वारा नए सिरे से जन्म लेना बेशक परमेश्वर का कार्य है, हवा की तरह रहस्यात्मक, खुद परमेश्वर की तरह आश्चर्यजनक। हम नहीं जानते कि यह कहाँ शुरू होता है, यह हमारे व्यक्तिगत जीवन की गहराइयों में छिपा होता है। परमेश्वर की ओर से नए सिरे से जन्म लेना एक टिकाऊ, सदा रहनेवाली और अनन्त शुरुआत होती है। यह सोचने, बोलने, और जीने में हर समय एक ताज़गी प्रदान करता है - परमेश्वर के जीवन का एक लगातार आश्चर्य। बासीपन इस बात का संकेत है कि हमारे जीवन में कुछ ऐसा है जो परमेश्वर के साथ कदम मिलाकर नहीं चल रहा है। "मुझे यह करना है नहीं तो यह कभी नहीं होगा।" यह बासीपन का पहला संकेत है। क्या हम इस घड़ी ताज़गी महसूस कर रहे हैं, या क्या हम बासी हो गए हैं और जी-तोड़ कोशिश करके अपने दिमाग़ में ढूँढ रहे हैं कि हम क्या कर सकते हैं ? ताज़गी आज्ञाकारिता से नहीं बल्कि पवित्र आत्मा से आती है; आज्ञाकारिता हमें ज्योति में रखती है जैसे परमेश्वर ज्योति में है।

परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते की सतर्कता से चौकसी करें। यीशु ने प्रार्थना की कि "वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं" - कोई बीच में न आने पाए। अपने सारे जीवन को परमेश्वर के आगे हर समय खुला रखें, उसके सामने कोई दिखावा नहीं करें। क्या आप अपना जीवन परमेश्वर को छोड़ किसी और स्रोत से ले रहे हैं ? यदि आप उसको छोड़ किसी और चीज़ पर भरोसा रख रहे हैं, तो आपको पता भी नहीं चलेगा कि परमेश्वर आपके पास से कब चला गया।

नए सिरे से जन्म लेने का अर्थ उससे कहीं बढ़कर है जो हम आम तौर से सोचते हैं। यह हमें एक नया दर्शन देता है और परमेश्वर का जीवन लगातार प्रदान करने के द्वारा हर बात के लिए बिलकुल ताज़ादम रखता है।

जनवरी 21

उसे याद कीजिए, जो परमेश्वर को स्मरण आता है

तेरी जवानी का स्नेह ... मुझे स्मरण आता है।
यिर्मयाह 2:2।

क्या मैं अपनी इच्छा से परमेश्वर से उतना ही स्नेह करता हूँ जितना किया करता था, या क्या मैं सिर्फ़ यह आशा कर रहा हूँ कि परमेश्वर मुझसे स्नेह करेगा ? क्या मेरे जीवन की हर बात उसके हृदय को खुशी से भर देती है, या क्या मैं हर समय शिकायतें करता हूँ क्योंकि सब कुछ वैसे नहीं हो रहा है जैसे मैं चाहता हूँ। जो व्यक्ति यह भूल चुका है कि परमेश्वर किन चीज़ों को महत्त्व देता है, वह आनन्द का अनुभव कभी नहीं करेगा। यह जानना कि यीशु मसीह को मेरी ज़रूरत है, एक बहुत महान बात है - "मुझे पानी पिला।" पिछले हफ़्ते के दौरान मैंने उसे कितना स्नेह दिखाया है ? क्या मेरे जीवन ने उसकी नेकनामी को प्रतिबिम्बित किया है ?

परमेश्वर अपने लोगों से कह रहा है - अब तुम्हें मुझ से प्रेम नहीं है, लेकिन मुझे याद है जब तुम्हें मुझसे प्रेम था - "तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे स्मरण आता है।"क्या मैं यीशु मसीह के लिए उतने ही असीमित प्रेम से भरा हुआ हूँ जितना शुरू में था, जब मैं सामान्य मार्ग से हटकर उसके प्रति अपनी भक्ति को साबित करता था ? क्या वह मुझे उस समय को याद करते हुए पाता है जब मुझे उसे छोड़ और किसी चीज़ की परवाह न थी ? क्या मैं अभी भी वहीं हूँ, या क्या मैंने मनुष्यों की बुद्धि को उसके प्रति प्रेम से बढ़कर चुना है ? क्या मैं उससे इतना प्रेम करता हूँ कि मुझे इसकी परवाह नहीं कि वह मुझे कहाँ ले जाता है ? या क्या मैं इस ताक में हूँ कि मुझे कितना आदर- सम्मान मिलेगा, या यह आँक रहा हूँ कि मुझे कितनी सेवा करनी चाहिए ?

जब मैं यह याद करूँगा कि परमेश्वर मेरे बारे में क्या-क्या स्मरण करता है, तो शायद मुझे यह एहसास हो जाएगा कि अब वह मेरे लिए वह नहीं है जो कभी हुआ करता था। जब मुझे ऐसा महसूस होता है, तो मुझे इसके द्वारा होनेवाली शर्मिन्दगी और दीनता को अपने जीवन में आने देना चाहिए क्योंकि इससे परमेश्वर-भक्ति का शोक पैदा होगा और "परमेश्वर-भक्ति का शोक पश्चात्ताप उत्पन्न करता है ...।"

जनवरी 22

मैं किसकी ओर फिर रहा हूँ ?

मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ।
यशायाह 45:22।

क्या हम यह प्रत्याशा करते हैं कि परमेश्वर अपनी आशीषें लेकर हमारे पास आएगा और हमें बचा लेगा ? वह कहता है - मेरी ओर फिरो, और उद्धार पाओ। परमेश्वर पर ध्यान देना एक महान आत्मिक कठिनाई होती है, और परमेश्वर की आशीषें ही इसे कठिन बना देती हैं। परेशानियाँ लगभग हमेशा ही हमें परमेश्वर की ओर देखने पर मजबूर करती हैं, लेकिन उसकी आशीषें हमारे ध्यान को दूसरी दिशाओं में ले जाती हैं। पहाड़ी उपदेश की शिक्षा का सार है - अपनी सारी रुचियों को संकीर्ण करते जाओ जब तक कि तुम्हारा मन, हृदय और शरीर यीशु मसीह पर केन्द्रित न हो जाए।

हम में से बहुतों ने अपने दिंमाग़ में एक तस्वीर बना ली है कि एक मसीही को कैसा होना चाहिए, और पवित्र लोगों के जीवन परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित करने में हमारे लिए एक बाधा बन जाते हैं। उद्धार इस तरह नहीं मिलता, यह उतना सरल नहीं है जितना होना चाहिए। "मेरी ओर फिरो" और, यह नहीं कि "तुम उद्धार पाओगे" बल्कि "तुम्हें उद्धार मिल गया है।" जो चीज़ हम खोज रहे हैं, वह हमें तब मिलेगी यदि हम परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। हम बेचैन हो जाते हैं और परमेश्वर से रूठ जाते है, जब कि वह हर समय यह कहता है - "ऊपर देखो, और उद्धार पाओ।" जिस घड़ी हम परमेश्वर की ओर देखते हैं, कठिनाइयाँ और परीक्षाएँ - और कल के लिए हमारी चिन्ताएँ सब गायब हो जाती हैं।

अपने आप को जगाएँ और परमेश्वर की ओर देखें। अपनी आशा को उसपर बनाएँ। चाहे कितनी भी चीज़े आपको घेरे हुए हों, फ़ैसला कर लें कि आप उन्हें किनारे कर के परमेश्वर की ओर
देखेगे। "मेरी ओर फिरो ..." और जिस क्षण आप फिरते हैं, उद्धार हो जाता है।

जनवरी 23

देखने के द्वारा बदलते जाना

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसके तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।
2 कुरिन्थियों 3:18।

परमेश्वर के सामने यह बेपर्दा की हुई सच्चाई एक मसीही की प्रमुख विशेषता होती है जिससे उसका जीवन दूसरों के जीवन के लिए एक आईना बन जाता है। पवित्र आत्मा से भरपूर हो जाने के द्वारा हम बदल जाते हैं और देखने के द्वारा हम आईने बन जाते हैं। आप यह हमेशा जान सकेंगे जब एक व्यक्ति प्रभु के प्रताप को देखता रहा है, आप अपनी आत्मा में महसूस कर पाएँगे कि वह प्रभु के निज स्वभाव का आईना है। ऐसी हर चीज़ से सावधान रहें जो आपके भीतर के इस आईने को कलंकित कर सकती है; यह लगभग हमेशा ही कोई अच्छी चीज़ होती है, अच्छी लेकिन सबसे अच्छी नहीं।

आपके और मेरे जीवन के लिए एक सुनहरा नियम है कि हम परमेश्वर के सामने अपने जीवन को खुला रखने पर ध्यान दें। अपने काम, कपड़े, भोजन, बल्कि संसार की सब चीज़ों को एक ओर रख दें। और बातों में व्यस्थता से परमेश्वर पर हमारे ध्यान का केन्द्रीकरण हमेशा कम हो जाने के ख़तरे में पड़ जाता है। हमें अपने आप को आईने में देखने के स्थान पर बनाए रखना है, और जीवन को हर समय पूरी तरह से आत्मिक बनाए रखना है। और चीज़ों को आने-जाने दें, दूसरे लोगों को हमारी आलोचना करने दें, लेकिन किसी चीज़ को उस जीवन को धुँधला न करने दें जो मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। एक जल्दीबाज़ी की जीवन शैली को परमेश्वर में बने रहने के रिश्ते में बाधा न डालने दें। इसकी अनुमति देना बहुत आसान होता है, लेकिन इसके प्रति सावधान रहें। एक मसीही के जीवन का सबसे कड़ा अनुशासन है यह सीखना कि हम दर्पण के समान प्रभु के प्रताप को देखना कैसे जारी रख सकते हैं।

जनवरी 24

परमेश्वर का वश में कर लेनेवाला उद्देश्य

मैंने तुझे इसलिए दर्शन दिया है ...।
प्रेरितों के काम 26:16।

दमिश्क के मार्ग में पौलुस को जो दर्शन मिला, वह ऐसा ही कोई भावनात्मक अनुभव नहीं था, बल्कि ऐसा दर्शन था जिसमें उसके लिए स्पष्ट और ज़ोरदार ढंग से दिए गए आदेश थे। और पौलुस ने कहा, ''मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली।'' हमारे प्रभु ने पौलुस से मानो ऐसे कहा - तेरे पूरे जीवन को मेरे द्वारा वश में कर लिया जाएगा; मेरे उद्देश्य को छोड़ तेरे पास कोई और उद्देश्य, ध्येय या इरादा नहीं होना है। ''*मैंने उसे चुना है*।''

जब हमारा नए सिरे से जन्म होता है, यदि हम थोड़े से भी आत्मिक होते हैं, तो हम सब के पास दर्शन होते हैं, कि यीशु हमें क्या बनाना चाहता है, और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम दर्शन का उल्लंघन न करें, और यह न कहें कि वह पूरा नहीं हो सकता। सिर्फ़ यह जानना काफ़ी नहीं कि परमेश्वर ने सारे जगत का प्रायश्चित किया है, और यह कि यीशु ने जो कुछ किया है उसे पवित्र आत्मा मेरे जीवन में एक वास्तविकता बना सकता है। मेरे पास उसके साथ एक व्यक्तिगत रिश्ते का आधार होना ज़रूरी है। पौलुस को प्रचार करने के लिए एक सन्देश या एक सिद्धान्त नहीं दिया गया था, बल्कि उसे यीशु मसीह के साथ एक सजीव, व्यक्तिगत, वश में कर लेनेवाले रिश्ते में लाया गया था। पद 16 बहुत ही प्रभावशाली है - ''कि तुझे...सेवक और गवाह ठहराऊँ।'' यहाँ एक व्यक्तिगत रिश्ते को छोड़ और कुछ नहीं है। पौलुस की भक्ति एक व्यक्ति के प्रति थी, किसी धार्मिक काम के प्रति नहीं। वह पूरी तरह से यीशु मसीह का था, उसने किसी और चीज़ को नहीं देखा, वह किसी और चीज़ के लिए नहीं जीया। ''क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ।''

जनवरी 25

परमेश्वर को गुंजाइश दो

परन्तु परमेश्वर ...की जब इच्छा हुई ... ।
गलातियों 1:15-16 ।

परमेश्वर के कार्यकर्ता होने के नाते, हमें परमेश्वर को काम करने का मौका देने की ज़रूरत है । हम हिसाब करते और अन्दाज़ लगाते हैं, और कहते हैं ऐसा या वैसा होगा, और हम परमेश्वर को उसकी इच्छा से आने के लिए जगह देना भूल जाते हैं । क्या हमें हैरानी होगी यदि परमेश्वर हमारी सभा में या हमारे प्रचार के दौरान इस तरह से प्रवेश करे जैसे हमने कभी नहीं सोचा था ? परमेश्वर के किसी ख़ास तरह से आने की प्रतीक्षा न करें, बल्कि *उसकी प्रतीक्षा करें*। उसके लिए जगह बनाने का यही तरीका है । उसके *आने* की प्रत्याशा करें, लेकिन किसी ख़ास ढंग से आने की प्रत्याशा नहीं । हम परमेश्वर को चाहे कितना भी क्यों न जानते हों, जो महत्त्वपूर्ण पाठ हमें सीखना है वह यह है वह किसी भी क्षण अन्दर आ सकता है । हम आश्चर्य के इस तत्त्व को अनदेखा करने की सोच सकते हैं, लेकिन परमेश्वर और किसी ढंग से कभी काम नहीं करता । अचानक परमेश्वर किसी जीवन से मुलाक़ात करता है - "परमेश्वर की ...जब इच्छा हुई ।"

अपने जीवन को निरन्तर परमेश्वर के सम्पर्क में ऐसे रखें कि उसका आश्चर्यजनक सामर्थ्य किसी भी समय आपके हर ओर अचानक काम करना शुरू कर सके । हमेशा आशा की स्थिति में रहें, और पक्का कर लें कि आप परमेश्वर को मौका दे रहे हैं कि वह अपनी इच्छा से अन्दर आ सके ।

जनवरी 26

फिर देखो और अभिषिक्त करो

जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो ...तुम को वह इनसे बढ़कर क्यों न पहिनाएगा ?
मत्ती 6:30।

यीशु का एक सादगी भरा कहना हमारे लिए हमेशा एक कठिन सवाल बन जाता है यदि हम खुद सादगी भरे नहीं हैं। हममें यीशु की सादगी कैसे आ सकती है ? उसके आत्मा को ग्रहण करने के द्वारा, उसको पहचानने और उसपर भरोसा करने के द्वारा, जब वह परमेश्वर का वचन लाता है तो उसकी आज्ञा का पालन करने के द्वारा, जीवन में एक अद्‌भुत सादगी आ जाएगी। "ध्यान करो," यीशु कहता है, "कि यदि तुम्हारा पिता जो मैदान की घास को ऐसा वस्त्र पहनाता है, वह तुम्हें कैसे वस्त्र पहनाएगा यदि तुम उसके साथ अपने सम्बन्ध को सही रखो।" जब जब हम आत्मिक संगति में पीछे हटे हैं, यह इसलिए हुआ है क्योंकि हमने यीशु मसीह का अपमान करते हुए यह समझा है कि हम उससे ज़्यादा जानते हैं। हमने संसार की चिन्ताओं को अन्दर आने दिया है, और अपने स्वर्गीय पिता के "इनसे बढ़कर" को भूल बैठे हैं।

"आकाश के पक्षियों को देखो " - उनका प्रमुख उद्‌देश्य यह है कि वे अपने अन्दर पाए जानेवाले जीवन के सिद्धान्त को मानें, और परमेश्वर उनकी देखभाल करता है। यीशु कहता है कि यदि आप उसके साथ सही रिश्ता रखते हैं और अपने अन्दर वास करनेवाले उसके आत्मा का कहना मानते हैं, तो परमेश्वर आपके "परों" की देखभाल करेगा।

"जंगली सोसनों पर ध्यान करो" - वे वहीं उगते हैं जहाँ उन्हें लगा दिया जाता है। हम में से बहुत से ऐसे हैं जो वहाँ नहीं उगना चाहते जहाँ हमें लगाया गया है, और इसके फलस्वरूप हम कहीं भी जड़ नहीं पकड़ते। यीशु कहता है कि यदि हम उस जीवन के अनुसार चलें जो परमेश्वर ने हमें दिया है, तो बाकी सब चीज़ों का ख़्याल वह रखेगा। क्या यीशु मसीह ने हमसे झूठ बोला है ? यदि हम "इनसे बढ़कर " का अनुभव नहीं कर रहे हैं, तो यह इसलिए है क्योंकि हम उस जीवन के अनुसार नहीं चल रहे हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है। हम उलझानेवाली बातों की ओर ध्यान दे रहे हैं। हमने अपने सवालों से परमेश्वर को परेशान करने में कितना समय बरबाद कर दिया है, जबकि हमें यह समय उसके काम पर ध्यान लगाने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए था। अभिषेक का अर्थ है अपने आप को किसी ख़ास चीज़ के लिए लगातार अलग करना। हम केवल एक बार अभिषिक्त नहीं हो सकते। क्या मैं अपने आप को लगातार अलग कर रहा हूँ ताकि अपने जीवन के हर दिन परमेश्वर पर ध्यान करूँ ?

जनवरी 27

फिर से देखो और सोचो

अपने प्राण के लिए चिन्ता न करना।
मत्ती 6:25।

एक चेतावनी जिसे बार-बार दोहराने की ज़रूरत है यह है कि इस संसार की चिन्ताओं, धन-दौलत के धोखे, और दूसरी चीज़ों के लालच के आने से वे सब चीज़ें दब जाएँगी जो परमेश्वर जीवन में लाता है। हम इस अनाधिकार कब्ज़े के बार-बार आनेवाले ज्वार-भाटे से कभी मुक्त नहीं होते। यदि यह कपड़ों और भोजन के सम्बन्ध में नहीं आता, तो पैसे या पैसे की कमी के सम्बन्ध में, या मित्रों या मित्रों की कमी के सम्बन्ध में, या कठिन परिस्थितियों के सम्बन्ध में आ जाता है। यह एक लगातार होनेवाला अनाधिकार कब्ज़ा है, और यदि हम परमेश्वर के आत्मा को अपना झण्डा खड़ा नहीं करने देंगे, तो ये चीज़ें एक बाढ़ की तरह आ जाएँगी।

"अपने प्राण के लिए चिन्ता न करना।" "एक ही बात का ध्यान रखो," हमारा प्रभु कहता है, "मेरे साथ तुम्हारा सम्बन्ध।" हमारी व्यावहारिक बुद्धि ऊँचे स्वर से पुकार कर कहती है - "यह तो बिलकुल बेतुकी बात है। मुझे इस बात पर तो ध्यान *देना* ही पड़ेगा कि मैं कैसे जीऊँगा, क्या खाऊँगा और क्या पीऊँगा।" यीशु कहता है कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। यह सोचने की ग़लती से सावधान रहना कि यह बात ऐसे व्यक्ति के द्वारा कही गई है जो हमारी विशेष परिस्थितियों को नहीं समझता। यीशु मसीह हमारी परिस्थितियों को हमसे बेहतर समझता है और वह कहता है कि हमें इनके बारे में ऐसे नहीं सोचना चाहिए जैसे कि वे हमारे जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण चिन्ता की बातें हों। जब भी दोनों के बीच मुक़ाबला हो, परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को पहला स्थान दें।

"आज के लिए आज ही का दुःख बहुत है।" कितने दुःख ने आपको आज संकट में डालना शुरू किया है ? किस प्रकार की दुष्टात्माएँ आपके जीवन में दखल देकर यह कहती रही हैं, "अगले महिने या अगली गर्मियों में तुम्हारा क्या करने का इरादा है ?" "किसी बात की चिन्ता मत करो," यीशु कहता है। एक बार फिर देखें और विचार करें। अपना ध्यान अपने स्वर्गीय पिता के "कितना बढ़कर" पर लगाएँ।

जनवरी 28

विश्वास नहीं होता कि कोई यीशु को इतना सता सकता है !

हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ?
प्रेरितों के काम 26:14 ।

क्या मैं परमेश्वर के लिए अपना ही मार्ग अपनाने पर अड़ा हुआ हूँ ? हम इस जाल से तब तक मुक्त नहीं होते जब तक हम पवित्र आत्मा और आग के बपतिस्मे के अनुभव में नहीं लाए जाते । हमारी ज़िद और हठ हमेशा यीशु मसीह पर प्रहार करेंगी । हो सकता है कि इससे किसी और को नुकसान न पहुँचे, लेकिन इससे उसके आत्मा को चोट पहुँचती है । जब भी हम ज़िद्दी और हठीले होते हैं, और अपनी ही आकांक्षाओं के पीछे लगे रहते हैं, हम यीशु को चोट पहुँचाते हैं । हर बार जब हम अपने अधिकारों के आधार पर कहते हैं कि मेरा यह करने का इरादा है, हम यीशु को सताते हैं । जब भी हम अपने मान-सम्मान पर भरोसा करते हैं तो हम व्यवस्थित रूप से उसके आत्मा को नाराज़ और शोकित करते हैं । और अन्त में जब हम समझ जाते हैं कि वह यीशु है जिसे हम इतने समय से सताते रहे हैं, तो इससे ज़्यादा दुःखदायी प्रकटीकरण और हो ही नहीं सकता ।

क्या परमेश्वर का वचन मेरे लिए भेदनेवाला और तेज़ है जब मैं इसे आप तक पहुँचाता हूँ, या क्या मेरा जीवन उन बातों को झुठला देता है जिन्हें सिखाने का मैं दावा करता हूँ ? मैं पवित्रीकरण के बारे में सिखा सकता हूँ और फिर भी शैतान की आत्मा को प्रदर्शित कर सकता हूँ, यानि वह आत्मा जो यीशु मसीह को सताती है । यीशु के आत्मा को सिर्फ़ एक बात का बोध है - पिता के साथ एक सिद्ध एकता, और वह कहता है,“मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे ।” मैं जो कुछ करता हूँ, उसे परमेश्वर के साथ एक सिद्ध एकता पर आधारित होना चाहिए, परमेश्वर-भक्त बनने के हठीले फ़ैसले पर नहीं । इसका अर्थ यह होगा कि लोग मेरा इस्तेमाल कर सकते हैं, मुझे नज़रअन्दाज़ कर सकते हैं, मुझसे किनारा कर सकते हैं, लेकिन यदि मैं उसकी ख़ातिर यह सह लेता हूँ, तो यीशु मसीह के सताए जाने को रोकता हूँ ।

जनवरी 29

विश्वास नहीं होता कि कोई इतना अनजान भी हो सकता है !

हे प्रभु, तू कौन है ?
प्रेरितों के काम 26:15 ।

"यहोवा दृढ़ता के साथ मुझसे बोला ...।" जब हमारा प्रभु बोलता है, तो बच निकलना असम्भव हो जाता है । वह हमेशा अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए आता है और हमारी समझ पर कब्ज़ा कर लेता है । क्या परमेश्वर की आवाज़ सीधे रूप से आपके पास आई है ? यदि आई है, तो जिस घनिष्ठ आग्रह के साथ उसने आपसे बात की है, आप उसे ग़लत नहीं समझ सकते । परमेश्वर आपसे उस भाषा में बात करता है जिसे आप सबसे अच्छी तरह समझते हैं, आपके कानों के द्वारा नहीं बल्कि आपकी परिस्थितियों के द्वारा ।

हमें अपने विश्वासों पर जो भरोसा है, परमेश्वर को उसे नष्ट करना पड़ता है । "मैं जानता हूँ कि मुझे यह करना है " - और अचानक परमेश्वर की आवाज़ हमसे इस ढंग से बात करती है जो हमारे अज्ञान की गहराइयों को प्रकट करके हम पर हावी हो जाता है । हमने जिस ढंग से उसकी सेवा करने का फ़ैसला किया, उसी में उसके बारे में अपने अज्ञान को दिखा दिया । हम यीशु की सेवा ऐसे मनोभाव से करते हैं जो उसका नहीं है । हम उसकी वकालत करके उसे ठेस पहुँचाते हैं । हम उसके दावों को शैतान के मनोभाव से बढ़ावा देते हैं । हमारे शब्द सुनने में ठीक लगते हैं, लेकिन हमारी आत्मा एक दुश्मन की आत्मा है । "उसने फिरकर उन्हें डाँटा और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो ।" प्रभु की वकालत करनेवाले में उसकी आत्मा का वर्णन 1 कुरिन्थियों 13 में किया गया है ।

क्या मैं अपने ढंग से यीशु की सेवा करने के एक जोशीले फ़ैसले के द्वारा उसे सताता रहा हूँ ? यदि मैं महसूस करता हूँ कि मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया है, फिर भी इस दौरान उसे दुःखी किया है, तो मुझे पक्की तरह से जान लेना चाहिए कि यह मेरा कर्त्तव्य था ही नहीं, क्योंकि इसने नम्रता और मन की दीनता की आत्मा को नहीं, बल्कि आत्म-सन्तुष्टि की आत्मा को बढ़ावा दिया है । हम समझते हैं कि जो काम अरुचिकर है, वह हमारा कर्त्तव्य है ! क्या यह हमारे प्रभु की मनोभावना की तरह है - "हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से *प्रसन्न* हूँ ।"

जनवरी 30

आज्ञापालन की दुविधा

और शमूएल एली को उस दर्शन की बातें बताने से डरा।
1 शमूएल 3:15।

परमेश्वर हमसे सनसनीखेज़ तरीकों से कभी बात नहीं करता, बल्कि ऐसे तरीकों से जो आसानी से ग़लत समझे जा सकते हैं, और हम कहते है, "पता नहीं यह परमेश्वर की आवाज़ है या नहीं।" यशायाह ने कहा कि "यहोवा दृढ़ता के साथ" उससे बोला यानि परिस्थितियों के दबाव से। परमेश्वर की अनुमति के बिना हमारे जीवन में कुछ नहीं होता। क्या हम हर परिस्थिति में परमेश्वर के हाथ को देखते हैं, या क्या हम इन्हें मामूली घटनाएँ समझते हैं ?

"बोल, प्रभु" कहने की आदत डाल लें और जीवन रोमांचक बन जाएगा। जब-जब परिस्थितियाँ दबाव डालें, आप "बोल, प्रभु" कहें ; सुनने के लिए समय निकालें। ताड़ना अनुशासन के साधन से बढ़कर है, इसका मकसद हैं मुझे उस स्थिति में लाना जहाँ मैं "बोल, प्रभु" कहूँ। उस समय को याद करें जब परमेश्वर ने आपसे बात की थी। क्या आप भूल गए हैं कि उसने क्या कहा था ? क्या यह लूका 11:13 था या 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 था ? जैसे-जैसे हम सुनते हैं, हमारे कान और पैने हो जाते हैं और, यीशु की तरह, हम हर समय परमेश्वर की आवाज़ सुनेंगे।

क्या मैं अपने "एली" को बताऊँ कि परमेश्वर ने मुझे क्या दिखाया है ? आज्ञापालन की दुविधा यहीं आती है। हम नौसिखिया ईश्वर बन कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं। हम कहते हैं, मुझे "एली"की, जो हमारी पहचान के सबसे अच्छे लोगों का प्रतिनिधि है, रक्षा करनी है। परमेश्वर ने शमूएल से यह नहीं कहा कि वह एली को बताए; उसे यह फ़ैसला खुद करना था। परमेश्वर के आपको बुलाने से आपके "एली" को कष्ट हो सकता है, लेकिन अगर आप दूसरे के कष्ट को रोकने की कोशिश करेंगे, तो यह आपकी आत्मा और परमेश्वर के बीच बाधा का कारण बन जाएगा। जब आप दूसरों को दाहिना हाथ काटकर फेंक देने से और आँख निकालकर फेंक देने से रोकते हैं, तो आप खुद जोखिम में पड़ जाते हैं।

परमेश्वर जो फ़ैसला लेने के लिए आपको मजबूर कर रहा है, उसके बारे में किसी और से सलाह-मशविरा न लें। यदि आप किसी से सलाह-मशविरा लेंगे, तो लगभग हमेशा शैतान का साथ देंगे। "मैंने माँस और लहू से सलाह न ली।"

जनवरी 31

क्या आप अपनी बुलाहट को देख रहे हैं ?

सुसमाचार के लिए अलग किया गया।
रोमियों 1:1।

हमारी बुलाहट मुख्य रूप से पवित्र लोग होने के लिए नहीं , बल्कि परमेश्वर के सुसमाचार को सुनाने के लिए है। सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर के सुसमाचार को बनी रहनेवाली एकमात्र वास्तविकता के रूप में जाना जाए। वास्तविकता न तो मनुष्य की अच्छाई है, और न ही पवित्रता, या स्वर्ग या नरक, बल्कि छुटकारा है। इस बात को पहचानना आज मसीही कार्यकर्ता की सबसे महत्त्वपूर्ण ज़रूरत है। कार्यकर्ता होने के नाते, हमें इस सच्चाई के आदी होने की ज़रूरत है कि छुटकारा एकमात्र वास्तविकता है। व्यक्तिगत पवित्रता छुटकारे का फल है, उसका कारण नहीं। यदि हम अपना विश्वास मनुष्य की अच्छाई में, यानि छुटकारे के परिणाम में रखेंगे, तो परीक्षा आने पर हम डूब जाएँगे।

पौलुस ने यह नहीं कहा कि उसने अपने आप को अलग किया, बल्कि "परमेश्वर की, जिस ने ...मुझे ठहराया ..." (गलातियों 1:15)। पौलुस की अपने ही चरित्र में अत्यधिक रुचि नहीं थी। जब तक हमारा ध्यान हमारी अपनी व्यक्तिगत पवित्रता पर लगा रहेगा, तब तक हम छुटकारे की पूरी सच्चाई के पास फटक भी न पाएँगे। मसीही कार्यकर्ता इसलिए असफल होते हैं क्योंकि वे अपनी पवित्रता की लालसा को परमेश्वर को जानने की लालसा से ज़्यादा महत्त्व देते हैं। "मुझसे मेरे चारों तरफ़ मानव जीवन की गन्दगी के प्रति छुटकारे की प्रबल वास्तविकता का सामना करने की माँग न कर, प्रभु। मैं तो वह सब चाहता हूँ जो परमेश्वर मेरे लिए कर सकता है जिससे मैं अपनी ही दृष्टि में और ज़्यादा गुणी ठहरूँ।" इस प्रकार की बातें करना इस सत्य का चिह्न है कि परमेश्वर के सुसमाचार की वास्तविकता ने मुझे छूना शुरू भी नहीं किया है। इसमें परमेश्वर के प्रति अन्धाधुन्ध समर्पण नहीं पाया जाता। परमेश्वर मुझे तब तक छुटकारा नहीं दे सकता जब तक मेरी रुचि सिर्फ़ मेरे अपने चरित्र में ही है। पौलुस अपने बारे में बेसुध है, वह अन्धाधुन्ध होकर समर्पित है, सिर्फ़ एक उद्देश्य के लिए परमेश्वर के द्वारा अलग किया गया - कि वह परमेश्वर का सुसमाचार सुनाए (रोमियों 9:3 देखें)।

फरवरी 1

परमेश्वर का बुलावा

मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, वरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है ।
1 कुरिन्थियों 1:17 ।

यहाँ पौलुस यह कहता है कि परमेश्वर का बुलावा यह है कि हम सुसमचार सुनाएँ । लेकिन याद रखें कि "सुसमाचार" से पौलुस का अर्थ क्या है, यानि हमारे प्रभु यीशु मसीह में छुटकारे की वास्तिकता । हमारा झुकाव इस ओर रहता है कि हम पवित्रीकरण को अपने प्रचार का लक्ष्य बनाएँ । पौलुस व्यक्तिगत अनुभवों की ओर केवल उदाहरण के रूप में इशारा करता है, मामले के अन्त के रूप में नहीं । हमें उद्धार या पवित्रीकरण का प्रचार करने के लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह को ऊँचे पर चढ़ाने के लिए बुलाया गया है (यूहन्ना 12:32 देखें) । यह कहना अन्याय होगा कि यीशु ने छुटकारे के लिए इतना श्रम इसलिए किया ताकि मुझे एक पवित्र जन बनाए । यीशु मसीह ने छुटकारे के लिए श्रम किया ताकि वह सारे संसार को छुटकारा दिलाए और उसे सम्पूर्ण और बहाल करके परमेश्वर के सिंहासन के सामने रखे । यह सत्य कि हम छुटकारे का अनुभव कर सकते हैं, छुटकारे की वास्तविकता के सामर्थ्य को दिखाता है । लेकिन यह अनुभव एक उपोत्पादन है, छुटकारे का लक्ष्य नहीं । यदि परमेश्वर मनुष्य होता, तो लगातार हमारे लिए हमारी उद्धार की और हमारे पवित्रीकरण की विनतियों से कितना तंग आ जाता ! हम अपने लिए या जिस चीज़ से हम छुटकारा पाना चाहते हैं, उसके लिए सुबह से शाम तक कुछ माँगने के द्वारा उसकी शक्ति पर कितना बोझ डालते हैं ! अन्त में जब हम परमेश्वर के छुटकारे की वास्तविकता की तह तक पहुँच जाएँगे, तो उसे छोटी-छोटी शिकायतों से कभी परेशान न करेंगे ।

पौलुस के जीवन की एकमात्र उमंग यह थी कि वह परमेश्वर का सुसमाचार सुनाए । उसने सिर्फ़ एक कारण के लिए घोर निराशाओं, मोह-भंग, क्लेशों, का स्वागत किया - वह कारण यह था कि इन बातों ने उसे परमेश्वर के सुसमाचार की भक्ति में अटल रखा ।

फरवरी 2
बुलावे की विवश करनेवाली शक्ति

यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय।
1 कुरिन्थियों 9:16।

परमेश्वर के बुलावे को सुनने से इनकार करने से सावधान रहें। उद्धार पाए हुए हर व्यक्ति को अपने उद्धार की साक्षी देने के लिए बुलाया गया है। लेकिन उद्धार की साक्षी देना और सुसमाचार सुनाना एक ही बात नहीं है बल्कि उद्धार की साक्षी एक उदाहरण है जिसका सुसमाचार सुनाते समय इस्तेमाल किया जा सकता है। इस पद में पौलुस सुसमाचार सुनाने के बुलावे की विवश करनेवाली शक्ति के द्वारा उसमें पैदा की जानेवाली पीड़ा की ओर इशारा कर रहा है। सुसमाचार सुनाने के सम्बन्ध में पौलुस जो कहता है, उसे कभी भी उन लोगों पर लागू न करें जो उद्धार के लिए परमेश्वर के सम्पर्क में आ रहे हैं। ऐसा कोई और काम नहीं जो उद्धार पाने से ज़्यादा आसान हो, क्योंकि यह पूरी तरह परमेश्वर का काम है - "मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ..." (यशायाह 45:22)। हमारा प्रभु शिष्यता के लिए उन्हीं शर्तों की माँग नहीं करता जिनकी माँग वह उद्धार के लिए करता है। हम उद्धार का दान यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा पाते हैं। लेकिन शिष्यता के साथ एक विकल्प होता है - "*यदि* कोई ..." (लूका 14:26)।

पौलुस के शब्दों का सम्बन्ध मसीह के सेवक बनाए जाने के साथ है, और इस मामले में हमारी अनुमति नहीं माँगी गई है कि हम क्या करेंगे या कहाँ जाएँगे,। परमेश्वर अपने आप को प्रसन्न करने के लिए हमें तोड़ी गई रोटी और उण्डेला गया दाखरस बनाता है। "सुसमाचार के लिए अलग किए जाने" का अर्थ है परमेश्वर के बुलावे को सुनना (रोमियों 1:1)। जब कोई उस बुलावे को सुनना शुरू कर देता है, तब मसीह के नाम के योग्य कष्ट पैदा होता है। अचानक, हर अकांक्षा, जीवन की हर इच्छा, और हर दृष्टिकोण का पूरी तरह अन्त हो जाता है। सिर्फ़ एक चीज़ रह जाती है - "*सुसमाचार के लिए अलग किया जाना*।" हाय उस आत्मा पर जो एक बार बुलावा आने के बाद भी किसी और दिशा में जाने की कोशिश करती है। बाइबल प्रशिक्षण का यह कॉलेज इसलिए अस्तित्व में है ताकि यह जाना जा सके कि क्या परमेश्वर के पास यहाँ कोई ऐसा जन है जिसे सचमुच परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करने की परवाह है : और ताकि यह जाना जा सके कि क्या परमेश्वर आपको इस मकसद से पकड़ता है। और जब परमेश्वर का बुलावा आपको पकड़ लेता है, तो इसका मुक़ाबला करनेवाले दूसरे बुलावों से सावधान रहें।

फरवरी 3

‘जगत का कूड़ा’ बनना

हम ...जगत के कूड़े ...की नाईं ठहरे हैं।
1 कुरिन्थियों 4:13।

ये बढ़ा-चढ़ा कर कहे गए शब्द नहीं हैं। यदि ये शब्द अपने आप को सुसमाचार के सेवक कहनेवाले हम लोगों पर लागू नहीं होते, तो इसका एकमात्र कारण यह नहीं कि पौलुस इनके असली अर्थ को भूल गया या उसने उनका ग़लत अर्थ लगाया, बल्कि यह कि हमें अपनी निजी इच्छाओं का इतना ख़्याल रहता है कि हम अपने आप को “जगत का कूड़ा” नहीं बनने देते। “मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिए ... अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ” (कुलुस्सियों 1:24) पवित्रता या पवित्रीकरण का परिणाम नहीं, बल्कि अभिषेक का सबूत है - परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग किया जाना (रोमियों 1:1)।

“हे प्रियो, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिए तुम पर भड़की है ...इससे ...अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है“ (1 पतरस 4:12)। हम जिन चीज़ों का सामना कर रहे हैं, यदि उन्हें अनोखी बात नहीं समझते, तो यह इसलिए है क्योंकि हम डरपोक और कायर हैं। हम अपनी ही रुचियों और लालसाओं की ओर इतना ज़्यादा ध्यान देते हैं कि हम कीचड़ से बाहर रहते हैं और कहते हैं, “मैं अधीनता में नहीं आऊँगा, मैं नहीं झुकूँगा।” आपको ऐसा करने की ज़रूरत भी नहीं - आप चाहें तो “बाल-बाल” बच सकते हैं। आप परमेश्वर को “सुसमाचार के लिए अलग किए गए ...” व्यक्ति के रूप में आपकी गिनती करने से रोक सकते हैं। या आप कह सकते हैं कि “यदि सुसमाचार का प्रचार हो रहा है तो मुझे इसकी परवाह नहीं कि मुझे ‘जगत के कूड़े’ के समान समझा जा रहा है।” यीशु मसीह का एक सच्चा सेवक वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के सुसमाचार की वास्तविकता के लिए शहीद तक होने को तैयार है। जब एक नैतिक व्यक्ति का अपमान, अनैतिकता, विश्वासघात, या बेईमानी से सामना होता है, तो वह इन अपराधों के प्रति इतनी घृणा महसूस करता है कि वह हताश होकर अपने हृदय को अपराधी के प्रति बन्द कर लेता है। लेकिन परमेश्वर की मुक्तिकारक वास्तविकता का चमत्कार यह है कि सबसे बुरा और घृणित अपराधी भी परमेश्वर के प्रेम की थाह नहीं पा सकता। पौलुस ने यह नहीं कहा कि परमेश्वर ने उसे इसलिए अलग किया ताकि यह दिखा सके कि वह उसे कितना अद्‌भुत व्यक्ति बना सकता है, बल्कि इसलिए ताकि उस में “*अपने पुत्र को प्रगट करे...*” (गलातियों 1:16)।

फरवरी 4

मसीह के सामर्थ्य का विवश करनेवाला गौरव

मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है।
2 कुरिन्थियों 5:14।

पौलुस ने कहा कि वह "मसीह के प्रेम" के द्वारा अभिभूत या अधीन कर लिया गया है, जैसे कि उसके शिकंजे में जकड़ लिया गया हो। बहुत कम लोग यह जानते हैं कि परमेश्वर के प्रेम में जकड़ लिए जाने का असली अर्थ क्या होता है। हमारी प्रवृत्ति ज़्यादातर यह रहती है कि हम सिर्फ़ अपने अनुभवों के वश में रहें। और सब चीज़ों का बहिष्कार करते हुए, पौलुस जिस एकमात्र चीज़ से कसकर पकड़ लिया गया था, वह चीज़ थी परमेश्वर का प्रेम। "मसीह का प्रेम हमें विवश करता है ...।" जब आप किसी व्यक्ति को ऐसे बोलते हुए सुनते हैं, तो यह बिलकुल स्पष्ट होता है। आप जान लेंगे कि परमेश्वर का आत्मा उस व्यक्ति के जीवन में बिना बाधा काम कर रहा है।

जब परमेश्वर के आत्मा से हमारा नया जन्म होता है, तो हमारी साक्षी सिर्फ़ इस पर आधारित होती है कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया, और यह सही भी है। परन्तु पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इसे हमेशा के लिए बदल देगा (प्रेरितों के काम 1:8)। इसके बाद ही आप यह समझना शुरू करेंगे कि जब यीशु ने आगे यह कहा था कि "तुम... मेरे *गवाह* होगे" तो उसका अर्थ क्या था। इसके गवाह नहीं कि यीशु क्या कर सकता है - यह तो बुनियादी और मानी हुई बात है, बल्कि "मेरे गवाह होगे।" जो कुछ भी होता है, हम उसे ऐसे स्वीकार करेंगे मानो वह उसके साथ हो रहा है, चाहे हमें प्रशंसा या दोष मिले, चाहे सताव या इनाम। कोई भी व्यक्ति जो पूरी तरह से यीशु मसीह के सामर्थ्य के गौरव से विवश नहीं है, इस स्थिति पर डटा नहीं रह सकता। यही एकमात्र महत्त्वपूर्ण बात है, फिर भी आश्चर्य की बात तो यह है कि यह वह आखिरी बात है जिसे एक मसीही कार्यकर्ता समझता है। पौलुस ने कहा कि वह परमेश्वर के प्रेम की जकड़ में है और उसने जो कुछ किया, वह इसी कारण किया। लोग उसे पागल या सही दिमाग़वाला समझ सकते थे, उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी। वह एक ही चीज़ के लिए जीता था - कि लोगों को परमेश्वर के आनेवाले न्याय के बारे में समझाए और उन्हें मसीह के प्रेम के बारे में बताए। मसीह के प्रेम के प्रति यह सम्पूर्ण समर्पण ही वह एकमात्र चीज़ है जो आपके जीवन में फलदायक होगी। और इसपर हमेशा परमेश्वर की पवित्रता और उसके सामर्थ्य की छाप होगी, वह आपकी अपनी पवित्रता की ओर ध्यान आकर्षित नहीं करेगी।

फरवरी 5

क्या आप बलिदान के रूप में उण्डेले जाने के लिए तैयार हैं ?

यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लोहू भी बहाना पड़े तौभी मैं आनन्दित हूँ और तुम सब के साथ आनन्द करता हूँ।
फिलिप्पियों 2:17।

क्या आप एक दूसरे विश्वासी के काम के लिए अपना लोहू बहाने के लिए - दूसरों की सेवकाई और दूसरों के विश्वास के लिए अपना जीवन बलिदान करने के लिए तैयार हैं ? या आप यह कहते हैं कि "इस समय मैं अपना लोहू बहाने के लिए तैयार नहीं हूँ ; मैं नहीं चाहता कि परमेश्वर मुझे बताए कि मुझे उसकी सेवा कैसे करनी है ? मैं अपने बलिदान की परिस्थिति को खुद चुनना चाहता हूँ। और मैं चाहता हूँ कि कुछ खास लोग मुझे ध्यान से देखें और शाबाशी दें।"

जब आपको लोगों का सम्मान मिलता है, तब सेवकाई के परमेश्वर के मार्ग पर चलना एक बात है, परन्तु यदि परमेश्वर के ठहराए हुए मार्ग पर चलने का अर्थ यह हो कि आपको दूसरों का "पायदान" बनना पड़े, तो वह दूसरी ही बात होती है। परमेश्वर का उद्देश्य यह हो सकता है कि वह आपको यह कहना सिखाए कि, "मैं दीन होना ...जानता हूँ" (फिलिप्पियों 4:12)। क्या आप इस तरह से बलिदान किए जाने के लिए तैयार हैं ? क्या आप बालटी की एक बूँद से भी कम होने को तैयार हैं - इतने तुच्छ कि जब लोग उनके बारे में सोचते हैं जिनकी आपने सेवा की है, तब भी कोई आपको याद नहीं करता ? क्या आप तब तक देने के लिए और बहाए जाने के लिए तैयार हैं जब तक बिलकुल ख़त्म नहीं हो जाते - सेवा टहल करवाने के लिए नहीं, बल्कि सेवा करने के लिए ? कुछ पवित्र लोग नीच काम नहीं कर सकते, क्योंकि वे समझते हैं कि ऐसी सेवा उनकी शान के विरुद्ध है।

फरवरी 6

क्या आप बलिदान के रूप में उण्डेले जाने के लिए तैयार हैं ?

क्योंकि अब मैं अर्घ की नाई उण्डेला जाता हूँ।
2 तीमुथियुस 4:6।

अब मैं अर्घ की नाई उण्डेला जाता हूँ। यह आपकी इच्छा की क्रिया होगी, भावनाओं की नहीं। परमेश्वर को बताएँ कि आप उसके लिए एक बलिदान के रूप में चढ़ाए जाने के लिए तैयार हैं। फिर, जब इसके परिणाम आते हैं, तो उन्हें बिना शिकायत के स्वीकार करें, चाहे परमेश्वर कुछ भी क्यों न भेजे। परमेश्वर एकान्त में आपको एक संकटकाल में से भेजता है जहाँ कोई दूसरा आपकी मदद नहीं कर सकता। बाहर से आपका जीवन वैसा ही लग सकता है, लेकिन आपकी इच्छा में परिवर्तन हो रहा है। जब आप अपनी इच्छा के मामले में संकटकाल का अनुभव कर चुकें, तो जब यह संकट आपको बाहरी रूप से प्रभावित करना शुरू करेगा, तब आप इसके मूल्य की परवाह करना बन्द कर देंगे। यदि आप पहले अपनी इच्छा के स्तर पर परमेश्वर से नहीं निपटते, तो इसका परिणाम होगा खुद के लिए हमदर्दी पैदा होना।

“यज्ञपशु को वेदी के सींगों से रस्सियों से बान्धो” (भजन संहिता 118:27) वेदी का अर्थ अग्नि है; - यानि भस्म होना, पवित्रीकरण, और एक ही उद्‌देश्य से अलग किया जाना - हर ऐसी अभिलाषा और लगाव को निकालना जो परमेश्वर की ओर न लगा हो। लेकिन इसे *आप* नहीं, बल्कि परमेश्वर निकालता है। आप “यज्ञपशु को वेदी के सींगों से ... बान्धे” और जब आग शुरू होती है, तो ध्यान रखें कि आप आत्मदया में न डूब जाएँ। जब आप आग में से होकर गुज़र जाएँगे, तो ऐसी कोई चीज़ न बचेगी जो आपको परेशान या निराश कर पाएगी। जब अगला संकट आएगा, तो आप जानेंगे कि ये चीज़े पहले की तरह आपको छू नहीं सकतीं। आपके जीवन में कौन सी आग आनेवाली है ?

परमेश्वर को बताएँ कि आप एक बलिदान के रूप में चढ़ाए जाने के लिए तैयार हैं और परमेश्वर साबित करके दिखाएगा कि वह आपकी कल्पना से कहीं बढ़कर है।

फरवरी 7

आत्मिक निराशा

हमें आशा थी ...और इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है।
लूका 24:21।

चेलों की कही हर बात सही थी, लेकिन इन बातों से वे जिन निष्कर्षों पर पहुँचे, वे ग़लत थे। कोई भी बात जिसमें थोड़ी सी भी आत्मिक निराशा पाई जाती है, हमेशा ग़लत होती है। यदि मैं निराश या बोझ से दबा हुआ हूँ, तो यह मेरा दोष है, परमेश्वर या किसी और का नहीं। निराशा दो स्रोतों में से किसी एक से आती है - या तो मैंने अपनी कोई लालसा पूरी की है या फिर मेरी कोई लालसा पूरी नहीं हुई है। दोनों का परिणाम निराशा होती है। लालसा का अर्थ होता है "मुझे यह चीज़ तुरन्त मिलनी चाहिए।" आत्मिक लालसा मुझे मजबूर करती है कि मैं परमेश्वर से उत्तर की माँग करूँ, बजाय इसके कि मैं उत्तर देनेवाले परमेश्वर को खोजूँ। मैं किस बात के लिए भरोसा किए बैठा था कि परमेश्वर उसे पूरा करेगा ? आज का दिन "तीसरा दिन" है और उसने अभी तक वह नहीं किया जिसकी मैं प्रत्याशा कर रहा था ? इसलिए मैं समझता हूँ कि निराश होना या परमेश्वर को दोष देना मेरे लिए उचित है। जब भी हम हठ करते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना का उत्तर दे, हम ग़लत रास्ते पर होते हैं। प्रार्थना का उद्देश्य यह है कि हम परमेश्वर को प्राप्त करें, उत्तर को नहीं। शारीरिक रूप से स्वस्थ होना और साथ ही निराश भी होना असम्भव है क्योंकि निराशा बीमारी का एक चिह्न है। आत्मिक रूप से भी ऐसा ही होता है। आत्मिक निराशा ग़लत होती है और इसके लिए हमेशा हम ही ज़िम्मेदार होते हैं।

परमेश्वर के सामर्थ्य को देखने के लिए हम स्वर्ग से दर्शनों की और धरती को हिला देनेवाली घटनाओं की खोज करते हैं। हमारी निराशा भी इस बात का सबूत है कि हम ऐसा करते हैं। लेकिन हमें यह एहसास नहीं होता कि परमेश्वर हर समय हमारी प्रतिदिन की घटनाओं में और हमारे चारों तरफ़ पाए जानेवाले लोगों में काम कर रहा है। यदि हम सिर्फ़ उसकी आज्ञा मानें और वह काम करें जो उसने हमें सौंपा है, तो हम उसे देखेंगे। परमेश्वर के सबसे अद्भुत रहस्यों में से एक तब खुलता है जब हम यह सीखते हैं कि यीशु मसीह के ईश्वरत्व का एहसास हमें जीवन की सामान्य बातों में ही होता है।

पवित्रीकरण का मूल्य

शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे...।
1 थिस्सलुनीकियों 5:23।

जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें पवित्र करे, तो क्या हम इसके असली अर्थ के मापदण्डों को पूरा करने के लिए तैयार हैं ? हम *पवित्रीकरण* शब्द को उचित आदर नहीं देते। क्या हम पवित्रीकरण का मूल्य चुकाने के लिए तैयार रहते हैं ? इसका मूल्य होगा संसार से सम्बन्धित अपनी सारी रुचियों पर भारी रोक लगाना, और परमेश्वर से सम्बन्धित रुचियों को बड़े पैमाने पर विकसित करना। पवित्रीकरण का अर्थ है परमेश्वर के दृष्टिकोण पर गम्भीर रूप से ध्यान केन्द्रित रखना। इसका अर्थ है अपने शरीर, प्राण, और आत्मा की सारी शक्ति को केवल परमेश्वर के उद्देश्य के लिए बाँधकर रखना। क्या हम सचमुच तैयार हैं कि परमेश्वर हम में वे सारे काम करे जिनके लिए उसने हमें अलग किया ? और जब उसका काम पूरा हो जाए, तो क्या हम अपने आप को परमेश्वर के लिए अलग करने के लिए तैयार हैं जैसा यीशु ने किया ? "उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ..." (यूहन्ना 17:19)। हम में से बहुत से लोगों ने पवित्रीकरण के अनुभव में इसलिए प्रवेश नहीं किया है, क्योंकि हमने पवित्रीकरण के अर्थ को परमेश्वर के दृष्टिकोण से नहीं जाना है। पवित्रीकरण का अर्थ है यीशु के साथ एक किया जाना ताकि जिस स्वभाव ने उसे नियन्त्रण में रखा वही हमें भी नियन्त्रण में रखे। क्या हम सचमुच इसका मूल्य चुकाने के लिए तैयार हैं ? इसका मूल्य हम में वह सब कुछ होगा जो परमेश्वर की ओर से नहीं है।

क्या हम इस पद में पौलुस की इस प्रार्थना के सम्पूर्ण अर्थ में आने के लिए तैयार हैं ? क्या हम यह कहने के लिए तैयार हैं कि "प्रभु, मुझे उतना पवित्र कर दे जितना तू अनुग्रह से बचे एक पापी को कर सकता है" ? यीशु ने प्रार्थना की कि हम उसके साथ एक हो जाएँ जैसे वह पिता के साथ एक है (यूहन्ना 17:21-23 देखें)। एक व्यक्ति के जीवन में पवित्र आत्मा का सबूत होता है यीशु मसीह के साथ हमारी प्रबल पारिवारिक समानता, और उन सब चीज़ों से छुटकारा जो उसके समान नहीं हैं। क्या हम अपने अन्दर पवित्र आत्मा के काम के लिए अपने आप को अलग करने के लिए तैयार हैं ?

फरवरी 9

क्या आप आत्मिक रूप से थककर चूर हो गए हैं ?

सनातन परमेश्वर ...न तो थकता है, न श्रमित होता है।
यशायाह 40:28।

थककर चूर होने का अर्थ यह है कि हमारी जीवन शक्ति बिल्कुल थकी-हारी और बेजान हो गई है। आत्मिक थकान पाप का नहीं, बल्कि सेवा का परिणाम होती है। आप थकान का अनुभव करते हैं या नहीं, यह इसपर निर्भर करता है कि आपकी ज़रूरतें कहाँ से पूरी होती हैं। यीशु ने पतरस से कहा, "मेरी भेड़ों को चरा," लेकिन पतरस को उन्हें खिलाने के लिए कुछ नहीं दिया (यूहन्ना 21:17)। तोड़ी हुई रोटी और उण्डेला हुआ दाखरस बनने की प्रक्रिया का अर्थ यह होता है कि दूसरों के प्राण का आहार आपको बनना पड़ता है जब तक वे खुद परमेश्वर पर भोजन करना नहीं सीख लेते। उनके लिए ज़रूरी होता है कि वे आपको आपके आखिरी कतरे तक खाली कर दें। लेकिन आप अपनी घटी की भरपाई करने का ध्यान रखें, नहीं तो बहुत जल्द आप खुद खाली हो जाएँगे। जब तक दूसरे लोग प्रभु यीशु के जीवन से अपने आप लेना नहीं सीख लेते, उन्हें उसके जीवन को आपके द्वारा लेना होगा। वास्तव में आपको उनकी आपूर्ति का स्रोत बनना पड़ेगा, जब तक वे परमेश्वर से अपना भोजन लेना न सीख लें। परमेश्वर के आभारी होने के कारण हमारा कर्तव्य बनता है कि हम उसके मेम्नों और भेड़ों के लिए, और उसके लिए भी, अपना सर्वोत्तम बनें।

आप जिस ढंग से परमेश्वर की सेवा करते रहे हैं, क्या आप उसके कारण थककर चूर हो गए हैं ? यदि हाँ, तो अपनी अभिलाषाओं और उमंगों को फिर से नया करें और जगाएँ। सेवा करने के अपने कारणों की जाँच करें। क्या आपका स्रोत आपकी अपनी समझ पर आधारित है या यीशु मसीह के छुटकारे के काम पर ? लगातार अपने प्रेम और प्रीति की नींव की ओर पलटकर देखें और याद करें कि आपके सामर्थ्य का स्रोत कहाँ है। आपको यह शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं कि, "हे प्रभु, मैं बिल्कुल थक गया हूँ।" उसने आपको खर्च करने के लिए ही बचाया और पवित्र किया। परमेश्वर के लिए खर्च हो जाएँ, लेकिन याद रखें कि वही आपका भण्डार है। "हमारे सब सोते तुझी में पाए जाते हैं" (भजन संहिता 87:7)।

फरवरी 10

क्या परमेश्वर को देखने की आपकी योग्यता अन्धी हो गई है ?

अपनी आँखें ऊपर उठाकर देखो, किस ने इनको सिरजा ?
यशायाह 40:26।

यशायाह के समय में परमेश्वर के लोगों ने मूर्तियों के चेहरों को देखने के द्वारा परमेश्वर को देखने की अपने मन की योग्यता को अन्धा कर दिया था। लेकिन यशायाह ने उन्हें स्वर्ग की ओर दिखाया, यानि, उसने उन्हें सही ढंग से सोचने और मन की आँखों से देखने की शक्ति का इस्तेमाल करना शुरू करवाया। यदि हम परमेश्वर के सन्तान हैं, तो प्रकृति में हमारे पास एक भारी खज़ाना है। यदि हम मन की आँखों से देखने के लिए अपनी अन्धी समझ का इस्तेमाल शुरू करेंगे, तो हम देखेंगे कि हर हवा में, हर सूर्योदय और सूर्यास्त में, आकाश के हर चिह्न में, खिलनेवाले हर फूल में, मुरझानेवाली हर पत्ती में, परमेश्वर हम तक पहुँचने की कोशिश कर रहा है।

आत्मिक केन्द्रीकरण की असली परख है अपने मन और विचारों को अपने नियन्त्रण में लाने की योग्यता। क्या आपका मन किसी मूर्ती पर केन्द्रित है ? क्या वह मूर्ति आप खुद हैं ? क्या वह आपका कार्य है ? क्या वह आपकी धारणा है कि एक सेवक को क्या होना चाहिए, या आपके उद्धार और पवित्रीकरण का अनुभव है ? यदि हाँ, तो परमेश्वर को देखने की आपकी योग्यता अन्धी हो गई है। कठिनाइयों का सामना करते समय, आप शक्तिहीन होंगे, और आपको उन्हें अन्धकार में झेलना होगा। यदि आपके देखने की शक्ति अन्धी हो गई है, तो अपने निजी अनुभवों को पलट कर न देखें; आपको किसी और चीज़ की नहीं, बल्कि परमेश्वर की ज़रूरत है। अपने आप से, और अपनी मूर्तियों के चेहरों से, और हर ऐसी चीज़ से जो आपकी सोच को अन्धा करती रही है, दूर हो जाएँ। जागें और उस फटकार को स्वीकार करें जो यशायाह ने अपने लोगों को दी, और समझ-बूझकर अपने विचारों और अपनी आँखों को परमेश्वर की ओर लगाएँ।

प्रार्थना में व्यर्थता के एहसास का एक कारण यह है कि हमने अपने मन की आँखों से देखने की शक्ति को खो दिया है। अब हम सोच-समझकर अपने आप को परमेश्वर के सामने रखने की कल्पना भी नहीं कर सकते। वास्तव में ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है कि हम तोड़ी गई रोटी और उण्डेला गया दाखरस मध्यस्थता के क्षेत्र में बने, दूसरों के साथ अपने व्यक्तिगत सम्पर्क में नहीं। मन की आँखों से देखने की शक्ति वह शक्ति है जो परमेश्वर एक पवित्र जन को देता है ताकि वह अपने से परे जा सके और ऐसे सम्बन्धों में रखा जा सके जिसका उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया है।

फरवरी 11

क्या आपका मन परमेश्वर में धीरज धरे हुए है ?

जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करेगा
क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।
यशायाह 26:3।

क्या आपका मन परमेश्वर में धीरज धरे हुए है, या वह कुपोषण का शिकार है ? एक सेवक के जीवन में थकान और निर्बलता के मुख्य कारणों में से एक होता है ध्यान न रखने के कारण होनेवाला मन का कुपोषण। यदि आपने अपने आप को परमेश्वर के सामने रखने के लिए अपने मन का इस्तेमाल कभी नही किया है, तो अभी करना शुरू कर दें। इसकी प्रतीक्षा करना बेकार है कि परमेश्वर आपके पास आएगा। आपको अपने विचारों को और अपनी आँखों को मूर्तियों के चेहरों से हटाना है और परमेश्वर की ओर देखना और उद्धार पाना है (यशायाह 45:22)। आपका मन वह सबसे महान वरदान है जो परमेश्वर ने आपको दिया है और इसे पूरी तरह परमेश्वर को ही समर्पित किया जाना चाहिए। यदि आप कोशिश करते रहें हैं कि "...हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना दें" (2 कुरिन्थियों 10:5) तो परीक्षा की घड़ी आने पर, यह आपके विश्वास की सबसे उपयोगी चीज़ों में से एक चीज़ होगी, क्योंकि ऐसा होने पर, आपका विश्वास और परमेश्वर का आत्मा साथ मिलकर काम करेंगे। जब आपके मन में ऐसे विचार होते हैं जो परमेश्वर के योग्य विचारों को प्रकृति में होनेवाली सारी बातों से जोड़ते हैं - सूर्य का उदय और अस्त होना, चाँद और तारों का चमकना, और मौसमों का बदलना। फिर आपका मन आपकी आवेगशील सोच के बस में कभी नहीं होगा, बल्कि हमेशा परमेश्वर की सेवा में इस्तेमाल किया जाएगा।

"हमने तो अपने पितरों के साथ पाप किया है ...(और) ...मन नहीं लगाया ..." (भजन संहिता 106:6-7)। सो अपनी याददाश्त को कोंचें और तुरन्त जग जाएँ। अपने आप से यह न कहें, "लेकिन परमेश्वर इस समय तो मुझसे बात नहीं कर रहा।" लेकिन उसे आपसे बात करनी चाहिए। याद करें कि आप किसके हैं और किसकी सेवा करते हैं। याद करने के द्वारा अपने आप को प्रोत्साहित करें, और परमेश्वर के लिए आपकी प्रीति दस गुणा बढ़ जाएगी। आपका मन कुपोषण का शिकार नहीं बना रहेगा, बल्कि तेज़ और जोशीला हो जाएगा, और आपकी आशा इतनी चमकदार होगी कि उसका वर्णन करना असम्भव होगा।

क्या आप परमेश्वर की बात सुन रहे हैं ?

वे मूसा से कहने लगे, तू हम से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे; परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएँ।
निर्गमन 20:19।

हम जान-बूझकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते - हम केवल उसकी बात अनसुनी करते हैं। परमेश्वर ने हमें अपनी आज्ञाएँ दी हैं, लेकिन हम उनकी ओर ध्यान नहीं देते - जान-बूझकर उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि हम परमेश्वर से न तो सचमुच प्रेम करते और न ही उसका आदर। "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15)। जब हमें यह एहसास हो जाएगा कि हम लगातार परमेश्वर का निरादर करते रहें हैं, तो उसकी अवहेलना करने के कारण हमारे सिर शर्म से झुक जाएँगे।

"तू हम से बातें कर ... परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे..." परमेश्वर की बात सुनने के बजाय उसके सेवकों की बात सुनना पसन्द करने के द्वारा हम दिखा देते हैं कि हमारे मन में परमेश्वर के लिए कितना कम प्रेम है। हम व्यक्तिगत गवाहियाँ सुनना पसन्द करते हैं, लेकिन हम नहीं चाहते कि परमेश्वर खुद हमसे बात करे। हम इससे इतना क्यों डरते हैं कि परमेश्वर हमसे बात करे ? क्या इसका कारण यह है कि हम जानते हैं कि जब परमेश्वर बोलता है, तो या तो हमें वह करना होगा जो वह हमसे करने को कह रहा है या हमें उससे कहना होगा कि हम आज्ञा नहीं मानेंगे। लेकिन जब परमेश्वर के सेवकों में से कोई हम से बोलता है, तो हम समझते हैं कि आज्ञा मानना ऐच्छिक है, आदेशात्मक नहीं। हम यह कहते हुए प्रत्युत्तर देते हैं कि "यह सिर्फ़ आपका अपना विचार है, हालाँकि मैं इससे इनकार नहीं करता कि आपने जो कहा, वह शायद परमेश्वर का सत्य ही है।"

क्या मैं परमेश्वर पर ध्यान न देने के द्वारा लगातार उसका अपमान करता हूँ, जबकि वह लगातार प्रेम के साथ मुझे अपना बालक समझकर मुझसे व्यवहार करता है ? अन्त में जब मैं उसकी सुनता हूँ, तो जो अपमान मैं उसपर लादता रहा था, वह लौटकर मेरे ऊपर आता है। मेरा प्रत्युत्तर तब यह होता है कि, "प्रभु, मैं इतना मन्दबुद्धि और हठी क्यों था ?" जब हम परमेश्वर की सुन लेते हैं, तो हमेशा यही परिणाम होता है। आखिरकार उसको सुनने का आनन्द उस शर्मिन्दगी के कारण कम हो जाता है जो हम इतनी देर लगाने के कारण महसूस करते हैं।

फरवरी 13

सुनने की भक्ति

शमूएल ने कहा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।
1 शमूएल 3:10।

सिर्फ़ क्योंकि मैंने एक बार परमेश्वर की बात को ध्यान से सुना है, इसका अर्थ यह नहीं कि मैं उसके द्वारा कही हर बात को सुनूँगा। परमेश्वर और उसके द्वारा कही बातों के प्रति अपने हृदय और मन की असंवेदनशीलता के द्वारा मैं परमेश्वर को उसके प्रति अपने प्रेम और आदर की कमी दिखा देता हूँ। यदि मैं अपने मित्र से प्रेम करता हूँ, तो मैं सहजता से समझ जाता हूँ कि वह क्या चाहता है। और यीशु ने कहा, "...तुम मेरे मित्र हो" (यूहन्ना 15:14)। क्या मैंने इस हफ़्ते अपने प्रभु की किसी आज्ञा का उल्लंघन किया है ? यदि मैंने समझा होता कि यह यीशु की आज्ञा है, तो जानबूझ कर उसका उल्लंघन नहीं किया होता। लेकिन हम में से अधिकतर लोग परमेश्वर के प्रति घोर अनादर इसलिए दिखाते हैं क्योंकि हम उसे सुनते ही नहीं। उसका बोलना और न बोलना हमारे लिए बराबर होता है।

मेरे आत्मिक जीवन का लक्ष्य है यीशु मसीह के साथ इतना एक हो जाना कि मैं हमेशा परमेश्वर की सुनूँ और जानूँ कि वह हमेशा मेरी सुनता है (यूहन्ना 11:41)। यदि मैं यीशु मसीह के साथ एक हूँ, तो मैं सुनने की भक्ति के द्वारा परमेश्वर को हर समय सुनता हूँ। एक फूल, एक पेड़, या परमेश्वर का एक सेवक परमेश्वर का सन्देश मुझ तक पहुँचा सकता है। जो बात मुझे सुनने से रोकती है, वह है दूसरी चीज़ों की ओर मेरा ध्यान। यह नहीं कि मैं परमेश्वर की सुनना नहीं चाहता, लेकिन मेरी भक्ति मेरे जीवन के सही क्षेत्रों में नहीं है। मेरी भक्ति चीज़ों के, और यहाँ तक कि सेवा और मेरी अपनी धारणाओं के प्रति है। परमेश्वर कुछ भी बोल ले, मुझे वह सुनाई नहीं देता। परमेश्वर के बालक का रुख हमेशा यह होना चाहिए कि, "कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।" यदि मैंने सुनने की इस भक्ति का विकास नहीं किया है, उसकी परवरिश नहीं की है, तो मैं परमेश्वर की आवाज़ ख़ास समयों पर ही सुन सकता हूँ। बाकी समय मै उसके प्रति बहरा हो जाता हूँ क्योंकि मेरा ध्यान दूसरी चीज़ों पर होता है - वे चीज़ें जो मैं समझता हूँ मुझे करनी हैं। मैं परमेश्वर के बालक का जीवन नहीं जी रहा। क्या मैंने आज परमेश्वर की आवाज़ सुनी है ?

फरवरी 14

सुनने का अनुशासन

जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूँ, उसे उजियाले में कहो; और जो कानोंकान सुने हो,
उसे कोठों पर से प्रचार करो।
मत्ती 10:27।

कभी-कभी परमेश्वर हमें अन्धेरे के अनुभव और अनुशासन में से ले जाता है ताकि हमें अपनी बात सुनना और मानना सिखा सके। गानेवाले पक्षियों को अन्धेरे में गाना सिखाया जाता है, और परमेश्वर हमें "अपने हाथ की आड़ में छिपा रखता है" (यशायाह 49:2) जब तक हम उसकी आवाज़ सुनना नहीं सीख लेते। "जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूँ ..." - जब परमेश्वर आपको अन्धेरे में डालता है, तो ध्यान दें, और जब तक आप वहाँ है, अपना मुँह बन्द रखें। क्या आप इस समय अपनी परिस्थितियों में या अपने जीवन में अन्धेरे में हैं ? यदि हाँ, तो चुप रहें। यदि आप अन्धेरे में अपना मुँह खोलेंगे, तो आप ग़लत मनोदशा में होते हुए बोलेंगे - अन्धेरा सुनने का सही समय होता है। इसके बारे में लोगों से बात न करें; अन्धेरे का कारण जानने के लिए पुस्तकें न पढ़ें; केवल सुनें और आज्ञा मानें। यदि आप दूसरों से बात करेंगे, तो सुन नहीं पाएँगे कि परमेश्वर क्या कह रहा है। जब आप अन्धेरे में होते हैं, तो सुनें, और जब आप वापस उजाले में आ जाएँगे, तो परमेश्वर आपको किसी और के लिए एक बहुमूल्य सन्देश देगा।

अन्धेरे के हर समय के बाद, हमें आनन्द और शर्मिन्दगी का मिला-जुला अनुभव होना चाहिए। यदि सिर्फ़ आनन्द होता है, तो मुझे शक होता है कि क्या हमने सचमुच परमेश्वर की आवाज़ सुनी है। हमें परमेश्वर की आवाज़ सुनने के आनन्द का अनुभव तो होना चाहिए, लेकिन इससे बढ़कर शर्मिन्दगी होनी चाहिए कि हमने उसकी बात सुनने में इतना समय लगा दिया ! फिर हम बोल उठेंगे, "परमेश्वर मुझे जो बताने की कोशिश कर रहा था, उसे सुनने और समझने में मैंने कितना समय लगा दिया !" और फिर भी, परमेश्वर यह कितने दिनों या हफ़्तों से कहता रहा है। लेकिन एक बार जब हम उसकी सुन लेते हैं, तो वह हमें शर्मिन्दगी का दान देता है, जो हृदय में एक कोमलता लाती है जो अब से हमेशा परमेश्वर की सुनेगी।

“क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ ?

हम में से कोई अपने लिए नहीं जीता।
रोमियों 14:7।

क्या यह बात आप पर कभी प्रकट हुई है कि आप परमेश्वर के सामने आत्मिक रूप से दूसरों के लिए ज़िम्मेदार हैं ? उदाहरण के लिए, यदि मैं अपने निजी जीवन में अपने आप को परमेश्वर से हट जाने देता हूँ, तो मेरे आसपास के सब लोगों को परेशानी होती है। हम “स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठते हैं...” (इफिसियों 2:6)। “इसलिए यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं ...”(1 कुरिन्थियों 12:26)। यदि आप शारीरिक स्वार्थ, मानसिक लापरवाही, नैतिक असंवेदनशीलता, या आत्मिक निर्बलता को आने देंगे, तो जितने लोग आपके सम्पर्क में आएँगे, उन्हें कष्ट होगा। लेकिन आप पूछते हैं, “इतने ऊँचे मापदण्डों के अनुसार कौन जी सकता है ?” “हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है ...” और सिर्फ़ परमेश्वर की ओर से (2 कुरिन्थियों 3:5)।

“तुम मेरे गवाह होगे ...” (प्रेरितों के काम 1:8)। हम में से कितने हैं जो अपनी मानसिक, नैतिक, और आत्मिक शक्ति का हर कतरा यीशु मसीह के लिए खर्च करने के लिए तैयार हैं ? जब परमेश्वर *गवाह* शब्द का इस्तेमाल करता है, तो उसका अर्थ यही है। लेकिन इसमें समय लगता है, इसलिए अपने साथ धीरज रखें। परमेश्वर ने हमें पृथ्वी पर क्यों रखा है ? सिर्फ़ इसलिए कि हम उद्धार पाएँ और पवित्र किए जाएँ ? नहीं, बल्कि इसलिए ताकि हम उसकी सेवा के काम में लगे रहें। क्या मैं उसके लिए तोड़ी गई रोटी और उण्डेला गया दाखरस बनने को तैयार हूँ ? क्या मैं लोगों को प्रभु यीशु मसीह के शिष्य बनाने में काम आने के उद्‌देश्य को छोड़ इस ज़माने या इस जीवन के बाकी सब उद्‌देशयों के लिए तुच्छ ठहराए जाने के लिए तैयार हूँ ? परमेश्वर के प्रति मेरा सेवा का जीवन उसे उसके अवर्णनीय अद्‌भुत उद्धार के लिए “धन्यवाद” कहने का तरीका है। याद रखें, कि यदि हम परमेश्वर के काम आने से मना कर देते हैं, तो हमे रद्‌द कर देना उसके लिए बिलकुल सम्भव है - “...ऐसा न हो, कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27)।

फरवरी 16

आत्मिक पहलकदमी की प्रेरणा

मुर्दों में से जी उठ ...।
इफिसियों 5:14।

हर पहलकदमी परमेश्वर की प्रेरणा से नहीं होती। कोई आपसे यह कह सकता है, "उठो और चालू हो जाओ! अपनी अनिच्छा का गला पकड़ो और उसे बाहर फेंक दो - जो करना है, जल्दी करना शुरू करो!" यह साधारण मानवीय पहलकदमी होती है। लेकिन जब परमेश्वर का आत्मा हमारे पास आकर कुछ ऐसे कहता है कि "उठो और काम शुरू करो," तो हम पाते हैं कि यह पहलकदमी प्रेरित है।

जब हमारी उम्र कम होती है, तो हमारे बहुत से स्वप्न और बहुत सी आकांक्षाएँ होती हैं, लेकिन कुछ समय बाद हमें एहसास होता है कि हमारे पास उन्हें पूरा करने की शक्ति नहीं। हम वे काम नहीं कर सकते जिन्हें करने के लिए तरसते हैं, तो हम अपने स्वप्नों और आकांक्षाओं को मरा हुआ समझते हैं। और परमेश्वर को हमसे यह कहने की ज़रूरत होती है कि, "मुर्दों में से जी उठ ...।" जब परमेश्वर अपनी प्रेरणा देता है, तो वह हमारे पास ऐसे आश्चर्यजनक सामर्थ्य के साथ आती है कि हम मुर्दों में से जी उठ पाते हैं और असम्भव काम भी कर डालते हैं। आत्मिक पहलकदमी के बारे में उल्लेखनीय बात यह है कि जीवन और सामर्थ्य हमारे "उठकर चालू हो जाने" के बाद आते हैं। परमेश्वर हमें विजयी जीवन नहीं देता है - वह हमें *विजयी होने के साथ-साथ जीवन* देता है। जब हमें परमेश्वर की प्रेरणा मिलती है, और वह कहता है "मुर्दों में से जी उठ ...," तो हमें खुद उठना पड़ता है; परमेश्वर हमें नहीं उठाता। हमारे प्रभु ने सूखे हुए हाथवाले मनुष्य से कहा, "अपना हाथ बढ़ा" (मत्ती 12:12)। जैसे ही उसने ऐसा किया, उसका हाथ चंगा हो गया। लेकिन पहला कदम उसे लेना था। यदि हम जय पाने के लिए पहला कदम लेंगे, तो पाएँगे कि हमारे पास परमेश्वर की प्रेरणा है, क्योंकि वह तुरन्त हमें जीवन देता है।

फरवरी 17

उदासी के विरुद्ध पहला कदम लेना

उठकर खा।
1 राजा 19:5।

स्वर्गदूत ने एलिय्याह को न तो कोई दर्शन दिया, न ही उसे पवित्रशास्त्र समझाया, और न ही कोई और उल्लेखनीय काम किया। उसने एलिय्याह से एक बहुत ही मामूली काम करने को कहा, यानि, उठकर खाने को। यदि हम कभी उदास नहीं होते, तो हम जीवित अवस्था में नहीं होंगे, क्योंकि सिर्फ़ भौतिक पदार्थ ही उदासी का अनुभव नहीं करते। यदि मनुष्य उदासी का अनुभव कर पाने के योग्य नहीं होते, तो हम में प्रसन्नता और आनन्द का अनुभव करने की क्षमता भी न होती। जीवन में कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिनके कारण हमारा उदास होना स्वाभाविक होता है; उदाहरण के लिए, मृत्यु से सम्बन्धित बातें। जब भी आप अपने आपको जाँचते हैं, उदासी के लिए अपनी क्षमता को हमेशा ध्यान में रखें।

जब परमेश्वर का आत्मा हमारे पास आता है, वह हमें दर्शन नहीं देता, बल्कि सबसे ज़्यादा साधारण काम करने को कहता है। उदासी हमें परमेश्वर की सृष्टि की साधारण चीज़ों से दूर करती है। लेकिन जब भी परमेश्वर बीच में पड़ता है, तो उसकी प्रेरणा सबसे स्वाभाविक, साधारण काम करने के लिए होती है, ऐसी चीज़ें जिनके लिए हमने कल्पना भी नहीं की होगी कि परमेश्वर उनमें हो सकता है, लेकिन जब हम इन्हें करते है, तो हम उसे वहाँ पाते हैं। इस तरह से आनेवाली प्रेरणा उदासी के विरुद्ध एक पहलकदमी है। लेकिन हमें पहला कदम लेना है और इसे परमेश्वर की प्रेरणा में करना है। लेकिन यदि हम कोई काम सिर्फ़ अपनी उदासी पर विजय पाने के लिए करते हैं, तो हम उदासी को और बढ़ा देते हैं। लेकिन जब परमेश्वर का आत्मा सहजता से कुछ करने में हमारी अगुवाई करता है, तो जैसे ही हम यह काम करते हैं, हमारी उदासी ग़ायब हो जाती है। जैसे ही हम उठकर आज्ञा मानते हैं, हम जीवन के एक और अधिक ऊँचे स्तर में प्रवेश कर लेते हैं।

फरवरी 18

निराशा के विरुद्ध पहलकदमी करना

उठो, चलें।
मत्ती 26:46।

गतसमनी के बाग़ में, जब यीशु के चेलों को जागते रहना चाहिए था, वे सो गए, और जब उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हुआ, तो उनके मन में बड़ी निराशा पैदा हुई। कोई ऐसा काम करने का एहसास जिसे बदला न जा सके, हमें निराशा की ओर ले जाता है। हम कहते हैं, "सब ख़त्म हो गया; अब और कोशिश करने का क्या फ़ायदा।" यदि हम सोचते हैं कि इस तरह की निराशा कुछ ही लोगों को होती है, तो ग़लत सोचते हैं। यह एक सामान्य मानुषिक अनुभव है। जब भी हमें यह एहसास होता है कि हमने किसी बढ़िया मौके का फ़ायदा नहीं उठाया, तो हम निराशा में डूब जा सकते हैं। लेकिन यीशु आता है और प्रेम से हम से कहता है, "अब सो लो। वह मौका तो हमेशा के लिए खो गया है और अब तुम उस स्थिति को नहीं बदल सकते। लेकिन उठो, और चलों, हम अगला काम करते हैं।" दूसरे शब्दों में, बीती बात को सोने दो, लेकिन मसीह के मधुर आलिंगन में, और आओ, हम मसीह के साथ अजेय भविष्य में चलें।

इस तरह के अनुभव हम सब के जीवन में आएँगे। हमारे जीवन में असली घटनाओं के कारण, हम निराशा के मौकों का सामना करेंगे, और हम अपने आप को उनसे बाहर नहीं निकाल पाएँगे। इस मामले में, यीशु के चेलों ने ऐसा काम कर दिया था जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता - यीशु के साथ जागते रहने के बजाय, वे सो गए थे। लेकिन हमारा प्रभु उनकी निराशा के विरुद्ध पहला कदम लेते हुए उनके पास आया और कुछ ऐसा कहा, "उठो, और अगला काम करो।" यदि हम परमेश्वर से प्रेरित होते हैं, तो अगला काम क्या होता है ? वह होता है पूरी तरह से उसपर भरोसा रखना और उसके छुटकारे के आधार पर प्रार्थना करना।

बीती हुई असफलता को अपने अगले कदम को कभी हराने न दें।

नीरस काम के विरुद्ध पहलकदमी करना

उठ, प्रकाशमान हो।
यशायाह 60:1।

जब किसी नीरस काम के विरुद्ध पहलकदमी करने का सवाल आता है, तो हमें पहला कदम ऐसे लेना होता है मानो परमेश्वर है ही नहीं। परमेश्वर की मदद के लिए ठहरने का कोई फ़ायदा नहीं - वह हमारी मदद नहीं करेगा। लेकिन जैसे ही हम उठ जाते हैं, हम पाते हैं कि वह वहीं है। जब भी परमेश्वर हमें अपनी प्रेरणा देता है, अचानक पहला कदम लेना एक नैतिक विषय बन जाता है - आज्ञा मानने का मामला। इसके बाद हमें आज्ञा मानने के लिए कार्यवाही करनी होगी, और निकम्मों की तरह पड़े रहना छोड़ना होगा। यदि हम उठ कर प्रकाशमान होंगे, तो नीरस काम अलौकिक रूप से बदल जाएगा।

नीरस काम हमारे चरित्र की सच्चाई का पता लगाने की बेहतरीन परीक्षाओं में से एक है। नीरस काम उन कामों से बिलकुल हटकर होता है जिन्हें हम आदर्श काम मानते हैं। नीरस काम कठिन, तुच्छ, थकानेवाला, ओर गन्दा काम होता है। और जब हम इसका अनुभव करते हैं, तो हमारी आत्मिकता की तुरन्त परीक्षा होती है, और हम जान जाएँगे कि आत्मिक रूप से हम असली हैं या नहीं। यूहन्ना 13 पढ़ें। इस अध्याय में, हम मनुष्य की देह में परमेश्वर को नीरस कामों के सबसे महान उदाहरणों में से एक, यानि मछुओं के पाँव धोते हुए देखते हैं। इसके बाद वह उनसे कहता है, ''यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए; तो तुम्हें भी एक-दूसरे के पाँव धोना चाहिए'' (यूहन्ना 13:14)। यदि नीरस काम को परमेश्वर की ज्योति से प्रकाशमान होना है, तो इसके लिए परमेश्वर की प्रेरणा की ज़रूरत है। कुछ मामलों में, एक व्यक्ति के किसी काम को करने का ढंग उस काम को हमेशा के लिए पवित्र बना देता है। वह एक मामूली, प्रतिदिन का काम हो सकता है, लेकिन जब हम उसे पूरा किए जाने के बाद देखते हैं, तो उसका रूप बदल जाता है। जब प्रभु हमारे द्वारा कुछ करता है, तो वह हमेशा उसके रूप को बदल देता है। हमारे प्रभु ने हमारे मानुषिक माँस को धारण किया और उसके रूप को बदल दिया, और अब हर विश्वासी की देह ''पवित्र आत्मा का मन्दिर'' बन गई है (1 कुरिन्थियों 6:19)।

फरवरी 20

दिवास्वप्न के विरुद्ध पहलकदमी करना

उठो, यहाँ से चलें।
यूहन्ना 14:31।

किसी काम को सही ढंग से करने के बारे में सपने देखना ठीक है, लेकिन उस काम की कल्पनाओं में उस समय डूबे रहना जब हमें काम करने में लगा होना चाहिए, ग़लत है। इस अनुच्छेद में, हम यह प्रत्याशा कर सकते थे कि अपने चेलों से ये अद्‌भुत बातें कहने के बाद, यीशु उनसे यह कहेगा कि वे जाकर उन पर सोच-विचार करें। लेकिन यीशु ने बेकार की कल्पनाओं की अनुमति कभी नहीं दी। जब हमारा उद्‌देश्य यह होता है कि हम परमेश्वर को खोजें और उसकी इच्छा पूरी करें, तो कल्पना करना सही और स्वीकार्य है। लेकिन जब हम उन बातों के बारे में कल्पना करने लगते हैं जो हमें बताई जा चुकी हैं, तो यह अस्वीकार्य है और इसपर परमेश्वर की आशीष कभी नहीं होती। इस तरह के दिवास्वप्न के विरुद्ध परमेश्वर की पहलकदमी हमें कोंचने के द्वारा होती है - ऐसा कोंचना जो हमें आदेश देता है, "वहाँ खड़े या बैठे मत रहो, जाओ !"

यदि परमेश्वर के यह कहने के बाद कि, "तुम आप ...अलग आकर" (मरकुस 6:31), हम चुपचाप परमेश्वर के सामने ठहरे हुए हैं, तो यह उसकी इच्छा जानने के लिए मनन कहलाता है। लेकिन एक बार जब परमेश्वर बोल चुका हो, तो सिर्फ़ कल्पनाओं में डूबे रहने से सावधान रहें। परमेश्वर को अपने सारे स्वप्नों और आनन्दों का स्रोत होने दें, और जाकर वह पूरा करें जिसकी उसने आज्ञा दी है। यदि आपको किसी व्यक्ति से प्रेम है, तो आप बैठकर हर समय उसकी कल्पनाओं में डूबे नहीं रहते - आप जाकर उसके लिए कुछ करते हैं। यीशु मसीह की भी हमसे यही प्रत्याशा है। परमेश्वर के बोलने के बाद दिवास्वप्न देखना इस बात का संकेत है कि हम उसपर भरोसा नहीं रखते।

फरवरी 21

क्या आप सचमुच उससे प्रेम करते हैं ?

उस ने तो मेरे साथ भलाई की है।
मरकुस 14:6।

जिसे हम प्रेम कहते हैं, यदि वह हमें खुद से परे नहीं ले जाता, तो वह असली प्रेम नहीं। यदि प्रेम हमेशा सावधान, बुद्धिमान, समझदार, सयाना होता है और कभी कठोर कार्यवाही नहीं करता, तो हम उसके सही अर्थ से चूक गए हैं। यह प्रीति का वर्णन हो सकता है और यह हमें एक स्नेहिल एहसास दिला सकता है, लेकिन यह प्रेम का सच्चा और सही वर्णन नहीं।

क्या आप कभी परमेश्वर के लिए कुछ करने के लिए विवश हुए हैं, इसलिए नहीं क्योंकि आपने सोचा कि यह काम उपयोगी होगा या इसे करना आपका कर्तव्य है, या इससे आपका अपना कोई फ़ायदा है, बल्कि सिर्फ़ इसलिए क्योंकि आप परमेश्वर से प्रेम करते है ? क्या आपने कभी इस बात को समझा है कि आप परमेश्वर को ऐसी चीज़ें भी दे सकते हैं जो उसके लिए मूल्यवान हैं ? या आप आराम से बैठकर उसके छुटकारे की महानता के ख़्यालों में डूबे हुए हैं, और उन चीज़ों को अनदेखा कर रहे हैं जिनमें आप उसके लिए लगे हो सकते हैं ? मैं उन कार्यों की बात नहीं कर रहा जो अलौकिक और आश्चर्यजनक हैं, बल्कि सामान्य, साधारण मानुषिक कार्यों की - ऐसे कार्य जो परमेश्वर को यह साबित करेंगे कि आप सम्पूर्ण रूप से उसे समर्पित हैं। क्या आपने कभी भी प्रभु यीशु के हृदय में वह पैदा किया जो बैतनिय्याह की मरियम ने किया था ?

कभी-कभी ऐसा लगता है कि परमेश्वर ध्यान से देखता है कि क्या हम सिर्फ़ यह दिखाने के लिए कि उसके प्रति हमारा प्रेम कितना सच्चा है, उसे समर्पण की छोटी-छोटी भेंटे देंगे। परमेश्वर को समर्पित होना व्यक्तिगत रूप से पवित्र होने से बढ़कर है। अपनी व्यक्तिगत पवित्रता की चिन्ता हमें अपने ही ऊपर ध्यान रखने पर विवश कर देती है, और हम परमेश्वर को दुःखी करने के डर से अपने चलने, बोलने और देखने के ढंग की कुछ ज़्यादा ही चिन्ता करने लगते हैं। लेकिन "सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है" जब हम परमेश्वर को समर्पित होते हैं (1 यूहन्ना 4:18)। हमें अपने आप से यह पूछना छोड़ देना चाहिए कि "क्या मैं किसी काम का हूँ ?" और इस सच्चाई को स्वीकार कर लेना चाहिए कि वास्तव में हम उसके किसी काम के नहीं। सवाल काम के होने का नहीं, बल्कि परमेश्वर के लिए मूल्यवान होने का है। जब हम सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर को समर्पित होते हैं, तो वह हर समय हमारे द्वारा काम करता है।

फरवरी 22

आत्मिक धीरज का अनुशासन

चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं परमेश्वर हूँ।
भजन संहिता 46:10।

धीरज धरना सहनशीलता से बढ़कर है। इसमें सहनशीलता के साथ-साथ यह सम्पूर्ण आश्वासन और निश्चितता होती है कि जिस बात की हम प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह होकर रहेगी। धीरज धरने का अर्थ कसकर पकड़े रहने से बढ़कर है, जो सिर्फ़ यह दिखा सकता है कि हमें छोड़ देने पर गिर जाने का डर है। धीरज धरना यह मानने से इनकार करने का हमारा उच्चतम प्रयास है कि हमारे शूरवीर की हार होने वाली है। हमारा सब से बड़ा डर यह नहीं कि हम नरक में डाले जाएँगे, बल्कि यह कि किसी तरह से यीशु मसीह हार जाएगा। इसके अलावा, हमें यह डर भी है कि हमारे प्रभु ने जिन चीज़ों का समर्थन किया - यानि लोगों के बीच में प्रेम, न्याय, क्षमा, और कृपा - अन्त में उनकी जीत नहीं होगी और यह एक ऐसा लक्ष्य बनकर रह जाएगा जिसे पूरा नहीं किया जा सकता। फिर आत्मिक धीरज की पुकार आती है। यह पुकार कि बिना कुछ किए सिर्फ़ कसकर पकड़े ही नहीं रहो, बल्कि समझ-बूझकर काम करो, यह निश्चय जानते हुए कि परमेश्वर कभी नहीं हारेगा।

यदि हमारी आशाएँ इस समय पूरी नहीं हो रही हैं, तो इसका अर्थ यह है कि उन्हें शुद्ध किया जा रहा है। मनुष्य के मन की कोई ऐसी आशा नहीं और कोई ऐसा सपना नहीं जो पूरा नहीं होगा यदि वह भला है। लेकिन परमेश्वर की प्रतीक्षा करना जीवन के सबसे बड़े तनावों में से एक है। "तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिए" (प्रकाशितवाक्य 3:10)।

आत्मिक रूप से धीरज धरते रहें।

फरवरी 23

सेवा करने का दृढ़ निश्चय

मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए,
परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे।
मत्ती 20:28।

सेवा के विषय में पौलुस की धारणा वही थी जो हमारे प्रभु की थी - " मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूँ" (लूका 22:27)। "हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं" (2 कुरिन्थियों 4:5)। हमारे मन में यह विचार घर कर गया है कि यदि कोई व्यक्ति सेवा के लिए बुलाया गया है, तो वह औरों से फ़र्क होने के लिए बुलाया गया है। लेकिन यीशु मसीह के अनुसार, वह दूसरों का "पायदान" बनने के लिए बुलाया गया है - उनका आत्मिक अगुवा होने के लिए, लेकिन उनसे अधिक श्रेष्ठ होने के लिए कभी नहीं। पौलुस ने कहा, "मैं दीन होना भी जानता हूँ ..." (फिलिप्पियों 4:12)। सेवा के विषय में पौलुस की धारणा यह थी कि "मैं तुम्हारे लिए अपने जीवन का आखिरी कतरा भी बहा दूँगा। और मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि लोग मेरी प्रशंसा करते हैं या मुझे दोष देते हैं। जब तक एक भी ऐसा मनुष्य होगा जो यीशु को नहीं जानता, जब तक वह यीशु को नहीं जान लेता, मैं अपने आप को उस व्यक्ति का ऋणि समझूँगा।" लेकिन पौलुस की सेवा के पीछे प्रमुख प्रेरणा दूसरों के लिए प्रेम नहीं, बल्कि उसके प्रभु के लिए उसका प्रेम था। यदि हमारी भक्ति मनुष्यों के निमित्त है, तो हम जल्दी ही हार जाएँगे और हमारा दिल टूट जाएगा, क्योंकि हमें अकसर दूसरों की घोर अकृतज्ञता का सामना करना पड़ेगा। लेकिन यदि परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम हमें प्रेरित करता है, तो हमें चाहे कितनी भी मात्रा में अकृतज्ञता क्यों न मिले, वह हमें एक-दूसरे की सेवा करने से रोक नहीं पाएगी।

दूसरों की सेवा करने के पौलुस के दृढ़ निश्चय का रहस्य था उसका बोध कि मसीह ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया। "मैं तो पहले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला था..." (1 तीमुथियुस 1:13)। दूसरे शब्दों में, लोग पौलुस के साथ चाहे जितना भी बुरा व्यवहार करते, वे उतने विरोध और घृणा का व्यवहार कभी नहीं कर सकते थे जितना उसने खुद यीशु मसीह के साथ किया था। जब हमें यह एहसास हो जाता है कि यीशु ने हमारी तुच्छता, हमारे स्वार्थ, और हमारे पाप की गहराइयों में भी हमारी सेवा की है, तो हमें दूसरों से चाहे जिस चीज़ का भी सामना करना पड़े, वह मसीह की ख़ातिर दूसरों की सेवा के हमारे दृढ़ निश्चय को कभी ख़त्म नहीं कर सकेगी।

बलिदान का आनन्द

मैं तुम्हारी आत्माओं के लिए बहुत आनन्द से खर्च करूँगा, वरन आप भी खर्च हो जाऊँगा।
2 कुरिन्थियों 12:15।

जब परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में डाल दिया जाता है, तो हम दूसरों के जीवन में यीशु मसीह की रुचियों और उद्देश्यों के साथ अपने आप को समझ बूझकर एक करने लगते हैं (रोमियों 5:5)। और यीशु की रुचि हर प्रकार के व्यक्ति में है। मसीही सेवा में हमें कोई अधिकार नहीं कि हम अपनी रुचियों और इच्छाओं के अनुसार चलें। बल्कि यह यीशु मसीह के साथ हमारे सम्बन्ध की सबसे बड़ी परखों में से एक है। बलिदान का आनन्द यह है कि मैं अपने मित्र, यीशु, के लिए अपना प्राण दे दूँ , उसे गँवा नहीं दूँ, बल्कि परमेश्वर के लिए और दूसरों में उसकी रुचियों के लिए, उसे खुशी से और समझ-बूझकर दे दूँ। और मैं ऐसा अपने हित में या अपने उद्देश्य से नहीं करता। पौलुस ने अपना जीवन एक ही उद्देश्य से जीया - कि वह लोगों को यीशु मसीह के लिए जीते। पौलुस ने हमेशा लोगों को अपने प्रभु की ओर आकर्षित किया, लेकिन अपनी ओर कभी नहीं। उसने कहा, "मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूँ, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ" (1 कुरिन्थियों 9:22)।

यदि कोई यह सोचता है कि एक पवित्र जीवन का विकास करने के लिए ज़रूरी है कि वह हमेशा परमेश्वर के साथ अकेला रहे, तो वह दूसरों के काम का नहीं रहता। वह अपने आप की अत्यधिक प्रशंसा करता है और अपने आप को बाकी समाज से अलग कर देता है। पौलुस एक पवित्र जन था, लेकिन वह जहाँ भी गया, वहाँ यीशु मसीह को हमेशा अनुमति थी कि वह उसके जीवन का इस्तेमाल जब और जैसे चाहे करे। हम में से बहुत से लोगों को सिर्फ़ अपने लक्ष्यों की पड़ी रहती है, और यीशु अपनी इच्छा के अनुसार हमारे जीवन का इस्तेमाल नहीं कर सकता। लेकिन यदि हम सम्पूर्ण रूप से उसे समर्पित हैं, तो हमारे पास पूरे करने के लिए अपने कोई लक्ष्य नहीं होते। पौलुस ने कहा कि वह बिना कुढ़े दूसरों का "पायदान" बनना भी जानता था, क्योंकि उसके जीवन की प्रेरणा थी यीशु के प्रति उसकी भक्ति। हमारी भक्ति अकसर यीशु मसीह के प्रति नहीं, बल्कि उन चीज़ों के प्रति होती है जो हमें उतनी आत्मिक स्वतन्त्रता देती हैं जितनी हमें मसीह के प्रति सम्पूर्ण समर्पण नहीं देता। पौलुस का उद्देश्य स्वतन्त्रता कभी न था। बल्कि उसने कहा, "मैं यहाँ तक चाहता था, कि अपने भाइयों के लिए ...आप ही मसीह से शापित हो जाता" (रोमियों 9:3)। क्या पौलुस अपनी तर्क करने की योग्यता को खो बैठा था ? बिलकुल नहीं ! एक ऐसा व्यक्ति होने के नाते जिसे प्रेम हो गया था, यह बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात नहीं है। और पौलुस को यीशु मसीह से प्रेम हो गया था।

सेवा की कंगाली

जितना बढ़कर मैं तुमसे प्रेम रखता हूँ, उतना ही घटकर तुम मुझ से प्रेम करोगे।
2 कुरिन्थियों 12:15।

साधारण मानवीय प्रेम बदले में कुछ पाने की प्रत्याशा करता है। लेकिन पौलुस कह रहा है, "मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम मुझ से प्रेम रखते हो या नहीं। मैं तो वैसे भी कंगाल हो जाने को तैयार हूँ ; ग़रीबी से पीड़ित होने को तैयार हूँ , सिर्फ़ तुम्हारे कारण ही नहीं, बल्कि इसलिए भी कि तुम्हें परमेश्वर के पास ला सकूँ।" "तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ" (2 कुरिन्थियों 8:9)। और सेवा के विषय में पौलुस की धारणा वही थी जो हमारे प्रभु की थी। उसे यह परवाह नहीं थी कि उसके लिए इसकी कीमत कितनी बड़ी होगी - वह उसे चुकाने को तैयार था। पौलुस के लिए यह एक आनन्दमय बात थी।

परमेश्वर के सेवक के विषय में संस्थागत कलीसिया की धारणा यीशु मसीह की धारणा से बिलकुल मेल नहीं खाती। यीशु की धारणा यह है कि हम दूसरों के सेवक होने के द्वारा उसकी सेवा करें। यीशु मसीह ने तो समाजवादियों को भी मात दे दी थी। उसने कहा कि जो उसके राज्य में सबसे बड़ा होगा, वह सबका सेवक होगा (मत्ती 23:11 देखें)। एक पवित्र जन की असली परख यह नहीं कि वह सुसमाचार का प्रचार करे, बल्कि यह कि वह चेलों के पाँव धोने जैसा काम करने को तैयार हो - यानि ऐसे काम करने के लिए तैयार होना जो मनुष्य की दृष्टि में महत्त्वहीन लग सकते हैं, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में सब कुछ हैं। यह पौलुस का आनन्द था कि वह दूसरों के जीवन में परमेश्वर की रुचि के लिए अपना जीवन खर्च करे, और उसे यह परवाह नहीं थी कि उसे इसकी क्या कीमत चुकानी पड़ेगी। लेकिन हम सेवा में जाने से पहले अपनी व्यक्तिगत और आर्थिक चिन्ताओं के बारे में सोचने के लिए रुक जाते हैं - "यदि परमेश्वर मुझे वहाँ भेजना चाहेगा, तो क्या होगा ? मेरे वेतन का क्या होगा ? वहाँ का मौसम कैसा होता है ? मेरी देखभाल कौन करेगा? आखिर एक व्यक्ति को इन सब बातों के बारे में सोचना तो पड़ता ही है।" ये सब बातें इसका संकेत देती हैं कि परमेश्वर की सेवा करने के मामले में हमारे कुछ प्रतिबन्ध हैं। लेकिन पौलुस प्रेरित की कोई शर्तें नहीं थीं। पौलुस ने अपने जीवन को नए नियम के पवित्र जन के विषय में यीशु मसीह की धारणा पर केन्द्रित किया, यानि ऐसा व्यक्ति नहीं जो केवल सुसमाचार का प्रचार ही करता है, बल्कि ऐसा व्यक्ति जो दूसरों के लिए यीशु मसीह के हाथों में तोड़ी गई रोटी और उण्डेला गया दाखरस बन जाता है।

फरवरी 26

यीशु के विषय में हमारे सन्देह

स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं,
और कूआँ गहरा है।
यूहन्ना 4:11।

क्या आपने कभी अपने आप से ऐसा कहा है कि, "मैं परमेश्वर के वचन की अद्भुत सच्चाइयों से तो बहुत प्रभावित हुआ हूँ, लेकिन परमेश्वर मुझसे यह प्रत्याशा तो नही कर सकता कि मै उन्हें अपने जीवन में लागू करूँ।" जब यीशु मसीह के गुणों और उसकी योग्यताओं के आधार पर उसका सामना करने का सवाल आता है, तो हमारे व्यवहार आत्मिक श्रेष्ठता दिखाते हैं। हम सोचते हैं कि उसके आदर्श उच्च कोटि के हैं और वे हमें प्रभावित करते हैं, लेकिन हम यह मानते हैं कि वह वास्तविकता से कोसों दूर है - कि वह जो कहता है, उसे वास्तव में नहीं किया जा सकता। हम में से हर जन अपने जीवन के किसी न किसी क्षेत्र में यीशु के बारे में ऐसा सोचता है। यीशु के बारे में इन सन्देहों या आशंकाओं की शुरुआत तब होती है जब हम परमेश्वर के साथ अपने व्यवहार की बात करते हैं, और दूसरे लोग हमसे पूछते हैं, "तुम गुज़ारा करने के लिए पैसे कहाँ से लाओगे ? तुम जीओगे कैसे ? तुम्हारी देखभाल कौन करेगा ?" या हमारे सन्देह हमारे ही भीतर शुरू होते हैं जब हम यीशु को बताते हैं कि हमारी परिस्थितियाँ उसके लिए कुछ ज़्यादा ही कठिन हैं। हम कहते हैं, "यह कहना कि 'परमेश्वर पर भरोसा रखो' तो बहुत आसान है, लेकिन एक व्यक्ति को जीना भी तो है; और इसके अलावा, यीशु के पास जल भरने को कुछ है भी तो नहीं - हमें ये सब चीज़े देने का उसके पास क्या साधन है ?" और यह कहकर कि "नहीं, मुझे यीशु के बारे में कोई सन्देह नहीं, सन्देह है तो सिर्फ़ अपने बारे में," धार्मिक धोखे के प्रदर्शन से सावधान रहें। यदि हम ईमानदार हैं, तो हम मान लेंगे कि हमें अपने बारे में कभी सन्देह या आशंका नहीं होती, क्योंकि हम अच्छी तरह जानते हैं कि हममें क्या करने की योग्यता है और क्या करने की योग्यता नहीं है। लेकिन हमें यीशु के बारे में सन्देह ज़रूर हैं। और यह सोचकर हमारे घमण्ड को ठेस पहुँचती है कि जो हम नहीं कर सकते, उसे वह कर सकता है।

मेरे सन्देह इस तथ्य से आते हैं, कि मैं अपने भीतर पता चलाना चाहता हूँ कि जो वह कहता है उसे कैसे पूरा करेगा। मेरी आशंकाओं का स्रोत मेरी अपनी हीनता होती है। यदि मैं अपने आप में ये सन्देह देखता हूँ, तो मुझे इन्हें प्रकाश में लाकर खुल्लमखुल्ला स्वीकार कर लेना चाहिए - "प्रभु, मुझे तेरे विषय में सन्देह था। मैंने तेरी योग्यताओं में नहीं, बल्कि अपनी योग्यताओं पर भरोसा रखा है। और मैंने तेरे सर्वशक्तिमान सामर्थ्य के बारे में अपनी सीमित समझ को अलग करते हुए उसपर विश्वास नहीं किया है।"

फरवरी 27

यीशु की अशक्त कर दी गई सेवकाई

तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया ?
यूहन्ना 4:11।

"कूआँ गहरा है" - उससे कहीं ज़्यादा गहरा जितना सामरी औरत ने सोचा ! (यूहन्ना 4:11)। मनुष्य के स्वभाव और मनुष्य के जीवन की गहराइयों के बारे में सोचें; अपने अन्दर के "कूओं" की गहराइयों के बारे में सोचें। क्या आप यीशु की सेवकाई को इतना सीमित या अशक्त कर रहे हैं कि वह आपके जीवन में काम नहीं कर पा रहा ? मान लें कि आपके हृदय में चोट या परेशानी का एक गहरा "कूआँ" है, और यीशु आपके पास आकर कहता है, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो ..." (यूहन्ना 14:1)। क्या आप सन्देह प्रकट करते हुए उत्तर देंगे, "लेकिन, प्रभु, कूआँ बहुत गहरा है, और तू भी उसमें से शान्ति और चैन नहीं निकाल सकता।" देखा जाए, तो ऐसा कहना सही भी है। यीशु मनुष्य के स्वभाव के कूओं से कुछ नहीं निकालता - वह ऊपर से नीचे लाता है। हम इस्राएल के पवित्र को सीमित कर देते हैं सिर्फ़ उन बातों को याद करके जो हमने बीते दिनों में उसे हमारे लिए करने दी हैं, और यह कहकर भी कि, "मैं परमेश्वर से यह काम करने की प्रत्याशा तो कभी नहीं कर सकता।" यीशु के चेले होने के नाते, हमें विश्वास करना चाहिए कि जो बात उसके सामर्थ्य की सीमा तक पहुँच जाती है, वह उसी बात को कर दिखाएगा। जैसे ही हम भूल जाते हैं कि वह सर्वशक्तिमान है, हम अपने अन्दर उसकी सेवकाई को निर्बल कर देते हैं। निर्बलता हम में है, उस में नहीं। हम यीशु के पास आते हैं ताकि वह हमारा शान्ति देनेवाला और हमदर्द हो, लेकिन उसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर मानते हुए उसके पास आने से कतराते हैं।

हम में से कुछ लोग मसीहियत के इतने घटिया नमूने इसलिए हैं क्योंकि हम यह पहचानने से चूक गए हैं कि मसीह सर्वशक्तिमान है। हमारे पास मसीही गुण और अनुभव हैं, लेकिन यीशु मसीह के प्रति त्याग या समर्पण नहीं है। जब हम कठिन परिस्थितियों में पड़ जाते हैं, तो यह कहकर मसीह की सेवकाई को अशक्त कर देते हैं कि, "वह इस मामले में कुछ नहीं कर सकता।" हम अपने कूएँ की थाह तक पहुँचने के लिए संघर्ष करते हैं, अपने लिए पानी निकालने की कोशिश करते हैं। हाथ पर हाथ धर कर बैठकर यह कहने से सावधान रहें कि "यह तो हो ही नहीं सकता।" यदि आप यीशु की ओर देखेंगे, तो जानेंगे कि यह ज़रूर हो सकता है। आपकी अपूर्णता का कूआँ तो बहुत गहरा है, लेकिन अपने आप पर से दृष्टि हटाकर परमेश्वर की ओर देखें।

फरवरी 28

क्या तुम अब विश्वास करते हो ?

अब हम जान गए हैं, ... यीशु ने उन से कहा, क्या तुम अब प्रतीति करते हो ?
यूहन्ना 15:30-31।

"अब हम विश्वास करते हैं ...।" लेकिन यीशु पूछता है, "क्या (सचमुच)... करते हो ? देखो, वह घड़ी आती है ...कि तुम...मुझे अकेला छोड़ दोगे" (16:31-32)। बहुत से मसीही सेवकों ने यीशु मसीह को अकेला छोड़ दिया है और फिर भी उसकी सेवा करने की कोशिश की है, या तो कर्तव्य पालन करने के लिए, या इसलिए क्योंकि वे अपनी समझ के फलस्वरूप इसे ज़रूरत समझते हैं। वास्तव में, इसका कारण यीशु के पुनरुत्थान के जीवन का अभाव है। अपनी धार्मिक बुद्धि का सहारा लेने के द्वारा हमारा प्राण परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध से बाहर हो गया है (नीतिवचन 3:5-6)। यह जानबूझकर पाप करने के बराबर नहीं है, और इसका कोई दण्ड भी नहीं ठहराया गया है। लेकिन जब एक व्यक्ति को एहसास होता है कि उसने यीशु मसीह के बारे में अपनी समझ में कैसे रुकावट डाली है, और अपने लिए अनिश्चितताएँ, दुःख, और कठिनाइयाँ पैदा कर दी हैं, तो उसे शर्मिन्दगी और पश्चात्ताप के साथ वापस आना पड़ता है।

हम यीशु के पुनरुत्थान के जीवन पर अभी जितना भरोसा रखते हैं, उससे कहीं गहरे स्तर पर भरोसा रखने की ज़रूरत है। हमें हर बात में परमेश्वर की योजना जानने की आदत डाल लेनी चाहिए, बजाय इसके कि हम अपनी सामान्य बुद्धि के आधार पर फ़ैसले लेने के बाद परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे फ़ैसलों पर आशीष दे। ऐसा करना उसके कार्य क्षेत्र में नहीं है, और ऐसे फ़ैसले वास्तविकता से अलग होते हैं। यदि हम कोई काम कर्तव्य पालन करने के उद्देश्य से करते हैं, तो हम एक ऐसे मापदण्ड के अनुसार चल रहे हैं जो यीशु मसीह का मुक़ाबला करता है। हम घमण्डी बन जाते हैं, और सोचते हैं कि हम जानते हैं हमें हर परिस्थिति में क्या करना चाहिए। यीशु मसीह के पुनरुत्थान के जीवन को सिंहासन पर बैठाने के बजाय हम अपने कर्तव्य पालन को अपने जीवन के सिंहासन पर बैठा देते हैं। हमें अपने विवेक या अपने कर्तव्य पालन की ज्योति में नहीं, बल्कि "*जैसा वह ज्योति में है*, वैसे ही हमें भी ज्योति में चलने के लिए कहा गया है। जब हम कर्तव्य पालन की भावना से कोई काम करते हैं, तो दूसरों को अपने काम के कारण बताना आसान होता है। लेकिन जब हम प्रभु की आज्ञाकारिता के कारण कोई काम करते हैं, तो उसका कोई स्पष्टीकरण नहीं होता। इसीलिए एक पवित्र जन इतनी आसानी से खिल्ली और ग़लतफ़हमी का शिकार हो जाता है।

फरवरी 29

आप क्या चाहते हैं कि प्रभु आपके लिए करे ?

तू क्या चाहता है, कि मैं तेरे लिए करू ?
लूका 18:41।

क्या आपके जीवन में कोई ऐसी बात है जो न केवल आपको परेशान करती है, बल्कि आपको दूसरों की परेशानी का कारण भी बना देती है ? यदि है, तो यह हमेशा ऐसी बात होती है जिससे आप खुद नहीं निपट सकते। "जो आगे जाते थे, वे उसे डांटने लगे, कि चुप रह; परन्तु वह और भी चिल्लाने लगा ..." (18::39)। परेशानी में तब तक डटे रहें जब तक कि खुद प्रभु से आपका आमना-सामना न हो जाए। व्यावहारिक बुद्धि को ईश्वर का स्थान न दें। गड़बड़ी पैदा करने के बजाय चुपचाप बैठे रहने के द्वारा हम अपनी व्यावहारिक बुद्धि को ईश्वर का स्थान दे देते हैं। जब यीशु हम से पूछता है कि हमारा सामना करनेवाली उस अविश्वसनीय समस्या के बारे में हम क्या चाहते हैं कि वह हमारे लिए करे, तो याद रखें कि वह व्यावहारिक बुद्धि के अनुकूल तरीकों से नहीं वरन् अलौकिक तरीकों से काम करता है।

जो हमने बीते दिनों में उसे हमारे लिए करने दिया है, ज़रा देखें कि उन्हें याद करने के द्वारा हम प्रभु को कैसे सीमित कर देते हैं। हम कहते हैं, "मैं हमेशा वहाँ असफल हुआ, और हमेशा होता रहूँगा।" इसके फलस्वरूप, हम जो चाहते हैं, वह माँगते नहीं, बल्कि हम सोचते हैं, "परमेश्वर से यह माँगना कि वह यह काम करे, सरासर मूर्खता है।" यदि यह एक असम्भावना है, तो यही वह चीज़ है जो हमें उससे माँगनी चाहिए। यदि यह एक असम्भव चीज़ नहीं है, तो यह एक वास्तविक परेशानी भी नहीं है। और परमेश्वर वह करेगा जो बिलकुल असम्भव है।

इस मनुष्य को अपनी दृष्टि मिल गई। लेकिन आपके लिए सबसे असम्भव चीज़ यह है कि आप प्रभु के साथ इतनी घनिष्ठता से एक हो जाएँ कि आपके पुराने जीवन का कुछ भी बचा न रहे। यदि आप परमेश्वर से यह माँगेंगे, तो वह अवश्य करेगा। लेकिन आपको उसे सर्वशक्तिमान मानने के स्थान पर आना होगा। हम विश्वास सिर्फ़ यीशु की कही बातों को मानने के द्वारा नहीं पाते, बल्कि उससे ज़्यादा, खुद यीशु पर भरोसा रखने के द्वारा पाते हैं। यदि हम सिर्फ़ उसकी ओर देखें जो वह कहता है, तो हम कभी विश्वास नहीं करेंगे। जब हम यीशु को देख लेते हैं, तो वे असम्भव काम जो वह हमारे जीवन में करता है, साँस लेने की तरह सहज हो जाते हैं। जो पीड़ा हम सहते हैं, वह हमारे अपने हृदय के छिछलेपन का फल है। हम विश्वास नहीं करेंगे, नाँव को किनारे से बाँधनेवाली रस्सी को नहीं काटेंगे - हम चिन्ता करना ज़्यादा पसन्द करते हैं।

हृदय को भेदनेवाला प्रश्न

क्या तू मुझसे प्रीति रखता है ?
1 यूहन्ना 21:17 ।

इस हृदय-भेदक प्रश्न के प्रति पतरस का उत्तर कुछ ही दिन पहले किए गए उसके साहसपूर्ण दावे से कितना फ़र्क है जब उसने कहा था कि "यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी मैं तुझसे न मुकरूँगा !" (मत्ती 26:35; पद 33-34 भी देखें) । हमारी प्राकृतिक व्यक्तिकता हमारी भावनाओं का दावा और उसकी घोषणा करती है । लेकिन हमारे भीतरी आत्मिक व्यक्तित्व में सच्चे प्रेम का पता सिर्फ़ यीशु के इस प्रश्न से ठेस पहुँचने के अनुभव से लगाया जा सकता है । पतरस यीशु से वैसे ही प्रेम करता था जैसे कोई भी मनुष्य प्राकृतिक रूप से एक अच्छे व्यक्ति से करता है । लेकिन यह सिर्फ़ भावनात्मक प्रेम होता है । यह हमारे स्वभाव की गहराइयों को छू सकता है, लेकिन यह भेदन करते हुए एक व्यक्ति की आत्मा तक कभी नहीं पहुँच सकता । सच्चा प्रेम कभी भी सिर्फ़ दावे नहीं करता । यीशु ने कहा, " जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा (यानि न केवल अपने वचनों से बल्कि अपने सारे कर्मों से अपने प्रेम की घोषणा करेगा), उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने मान लेगा" (लूका 12:8) ।

यदि हम अपने आप से सम्बन्धित हर धोखे का सामना करने की ठेस का अनुभव नहीं कर रहे हैं, तो इसका अर्थ यह है कि हमने अपने जीवन में परमेश्वर के वचन के कार्य में बाधा डाली है । परमेश्वर का वचन हमें जितनी ठेस पहुँचा सकता है, उतनी ठेस पाप भी कभी नहीं पहुँचा सकता क्योंकि पाप महसूस करने की शक्ति को मन्द कर देता है । लेकिन प्रभु का यह प्रश्न हमारी संवेदनशीलता को उस हद तक बढ़ाता है कि यीशु के द्वारा पहुँचाई गई ठेस उस हर दर्द से कहीं बढ़कर होती है जिसकी कल्पना की जा सकती हो । यह न केवल शारीरिक स्तर पर ठेस पहुँचाती है, बल्कि गहरे आत्मिक स्तर पर भी । "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल ...और जीव और आत्मा को. गांठ-गांठ और गूदे-गूदे को ...छेदता है " - इस हद तक कि कोई धोखा बचा नहीं रह सकता (इब्रानियों 4:12) । जब प्रभु हमसे यह प्रश्न पूछता है, तो उचित ढंग से सोचना और प्रत्युत्तर देना असम्भव हो जाता है, क्योंकि जब प्रभु हमसे प्रत्यक्ष रूप से बोलता है, तो बहुत ज़्यादा दर्द होता है । इससे इतनी ज़बरदस्त ठेस पहुँचती है कि हमारे जीवन का जो भी अंग उसकी इच्छा के बाहर होता है, वह उस दर्द को महसूस कर सकता है । प्रभु के बालक उसके वचन के दर्द को पहचानने से कभी नहीं चूकते, बल्कि जैसे ही यह दर्द महसूस होता है, उसी घड़ी परमेश्वर हम पर अपने सत्य को प्रकट करता है ।

मार्च 2

क्या आपने प्रभु के द्वारा दिए गए दर्द को महसूस किया है ?

उसने तीसरी बार उससे कहा, '...क्या तू मुझसे प्रीति रखता है ?'
यूहन्ना 21:17 ।

क्या आपने कभी प्रभु के द्वारा दिए गए दर्द को अपने अस्तित्व के बिलकुल मध्य में, अपने जीवन के सबसे संवेदनशील क्षेत्र की गहराई में महसूस किया है ? न तो शैतान कभी वहाँ दर्द देता है, और न ही पाप या मनुष्य की भावनाएँ । हमारे अस्तित्व के उस भाग तक परमेश्वर के वचन को छोड़ और कुछ नहीं पहुँच सकता । "पतरस उदास हुआ, कि उस ने उसे तीसरी बार ऐसा कहा: कि क्या तू मुझ से प्रीति रखता है ?" फिर भी, उसे यह एहसास हो गया कि अपने व्यक्तिगत जीवन के असली केन्द्र में वह यीशु से प्रेम करता था और फिर उसकी समझ में आने लगा कि इतनी सहनशीलता से यीशु के प्रश्न करने का अर्थ क्या था । पतरस के मन में अब कोई भी सन्देह बाकी नहीं रहा था । उसे फिर धोखा नहीं दिया जा सकता था । और अब जोश में दिए गए उत्तर की, या तुरन्त की जानेवाली कार्यवाही की या भावनाओं के प्रदर्शन की ज़रूरत नहीं थी । उसके लिए यह जानना कि वह प्रभु से कितना प्रेम करता है एक प्रकटीकरण था और उसने विस्मय से कहा, "हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है... ।" पतरस को दिखाई देने लगा था कि वह यीशु से सचमुच कितना प्रेम रखता था, और यह कहने की ज़रूरत नहीं थी कि, "मेरे प्रेम के सबूत में यह देख या वह देख ।" पतरस को यह एहसास होने लगा था कि वह यीशु से सचमुच कितना प्रेम करता था; कि उसकी आँखें यीशु मसीह पर ऐसे गड़ी हुई थीं कि उसे ऊपर स्वर्ग में या नीचे पृथ्वी पर और कोई नहीं दिखाई दे रहा था । लेकिन उसे इसका पता तब तक नहीं चला जब तक कि प्रभु के ये कुरेदने और दर्द पहुँचानेवाले प्रश्न नहीं पूछे गए । प्रभु के प्रश्न हमेशा मेरा सच्चा अस्तित्व मुझपर प्रकट करते हैं ।

पतरस के साथ यीशु मसीह की धैर्यपूर्ण स्पष्टवादिता और निपुणता क्या कमाल की थी ! जब तक सही समय नहीं आ पहुँचता, हमारा प्रभु कभी प्रश्न नहीं पूछता । कभी-कभार, लेकिन शायद हम में से हर एक के जीवन में कम से कम एक बार, वह हमें ऐसी परिस्थिति में ले आएगा जहाँ वह हमें अपने भेदनेवाले प्रश्नों से दर्द पहुँचाएगा । तब हमें यह एहसास होगा कि हम उससे इतना गहरा प्रेम रखते हैं जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ।

मार्च 3

उसके द्वारा सौंपा गया कार्यभार

मेरी भेड़ों को चरा ।
यूहन्ना 21:17 ।

यह उभरता हुआ प्रेम है । परमेश्वर का प्रेम सृजा गया प्रेम नहीं है - यह उसका स्वभाव है । जब हम पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह के जीवन को ग्रहण करते हैं, तो वह हमें परमेश्वर के साथ एक कर देता है ताकि उसका प्रेम हम में प्रदर्शित हो । हमारे अन्दर वास करनेवाले पवित्र आत्मा का लक्ष्य सिर्फ़ यह नहीं कि वह हमें परमेश्वर के साथ एक करे, बल्कि इस तरह से करे कि हम परमेश्वर पिता के साथ वैसे ही एक हों जैसे यीशु उसके साथ एक था । और यीशु मसीह की पिता के साथ कैसी एकता थी ? पिता के साथ उसकी ऐसी एकता थी कि जब उसके पिता ने उसे हमारे लिए बहाए जाने के लिए पृथ्वी पर भेजा, तो वह आज्ञाकारी रहा । और वह हमसे कहता है, "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ" (यूहन्ना 20:21) ।

प्रभु के भेदनेवाले प्रश्न के साथ आनेवाले प्रकटीकरण के कारण, पतरस को अब यह एहसास होता है कि वह उससे सचमुच प्रेम रखता है । प्रभु का अगला मुद्दा है - "अपने आप को बहा दे । इसकी गवाही नहीं दे कि तू मुझसे कितना प्रेम रखता है, और न ही उस प्रकटीकरण की चर्चा कर जो तुझे अभी मिला है, केवल 'मेरी भेड़ों को चरा ।' " यीशु की बहुत ही विचित्र भेड़ें हैं: कुछ जो मैली-कुचैली और गन्दी हैं, कुछ जो परेशान करनेवाली या महत्वाकांक्षी हैं, और कुछ जो भटक गई हैं ! लेकिन परमेश्वर के प्रेम को ख़त्म करना असम्भव है, और यदि मेरा प्रेम मेरे अन्दर वास करनेवाले परमेश्वर के आत्मा से बहता है, तो उसे ख़त्म करना भी असम्भव है । परमेश्वर का प्रेम मेरे व्यक्तित्व के कारण पहले से बनी हुई मेरी धारणाओं की ओर ध्यान नहीं देता । यदि मैं अपने प्रभु से प्रेम रखता हूँ, तो मुझे अपनी स्वाभाविक भावनाओं के अनुसार चलने का अधिकार नहीं - मुझे उसकी भेड़ों को चराना है । हम उस कार्यभार से छुटकारा नहीं पाएँगे जो उसने हमें सौंपा है । अपनी निजी स्वाभाविक भावनाओं, सहानुभूतियों, या समझ के अनुसार चलने के द्वारा परमेश्वर के प्रेम की नकल करने से सावधान रहें । ऐसा करने से परमेश्वर के सच्चे प्रेम की निन्दा और उसका अपमान होता है ।

मार्च 4

क्या यह मेरे लिए सच है ?

मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं ...।
प्रेरितों के काम 20:24 ।

बिना दर्शन के परमेश्वर की सेवा करना और बिना बुलाहट के उसके लिए काम करना ज़्यादा आसान होता है, क्योंकि ऐसे में आपको इस बात से परेशानी नहीं होती कि परमेश्वर क्या चाहता है । व्यावहारिक बुद्धि और उसपर चढ़ी मसीही भावनाओं की परत, आपका मार्गदर्शक होती है । संसार के दृष्टिकोण से आप ज़्यादा समृद्ध और सफल होंगे, और आपके पास ज़्यादा फ़ुरसत होगी, यदि आप परमेश्वर की बुलाहट को कभी नहीं पहचानेंगे । लेकिन जब आपको एक बार यीशु मसीह से कार्यभार मिलेगा, तो परमेश्वर आपसे जो चाहता है, उसकी याद आपको हमेशा परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की ओर धकेलेगी । आप अपनी व्यावहारिक बुद्धि के आधार पर फिर कभी परमेश्वर के लिए काम नहीं कर सकेंगे ।

मैं अपने जीवन में किन बातों को "प्रिय" मानता हूँ ? यदि मैं यीशु मसीह के द्वारा पकड़ा नहीं गया हूँ, और मैंने अपने आप को उसे समर्पित नहीं किया है, तो मैं परमेश्वर को दिए गए समय को, सेवा के विषय में अपने विचारों को, और अपने जीवन को भी प्रिय जानूँगा । लेकिन पौलुस ने कहा कि वह अपने जीवन को इसलिए प्रिय समझता है ताकि वह उस सेवकाई को पूरा करे जो उसे सौंपी गई थी, और उसने अपनी शक्ति को किसी और काम के लिए इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया । यह पद पौलुस की विशालहृदय खीज को दिखाता है जो उसे तब हुई जब उससे कहा गया कि वह अपना ध्यान रखे । वह उसे सौंपी गई सेवकाई को छोड़ किसी और बात के बारे में सोचने के प्रति उदासीन था । परमेश्वर के लिए हमारी व्यावहारिक और सोच-समझ कर की गई सेवा वास्तव में परमेश्वर के प्रति हमारे सम्पूर्ण समर्पण का मुक़ाबला कर सकती है । हमारा सोच-समझ कर किया गया कार्य इस तर्क पर आधारित होता है, "याद रखो, कि तुम यहाँ कितने उपयोगी हो, और सोचो कि उस प्रकार के काम में तुम क्या योगदान दे सकोगे ।" इस प्रकार की मनोवृत्ति यीशु मसीह का नहीं, बल्कि अपना फ़ैसला चुनती है कि हमें कहाँ जाना चाहए और हम सबसे ज़्यादा उपयोगी कहाँ साबित होंगे । कभी इसपर ध्यान न रखें कि आप उपयोगी हैं या नहीं - बल्कि हमेशा यह याद रखें कि आप अपने नहीं, बल्कि उसके हैं ।(1 कुरिन्थियों 6:19) ।

क्या वह सचमुच मेरा प्रभु है ?

कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरी करूँ,
जो मैंने ... प्रभु यीशु से पाई है।
प्रेरितों के काम 20:24।

आनन्द अपने काम को सफलतापूर्वक करने से नहीं, बल्कि उस विशेष उद्देश्य को पूरा होते हुए देखने से आता है, जिसके लिए मैं रचा गया और जिसके लिए मेरा नया जन्म हुआ। हमारे प्रभु ने जिस आनन्द का अनुभव किया, वह उस काम को करने से आया जिसके लिए पिता ने उसे भेजा था। और वह हमसे कहता है, "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ" (यूहन्ना 20:21)। क्या आपको प्रभु से कोई सेवकाई मिली है ? यदि हाँ, तो आपको उसके प्रति विश्वासयोग्य रहना चाहिए - यह मानना चाहिए कि आपका जीवन इसी लिए मूल्यवान है कि आप उस सेवकाई को पूरा करें। यह जानते हुए कि आपने वह काम पूरा कर दिया है जिसके लिए यीशु ने आपको भेजा था, ज़रा सोचें कि आपको कितना सन्तोष होगा जब वह आपसे कहेगा, "धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास" (मत्ती 25:21)। हम सब को जीवन में अपने लिए एक उपयुक्त स्थान ढूँढने की ज़रूरत होती है, और आत्मिक रूप से हम इसे तब पाते हैं जब हमें प्रभु से एक सेवकाई मिलती है। ऐसा करने के लिए, हमें यीशु के साथ क़रीबी संगति रखने की ज़रूरत होगी और हमें उसे अपने मुक्तिदाता से बढ़कर जानना होगा। "...मैं उसे बताऊँगा, कि *मेरे नाम के लिए* उसे कैसा कैसा दुःख उठाना पड़ेगा।"

"क्या तू मुझ से प्रीति रखता है ?" तो, "मेरी भेड़ों को चरा" (यूहन्ना 21:17)। वह आपको यह चुनने का मौका नहीं दे रहा है कि आप उसकी सेवा कैसे करेंगे; वह आपसे यह माँग कर रहा है कि आप उसके द्वारा सौंपे गए कार्यभार के प्रति पूरी तरह से विश्वासयोग्य रहें, उस काम के प्रति विश्वासयोग्य रहें जिसका आपको तब पता चलता है जब आप परमेश्वर के साथ सबसे ज़्यादा क़रीबी संगति में रहते हैं। यदि आपको प्रभु यीशु से सेवकाई मिली है, तो आप जानेंगे कि ज़रूरत बुलाहट नहीं होती हैं - ज़रूरत बुलाहट को अमल में लाने का मौका होती है। बुलाहट यह है कि आप उस सेवकाई के प्रति विश्वासयोग्य रहें जो आपको उस समय मिली थी जब आप परमेश्वर के साथ सच्ची संगति में थे। इसका अर्थ यह नहीं कि आपके लिए अलग-अलग प्रकार की सेवकाइयों की सूची बनी पड़ी है। इसका अर्थ यह है कि आपको इसके प्रति संवेदनशील रहना चाहिए कि परमेश्वर ने आपको क्या करने के लिए बुलाया है, और कभी-कभी इसके लिए दूसरे क्षेत्रों में सेवकाई की ज़रूरतों को अनदेखा करना पड़ सकता है।

मार्च 6

अगला कदम उठाना

...बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से।
2 कुरिन्थियों 6:4।

जब आपके पास परमेश्वर का दर्शन नहीं होता, आपको देखनेवाला कोई नहीं होता, तो अगला कदम लेने के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अनुग्रह की ज़रूरत होती है - यानि भक्ति में अगला कदम, परमेश्वर का वचन पढ़ने और उसका अध्ययन करने में अगला कदम, आपके पारिवारिक जीवन और आपके कर्तव्य में अगला कदम। सुसमाचार प्रचार करने के लिए परमेश्वर के जितने अनुग्रह की ज़रूरत होती है, उसपर भरोसा रखने की जितनी ज़रूरत होती है, उससे कहीं ज़्यादा अनुग्रह की ज़रूरत वह अगला कदम उठाने के लिए होती है।

हर मसीही को अगले कदम को माँस और लोहू की वास्तविकता में उतार लाने के द्वारा और अपने हाथों से पूरा करने के द्वारा मसीह के देहधारण के सार में सहभागी होने की ज़रूरत है। हम रुचि खो देते और हार मान लेते हैं जब हमारे पास कोई दर्शन नहीं होता, कोई प्रोत्साहन नहीं होता, और कोई उन्नति नहीं होती, और हम सिर्फ़ प्रतिदिन के जीवन का अनुभव उसके घिसे-पिटे कार्यों के साथ करते हैं। जो बात अन्त में सचमुच परमेश्वर और उसके लोगों के पक्ष में गवाही देती है, वह है स्थिरता से धीरज धरे रहना, उस समय भी जब दूसरों को उनका काम दिखाई नहीं देता। और एक अजेय जीवन जीने का एक ही तरीका है परमेश्वर की ओर देखते हुए जीना। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपकी आत्मा की आँखें जी उठे मसीह की ओर खुली रखे, और नीरस कामों के लिए भी आपको निराश करना असम्भव हो जाएगा। अपने आप को कभी यह न सोचने दें कि कुछ काम आपकी शान के विरुद्ध है या आपके लिए बहुत छोटे हैं, और अपने आप को यूहन्ना 13:1-7 में मसीह के आदर्श की याद दिलाते रहें।

भरपूर आनन्द का स्रोत

इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है,
जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
रोमियों 8:37।

यहाँ पौलुस उन चीज़ों की बात कर रहा है जिन्हें देखकर लगता है कि वे एक पवित्र जन को परमेश्वर के प्रेम से दूर कर सकती हैं। लेकिन उल्लेखनीय बात तो यह है कि परमेश्वर के प्रेम और एक पवित्र जन के बीच *कुछ* भी नहीं आ सकता। इस अनुच्छेद में पौलुस जिन चीज़ों का ज़िक्र करता है, वे परमेश्वर के साथ हमारी आत्मा की क़रीबी संगति को भंग कर सकती हैं और करती भी हैं। वे हमारे प्राकृतिक जीवन को परमेश्वर से अलग कर सकती हैं, और करती हैं। लेकिन आत्मिक स्तर पर, इनमें से कोई भी चीज़ परमेश्वर के प्रेम और एक पवित्र जन के बीच नहीं आ सकती। मसीही जीवन का मूलाधार है परमेश्वर के प्रेम का वह अनर्जित, असीमित आश्चर्यकर्म जो कलवरी के क्रूस पर प्रदर्शित किया गया; एक ऐसा प्रेम जो न तो कमाया गया था, और न ही कभी कमाया जा सकता है। पौलुस ने कहा कि यही वह कारण है कि इन सब बातों में हम ... जयवन्त से भी बढ़कर हैं। हम एक ऐसे आनन्द को लेकर "परम विजयी" हैं जो उन्हीं चीज़ों का अनुभव करने से आता है जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि वे हम पर हावी हो जाएँगी।

जो ऊँची-ऊँची लहरें एक साधारण तैरनेवाले को भयभीत कर देती हैं, वही लहरें लहरों की सवारी करनेवाले व्यक्ति को रोमांचित कर देती हैं। आइए, इस तथ्य को अपनी परिस्थितियों पर लागू करें। जिन चीज़ों से हम बचना चाहते हैं और जिनके विरुद्ध हम लड़ते हैं - यानि क्लेश, दुःख, और सताव - यही वे चीज़ें हैं जो हमरे अन्दर भरपूर आनन्द पैदा करती हैं। "हम उसके द्वारा ... जयवन्त से भी बढ़कर हैं" "इन सब बातों *में*"; इन सब बातों के बावजूद नहीं , बल्कि इनके मध्य में। एक पवित्र जन प्रभु के आनन्द को क्लेश के बावजूद नहीं जानता, बल्कि क्लेश के *कारण* जानता है। पौलुस कहता है, "अपने सारे क्लेश मैं मैं आनन्द से अति भरपूर रहता हूँ" (2 कुरिन्थियों 7:4)।

कम न होनेवाली वह चमक जो भरपूर आनन्द से आती है, किसी अस्थायी चीज़ पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के उस प्रेम पर बनी होती है जो कभी नहीं बदल सकता। और जीवन के अनुभव, चाहे वे प्रतिदिन की सामान्य घटनाएँ हों,चाहे दहला देनेवाली, वे "परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, हमें अलग करने में" असमर्थ होते हैं (रोमियों 8:39)।

मार्च 8

समर्पित किया हुआ जीवन

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ ...।
गलातियों 2:20।

यीशु मसीह के साथ एक होने के लिए, एक व्यक्ति को न केवल पाप छोड़ देने के लिए तैयार होने की ज़रूरत है, बल्कि सब बातों को देखने के अपने सारे दृष्टिकोण को समर्पित करने की भी। परमेश्वर के आत्मा से नए सिरे से जन्म लेने का अर्थ यह है कि इससे पहले कि हम किसी चीज़ को पकड़ सकें, हमें किसी चीज़ को छोड़ने के लिए तैयार होने की ज़रूरत भी है। सब से पहली चीज़ जिसका हमें समर्पण करना है, वह है हमारा सारा दिखावा या धोखा। प्रभु हम से जो चाहता है कि हम उसे समर्पित करें, वह हमारी अच्छाई, ईमानदारी, या सुधार करने का प्रयास नहीं, बल्कि हमारा असली और स्थिर पाप है। वास्तव में, वह हमसे केवल यही ले सकता है। और हमारे पाप के बदले में वह हमें जो देता है, वह है असली और स्थिर धार्मिकता। लेकिन हमें कुछ होने के सारे दिखावे को समर्पित कर देना होगा, और अपने सारे दावों को छोड़ देना होगा कि हम इस योग्य हैं कि परमेश्वर हमारी ओर ध्यान भी दे।

जब हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर का आत्मा हमें दिखाएगा कि इसके बाद हमें किस चीज़ का समर्पण करना है। इस प्रक्रिया के हर कदम पर, हमें अपने आप पर अपने अधिकार के दावों को छोड़ना होगा। क्या हम अपनी सब चीज़ों पर, अपनी अभिलाषाओं पर, और अपने जीवन की बाकी सब चीज़ों पर अपनी पकड़ को समर्पित करने के लिए तैयार हैं ? क्या हम यीशु मसीह की मृत्यु में उसके साथ एक होने के लिए तैयार हैं ?

इससे पहले कि हम पूरी तरह से समर्पण करें, हमें अपने भ्रम के दूर होने के दुःखदायी अनुभव से गुज़रना होगा। जब लोग अपने आप को सचमुच वैसे ही देखते हैं जैसे प्रभु उन्हें देखता है, तो उन्हें जो झटका लगता है, वह उनके अत्यधिक घिनावने पापों के कारण नहीं, बल्कि यीशु मसीह का विरोध करनेवाले अपने हृदयों के भयंकर स्वभाव के कारण लगता है। जब वे अपने आपको प्रभु के प्रकाश में देखते हैं, तभी उन्हें शर्म, घृणा, दोषी ठहरने के निराशाजनक अनुभव का गम्भीर एहसास होता है।

यदि आपका सामना इस सवाल से होता है कि आप समर्पण करें या न करें, तो आपके पास जो कुछ है और आप खुद जो कुछ हैं, उन सबको परमेश्वर को समर्पित करते हुए संकट में से गुज़रने का फ़ैसला करें। और फिर परमेश्वर आपसे जो कुछ करवाना चाहता है, उसके लिए वह आपको तैयार करेगा।

मार्च 9

उल्टे फिर जाना या यीशु के साथ चलना ?

क्या तुम भी चले जाना चाहते हो ?
यूहन्ना 6:67 ।

कितना भेदनेवाला प्रश्न है यह ! हमारे प्रभु के वचनों का हम पर सबसे अधिक प्रभाव अकसर तब होता है जब वह सबसे साधारण ढंग से बात करता है । हम जानते हैं कि यीशु कौन है, इसके बावजूद भी वह हमसे पूछता है, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो ?" हर जोखिम के बावजूद भी हमें उसके प्रति लगातार एक साहसपूर्ण रुख अपनाते रहना चाहिए ।

"इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले" (6:66) । वे यीशु के साथ चलने से उल्टे फिर गए; पाप की ओर नहीं, लेकिन यीशु से दूर होकर । आज बहुत से लोग हैं जो अपने जीवन को बहा रहे हैं और यीशु मसीह केलिए काम कर रहे हैं, लेकिन वे वास्तव में उसके साथ नहीं चल रहे हैं । एक चीज़ जो परमेश्वर हमसे लगातार माँगता है, वह है यीशु मसीह के साथ एक होना । पवित्रीकरण के द्वारा अलग किए जाने के बाद, हमें इस घनिष्ठ एकता को बनाए रखने के लिए आत्मिक रूप से अपने आप को अनुशासित करना चाहिए । जब परमेश्वर आपके जीवन के लिए अपनी इच्छा आपको स्पष्टता से दिखाता है, तो किसी विशेष ढंग से उस सम्बन्ध को बनाए रखने के आपके सारे प्रयास बिलकुल अनावश्यक होते हैं । आवश्यकता है तो सिर्फ़ इसकी कि आप पूरी तरह से यीशु मसीह पर निर्भर होते हुए एक स्वाभाविक जीवन जीएँ । परमेश्वर के साथ जीवन जीने के लिए उसके तरीके को छोड़ किसी और तरीके को अपनाने की कोशिश कभी न करें । और उसका तरीका है उसके प्रति सम्पूर्ण भक्ति । यीशु के साथ चलने का रहस्य है भविष्य की अनिश्चितताओं की चिन्ता न करना ।

पतरस ने यीशु में सिर्फ़ ऐसे व्यक्ति को देखा जो उसे और सारे संसार को उद्धार दे सकता था । लेकिन हमारा प्रभु चाहता है कि हम उसके सहकर्मी हों ।

पद 70 में यीशु पतरस को प्रेम से समझाता है कि वह यीशु के साथ जाने के लिए चुना गया । और हम में से हर एक को अपने लिए इस प्रश्न का उत्तर देना है कि "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो"?

उसके सन्देश का उदाहरण बनना

वचन को प्रचार कर।
2 तीमुथियुस 4:2।

हमारा उद्धार सिर्फ़ परमेश्वर के माध्यम होने के लिए ही नहीं, बल्कि उसके पुत्र और पुत्रियाँ होने के लिए हुआ। परमेश्वर हमें आत्मिक कर्ता नहीं बल्कि आत्मिक सन्देशवाहक बनाता है, और सन्देश को हमारा एक अंग बन जाना चाहिए। परमेश्वर का पुत्र अपना ही सन्देश था - ''जो बातें मैंने तुमसे कहीं हैं, वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं'' (यूहन्ना 6:63)। उसके शिष्य होने के नाते, हमारे जीवन को अपने सन्देश की वास्तविकता का एक पवित्र उदाहरण बनना चाहिए। एक उद्धार न पाए हुए व्यक्ति का हृदय भी सेवा करने के लिए तैयार हो जाएगा यदि उससे ऐसा करने को कहा जाए। लेकिन एक व्यक्ति को परमेश्वर के सन्देश का एक पवित्र उदाहरण बनने के लिए ऐसे हृदय की ज़रूरत है जो पाप की क़ायलता से टूटा हुआ हो, जिसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला हो, और जो रौंद दिए जाने के द्वारा परमेश्वर के मकसद के अधीन लाया गया हो।

गवाही देने और प्रचार करने में फ़र्क होता है। एक प्रचारक वह होता है जिसे परमेश्वर का बुलावा मिला है और जिसने यह संकल्प किया है कि वह परमेश्वर के सत्य को सुनाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देगा। परमेश्वर हमें अपने जीवन के लिए हमारी अपनी आकांक्षाओं और हमारे विचारों से आगे ले जाता है, और हमें अपने मकसद के अनुसार ढालता और आकार देता है, ठीक जैसे उसने पिन्तेकुस्त के बाद शिष्यों के जीवन में काम किया था। पिन्तेकुस्त का मकसद शिष्यों को कुछ सिखाना नहीं था, बल्कि यह था कि वे उसका देहधारण बनें जिसका वे प्रचार कर रहे थे, ताकि वे सचमुच माँस और लोहू में परमेश्वर का सन्देश बने, ''तुम मेरे गवाह होगे ...'' (प्रेरितों के काम 1:8)।

जब आप बोलते हैं, तो परमेश्वर को अपने जीवन में पूरी स्वतन्त्रता पाने दें। इससे पहले कि परमेश्वर का वचन दूसरों को स्वतन्त्र कर सके, उसकी स्वतन्त्रता को आपमें एक वास्तविकता बनना ज़रूरी है। अपनी सामग्री को ध्यान से इकट्ठा करें, और फिर परमेश्वर को अनुमति दें कि वह अपनी महिमा के लिए ''आपके शब्दों को दहकता हुआ वचन'' बना दे।

मार्च 11

"स्वर्गीय दर्शन" की बात न टालना

मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली।
प्रेरितों के काम 26:19।

यदि हम उस "स्वर्गीय दर्शन" को खो देते हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है, तो इसके लिए हम खुद ज़िम्मेदार हैं, परमेश्वर नहीं। हम अपनी आत्मिक उन्नति की कमी के कारण दर्शन को खो देते हैं। यदि हम परमेश्वर के बारे में अपने विश्वासों को अपने प्रतिदिन के जीवन के विषयों में लागू नहीं करेंगे, तो जो दर्शन परमेश्वर ने हमें दिया है, वह कभी पूरा नहीं होगा। "स्वर्गीय दर्शन" के प्रति आज्ञाकारी होने का एकमात्र तरीका यह है कि हम परमेश्वर के सर्वोच्च के लिए अपना सर्वोत्तम करें - उसकी महिमा के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ। यह तब ही किया जा सकता है यदि हम परमेश्वर के दर्शन को लगातार याद रखने का दृढ़ संकल्प करें। लेकिन इसकी परख यह है कि हम दर्शन के प्रति अपने प्रतिदिन के जीवन की छोटी से छोटी बात में आज्ञाकारी रहें - न केवल व्यक्तिगत प्रार्थना या सार्वजनिक सभाओं के दौरान, बल्कि हर मिनट के साठ सेकण्डों, और हर घण्टे के साठ मिनटों के दौरान।

"चाहे इसमें विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना ..." (हबक्कूक 2:3)। हम अपने प्रयासों से दर्शन को पूरा नहीं कर सकते, बल्कि जब तक दर्शन अपने आप को पूरा नहीं कर लेता, हमें उसकी प्रेरणा के अधीन रहना है। हम इतने व्यावहारिक होने की कोशिश करते हैं कि हम दर्शन को भूल बैठते हैं। हम ने शुरू में ही दर्शन को देख लिया था लेकिन हम उसके लिए ठहरे नहीं। हम अपना व्यावहारिक काम करने के लिए जल्दबाज़ी में निकल पड़े, और जब दर्शन पूरा हो गया, तो वह हमें दिखाई देना भी बन्द हो गया। ऐसे दर्शन के लिए ठहरना जिसमें "विलम्ब होता है", परमेश्वर के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता की असली परख है। हम अपने ही प्राण की खैरियत को दाँव पर लगाकर व्यावहारिक व्यस्तता के काम में फँस जाते हैं, और इस कारण दर्शन के पूरे होने को देखने से चूक जाते हैं।

परमेश्वर के तूफ़ानों की ताक में रहें। परमेश्वर अपने पवित्र लोगों को एक ही तरीके से बोता है, यानि अपने तूफ़ानों के बवण्डर के द्वारा। क्या आप फली साबित होंगे जिसमें कोई दाना नहीं ? यह इसपर निर्भर होगा कि क्या आप सचमुच उस दर्शन के प्रकाश में जी रहे हैं जो आपने देखा है। परमेश्वर को अनुमति दें कि वह आपको अपने तूफ़ान में से होकर जाने दे, और जब तक वह ऐसा नहीं करता, तब तक न जाएँ। यदि आप बोए जाने के लिए अपना स्थान खुद चुनते हैं, तो आप अपने आप को एक फलरहित, खाली फली साबित करेंगे। दूसरी ओर, यदि आप परमेश्वर को अनुमति देंगे कि वह आपको बोए, तो आप "बहुत सा फल लाएँगे" (यूहन्ना 15:8)।

यह ज़रूरी है कि हम हमारे लिए परमेश्वर के दर्शन की "ज्योति में चलें" और जीएँ (1 यूहन्ना 1:7)।

मार्च 12

सम्पूर्ण समर्पण

पतरस उससे कहने लगा, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं।
मरकुस 10:28।

हमारा प्रभु पतरस की बात का यह उत्तर देता है कि यह समर्पण ''मेरे और सुसमाचार के लिए है'' (10:29)। यह इस उद्देश्य से नहीं था कि शिष्यों को इससे क्या मिलेगा। ऐसे समर्पण से सावधान रहें जो इससे होनेवाले व्यक्तिगत फ़ायदों से प्रेरित हो। उदाहरण के लिए, ''मैं अपने आप को परमेश्वर को दे दूँगा क्योंकि मैं पाप से छुटकारा पाना चाहता हूँ, क्योंकि मैं पवित्र किया जाना चाहता हूँ।'' पाप से छुटकारा पाना और पवित्र किया जाना परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में होने का परिणाम हैं, लेकिन इस प्रकार के विचार से होनेवाला समर्पण मसीहियत का सही रूप बिलकुल नहीं है। समर्पण के लिए हमारा अभिप्राय किसी प्रकार का व्यक्तिगत लाभ कभी नहीं होना चाहिए। हम इतने स्वार्थी हो गए हैं कि हम परमेश्वर के पास सिर्फ़ कुछ पाने के लिए जाते हैं, खुद परमेश्वर के लिए नहीं। यह ऐसा कहने के बराबर है कि, ''नहीं, प्रभु, मैं तुझे नहीं चाहता; मैं अपने आपको चाहता हूँ। लेकिन मैं यह ज़रूर चाहता हूँ कि तू मुझे शुद्ध करे और अपने पवित्र आत्मा से भरे। मैं तो सिर्फ़ तेरी प्रदर्शन-खिड़की में सजना चाहता हूँ ताकि मैं कह सकूँ कि 'देखो, परमेश्वर ने मेरे लिए यह सब किया है।' '' स्वर्ग को प्राप्त करना, पाप से छुटकारा पाना, और परमेश्वर के लिए उपयोगी होना ऐसी बातें हैं जिनका वास्तविक समर्पण में विचार भी नहीं आना चाहिए। सच्चे और सम्पूर्ण समर्पण का अर्थ है सब चीज़ों से बढ़कर व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह को पहला स्थान देना।

जहाँ हमारे सांसारिक सम्बन्धों का सवाल होता है, वहाँ यीशु मसीह का क्या स्थान होता है ? हम में से अधिकतर लोग यह कहकर उसे छोड़ देंगे कि, ''हाँ, प्रभु, मैंने तेरी बुलाहट को तो सुना है, लेकिन मेरे परिवार को मेरी ज़रूरत है और फिर मेरी अपनी रुचियाँ भी हैं। मैं इससे और आगे नहीं जा सकता (लूका 9:57-62 देखें)। ''फिर,'' यीशु कहता है, ''तुम 'मेरे चेले नहीं हो सकते' '' (लूका 14:26-33 देखें)।

सच्चा समर्पण हमेशा स्वाभाविक भक्ति से बढ़कर होगा। यदि हम केवल त्याग करने के लिए तैयार हो जाएँ, तो परमेश्वर अपने आप को समर्पित कर देगा और हमारे चारो ओर उन सब लोगों को गले लगा लेगा जिन्हें हमारे समर्पण के कारण नुकसान पहुँचा हो। परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण से थोड़े से भी कम पर रुक जाने से सावधान रहें। हम में से अधिकतर लोगों ने इसके अर्थ का सिर्फ़ दर्शन ही पाया है, लेकिन इसका सच्चा अनुभव कभी नहीं किया है।

मार्च 13

हमारे प्रति परमेश्वर का सम्पूर्ण समर्पण

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने ...दे दिया।
यूहन्ना 3:16।

उद्धार का अर्थ सिर्फ़ पापों से छुटकारे और व्यक्तिगत पवित्रता का अनुभव ही नहीं है। जो उद्धार परमेश्वर से आता है, उसका अर्थ है पूरी तरह से अपने आप से छुटकारा पाना, और परमेश्वर के साथ सिद्ध एकता के सम्बन्ध में रखा जाना। जब मैं अपने उद्धार के अनुभव के बारे में सोचता हूँ, तो मैं पाप से छुटकारा पाने और व्यक्तिगत पवित्रता प्राप्त करने के बारे में सोचता हूँ। लेकिन उद्धार इससे कहीं बढ़कर है ! उद्धार का अर्थ यह है कि परमेश्वर का आत्मा मुझे खुद परमेश्वर के सच्चे व्यक्तित्व के सम्पर्क में ले आया है। और जब मैं परमेश्वर के प्रति समर्पण की पकड़ में आ जाता हूँ, तो मैं ऐसी चीज़ से रोमांचित हो जाता हूँ जो मुझ से कहीं ज़्यादा महान है।

यदि हम यह कहें कि हमें पवित्रता या पवित्रीकरण का प्रचार करने के लिए बुलाया गया है, तो इसका अर्थ यह है कि हम मुख्य विषय से चूक गए हैं। वास्तव में हम यीशु मसीह को घोषित करने के लिए बुलाए गए हैं (1 कुरिन्थियों 2:2)। यह तथ्य कि वह पाप से बचाता है और हमें पवित्र करता है, वास्तव में हमारे प्रति परमेश्वर के सम्पूर्ण और अद्‌भुत समर्पण के प्रभाव का एक अंश है।

यदि हम सचमुच समर्पित हैं, तो हमें समर्पित रहने के अपने प्रयासों का बोध कभी नहीं होगा। हमारा सारा जीवन उस व्यक्ति में लीन रहेगा जिसे हम समर्पित हैं। यदि आप समर्पण के बारे में कुछ नहीं जानते, तो उसके बारे में बात करने से सावधान रहें। सच तो यह है कि हम समर्पण के बारे में तब तक नहीं जानेंगे जब तक हम यह नहीं समझ लेंगे कि यूहन्ना 3:16 का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने सम्पूर्ण रूप से अपने आप को हमें दे दिया। अपने समर्पण में, हमें भी अपने आप को उसे उसी तरह से दे देना है जैसे उसने अपने आप को हमें दे दिया, यानि पूरी तरह से, बिना शर्त, और बिना प्रतिबन्ध। हमारे समर्पण से होनेवाले परिणाम और परिस्थितियाँ हमारे दिमाग़ में आएँगी ही नहीं क्योंकि हमारा जीवन पूरी तरह से परमेश्वर में लीन रहेगा।

मार्च 14

सौंप देना

जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को ... सौंप देते हो, उसी के दास हो।
रोमियों 6:16

जब मैं इसका परीक्षण करना शुरू करता हूँ कि कौन सी चीज़ मुझे नियन्त्रण और अधीनता में रखती है, तो जिस बात को मुझे सबसे पहले मानने के लिए तैयार रहना चाहिए, वह यह है कि अपने आप को उस चीज़ को सौंपने की ज़िम्मेदारी मेरी अपनी है। यदि मैं अपने आप का दास हूँ, तो दोष मेरा अपना ही है क्योंकि अतीत में कहीं मैंने अपने आप को खुद के हवाले किया था। इसी तरह से, यदि मैं परमेश्वर की आज्ञा मानता हूँ, तो इसका कारण यह है कि जीवन के किसी मोड़ पर मैंने अपने आप को परमेश्वर को सौंपा था।

यदि कोई बच्चा अपने आप को स्वार्थ के अधीन कर देता है, तो वह पाएगा कि यह पृथ्वी की सबसे भयंकर वश में करनेवाली निरंकुशता है। मनुष्य के प्राण में ऐसा कोई सामर्थ्य नहीं जो सौंप देने के द्वारा पैदा होनेवाले स्वभाव के बँधन को अपने बल से तोड़ सके। उदाहरण के लिए, अपने आप को किसी भी प्रकार की लालसा के सुपर्द कर दें, और हालाँकि आप ऐसा करने के लिए अपने आप से नफ़रत कर सकते हैं, लेकिन आप उस चीज़ के दास बन जाते हैं। (याद रखें, कि लालसा का अर्थ है - " यह मुझे अभी मिलना चाहिए," चाहे यह शरीर की लालसा हो, चाहे मन की।) इससे मुक्ति या रिहाई मनुष्य के सामर्थ्य से नहीं, बल्कि सिर्फ़ परमेश्वर के दिए गए छुटकारे के सामर्थ्य के द्वारा आएगी। आपको पूरी दीनता के साथ अपने आप को उस एकमात्र जन को सौंप देना चाहिए जो आपके जीवन के प्रबल सामर्थ्य को तोड़ सकता है, यानि प्रभु यीशु मसीह। "उस ने ...मेरा अभिषेक किया है कि ...बन्धुओं को छुटकारे का ...सुसमाचार प्रचार करूँ ..." (लूका 4:18 और यशायाह 61:1)।

जब आप अपने आप को किसी चीज़ को सौंपेंगे, तो आपको जल्दी ही अपने ऊपर उस चीज़ के ज़बरदस्त नियन्त्रण का एहसास होगा। शायद आप कहें कि "अरे, मैं उस आदत को जब चाहूँ छोड़ सकता हूँ," लेकिन आप जानेंगे कि ऐसा नहीं होता। आप पाएँगे कि वह आदत पूरी तरह से आप के ऊपर हावी है क्योंकि आपने अपनी इच्छा से अपने आप को उसे सौंप दिया था। यह गीत गाना कि "वह हर बेड़ी तोड़ देगा," और उसके साथ-साथ अपने आप के दासत्व में रहकर जीवन जीना आसान है। लेकिन अपने आपको यीशु को सौंप देना किसी भी व्यक्ति के जीवन के हर तरह के दासत्व को तोड़ देगा।

मार्च 15

घबराहट का अनुशासन

जो उसके पीछे पीछे चलते थे डरने लगे।
मरकुस 10:32।

यीशु मसीह के साथ अपने जीवन के शुरू में हमें पक्का विश्वास था कि हम यीशु के पीछे चलने के बारे में सब कुछ जानते हैं। उसके लिए सब कुछ त्याग देने में और प्रेम में निडरता दिखाते हुए अपने आप को उसके सामने डाल देने में कितना आनन्द था। लेकिन अब हमें इस बात की उतनी निश्चितता नहीं है। यीशु हमसे बहुत आगे है और अब वह फ़र्क और अपरिचित लगने लगा है - "यीशु उनके आगे-आगे जा रहा था; और वे अचम्भा करने लगे" (10:32)।

यीशु का एक पहलू है जो एक चेले के हृदय की गहराई में भी ऐसी निराशा पैदा कर देता है कि उसका सारा आत्मिक जीवन साँस लेने के लिए तड़प जाता है। यह अनोखा व्यक्ति जिसने अपना माथा "चकमक की नाईं" कड़ा किया (यशायाह 50:7) दृढ़ता से मेरे आगे-आगे जा रहा है और वह मेरे आर-पार दहशत पैदा कर रहा है। अब वह मेरा सलाहकार और मित्र नहीं लगता, और उसका एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। मैं सिर्फ़ खड़ा होकर आँख फाड़कर हैरानी से उसकी ओर देख सकता हूँ। शुरू-शुरू में मुझे पूरा विश्वास था कि मैं उसे समझता हूँ, लेकिन अब मुझे अपने विश्वास पर शक हो रहा है। मुझे यह एहसास होने लगा है कि यीशु और मेरे बीच एक दूरी है और अब मैं उसके साथ घनिष्ठ नहीं हो सकता। मुझे कुछ पता नहीं कि वह कहाँ जा रहा है, और अब लक्ष्य बहुत दूर लग रहा है।

यीशु मसीह को पूरी तरह से उस हर पाप और दुःख को समझना था जिसका अनुभव मनुष्य कर सकते थे, और यही वह बात है जो उसे अपरिचित बनाती है। जब हम उसका यह पहलू देखते हैं, तो हमें यह एहसास होता है कि वास्तव में हम उसे जानते ही नहीं। हम उसके जीवन की एक भी विशेषता को नहीं पहचानते, और हम नहीं जानते कि उसके पीछे चलना कैसे शुरू करें। वह हमसे कहीं आगे है, एक ऐसा अगुवा जो हमें बिलकुल अपरिचित लगता है, और उसके साथ हमारी कोई मित्रता नहीं।

घबराहट का अनुशासन एक महत्त्वपूर्ण पाठ है जो एक शिष्य को सीखना ज़रूरी है। ख़तरा इस बात का होता है कि हम परमेश्वर के प्रति अपने जोश को मज़बूत बनाए रखने के लिए, पिछले दिनों में की गई अपनी आज्ञाकारिता या परमेश्वर के लिए अपने बलिदानों की ओर पलट कर देखते हैं (यशायाह 1:10-11)। लेकिन जब घबराहट का अन्धकार आता है, तो उसे तब तक झेलते रहें जब तक वह ख़त्म न हो जाए, क्योंकि इससे यीशु के पीछे चलने की वह योग्यता आएगी, जिसका आनन्द वर्णन से अपार है।

स्वामी न्याय करेगा

हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए...।
2 कुरिन्थियों 5:10।

पौलुस का कहना है कि हम सब, प्रचारक और दूसरे लोगों को एक समान, "समीह के न्याय आसन के सामने" खड़ा होना है। लेकिन यदि आप यहीं और अभी मसीह की शुद्ध ज्योति की पैनी दृष्टि में रहेंगे, तो यह देखकर कि परमेश्वर ने आपके अन्दर क्या काम किया है, आपका आखिरी न्याय आपके लिए सिर्फ़ आनन्द ही लाएगा। अपने आप को मसीह के न्याय आसन की लगातार याद दिलाते हुए जीएँ, और पवित्रता के उस ज्ञान में चलते रहें जो उसने आपको दिया है। किसी और व्यक्ति के प्रति गलत मनोवृत्ति को बरदाश्त करना आपको शैतान की आत्मा के पीछे चलाता है, चाहे आप कितने भी भक्तिपूर्ण क्यों न हों। सांसारिक रूप से किसी दूसरे व्यक्ति का न्याय आपके अन्दर सिर्फ़ नरक के उद्देश्यों को पूरा करता है। इसे तुरन्त प्रकाश में ले आएँ और स्वीकार कर लें, "हे प्रभु, मैंने यह अपराध किया है।" यदि आप ऐसा नहीं करेंगे, तो आपका मन पूरी तरह से कठोर हो जाएगा। पाप के प्रति हमारी स्वीकृति भी पाप का एक दण्ड होता है। सिर्फ़ परमेश्वर ही पाप का दण्ड नहीं देता; पाप पापी के अन्दर डेरा डाल लेता है और उसे नुकसान पहुँचाता रहता है। किसी तरह का संघर्ष या प्रार्थना आपको कुछ तरह के काम करने से रोकने की योग्यता नहीं देगी, और पाप का दण्ड यह होता है कि आप उसके आदी होते जाते हैं, और अन्त में आप ऐसी स्थिति में पहुँच जाते हैं कि आपको यह एहसास भी नहीं होता कि यह पाप है। पवित्र आत्मा की भरपूरी से आनेवाले सामर्थ्य को छोड़ कोई और सामर्थ्य नहीं जो पाप के स्वाभाविक परिणामों को बदल सके या रोक सके।

"यदि *जैसा वह ज्योति में है*, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें ..." (1 यूहन्ना 1:7)। हम में से बहुतों के लिए, ज्योति में चलने का अर्थ है उस मापदण्ड के अनुसार चलना जो हमने किसी और व्यक्ति के लिए ठहराया है। आज हम फरीसियों की जिस विनाशक मनोवृत्ति को प्रदर्शित कर रहे हैं, वह ढोंग नहीं बल्कि वह मनोवृत्ति है जो अनजाने में एक झूठ को जीने से आती है।

मार्च 17

सेवक का प्राथमिक लक्ष्य

हमारे मन की उमंग यह है कि ...हम उसे भाते रहें।
2 कुरिन्थियों 5:9।

"हमारे मन की उमंग यह है ..." अपने प्राथमिक लक्ष्य को निरन्तर अपने सामने रखने के लिए, हमें जानकार होकर फ़ैसला और प्रयास करने की ज़रूरत होती है। इसका अर्थ है लगातार सालों-साल अपनी सबसे ऊँची प्राथमिकता पर डटे रहना। हमारी पहली प्राथमिकता आत्माओं को बचाना, या कलीसियाओं की स्थापना करना, या आत्मिक जागृतियाँ नहीं, बल्कि "उसे भाते रहने" की कोशिश होनी चाहिए। असफलता का कारण आत्मिक अनुभव की कमी नहीं, बल्कि सही लक्ष्य पर अपनी आँखें टिका कर रखने का अभाव होता है। हफ़्ते में कम से कम एक बार अपने आप को परमेश्वर के सामने जाँचें और देखें कि आपका जीवन उस मापदण्ड तक पहुँच रहा है या नहीं जो उसने आपके लिए ठहराया है। पौलुस एक ऐसे संगीतकार की तरह था जिसे श्रोताओं की प्रशंसा की परवाह नहीं होती बल्कि जो सिर्फ़ संगीत संचालक की प्रशंसा पाना चाहता है।

कोई भी लक्ष्य जो हमें परमेश्वर के ग्रहणयोग्य बनने के प्रमुख लक्ष्य से भटका दे, वह हमें भविष्य में परमेश्वर की सेवा से अलग किए जाने का कारण बन सकता है। जब आप पहचान लेंगे कि लक्ष्य कहाँ ले जा रहा है, तो आप समझ जाएँगे कि "यीशु की ओर ताकते रहना" इतना ज़रूरी क्यों होता है। पौलुस ने अपने शरीर को नियन्त्रण में रखने के महत्त्व के बारे में बात की, ताकि वह उसे ग़लत दिशा में न ले जाए। उसने कहा, "मैं अपनी देह को मारता, कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि ...मैं आप ही ...निकम्मा ठहरूँ" (1 कुरिन्थियों 9:27)।

मुझे हर चीज़ का सम्बन्ध प्राथमिक लक्ष्य से जोड़ना सीखना है ताकि बिना रुकावट उसे बनाए रखूँ। परमेश्वर के लिए सार्वजनिक रूप से मेरा मूल्य इससे नापा जाता है कि मैं अपने निजी जीवन में क्या हूँ। क्या जीवन में मेरा प्राथमिक लक्ष्य उसे प्रसन्न करना और उसके स्वीकारयोग्य बनना है, या क्या वह कुछ और ही है, चाहे वह सुनने में कितना भी ऊँचा क्यों न लगता हो ?

मार्च 18

क्या मैं अपने आप को इस स्तर तक लाऊँगा ?

परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।
2 कुरिन्थियों 7:1।

"जबकि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं ..." मैं परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को अधिकार से अपने जीवन के लिए ले लेता हूँ, और ऐसा करना सही भी है, लेकिन ऐसा करना इन प्रतिज्ञाओं के प्रति सिर्फ़ मनुष्य का दृष्टिकोण दिखाता है। परमेश्वर का दृष्टिकोण यह है कि उसकी प्रतिज्ञाओं के द्वारा मैं अपने ऊपर उसके स्वामित्व को पहचान लूँ। उदाहरण के लिए, क्या मुझे यह एहसास है कि "मेरी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है," या क्या मैं अपनी देह में किसी ऐसी आदत की अनदेखी कर रहा हूँ जो परमेश्वर की ज्योति को कभी सहन नहीं कर सकती ?(1 कुरिन्थियों 6:19)। परमेश्वर ने पवित्रीकरण के द्वारा मुझ में अपने पुत्र का रूप बनाया है, और मुझे पाप से अलग करके अपनी दृष्टि में पवित्र किया है (गलातियों 4:19) देखें। लेकिन मुझे आज्ञाकारिता के द्वारा अपने शारीरिक जीवन को आत्मिक जीवन में बदलना शुरू करना है। परमेश्वर हमें जीवन की छोटी से छोटी बातों में भी निर्देशन देता है। और जब वह आपको पाप के विषय में क़ायल करता है, तो "माँस और लोहू से सलाह न लें" बल्कि तुरन्त अपने आप को उससे शुद्ध करें (गलातियों 1:16)। अपनी दैनिक चाल में अपने आप को शुद्ध रखें।

मुझे अपने शरीर और अपनी आत्मा को हर गन्दगी से शुद्ध रखना है, जब तक कि शरीर और आत्मा दोनों ही परमेश्वर के स्वभाव के तालमेल में न आ जाएँ। क्या मेरी आत्मा का मन मेरे भीतर वास करनेवाले परमेश्वर के पुत्र के जीवन के साथ पूरी सहमति में है, या क्या मैं मानसिक रूप से विद्रोह और प्रतिरोध करनेवाला व्यक्ति हूँ? क्या मैं मसीह के स्वभाव को अपने अन्दर बनने दे रहा हूँ ?(फिलिप्पियों 2:5 देखें)। मसीह ने अपने ऊपर अपने अधिकार की बात कभी नहीं की, बल्कि उसने अपनी आत्मा को अपने पिता की अधीनता में रखने की जागरूकता को हमेशा बनाए रखा। मेरी भी यह ज़िम्मेदारी है कि मैं अपनी आत्मा को उसके आत्मा के अनुरूप रखूँ। और जब मैं ऐसा करता हूँ, तो यीशु धीरे-धीरे मुझे उस स्तर तक उठाता है जिसपर वह रहता था - यानि सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर की इच्छा के अधीन रहने का स्तर - जहाँ मैं किसी और चीज़ की ओर ध्यान नहीं देता। क्या मैं परमेश्वर के भय में इस प्रकार की पवित्रता को सिद्ध बना रहा हूँ ? क्या मैं वह कर रहा हूँ जो परमेश्वर चाहता है, और क्या लोग मेरे जीवन में परमेश्वर को और अधिक देखना शुरू कर रहे हैं ?

परमेश्वर के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के विषय में हमेशा गम्भीर रहें और खुशी से बाकी सारी बातों की परवाह करना छोड़ दें। परमेश्वर को अपने जीवन में सचमुच पहला स्थान दें।

मार्च 19

इब्राहीम का विश्वास से भरा जीवन

इब्राहीम ...निकल गया ...और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ ।
इब्रानियों 11:8।

पुराने नियम में, परमेश्वर के साथ एक व्यक्ति के सम्बन्ध को उस व्यक्ति के जीवन के अलगाव के दर्जे से नापा जाता था। इब्राहीम के जीवन में यह अलगाव उसके देश और उसके परिवार से अलग होने में दिखाई देता है। आज जब हम अलगाव के बारे में सोचते हैं, तो हमारा अर्थ शाब्दिक रूप से परिवार के उन लोगों से अलग होने से नहीं है जिनका परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं, बल्कि हमारा अर्थ है मानसिक और नैतिक रूप से उनके दृष्टिकोण से अलग होना। लूका 14:26 में यीशु मसीह का इशारा इसी ओर था।

विश्वास का जीवन जीने का अर्थ यह है कि आप कभी नहीं जानेंगे कि आपको कहाँ ले जाया जा रहा है। लेकिन इसका अर्थ यह भी है कि आप उस व्यक्ति से प्रेम करते और उसे जानते हैं जो आपकी अगुवाई कर रहा है। यह सचमुच *विश्वास* का जीवन है, समझ-बूझ और तर्क-वितर्क का नहीं - उस व्यक्ति को जानने का जीवन जो हमें जाने के लिए कहता है। विश्वास की जड़ एक व्यक्ति (यानि परमेश्वर) के ज्ञान में होती हैं, और जिन फन्दों में हम फँस जाते हैं, उनमें से एक फन्दा यह धारणा है कि यदि हमारे पास विश्वास है, तो परमेश्वर हमें सांसारिक सफलता की ओर ज़रूर ले जाएगा।

विश्वास के जीवन का अन्तिम चरण है खरा निकलना, और इस प्रक्रिया में हम कई बदलावों का सामना करते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो अपने चारों ओर परमेश्वर की उपस्थिति महसूस करते हैं, फिर भी हम थोड़े समय के लिए ही बदलते हैं। हमारी प्रवृत्ति हमें हमारे पुराने ढर्रों में वापस ले जाती है और वह महिमा खत्म हो जाती है। विश्वास का जीवन ऊँची उड़ानें भरने का जीवन नहीं, बल्कि चलने और थकित न होने का जीवन होता है। यह पवित्रीकरण का नहीं, बल्कि ऐसी चीज़ का प्रश्न है जो पवित्रीकरण से आगे बढ़ने पर आती है। यह ऐसा विश्वास है जो परखा और साबित किया जा चुका है और जो कसौटी पर खरा उतरा है। इब्राहीम पवित्रीकरण का उदाहरण नहीं, बल्कि विश्वास के जीवन का उदाहरण है - एक परखा हुआ, सच्चा विश्वास, जिसका निर्माण सच्चे परमेश्वर पर किया गया है। "इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया" (रोमियों 4:3)।

मार्च 20

परमेश्वर के साथ मित्रता

यह जो मैं करता हूँ, क्या इब्राहीम से छिपा रखूँ ?
उत्पत्ति 18:17।

परमेश्वर के साथ मित्रता का आनन्द। उत्पत्ति 18 प्रार्थना में कभी-कभार परमेश्वर की उपस्थिति महसूस करने की तुलना में परमेश्वर के साथ सच्ची मित्रता के आनन्द को सामने लाता है। इस मित्रता का अर्थ है परमेश्वर के साथ इतने क़रीबी सम्पर्क में रहना कि आपको उससे यह कहने की ज़रुरत भी न होगी कि वह आपको अपनी इच्छा दिखाए। यह घनिष्ठता के उस स्तर का सबूत है जो इस बात की पुष्टि करता है कि आप विश्वास के जीवन के अपने अनुशासन के अन्तिम चरण में पहुँच रहे हैं। जब परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध सही होता है, तो आपका जीवन स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता, और आनन्द का जीवन होता है; आप खुद परमेश्वर की इच्छा हैं। और यदि वह आपको रोकता नहीं, तो व्यावहारिक बुद्धि से लिए गए आपके सारे फ़ैसले वास्तव में आपके लिए उसकी इच्छा के अनुसार ही होते हैं। आप परमेश्वर के साथ एक सिद्ध और आनन्दपूर्ण मित्रता में फ़ैसले ले सकते हैं, यह जानते हुए कि यदि आपके फ़ैसले ग़लत होंगे, तो वह हमेशा उन्हें रोक देगा, और जब वह ऐसा करता है, आपको तुरन्त रुक जाना चाहिए।

परमेश्वर के साथ मित्रता की कठिनाइयाँ। जब इब्राहीम ने प्रार्थना करनी बन्द कर दी, तो ऐसा क्यों किया ? उसने प्रार्थना इसलिए बन्द की क्योंकि वह अभी तक परमेश्वर के साथ घनिष्ठता के उस स्तर तक नहीं पहुँचा था जो उसे इस योग्य बना सकती थी कि वह साहस से प्रार्थना में प्रभु के साथ चलता रहे जब तक परमेश्वर उसकी अभिलाषा पूरी नहीं करता। जब भी हम प्रार्थना में अपनी सच्ची अभिलाषा से पहले ही रुक जाते हैं और कहते हैं कि, "पता नहीं, शायद यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है," तो इसका अर्थ यह होता है कि अभी हमारे लिए एक स्तर और तय करना बाकी है। यह दिखाता है कि हम परमेश्वर से इतनी घनिष्ठता से परिचित नहीं हैं जितना यीशु था, और जितना यीशु चाहता है कि हम हों - "...वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं" (यूहन्ना 17:22)। उस आखिरी बात के बारे में सोचें जिसके लिए आपने प्रार्थना की थी - क्या आपकी लगन अपनी अभिलाषा के प्रति थी या परमेश्वर के प्रति ? क्या आपका संकल्प पवित्र आत्मा के किसी वरदान को पाने का था या परमेश्वर तक पहुँचने का ? "क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकता है" (मत्ती 6:8)। माँगने का कारण यह है कि आप परमेश्वर को बेहतर जानें। "यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा" (भजन संहिता 37:4)। हमें प्रार्थना करते रहना चाहिए कि हम खुद परमेश्वर के बारे में सिद्ध समझ प्राप्त कर सकें।

मार्च 21

उसके साथ एक हैं या सिर्फ़ उसमें रुचि रखते हैं ?

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ ...।
गलातियों 2:20।

हम में से हर एक की एक ऐसी आत्मिक ज़रूरत है जिससे हम बचकर निकल नहीं सकते, और वह ज़रूरत यह है कि हम अपने पाप के स्वभाव के मृत्यु प्रमाण-पत्र पर हस्ताक्षर कर दें। मुझे चाहिए कि मैं अपने भावात्मक मतों और बौद्धिक धारणाओं को पाप के स्वभाव के विरुद्ध एक नैतिक निर्णय बना दूँ ; यानि अपने आप पर अधिकार रखने के हर दावे के विरुद्ध। पौलुस ने कहा, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ ..." उसने यह नहीं कहा कि, "मैंने फ़ैसला किया है कि मैं यीशु मसीह की तरह बनूँगा," या, "मैं उसके पीछे चलने की सचमुच कोशिश करूँगा" - बल्कि यह कि, "मैं उसकी मृत्यु में उसके साथ एक हो गया हूँ।" जब मैं इस नैतिक फ़ैसले पर पहुँच जाता हूँ और इसे अमल में लाता हूँ, तो मसीह ने क्रूस पर मेरे *लिए* जो कुछ पूरा किया, वह मुझ *में* पूरा हो जाता है। परमेश्वर के प्रति मेरा स्वच्छन्द समर्पण पवित्र आत्मा को मौका देता है कि वह मुझे यीशु मसीह की पवित्रता प्रदान करे।

"...अब मैं जीवित न रहा ..." मेरा व्यक्तित्व तो रहता है, लेकिन जीने की मेरी मुख्य प्रेरणा और मुझे नियन्त्रण में रखनेवाला स्वभाव दोनों पूरी तरह से बदल गए हैं। मेरे पास अभी भी मनुष्य का वही शरीर है, लेकिन अपने आप पर वह पुराना शैतानी अधिकार नष्ट हो चुका है ।

"...और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ, (जीवन जी रहा हूँ)" यह नहीं कि जो जीवन मैं जीना चाहता हूँ या जिसे जीने के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ, बल्कि वह जीवन जो मैं अब अपने नाशवान शरीर में जी रहा हूँ - जिसे दूसरे लोग देख सकते हैं, "वह उस विश्वास से जी रहा हूँ जो मुझे परमेश्वर के पुत्र पर है ...।" यह विश्वास यीशु मसीह पर पौलुस का अपना विश्वास नहीं था, बल्कि यह परमेश्वर के पुत्र पर वह विश्वास था जो परमेश्वर ने पौलुस को दिया था (इफिसियों 2:8 देखें)। अब यह विश्वास पर विश्वास नहीं, बल्कि ऐसा विश्वास है जो सारी काल्पनिक सीमाओं को पार करता है - ऐसा विश्वास जो सिर्फ़ परमेश्वर के पुत्र से आ सकता है।

मार्च 22

उत्तेजित मन

क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई ?
लूका 24:32 ।

हमें एक उत्तेजिन मन का रहस्य जानने की ज़रूरत है । यीशु अचानक हमारे सामने आता है, तो हमारा उत्साह प्रज्वलित हो उठता है, और हमें अद्‌भुत दर्शन मिलते हैं; लेकिन हमें एक उत्तेजित मन के रहस्य को बनाए रखना सीखना है - एक ऐसा मन जो कुछ भी सह सकता है । यदि हमने यीशु में बने रहना नहीं सीखा है, तो एक मामूली, नीरस दिन, और उसके साधारण काम और लोग एक उत्तेजित मन को बुझा देते हैं ।

एक मसीही होने के नाते, हम जिस कष्ट का अनुभव करते हैं, उसमें से अधिकतर पाप के फलस्वरूप नहीं आते, बल्कि इसलिए आते हैं क्योंकि हम अपने ही स्वभाव के नियम को नहीं जानते । उदाहरण के लिए, यह फ़ैसला करने के लिए कि हमें किसी ख़ास भावना को अपने जीवन में चलते रहने देना चाहिए या नहीं, हमें यह परीक्षण करना चाहिए कि उस भावना का अन्तिम परिणाम क्या होगा । उसके तार्किक परिणाम के बारे में सोचें और यदि वह ऐसा परिणाम होगा जिसे परमेश्वर अनुपयुक्त ठहराएगा, तो उसे तुरन्त रोक दें । लेकिन यदि यह कोई ऐसी भावना है जिसे परमेश्वर के आत्मा ने जगाया है और आप इसे अपने जीवन में काम नहीं करने देते, तो इसकी प्रतिक्रिया उस स्तर से कम स्तर पर होगी जो परमेश्वर चाहता था । जो लोग वास्तविकता से परे और अत्यधिक भावनात्मक होते हैं, वे ऐसे ही बने होते हैं । और भावनाएँ जितनी अधिक ऊँची होती हैं, भ्रष्टता का स्तर उतना ही गहरा होता है, यदि उसे इरादे के अनुसार स्तर पर अमल में न लाया जाए । यदि परमेश्वर के आत्मा ने आपको उत्तेजित किया है, तो जहाँ तक हो सके, अपने फ़ैसलों को अपरिवर्तनीय बनाएँ, और परिणाम जो भी होते हैं, होने दें । हम "रूपान्तरण के पर्वत" पर हमेशा नहीं रह सकते हैं (मरकुस 9:1-9 देखें) । लेकिन हमें उस प्रकाश के अनुसार चलना है जो हमें वहाँ मिला था; हमें उसे अमल में लाना है । जब परमेश्वर हमें दर्शन देता है, तो हमें उसी मुद्‌दे पर उसके साथ सौदा करना चाहिए, चाहे इसकी कीमत कुछ भी क्यों न हो ।

मार्च 23

क्या मेरी प्रवृत्ति शारीरिक है ?

जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं ?
1 कुरिन्थियों 3:3 ।

एक मामूली व्यक्ति या अविश्वासी, शारीरिकता के बारे में कुछ नहीं जानता । शरीर की लालसाओं का पवित्र आत्मा के साथ युद्ध, जो नए सिरे से जन्म लेने के समय शुरू हुआ था, शारीरिकता और उसका बोध उत्पन्न करता है । लेकिन पौलुस ने कहा, "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी नहीं करोगे" (गलातियों 5:16) । दूसरे शब्दों में, शारीरिकता ग़ायब हो जाएगी ।

क्या आप झगड़ालू हैं और छोटी-छोटी बातों पर आसानी से नाराज़ हो जाते हैं ? क्या आप सोचते हैं कि कोई भी मसीही ऐसा नहीं कर सकता ? पौलुस ने कहा कि वे ऐसा करते हैं, और उसने इन प्रवृत्तियों को शारीरिकता के साथ जोड़ा । क्या बाइबल में कोई ऐसी सच्चाई है जो तुरन्त आपके अन्दर दुर्भाव या कुढ़न पैदा करती है ? यदि हाँ, तो यह इस बात का सबूत है कि आप अभी भी शारीरिक हैं । यदि पवित्रीकरण की प्रक्रिया आपके जीवन में जारी है, तो इस प्रकार की आत्मा का निशान भी नहीं बचेगा ।

यदि परमेश्वर का आत्मा आपमें कोई ग़लत चीज़ देखता है, तो वह आपको उसे ठीक करने के लिए नहीं कहता; वह आपसे सिर्फ़ यह चाहता है कि आप सच्चाई के प्रकाश को ग्रहण करें, और फिर वह उस बात को सही कर देता है । ज्योति की सन्तान पाप का तुरन्त अंगीकार करेगी और परमेश्वर के सामने पूरी तरह से खुली होकर खड़ी होगी । लेकिन अन्धकार की सन्तान कहेगी, "मैं उस बात की सफ़ाई दे सकता हूँ ।" जब ज्योति चमकती है और पवित्र आत्मा पाप के प्रति क़ायल करता है, तो ज्योति की सन्तान बनें । अपने अपराध को मान लें और परमेश्वर उस से निपट लेगा । लेकिन यदि आप अपनी सफ़ाई देने की कोशिश करेंगे, तो आप यह साबित करेंगे कि आप अन्धकार की सन्तान हैं ।

इस बात का सबूत क्या है कि शारीरिकता खत्म हो गई है ? अपने आप को कभी धोखा न दें ; जब शारीरिकता खत्म हो जाएगी, तो आपको इसका पता चल जाएगा - यह उन चीज़ों में से सबसे ज़्यादा वास्तविक चीज़ है जिनकी आप कल्पना कर सकते हैं । और परमेश्वर इसका ध्यान रखेगा कि आप को परमेश्वर के अनुग्रह के आश्चर्यकर्म को अपने आप के लिए साबित करने के कई मौके मिलें । सबूत एक बहुत ही व्यावहारिक परीक्षा है । आप अपने आप को यह कहते हुए पाएँगे कि, "यदि ऐसा पहले कभी हुआ होता, तो मुझे इससे बहुत कुढ़न होती !" और यह देखकर कि परमेश्वर ने आपके अन्दर क्या किया है, आप संसार के सबसे ज़्यादा आश्चर्यचकित व्यक्ति बने रहेंगे ।

मार्च 24

परमेश्वर के उद्देश्य के लिए घटते जाना

अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ।
यूहन्ना 3:30।

यदि आप किसी और के जीवन के लिए ज़रूरी हो जाते हैं, तो आप परमेश्वर की इच्छा से बाहर हैं। सेवक होने के नाते, आपकी मुख्य ज़िम्मेदारी यह है कि आप "दूल्हे का मित्र" बनें (3:29)। जब आप देखते हैं कि कोई व्यक्ति यीशु मसीह के दावों को समझने के क़रीब है, तो जान लें कि आपके प्रभाव का सही दिशा में इस्तेमाल हुआ है। और जब आप उस व्यक्ति को एक कठिन और दुःखदायी संघर्ष के बीच में देखना शुरू करते हैं, तो संघर्ष को रोकने की कोशिश न करें, बल्कि प्रार्थना करें कि कठिनाई दस गुणा बढ़ जाए, जब तक कि पृथ्वी या नरक की कोई भी ताकत उस व्यक्ति को यीशु मसीह से दूर न रख पाए। हम बार-बार किसी के जीवन में अनाड़ी विधाता बनकर आने की कोशिश करते हैं। हम सचमुच अनाड़ी हैं, जो बीच में आकर परमेश्वर की इच्छा में बाधा डालते हुए कहते हैं, "इस जन को जो ऐसी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है, वह ठीक नहीं।" दूल्हे के मित्र होने के बजाय, हमारी हमदर्दी आड़े आ जाती है। एक दिन वह व्यक्ति आपसे कहेगा, "आप चोर हैं; आपने यीशु के पीछे चलने की मेरी इच्छा को चुरा लिया, और आपके कारण यीशु मेरी दृष्टि से ओझल हो गया।"

ग़लत बात के लिए किसी के साथ आनन्द मनाने से सावधान रहें, लेकिन सही बात के लिए हमेशा आनन्द मनाएँ। "...दूल्हे का मित्र ...दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है। अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है। अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ" (3:29-30)। यह हर्ष के साथ कहा गया था, दुःख के साथ नहीं - आख़िकार, वे दूल्हे को देखने वाले थे ! और यूहन्ना ने कहा कि यह उसका हर्ष है। यह दिखाता है कि सेवक को अपने आप को तुच्छ समझना है, सामने से हट जाना है, और आगे से उसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए।

अपने पूरे अस्तित्व से ध्यान लगाकर सुनें जब तक आप किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन में दूल्हे की आवाज़ नहीं सुनते। और इसके बारे में न सोचें कि यह कितनी तबाही, कठिनाइयाँ, या बीमारियाँ लाएगा। भक्तिपूर्ण उत्तेजना से सिर्फ़ इसलिए आनन्दित हों कि परमेश्वर की आवाज़ सुन ली गई है। आपको अकसर यह देखना पड़ेगा कि यीशु मसीह एक जीवन को बचाने से पहले उसे कैसे नष्ट करता है (मत्ती 10:34)।

सही सम्बन्ध बनाए रखना

...दूल्हे का मित्र ...
यूहन्ना 3:29।

अच्छाई और शुद्धता को कभी ऐसे गुण नहीं होना चाहिए जो अपनी ओर आकर्षित करते हैं, बल्कि इन्हें केवल ऐसे चुम्बकों की तरह होना चाहिए जो लोगों को यीशु मसीह की ओर खींचते हैं। यदि मेरी पवित्रता दूसरों को यीशु की ओर नहीं खींच रही है, तो वह सही प्रकार की पवित्रता नहीं; वह सिर्फ़ एक प्रभाव है जो लोगों में अनुचित भावनाएँ और बुरी लालसाएँ जगाता है और उन्हें सही दिशा में जाने से भटका देता है। एक व्यक्ति जो एक सुन्दर पवित्र जन हो सकता है, वह यीशु मसीह को प्रस्तुत करने के बजाय सिर्फ़ यह प्रस्तुत करने के द्वारा कि मसीह ने उसके लिए क्या-क्या किया है, लोगों को प्रभु के पास लाने में बाधा बन सकता है। लोगों के मनों में यह विचार रह जाएगा - "वह आदमी कितना बढ़िया व्यक्ति है !" यह "दूल्हे का मित्र" बनना नहीं है - हर समय *मैं* बढ़ रहा हूँ, *मसीह* नहीं।

दूल्हे के प्रति इस मित्रता और विश्वासयोग्यता को बनाए रखने के लिए, हमें आज्ञाकारिता समेत, सब चीज़ों से बढ़कर, उसके प्रति अपना नैतिक और जीवन-सम्बन्धी रिश्ता रखने की सावधानी बरतनी चाहिए। कभी-कभी आज्ञापालन करने के लिए कुछ नहीं रहता, और हमारा काम सिर्फ़ यह रह जाता है कि हम यीशु मसीह के साथ एक अत्यावश्यक सम्बन्ध बनाए रखें, और ध्यान रखें कि कुछ भी इसके बीच में न आए। यह कभी-कभार ही आज्ञाकारिता का सवाल बनता है। ऐसे मौकों पर जब एक संकट आ खड़ा हो जाता है, हमें यह पता चलाना होगा कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। फिर भी, हमारे जीवन का ज़्यादातर हिस्सा जागरूकता से आज्ञाकारी होने में नहीं, बल्कि इस सम्बन्ध, यानि "दूल्हे का मित्र" होने को बनाए रखने में बीतता है। मसीही कार्य वास्तव में एक व्यक्ति का ध्यान यीशु मसीह से दूर हटाने का साधन बन सकता है। "दूल्हे के मित्र" बनने के बजाय हम किसी दूसरे के लिए अनाड़ी विधाता बन जाते हैं, और परमेश्वर के हथियारों का इस्तेमाल करते हुए उसी के विरुद्ध काम करते हैं।

मार्च 26

व्यक्तिगत शुद्धता के द्वारा आत्मिक दर्शन

धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
मत्ती 5:8।

शुद्धता निर्दोषता नहीं हैं - वह उससे बढ़कर है। शुद्धता परमेश्वर के साथ लगातार आत्मिक तालमेल का परिणाम होती है। हमें शुद्धता में बढ़ना है। परमेश्वर के साथ हमारा जीवन सही हो सकता है, और हमारी भीतरी शुद्धता निष्कलंक हो सकती है, फिर भी हमारा बाहरी जीवन कभी-कभी कलंकित हो सकता है। परमेश्वर जानबूझ कर हमें इस सम्भावना से बचाकर नहीं रखता, क्योंकि यही वह तरीका है जिससे हम व्यक्तिगत शुद्धता के द्वारा अपने आत्मिक दर्शन को बनाए रखने की ज़रूरत को पहचानते हैं। यदि परमेश्वर के साथ हमारे आत्मिक जीवन का बाहरी स्तर थोड़ा सा भी बिगड़ जाता है, तो हमें सब बातों को परे हटा देना चाहिए जब तक कि हम इसे ठीक नहीं कर लेते। याद रखें कि आत्मिक दर्शन हमारे चरित्र पर निर्भर होता है, "जिनके मन शुद्ध हैं" वही "परमेश्वर को देखेंगे।"

परमेश्वर अपने अनुग्रह की क्रिया से हमें शुद्ध करता है। लेकिन फिर भी कुछ ऐसा है जिसका हमें ध्यान रखने की ज़रूरत है। हमारे शारीरिक जीवन के दूसरों के सम्पर्क में और दूसरे दृष्टिकोण के सम्पर्क में आने के द्वारा हममें धब्बा लग सकता है। न केवल हमारे "भीतरी आंगन" ही परमेश्वर के साथ सही होने चाहिए, बल्कि हमारे "बाहरी आंगन" भी, उस शुद्धता के साथ जो परमेश्वर अपने अगुग्रह के द्वारा हमें देता है, सम्पूर्ण तालमेंल में लाए जाने चाहिए। जब हमारे "बाहरी आंगन" में दाग़ लगते हैं, तो हमारा आत्मिक दर्शन और हमारी समझ तुरन्त धुँधली हो जाती है। यदि हम प्रभु यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत घनिष्ठता बनाए रखना चाहते हैं, तो इसका अर्थ यह होगा कि हमें कुछ काम करने से और यहाँ तक कि उनके बारे में सोचने से इनकार करना होगा। और कुछ बातें जो दूसरों के लिए स्वीकार्य हो सकती हैं, वे हमारे लिए अस्वीकार्य बन जाएँगी।

दूसरे लोगों के साथ सम्बन्धों में अपनी व्यक्तिगत शुद्धता को निष्कलंक बनाए रखने के लिए एक व्यावहारिक सुझाव यह है कि आप उन्हें वैसे देखना शुरू कर दें जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है। अपने आप से कहें, "वह व्यक्ति *मसीह यीशु में सिद्ध है*! वह मित्र या सम्बन्धी *मसीह यीशु में सिद्ध है*!"

मार्च 27

व्यक्तिगत चरित्र के द्वारा आत्मिक दर्शन

यहाँ ऊपर आ जा, और मैं वे बातें तुझे दिखाऊँगा, जिन का...पूरा होना अवश्य है। प्रकाशितवाक्य 4:1।

मन और आत्मिक दर्शन की और ऊँची स्थिति सिर्फ़ व्यक्तिगत चरित्र के और ऊँचे व्यवहार करने के द्वारा आ सकती है। यदि आप अपने जीवन के बाहरी स्तर पर अपनी जानकारी के अनुसार अपना सबसे ऊँचा और उत्तम जीते हैं, तो परमेश्वर आपसे बराबर कहेगा, "मित्र, और ऊपर आ जा।" परीक्षा के विषय में एक सुनहरा नियम है जो आपको और ऊँचा जाने को कहता है; लेकिन जब आप ऐसा करते हैं, तो आप सिर्फ़ और परीक्षाओं और चरित्र-विशेषताओं का सामना करते हैं। परमेश्वर और शैतान, दोनों ही ऊँचाइयों पर उठाने की युक्ति का इस्तेमाल करते हैं; लेकिन शैतान इसका इस्तेमाल परीक्षा लेने में करता है, और इसका प्रभाव बिलकुल फ़र्क होता है। आपका जीवन एक आत्मिक कलाबाज़ी की क्रिया बन जाता है जिसमें स्थिर रहना कठिन हो जाता है। लेकिन जब परमेश्वर आपको अपने अनुग्रह के द्वारा स्वर्गीय स्थानों में उठाता है, तो आपको एक स्थिरता का स्थान मिलता है जिसमें आप आसानी से घूम-फिर सकते हैं।

अपने आत्मिक जीवन के इस सप्ताह की तुलना पिछले वर्ष के इसी सप्ताह केसाथ करें और देखें कि परमेश्वर ने आपको कैसे एक और ऊँचे स्तर पर बुलाया है। हम सब को एक ज़्यादा ऊँचे दृष्टिकोण से देखने के लिए लाया गया है। परमेश्वर को कभी आपको ऐसा सत्य न दिखाने दें जिसके अनुसार आप तुरन्त जीना नहीं शुरू करते। हमेशा उसके प्रकाश में रहते हुए, उसपर कार्यवाही करें।

अनुग्रह में आपकी बढ़त को इससे नहीं नापा जाता कि आप वापस नहीं लौटे हैं, बल्कि इससे कि आपको इस बात की अन्तर्दृष्टि और समझ है या नहीं कि आत्मिक रूप से आप कहाँ हैं। क्या आपने परमेश्वर को "यहाँ ऊपर आ जा" कहते सुना है, बाहरी स्तर पर सुनने के द्वारा नहीं, बल्कि आपके चरित्र के सबसे भीतरी भाग में ?

"यह जो मैं करता हूँ, सो क्या इब्राहीम से छिपा रखूँ ?" (उत्पत्ति 18:17)। परमेश्वर जो करता है, उसे हमसे छिपा रखने की ज़रूरत होती है, जब तक हम उस स्तर पर नहीं पहुँच जाते जहाँ वह उसे प्रकट कर सकता है।

मार्च 28

क्या कोई ग़लतफ़हमी नहीं हुई है ?

आओ, हम फिर यहूदिया को चलें...चेलों ने उससे कहा ...क्या तू फिर भी वहीं जाना चाहता है ?
यूहन्ना 11:7-8 ।

सिर्फ़ इसलिए क्योंकि मैं यह नहीं समझता कि यीशु मसीह क्या कहता है, मुझे यह सोचने का अधिकार नहीं कि यीशु ने जो कहा उसमें कोई ग़लतफ़हमी हुई है । यह एक ख़तरनाक़ दृष्टिकोण है, और यह सोचना कभी सही नहीं होता कि परमेश्वर के आदेश का पालन करने से यीशु का अपमान होगा । जो एकमात्र चीज़ अपमान लाएगी, वह है उसकी आज्ञा न मानना । परमेश्वर के सम्मान के विषय में अपने मत को उससे आगे रखना जो वह मुझे सफ़ाई से करने के लिए कह रहा है, कभी सही नहीं होता, चाहे वह उसकी बदनामी को रोकने की इच्छा से ही क्यों न हो । जब आदेश परमेश्वर से आते हैं, तो मैं उनकी शान्त हठ के कारण उन्हें पहचान लेता हूँ । लेकिन जब मैं उनके लाभ और हानियों की तुलना करने लगता हूँ, और सन्देह और विवादी विचार मेरे मन में आ जाते हैं, तो मैं इसमें एक ऐसा तत्त्व ले आता हूँ जो परमेश्वर की ओर से नहीं होता । इसका परिणाम यह होगा कि मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचूँगा कि परमेश्वर के द्वारा मुझे दिए गए निर्देश सही नहीं थे । हम में से बहुत से लोग यीशु मसीह के विषय में अपने विचारों के प्रति विश्वासयोग्य होते हैं, लेकिन हम में से कितने लोग खुद यीशु के प्रति विश्वासयोग्य हैं ? यीशु के प्रति विश्वासयोग्यता का अर्थ यह है कि मैं उस समय और उस जगह भी निकल पड़ूँगा जब मुझे कुछ दिखाई नहीं देता (मत्ती 14:29) । लेकिन अपने विचारों के प्रति विश्वासयोग्यता का अर्थ यह है कि पहले मुझे मानसिक रूप से रास्ता साफ़ करने की ज़रूरत है । परन्तु विश्वास बौद्धिक समझ नहीं है; विश्वास यीशु मसीह के व्यक्तित्व के प्रति समझी-बूझी प्रतिबद्धता है, उस समय भी जब मुझे आगे का मार्ग दिखाई नहीं देता ।

क्या आप यह वादविवाद कर रहे हैं कि आपको यीशु में विश्वास का कदम बढ़ाना चाहिए, या तब तक ठहरना चाहिए जब तक आप सफ़ाई से न देख सकें कि उसने जो कहा है उसे कैसे करना होगा ? असंयमित हर्ष के साथ उसकी आज्ञा मान लें । जब वह आपसे कुछ करने को कहता है और आप वादविवाद करने लगते हैं, तो इसका कारण यह होता है कि आपको इसके बारे में ग़लतफ़हमी है कि किस बात से परमेश्वर का सम्मान होता है और किस बात से उसका अपमान । क्या आप यीशु के प्रति विश्वासयोग्य हैं या उसके बारे में अपने विचारों के प्रति ? क्या आप उसके प्रति विश्वासयोग्य हैं जो वह कहता है, या क्या आप उसके वचनों का उन विचारों के साथ समझौता करने की कोशिश कर रहे हैं जो उसकी ओर से हैं ही नहीं ? "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना" (यूहन्ना 2:5) ।

हमारे प्रभु का अचानक हमारे पास आ पहुँचना

तुम भी तैयार रहो ...।
लूका 12:40।

एक मसीही कार्यकर्ता की सबसे बड़ी ज़रूरत है किसी भी मोड़ पर यीशु के आमने-सामने आ जाने की तैयारी। यह आसान नहीं होता, चाहे हमारा अनुभव कैसा भी रहा हो। यह युद्ध पाप, कठिनाइयों, या परिस्थितियों के विरुद्ध नहीं, बल्कि यीशु मसीह के लिए अपनी सेवा में ऐसे लीन होने के विरुद्ध है कि हम हर मोड़ पर खुद यीशु से आमना-सामना करने के लिए तैयार न हों। सबसे बड़ी ज़रूरत अपनी धारणाओं या सिद्धान्तों का सामना करने की नहीं, न ही इस प्रश्न का सामना करने की है कि क्या हम यीशु मसीह के किसी काम के हैं या नहीं, बल्कि खुद *यीशु मसीह* का सामना करने की है।

यीशु कभी-कभार ही उस समय आता है जब हम उसकी प्रत्याशा करते हैं; वह तब आता है जब हमें उसके आने की सबसे कम प्रत्याशा होती है, और हमेशा सब से बेतुकी परिस्थितियों में। परमेश्वर के प्रति ईमानदार होने के लिए एक सेवक के पास एक ही तरीका है : कि वह प्रभु के अचानक हमारे पास आ पहुँचने के लिए तैयार रहे। यह तैयारी सेवा के द्वारा नहीं, बल्कि हर मोड़ पर यीशु मसीह से मिलने की प्रत्याशा करते हुए, गहरी आत्मिक वास्तविकता के द्वारा लाई जाती है। प्रत्याशा की यह भावना हमारे जीवन को एक बालक के आश्चर्य की मनोवृत्ती प्रदान करती है, जो परमेश्वर हमारे जीवन में चाहता है। यदि हम यीशु मसीह के लिए तैयार रहना चाहते हैं, तो हमें धार्मिक बनना बन्द करना होगा। दूसरे शब्दों में, हमें धार्मिकता को एक ऊँची जीवनशैली मानकर इस्तेमाल करना बन्द करना होगा - हमें आत्मिक रूप से वास्तविक होना चाहिए।

यदि आप आज के संसार की धार्मिक विचारधारा की पुकार से दूर रह रहे हैं, और इसके बजाय "यीशु की ओर ताक रहे हैं" (इब्रानियों 12:2), और अपने मन को उसपर लगा रहे हैं जो वह चाहता है, और उसकी सोच के अनुसार सोच रहे हैं, तो आपको अव्यवहारशील और दिन में स्वप्न देखनेवाला माना जाएगा। लेकिन जब प्रभु दिन के बोझ और ताप में अचानक प्रकट होगा, तो आप अकेले ही तैयार पाए जाएँगे। आपको किसी पर भरोसा नहीं करना चाहिए, और यदि यीशु मसीह की ओर ताकते रहने से आपको रोकने में पृथ्वी का सबसे महान पवित्र जन भी बाधा डाले, तो उसपर ध्यान न दें।

मार्च 30

पवित्रता या परमेश्वर के प्रति कठोरता ?

उस ने ...अचम्भा किया कि कोई विनती करनेवाला नहीं ...।
यशायाह 59:16 ।

हम में से बहुत से लोग इसलिए प्रार्थना करना बन्द कर देते हैं और परमेश्वर के प्रति कठोर हो जाते हैं क्योंकि प्रार्थना में हमारी सिर्फ़ भावात्मक रुचि ही होती है । यह कहना बड़ा अच्छा लगता है कि हम प्रार्थना करते हैं, और हम प्रार्थना के विषय में पुस्तकें भी पढ़ते हैं जो हमें बताती हैं कि प्रार्थना लाभकारी होती है - कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो हमारे मन शान्त हो जाते हैं और हमारी आत्मा में नई जान डल जाती है । लेकिन इस पद में यशायाह का अभिप्राय यह है कि प्रार्थना के बारे में ऐसे विचारों से परमेश्वर को हैरानी होती है ।

आराधना और विनती को एक साथ चलना चाहिए; एक के बिना दूसरी असम्भव है । विनती करने का अर्थ यह है कि हम अपने आप को उस स्थान तक उठाते हैं जहाँ हम, जिस व्यक्ति के लिए हम प्रार्थना कर रहे हैं, उसके बारे में मसीह के स्वभाव को पा सकें (फिलिप्पियों 2:5 देखें) । परमेश्वर की आराधना करने के बजाय हम परमेश्वर को भाषण देते हैं कि प्रार्थना को कैसे काम करना चाहिए । जब हम कहते हैं, "लेकिन परमेश्वर, मेरी समझ में यह बिलकुल नहीं आ रहा कि तू यह कैसे करेगा," तो क्या हम परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं या उससे झगड़ा कर रहे हैं ?" यह एक पक्का चिह्न है कि हम आराधना नहीं कर रहे हैं । जब हम परमेश्वर को आँखों से ओझल हो जाने देते हैं, तो हम कठोर और सैद्धान्तिक हो जाते हैं । हम अपने निवेदनों को परमेश्वर के सिंहासन की ओर फेंकते हैं, और उसे आदेश देते हैं कि हम उससे क्या चाहते हैं । न तो हम परमेश्वर की आराधना करते हैं, और न ही अपने स्वभाव को मसीह के स्वभाव में बदलने की कोशिश । और यदि हम परमेश्वर के प्रति कठोर होंगे, तो हम दूसरे लोगों के प्रति भी कठोर बन जाएँगे ।

क्या हम परमेश्वर की आराधना इस ढंग से कर रहे हैं जो हमें उस स्थान तक उठाएगा जहाँ हम परमेश्वर को पकड़ लेंगे और इतने घनिष्ठ सम्पर्क में होंगे कि जिन लोगों के लिए हम विनती कर रहे हैं, उनके बारे में परमेश्वर के मन को जान लेंगे ? क्या हम परमेश्वर के साथ एक पवित्र सम्बन्ध में जी रहे हैं, या हम कठोर और सैद्धान्तिक बन गए हैं ?

क्या आप अपने आप को यह सोचते हुए पाते हैं कि उचित ढंग से विनती करनेवाला कोई नहीं ? तो आप खुद वह व्यक्ति बन जाएँ । ऐसा व्यक्ति बनें जो परमेश्वर की आराधना करता है और उसके साथ एक पवित्र सम्बन्ध में जीता है । विनती करने के वास्तविक काम में लग जाएँ, यह याद रखते हुए कि यह सचमुच मेहनत का काम है - ऐसा काम जो आपकी सारी शक्ति की माँग करता है, लेकिन ऐसा काम जिसमें कोई छिपे हुए ख़तरे नहीं होते । सुसमाचार के प्रचार में उसके अपने ख़तरे होते हैं, लेकिन विनती की प्रार्थना में किसी तरह का ख़तरा नहीं होता ।

मार्च 31

हममें सतर्कता है या ढोंग ?

यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिस का फल मृत्यु न हो, तो बिनती करे, और परमेश्वर, उसे, उन के लिए, जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु न हो, जीवन देगा।
1 यूहन्ना 5:16।

यदि हम सतर्क न रहें और इसकी ओर ध्यान न दें कि परमेश्वर का आत्मा हमारे अन्दर कैसे काम करता है, तो हम आत्मिक रूप से ढोंगी बन जाएँगे। हम देखते हैं कि दूसरे लोग कहाँ असफल हो रहे हैं, और फिर हम अपनी बुद्धि की सहायता से, उनकी ओर से विनती करने के बजाय, उनकी खिल्ली उड़ाते या आलोचना करते हैं। परमेश्वर दूसरों के बारे में यह सच्चाई हमारे दिमाग़ की तेज़ी के द्वारा नहीं, बल्कि अपने आत्मा के प्रभाव के द्वारा हम पर प्रकट करता है। यदि हम ध्यान नहीं देंगे, तो हम परमेश्वर के द्वारा दी गई समझ के स्रोत के बारे में बिलकुल अनजान रहेंगे, दूसरों के प्रति आलोचनात्मक होंगे, और भूल जाएँगे कि परमेश्वर कहता है, कि वह "उसे, उन के लिए, जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु न हो, जीवन देगा।" सावधान रहें, कहीं आप खुद परमेश्वर की आराधना करने से पहले दूसरों का परमेश्वर के साथ सम्बन्ध सही करने में अपना सारा समय लगाकर ढोंगी न बन जाएँ।

परमेश्वर के पवित्र लोग होने के नाते, सबसे जटिल और भ्रान्तिजनक बोझ जो परमेश्वर हमारे ऊपर रखता है, उनमें से एक है दूसरों से सम्बन्धित समझ का बोझ। वह हमें पहचानने की योग्यता देता है ताकि हम उसके सामने उन आत्माओं के लिए ज़िम्मेदारी को स्वीकार कर लें और उनके बारे में मसीह के स्वभाव को बनाएँ (फिलिप्पियों 2:5 देखें)। हमें उसके अनुसार विनती करनी चाहिए जो परमेश्वर कहता है वह हमें देगा, यानि, "उन के लिए जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु न हो, जीवन।" ऐसा नहीं है कि हम परमेश्वर को अपने मन के सम्पर्क में लाने के योग्य हैं, बल्कि यह है कि हम अपने आप को उस स्थिति तक जगाएँ जहाँ परमेश्वर उन लोगों के प्रति जिनके लिए हम विनती कर रहे हैं, हम पर अपना मन प्रकट कर सके।

क्या यीशु अपने मन की पीड़ा हम में देख सकता है ? वह इसे तब तक नहीं देख सकता जब तक हम उसके साथ इतनी घनिष्ठता से एक नहीं हो जाते कि जिन लोगों के लिए हम प्रार्थना करते हैं, उनके सम्बन्ध में हमारा दृष्टिकोण वही हो जो उसका है। काश कि हम पूरे मन से ऐसे विनती करना सीख जाएँ कि विनती करनेवालों के रूप में यीशु मसीह को हमसे पूरी और अत्यधिक सन्तुष्टि मिले।

अप्रैल 1

दूसरों की सहायता करने के लिए तत्परता या उनके प्रति निर्दयता

मसीह वह है जो... हमारे लिए निवेदन भी करता
है ... आत्मा पवित्र लोगों के लिए ... विनती करता है।
रोमियों 8:34, 27।

क्या दूसरों के लिए निवेदन करनेवाले बनने के लिए इससे बढ़कर किसी कारण की ज़रूरत है कि "मसीह...विनती करने को सर्वदा जीवित है" (इब्रानियों 7:25) और यह कि पवित्र आत्मा "पवित्र लोगों के लिए विनती करता है" ? क्या हम दूसरों के साथ ऐसे सम्बन्ध में रह रहे हैं कि हम परमेश्वर के सन्तान होने और उसके आत्मा के द्वारा सिखाए जाने के फलस्वरूप उनके लिए विनती करने का काम करते हैं ? हमें अपनी वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टि डालनी चाहिए। क्या हमारे घर, व्यवसाय, देश में या कहीं और हमें या दूसरों को प्रभावित करनेवाले संकट हमें कुचल रहे हैं ? क्या हम परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर धकेले जा रहे हैं, और क्या हमारे पास आराधना के लिए समय नहीं बचता ? यदि ऐसा है, तो हमें ध्यान भंग करनेवाली चीज़ों को रोकना होगा और परमेश्वर के साथ ऐसा जीवित सम्बन्ध बनाना होगा जिससे दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध बना रहे, उस विनती के कार्य के द्वारा जिसमें परमेश्वर अपने आश्चर्यकर्म करता है।

परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की अपनी ही अभिलाषा के द्वारा उससे आगे निकल जाने के ख़तरे से बचें। हम हज़ारों बातों के द्वारा उससे आगे निकल जाते हैं, और लोगों और समस्याओं के बोझ से इतना दब जाते हैं कि हम परमेश्वर की आराधना नहीं करते, और विनती करने से चूक जाते हैं। यदि कोई बोझ और उसके फलस्वरूप होनेवाला दबाव हमारे ऊपर ऐसे समय होता है जब हम आराधना की मनोदशा में नहीं हैं, तो इससे परमेश्वर के प्रति कठोरता और हमारी अपनी आत्मा में निराशा पैदा होती हैं। परमेश्वर लगातार हमारा परिचय ऐसे लोगों से कराता रहता है जिनमें हमें कोई रुचि नही, और यदि हम परमेश्वर की आराधना नहीं कर रहे हैं, तो उनके प्रति निर्दय होना स्वाभाविक होगा। हम झट से उन्हें बाइबल का एक पद दे देते हैं, जैसे कि उन्हें भाला मार रहे हों, और जल्दबाज़ी में एक निश्चिन्त सलाह देते हुए खिसक जाते हैं। एक निर्दयी मसीही से हमारे प्रभु को कितना शोक होता होगा।

क्या हमारे जीवन उस सही स्थान पर हैं जहाँ हम अपने प्रभु और पवित्र आत्मा के विनती के कार्य में भाग ले सकते हैं ?

महिमा जो सबसे श्रेष्ठ है

प्रभु यीशु... ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए ...।
प्रेरितों के काम 9:17।

जब पौलुस को उसकी दृष्टि मिली, तो उसे यीशु मसीह के व्यक्तित्व में एक आत्मिक अन्तर्दृष्टि भी मिली। उस घड़ी से, उसका सारा जीवन और प्रचार सिर्फ़ यीशु मसीह हो गया। "क्योंकि मैंने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ" (1 कुरिन्थियों 2:2)। पौलुस ने फिर कभी यीशु मसीह के चेहरे को छोड़ किसी और चीज़ को अपना ध्यान आकर्षित करने या थामने की अनुमति नहीं दी।

हमें अपने जीवन में उतना मज़बूत चरित्र बनाकर रखना सीखना चाहिए जितना यीशु मसीह के हमारे दर्शन में प्रकट किया गया है।

एक आत्मिक व्यक्ति की टिकी रहनेवाली विशेषता है अपने जीवन में प्रभु यीशु मसीह के अर्थ को सही तरह से समझने की योग्यता, और परमेश्वर के उद्देश्यों को दूसरों को समझाने की योग्यता। उसके जीवन का सबसे प्रबल अनुराग होता है यीशु मसीह। जब भी आप किसी व्यक्ति में यह गुण देखते हैं, आप यह महसूस करते हैं कि वह परमेश्वर के मन के अनुसार व्यक्ति है (प्रेरितों के काम 13:22)।

किसी भी चीज़ को यीशु मसीह की अन्तर्दृष्टि से अपना ध्यान न हटाने दें। यही इसकी असली परख है कि आप आध्यात्मिक हैं या नहीं। अनाध्यात्मिक होने का अर्थ यह है कि दूसरी चीज़ें आपको प्रबलता से अपनी ओर मोहित कर रही हैं।

जब से यीशु को है देखा,
और कुछ दिखता है नहीं,
क्रूस पर उसको एकटक देखूँ,
नज़र हटती है नहीं।

अप्रैल 3

क्या ही भला होता कि तू जानता

क्या ही भला होता, कि तू ... इसी दिन में कुशल की बातें जानता,
परन्तु अब वे तेरी आँखों से छिप गई हैं।
लूका 19:42।

यीशु ने विजय-उल्लास के साथ यरूशलेम में प्रवेश किया था, और शहर मानो अपनी नींव तले हिल गया था; लेकिन वहाँ एक विचित्र ईश्वर मौजूद था, यानि फरीसियों का घमण्ड। यह ईश्वर धार्मिक और खरा लगता था, लेकिन यीशु ने उसकी तुलना ''चूना फिरी हुई कब्रों'' से की ''जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं'' (मत्ती 23:27)।

वह कौन सी चीज़ है जो आपके ''इसी दिन'' आपको परमेश्वर की शान्ति के प्रति अन्धा कर देती है ? क्या आपके पास कोई अन्य देवता है - कोई घृणित, विक्लांग जन्तु नहीं, बल्कि शायद एक अपवित्र स्वभाव जो आपको वश में रखता है ? परमेश्वर कई बार मुझे मेरे जीवन के किसी अन्य देवता के आमने-सामने लाया है। मैं जानता था कि मुझे उसका त्याग करना चाहिए, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। मैं उस संकट से बाल-बाल बच तो गया, लेकिन मैंने पाया कि मैं अब भी उस देवता के वश में हूँ। मैं उन चीज़ों के प्रति अन्धा हूँ जो मेरी शान्ति स्थापित करती हैं। यह एक चौंका देनेवाली सच्चाई है कि हम ठीक उसी स्थान पर हो सकते हैं जहाँ पवित्र आत्मा को बिना बाधा हमसे अपनी बात मनवाने का मौका मिलना चाहिए, पर हम फिर भी बात को बिगाड़ देते हैं और परमेश्वर की दृष्टि में अपने दोष को बढ़ा देते हैं।

''यदि तू जानता'' परमेश्वर के ये शब्द हमारे हृदय की गहराइयों को छू जाते हैं, और इनके साथ यीशु के आँसू होते हैं। इन शब्दों में हमारी अपनी ग़लतियों की ज़िम्मेदारी का संकेत मिलता है। जो हम नहीं देखते, उसके लिए परमेश्वर हमें जवाबदेह ठहराता है। और ''अब वे तेरी आँखों से छिप गई हैं'' क्योंकि आपने अपने स्वभाव को कभी उसे पूरी तरह समर्पित नहीं किया। जो हो सकता था, उसके लिए कैसा गहरा शोक ! जो दरवाज़े एक बार बन्द हो जाते हैं, उन्हें परमेश्वर फिर कभी नहीं खोलता। वह दूसरे दरवाज़े खोलता है, लेकिन हमें याद दिलाता है कि ऐसे दरवाज़े भी हैं जिन्हें हमने बन्द कर दिया है, ऐसे दरवाज़े जिन्हें बन्द होने की ज़रूरत नहीं थी। जब परमेश्वर आपका अतीत वापस लाता है, तो कभी न घबराएँ। अपनी याद को अपना काम करने दें। यह परमेश्वर के सेवक के रूप में डाँट-फटकार और शोक लाती है। ''जो हो सकता था'', उसे परमेश्वर भविष्य के लिए एक अद्भुत सीख में बदल देगा।

अप्रैल 4

स्थायी विश्वास का मार्ग

देखो, वह घड़ी आती है, वरन् आ पहुँची कि तुम सब तित्तर-बित्तर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है।
यूहन्ना 16:32।

इस अनुच्छेद में यीशु अपने चेलों को फटकार नहीं रहा था : उनका विश्वास सच्चा तो था लेकिन वह उनके जीवन की वास्तविक बातों में कार्यान्वित नहीं था। चेले अपनी ही चिन्ताओं में बिखरे हुए थे, और उनकी रुचियाँ यीशु मसीह से अलग थीं। जब पवित्र आत्मा के पवित्रीकरण के काम के द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ सिद्ध रिश्ता बन्ध जाता है, तो हमारे प्रतिदिन के जीवन की वास्तविकताओं में विश्वास को अमल में लाने की ज़रूरत होती है। हम तितर-बितर हो जाएँगे, सेवकाई में नहीं बल्कि अपने जीवन के खालीपन में जहाँ हम विनाश और निष्फलता देखेंगे और जानेंगे कि परमेश्वर की आशीषों की भीतरी मृत्यु का अर्थ क्या होता है। क्या हम इसके लिए तैयार हैं ? यह नहीं कि हम इनका चुनाव करते हैं, बल्कि परमेश्वर हमारी परिस्थितियों को मोड़कर हमें वहाँ पहुँचाता है। जब तक हम इस अनुभव से नहीं गुज़रते, हमारा विश्वास सिर्फ़ भावनाओं और आशीषों के बल पर टिका रहता है। लेकिन एक बार जब हम वहाँ पहुँच जाते हैं, तो परमेश्वर हमें चाहे जहाँ कहीं भी रख दे, या हम किसी भी प्रकार के भीतरी खालीपन को महसूस करें, हम परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं कि सब कुछ ठीक है। जीवन की वास्तविकताओं में विश्वास को अमल में लाने का अर्थ यही है।

"तुम ... मुझे अकेला छोड़ दोगे।" क्या हम परमेश्वर के प्रबन्ध करनेवाले ख़्याल को न देखने के द्वारा तितर-बितर हो गए हैं और हमने यीशु को अकेला छोड़ दिया है ? क्योंकि हम अपनी परिस्थितियों में परमेश्वर को काम करते हुए नहीं देखते ? अन्धकार परमेश्वर के प्रभुत्व के द्वारा आता है। क्या हम तैयार हैं कि परमेश्वर को वह करने दें जो वह करना चाहता है ? क्या हम बाहरी, प्रकट आशीषों से अलग होने के लिए तैयार हैं ? जब तक यीशु मसीह सचमुच हमारा प्रभु नहीं हो जाता, तब तक हम सब के पास अपने ही लक्ष्य हैं जिन्हें हम पूरा करना चाहते हैं। हमारा विश्वास तो सच्चा है, लेकिन वह अभी तक स्थायी नहीं हुआ है। फिर भी, परमेश्वर जल्दी में कभी नहीं होता। यदि हम ठहरने के लिए तैयार हों, तो हम परमेश्वर को इस बात पर ज़ोर देते हुए देखेंगे कि हमारी रुचि परमेश्वर में नहीं बल्कि उसकी आशीषों में रही है। परमेश्वर की आशीषों का बोध मौलिक है।

"... ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है" (16:33)। हमें जिसकी ज़रूरत है, वह है दृढ़ आत्मिक धैर्य।

उसकी पीड़ा और हमारी संगति

तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया
और अपने चेलों से कहने लगा ... तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।
मत्ती 26:36,38।

हम गतसमनी के बाग़ में मसीह की पीड़ा को पूरी तरह तो कभी नहीं समझ पाएँगे, लेकिन हमें उसके बारे में ग़लतफ़हमी भी नहीं होनी चाहिए। यह पाप के आमने-सामने आनेवाली एक ही व्यक्ति में परमेश्वर और मनुष्य दोनों की पीड़ा है। हम व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा गतसमनी के बारे में नहीं जान सकते। गतसमनी और कलवरी एक बिलकुल बेजोड़ चीज़ को दिखाते हैं - ये हमारे लिए जीवन में जाने का प्रवेशद्वार हैं।

गतसमनी में यीशु की पीड़ा क्रूस पर उसकी मृत्यु के लिए नहीं थी। बल्की उसने ज़ोर देते हुए यह कहा कि वह मरने के उद्‌देश्य से आया था। गतसमनी में उसकी चिन्ता यह थी कि वह मनुष्य का पुत्र होने के नाते इस संघर्ष में सफल होने से चूक तो नहीं जाएगा। उसे पूरा विश्वास था कि परमेश्वर का पुत्र होने के नाते वह इसमें ज़रूर सफल होगा - यहाँ शैतान उसे छू भी नहीं सकता था। लेकिन शैतान का भीषण हमला यह था कि प्रभु हमारे लिए यह काम सिर्फ़ मनुष्य का पुत्र होने के नाते करे। यदि यीशु ने ऐसा किया होता, तो वह हमारा उद्धारकर्ता नहीं हो पाता (इब्रानियों 9:11-15 देखें)। गतसमनी की पीड़ा के विवरण को कुछ समय पहले जंगल में यीशु की परीक्षा के प्रकाश में पढ़ें - "...शैतान ... कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया" (लूका 4:13)। गतसमनी में, शैतान वापस आया और उसने फिर हार का सामना किया। हमारे प्रभु के विरुद्ध शैतान का आखिरी हमला गतसमनी में *मनुष्य का पुत्र* होने के नाते हुआ।

गतसमनी में पीड़ा संसार के उद्धारकर्ता के रूप में अपने पूर्वनिर्धारित काम को पूरा करने की परमेश्वर के पुत्र की पीड़ा थी। यहाँ परदा हटाया गया है ताकि यह प्रकट हो सके कि परमेश्वर के सन्तान बनने के लिए उसे हमारे लिए क्या कीमत चुकानी पड़ी। उसकी पीड़ा हमारे उद्धार की सरलता का आधार थी। मसीह का क्रूस मनुष्य के पुत्र की विजय थी। यह सिर्फ़ इसका चिह्न नहीं था कि हमारे प्रभु ने विजय पाई, बल्कि इसका कि उसने मनुष्य जाति को बचाने के लिए विजय पाई। मनुष्य के पुत्र ने जो कुछ सहा, उसके कारण हर जन के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में पहुँचने के लिए एक मार्ग का प्रबन्ध कर दिया गया है।

अप्रैल 6

परमेश्वर और पाप की टक्कर

वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया ...।
1 पतरस 2:24।

मसीह का क्रूस पाप के ऊपर परमेश्वर के न्याय का प्रकट किया हुआ सत्य है। मसीह के क्रूस के साथ शहादत या आत्मबलिदान के विचार को कभी न जोड़ें। यह परम विजय थी, और इसने नरक की नींव को हिला डाला। समय और अनन्तकाल में ऐसा कुछ नहीं है जो उससे ज़्यादा निश्चित हो सकता जो यीशु मसीह ने क्रूस पर पूरा किया - यानि उसने सारी मानव जाति के लिए परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में वापस आना सम्भव किया। उसने छुटकारे को मनुष्य के जीवन की बुनियाद बनाया। उसने हर मनुष्य के लिए परमेश्वर के साथ संगति करने का मार्ग बनाया।

क्रूस कोई ऐसी घटना नहीं जो मसीह के साथ हो गई - वह मरने ही आया था; वह वह मेम्ना है "जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है" (प्रकाशितवाक्य 13:8)। यीशु के देहधारी होने का सारा अर्थ ही क्रूस है। *"परमेश्वर शरीर में प्रगट हुआ"* को *"...उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया ..."* (1 तीमुथियुस 3:16; 2 कुरिन्थियों 5:21) से अलग करने से सावधान रहें। देहधारी होने का उद्देश्य उद्धार के लिए ही था। परमेश्वर ने शरीर इसलिए धारण किया ताकि पाप को दूर करे, खुद के लिए कुछ पूरा करने के लिए नहीं। क्रूस समय और अनन्तकाल की मुख्य घटना है, और दोनों की सारी समस्याओं का हल भी।

क्रूस एक मनुष्य का क्रूस नहीं, बल्कि परमेश्वर का क्रूस है, और उसे मनुष्य के अनुभव के द्वारा कभी नहीं समझा जा सकता। क्रूस परमेश्वर के स्वभाव का प्रकटीकरण है। यह वह द्वार है जिससे प्रवेश करने के द्वारा हर व्यक्ति परमेश्वर के साथ एकता में आ सकता है। जब हम क्रूस पर पहुँचते हैं, तो इसमें से होकर गुज़र नहीं जाते, बल्कि उस जीवन में बने रहते हैं जिसका प्रवेशद्वार क्रूस है।

उद्धार का केन्द्र मसीह का क्रूस है। उद्धार पाना इतना आसान इसलिए है क्योंकि परमेश्वर को इसकी इतनी भारी क़ीमत चुकानी पड़ी थी। क्रूस वह जगह है जहाँ परमेश्वर और पापमय मनुष्य भारी टक्कर खाकर आपस में एक हो गए और जहाँ जीवन का मार्ग खुल गया। लेकिन इस टक्कर की सारी क़ीमत और पीड़ा परमेश्वर के हृदय ने सही।

अप्रैल 7

हमें साफ़-साफ़ क्यों नहीं बताया जाता ?

उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे,
तब तक जो कुछ तुम ने देखा है, वह किसी से न कहना।
मरकुस 9:9।

जैसे चेलों को आज्ञा दी गई थी, आपको भी किसी से कुछ नहीं कहना चाहिए जब तक कि मनुष्य का पुत्र आपके अन्दर जी न उठे - जब तक जी उठे मसीह का जीवन आपके ऊपर इतना हावी न हो जाए कि आप उन बातों को सचमुच समझें जो उसने तब सिखाई थीं जब वह पृथ्वी पर था। जब आप अपने भीतर सही स्थिति पर पहुँच जाते हैं, तो यीशु के वचन इतने स्पष्ट हो जाते हैं कि आपको हैरानी होती है कि आप इन्हें पहले क्यों नहीं समझ पाए थे। आप इन्हें पहले इसलिए नहीं समझ पाए थे क्योंकि आप इनसे निपटने की सही आत्मिक स्थिति तक नहीं पहुँचे थे।

हमारा प्रभु इन बातों को हमसे छिपाता नहीं, लेकिन हम उन्हें ग्रहण करने के लिए तब तक तैयार नहीं जब तक हम अपने आत्मिक जीवन में सही स्थिति में नहीं हैं। यीशु ने कहा, "मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते" (यूहन्ना 16:12)। उससे किसी सच्चाई को सहने के लिए तैयार होने के लिए ज़रूरी है कि उसके जी उठे जीवन के साथ हमारी संगति हो। क्या हम वास्तव में यीशु के जी उठे हुए जीवन के अपने अन्दर वास करने के बारे में कुछ जानते हैं ? यदि जानते हैं, तो इसका सबूत यह होगा कि परमेश्वर का वचन हमारी समझ में आने लगा है। यदि हमारे पास परमेश्वर का आत्मा नहीं है, तो परमेश्वर हम पर कुछ भी प्रकट नहीं कर सकता। यदि हमने किसी सिद्धान्त के विषय में पहले से ही कोई फ़ैसला कर लिया है, तो इस सम्बन्ध में परमेश्वर की ज्योति हमारे पास नहीं आएगी, हम उसे समझ नहीं पाएँगे। जैसे ही मसीह के जी उठे जीवन की इच्छा हम में पूरी होगी, वैसे ही हमारी मन्दबुद्धि का चरण समाप्त हो जाएगा।

"किसी से न कहना ..." - बहुत से लोग बताते हैं कि उन्होंने यीशु के रूपान्तरण के पहाड़ पर क्या देखा था। उन्हें दर्शन मिला है, और वे इसकी गवाही देते हैं, लेकिन उनका जीवन इससे मेल नहीं खाता, मनुष्य का पुत्र उनके जीवन में अभी तक जी नहीं उठा है। उसके जी उठे जीवन को मुझमें और आपमें पैदा और प्रकट होने में कितना और समय लगेगा ?

उसके पुनरुत्थान का पूर्वनिर्धारित उद्‌देश्य

क्या अवश्य न था कि मसीह ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे ?
लूका 24:26 ।

हमारे प्रभु का क्रूस उसके जीवन में जाने का प्रवेशद्वार है । उसके पुनरुत्थान का अर्थ यह है कि उसके पास अपने जीवन को हम तक पहुँचाने का सामर्थ्य है । जब मेरा नया जन्म हुआ, तो मैंने जी उठे प्रभु यीशु मसीह के खुद के जीवन को पाया ।

मसीह के पुनरुत्थान का पूर्वनिर्धारित उद्‌देश्य था ''बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुँचाना'' (इब्रानियों 2:10) । उसके पूर्वनिर्धारित उद्‌देश्य का पूरा होना उसे अधिकार देता है कि वह हमें परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ बनाए । परमेश्वर के साथ हमारा बिलकुल वैसा सम्बन्ध तो नहीं हो सकता जैसा परमेश्वर के पुत्र का है, लेकिन हम पुत्र के द्वारा पुत्र के सम्बन्ध में लाए जाते हैं । जब हमारा प्रभु मरे हुओं में से जी उठा, तो वह एक बिलकुल नए जीवन में जी उठा - ऐसा जीवन जो उसने देहधारी परमेश्वर होने से पहले कभी नहीं जीया था । वह ऐसे जीवन में जी उठा जो पहले कभी नहीं था; और हमारे लिए उसके पुनरुत्थान का अर्थ यह है कि हम उसके पुनरुत्थान के नए जीवन में जिलाए गए हैं, अपने पुराने जीवन में नहीं । एक दिन, हमारे पास उसकी महिमा की देह के समान देह होगी, लेकिन हम अभी और यहीं उसके पुनरुत्थान के सामर्थ्य और प्रभावशीलता को जान सकते हैं और ''नए जीवन की सी चाल चल सकते हैं'' (रोमियों 6:4) । पौलुस का निश्चित उद्‌देश्य यह था कि वह ''उसको और उसके मृत्युञ्जय की सामर्थ को जाने'' (फिलिप्पियों 3:10)

यीशु ने प्रार्थना की, ''क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे'' (यूहन्ना 17:32) । ''पवित्र आत्मा'' वास्तव में अनन्त जीवन के उस अनुभव का एक और नाम है, जो अभी और यहीं मनुष्यों में काम कर रहा है । पवित्र आत्मा परमेश्वर का वह ईश्वरत्व है जो मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित के सामर्थ्य को हमारे जीवन पर लगाना जारी रखता है । परमेश्वर का धन्यवाद हो इस महिमामय और वैभवशाली सत्य के लिए कि उसका आत्मा मसीह के स्वभाव को हमारे अन्दर भर सकता है, बशर्ते कि हम उसकी आज्ञा मानें ।

अप्रैल 9

क्या आपने यीशु को देखा है ?

इसके बाद वह दूसरे रूप में उन में से दो को ... दिखाई दिया।
मरकुस 16:12।

उद्धार पाना और यीशु को देखना एक ही बात नहीं है। बहुत से लोगों ने, जिन्होंने यीशु को कभी नहीं देखा है, परमेश्वर के अनुग्रह को पाया है और उसके सहभागी हैं। लेकिन जब आप एक बार उसे देख लेते हैं, तो आप पहले जैसे बिलकुल नहीं रह सकते। और चीज़ें आपको पहले की तरह नहीं लुभाती।

इन दोनों बातों में हमेशा फ़र्क कीजिए कि आप यीशु को किस रूप में देखते हैं, और उसने आपके लिए क्या किया है। यदि आप सिर्फ़ वही जानते हैं जो उसने आपके लिए किया है, तो आपका परमेश्वर उतना बड़ा नहीं जितना उसे होना चाहिए। लेकिन यदि आपको दर्शन मिला है और आपने यीशु को वैसा देखा है जैसा वह वास्तव में है, तो अनुभव आते जाते रहें, फिर भी आप "अनदेखे को मानो देखते हुए" दृढ़ रहेंगे (इब्रानियों 11:27)। जो मनुष्य जन्म से अन्धा था, वह यह नहीं जानता था कि यीशु कौन है, जब तक कि मसीह ने दिखाई देकर अपने आप को उसपर प्रकट नहीं किया (यूहन्ना 9 देखें)। यीशु उनको दिखाई देता है जिनके लिए उसने कुछ किया है, लेकिन हम न तो उसे आने की आज्ञा दे सकते हैं, और न ही उसके आने की पूर्वसूचना। वह किसी भी मोड़ पर अचानक दिखाई दे सकता है, और आप पुकार उठेंगे, "अब मैं उसे देखता हूँ !" (यूहन्ना 9:25 देखें)।

यीशु को आपको भी दिखाई देना चाहिए और आपके मित्र को भी। कोई यीशु को आपकी आँखों से नहीं देख सकता। आपस में फूट तब पड़ती है जब एक उसे देख लेता है और दूसरा नहीं। आप अपने मित्र को देखने की स्थिति में नहीं ला सकते। यह काम परमेश्वर को करना है। क्या आपने यीशु को देखा है ? यदि हाँ, तो आप चाहेंगे कि दूसरे भी उसे देखें। "उन्होंने भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उन की भी प्रतीति न की" (मरकुस 16:13)। जब आप उसे देख लेते हैं, तो बताना ज़रूरी है, चाहे वे विश्वास न भी करें।

काश बता सकता, तो तुम भी मान लेते !
काश बोल सकता क्या देखा है मैंने !
कैसे बताऊँऔर कैसे तुम मानोगे,
तुम्हें भी जब तक वह वहीं न लाए ?

अप्रैल 10

पाप के विषय में सम्पूर्ण और प्रभावशाली निर्णय

क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। रोमियों 6:6।

मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जाना - क्या आपने पाप के विषय में यह फ़ैसला किया है कि उसे आपके अन्दर पूरी तरह मर जाना चाहिए ? पाप के विषय में यह सम्पूर्ण और प्रभावशाली फ़ैसला करने की स्थिति पर पहुँचने में बहुत समय लग जाता है। लेकिन यह आपके जीवन की सबसे महान घड़ी होती है जब आप फ़ैसला कर लेते हैं कि पाप को आपमें मरना होगा - सिर्फ़ नियन्त्रित, दबाकर रखते, या विरोध करते हुए ही नहीं, बल्कि उसे क्रूस पर चढ़ाते हुए - ठीक जैसे यीशु मसीह जगत के पापों के लिए मरा। कोई भी किसी और से यह फ़ैसला नहीं करवा सकता। मानसिक और आत्मिक रूप से तो हमने इसे स्वीकार कर लिया होगा, लेकिन ज़रूरी है कि हम वह फ़ैसला करें जिसके लिए पौलुस ने इस अनुच्छेद में हमसे आग्रह किया।

अब और सब कुछ छोड़कर, परमेश्वर के साथ अकेले में कुछ समय बिताएँ, और यह कहते हुए यह महत्त्वपूर्ण फ़ैसला करें, कि "हे प्रभु, मुझे अपनी मृत्यु में अपने साथ शामिल कर जब तक मैं यह न जान लूँ कि मुझमें पाप मर गया है।" यह नैतिक फ़ैसला कर लें कि आपके अन्दर पाप का मार डाला जाना ज़रूरी है।

पौलुस के लिए यह भविष्य की कोई दिव्य प्रत्याशा नहीं, बल्कि उसके जीवन का एक बहुत मौलिक और निश्चित अनुभव था। क्या आप इसके लिए तैयार हैं कि परमेश्वर का आत्मा आपको तब तक जाँचे जब तक आप यह न जान लें कि आपके जीवन में पाप का स्तर क्या है, और देख सकें कि वे कौन सी चीज़ें हैं जो आपमें परमेश्वर के आत्मा के साथ संघर्ष करती हैं ? यदि हाँ, तो क्या आप पाप के स्वभाव के बारे में परमेश्वर के फ़ैसले के साथ सहमत होंगे कि उसकी पहचान यीशु की मृत्यु के साथ की जानी चाहिए ? "अपने आप को पाप के लिए मरा समझना" (6:6) तब तक सम्भव नहीं जब तक आप परमेश्वर के सामने मौलिक रूप से अपनी इच्छा के विषय से निपट न लें।

क्या आपने मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने के इस महिमामय सौभाग्य में प्रवेश किया है, जब तक सिर्फ़ मसीह का जीवन ही आपके माँस और लोहू में बची आखिरी चीज़ नहीं हो जाती ? "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है ..." (गलातियों 2:20)।

अप्रैल 11

सम्पूर्ण और प्रभावशाली ईश्वरत्व

क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं,
तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएँगे।
रोमियों 6:5।

मसीह के साथ जी उठना - यदि मैंने यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने का अनुभव किया है, तो इसका सबूत यह होगा कि मुझमें उसकी निश्चित समानता होगी। यीशु के आत्मा का मुझमें आना परमेश्वर के आगे मेरे व्यक्तिगत जीवन को फिर से व्यवस्थित करता है। यीशु के पुनरुत्थान ने उसे यह अधिकार दे दिया है कि वह परमेश्वर के जीवन को मुझे दे, और मेरे जीवन के अनुभव अब उसके जीवन के आधार पर बनने चाहिए। मुझे यीशु के पुनरुत्थान का जीवन अभी और यहीं मिल सकता है, और यह अपने आप को पवित्रता के द्वारा प्रदर्शित करेगा।

पौलुस के सारे लेखों में जो विचार पाया जाता है, वह यह है कि जब यीशु की मृत्यु में उसके साथ एक होने का फ़ैसला कर लिया जाता है, तो यीशु के पुनरुत्थान का जीवन मेरे मानव स्वभाव के हर कतरे में फैल जाता है। मानव शरीर में परमेश्वर के पुत्र का जीवन जीने के लिए परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता की ज़रूरत होती है। पवित्र आत्मा को घर के एक कमरे में मेहमान के रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता - वह पूरे घर पर कब्ज़ा कर लेता है। और जब मैं यह फ़ैसला कर लेता हूँ कि मेरे "पुराने मनुष्यत्व" (यानि विरासत में मिले पाप) को यीशु की मृत्यु में उसके साथ एक होना है, तो पवित्र आत्मा मुझ पर कब्ज़ा कर लेता है। वह सब बातों का संचालन अपने हाथ में ले लेता है। मेरा काम यह है कि मैं ज्योति में चलूँ और जो कुछ वह मुझ पर प्रकट करता है, उसकी आज्ञा मानूँ। एक बार जब मैं पाप के विषय में यह नैतिक फ़ैसला कर लेता हूँ, तो यह "समझना" आसान हो जाता है कि मैं वास्तव में "पाप के लिए मरा" हूँ, क्योंकि मैं यीशु के जीवन को हर समय अपने आप में पाता हूँ (रोमियों 6:11)। जिस तरह मानव स्वभाव एक ही प्रकार का होता है, उसी तरह पवित्रता भी एक ही प्रकार की होती है, यानि यीशु की पवित्रता। और वह यीशु की ही पवित्रता है जो मुझे वरदान के रूप में दी गई है। परमेश्वर अपने पुत्र की पवित्रता मुझमें डालता है, और मैं एक नए आत्मिक संघठन का हो जाता हूँ।

अप्रैल 12

सम्पूर्ण और प्रभावशाली अधिकार

उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की ... परन्तु जो जीवित है,
तो परमेश्वर के लिए जीवित है। ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा,
परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो।
रोमियों 6:9-11।

मसीह के साथ अनन्त जीवन। अनन्त जीवन वह जीवन है जो यीशु मसीह ने मानवीय स्तर पर प्रदर्शित किया। और वही जीवन है, उसकी एक प्रतिलिपि नहीं, जो हमारे नाशमान शरीर में प्रकट होता है जब हम नए सिरे से जन्म लेते हैं। अनन्त जीवन परमेश्वर से मिलने वाला वरदान नहीं है; अनन्त जीवन *परमेश्वर का* वरदान है। जब हम एक बार पाप के बारे में नैतिक फ़ैसला कर लेते हैं, तो जो शक्ति और सामर्थ्य यीशु में इतना प्रकट होते थे, परमेश्वर के असीम परम अनुग्रह के कार्य से, हम में भी प्रदर्शित होंगे।

"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ पाओगे ..." (प्रेरितों के काम 1:8) - पवित्र आत्मा से वरदान के रूप में सामर्थ्य नहीं ; सामर्थ्य खुद पवित्र आत्मा है, उसके द्वारा हमें दी जानेवाली कोई चीज़ नहीं। एक बार जब हम उसके साथ एक होने का फ़ैसला कर लेते हैं, तो जो जीवन यीशु में था, वह उसके क्रूस के कारण हमारा हो जाता है। यदि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करना कठिन लगता है, तो यह इसलिए होता है क्योंकि हम पाप के विषय में पक्का फ़ैसला करने से इनकार कर रहे हैं। लेकिन जब हम फ़ैसला कर लेते हैं, तो परमेश्वर का सम्पूर्ण जीवन तुरन्त आ जाता है। यीशु हमें जीवन की अनन्त भरपूरी देने के लिए आया - "... ताकि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ" (इफिसियों 3:19)। अनन्त जीवन का समय के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। यह वह जीवन है जो यीशु ने जीया जब वह पृथ्वी पर था, और जीवन का एकमात्र स्रोत प्रभु यीशु मसीह है।

कमज़ोर से कमज़ोर पवित्र जन भी परमेश्वर के पुत्र के ईश्वरत्व के सामर्थ्य का अनुभव कर सकता है, जब वह "छोड़ देने" को तैयार होता है। लेकिन अपने थोड़े से भी सामर्थ्य को "थामे रहने" की कोई भी कोशिश हम में यीशु के जीवन को कम ही करेगी। हमें छोड़ते रहना होगा, और धीरे-धीरे ही सही, लेकिन पक्की तौर से परमेश्वर का महान सम्पूर्ण जीवन हम में फैल जाएगा, और हमारे अंग-अंग में बस जाएगा। फिर हम में यीशु का सम्पूर्ण और प्रभावशाली अधिकार होगा, और लोग देखेंगे कि हम यीशु के साथ थे।

जब बोझ दबाते हैं, तो क्या करना चाहिए ?

अपना बोझ यहोवा पर डाल दे, वह तुझे सम्भालेगा।
भजन संहिता 55:22।

हमें दोनों तरह के बोझों में फ़र्क को पहचानना चाहिए - वे बोझ जिन्हें उठाना हमारे लिए ठीक है, और वे बोझ जिन्हें उठाना ग़लत है। हमें पाप या शक के बोझ कभी नहीं उठाने चाहिए, लेकिन कुछ ऐसे बोझ हैं जो परमेश्वर ने हमारे ऊपर रखे हैं, जिन्हें हटाने का उसका इरादा नहीं है। परमेश्वर चाहता है कि हम इन्हें वापस उसी के पास लुढ़का दें - और जो "बोझ" उसने दिया है, उसे "यहोवा पर डाल दें।" यदि हम परमेश्वर की सेवा और उसका कार्य करने निकल पड़ते हैं लेकिन उससे सम्पर्क तोड़ देते हैं, तो हम जिस ज़िम्मेदारी को महसूस करेंगे, वह हमें दबाने और हरानेवाली होगी। लेकिन यदि हम उन बोझों को जो उसने हमें दिए हैं, वापस उसी की ओर लुढ़का दें, तो वह ज़िम्मेदारी के असीम एहसास को दूर कर देगा, और उसकी जगह अपने आप का एहसास देगा।

बहुत से सेवक बड़े साहस से और सही इरादों से परमेश्वर की सेवा करने निकले हैं, लेकिन यीशु मसीह के साथ घनिष्ठ संगति के बिना, इसलिए वे जल्दी ही दब गए हैं। वे नहीं जानते कि अपने बोझ के साथ क्या करें, और यह उनके जीवन में थकान पैदा कर देता है। दूसरे इसे देख कर कहते हैं, "एक अच्छी शुरुआत का कितना दुखद अन्त !"

"अपने बोझ यहोवा पर डाल दे ..." आप उसे अब तक उठाते रहे हैं, लेकिन अब संकल्प करते हुए उसका एक सिरा परमेश्वर के कंधे पर रख दें। "...और प्रभुता उसके कांधे पर होगी ..." (यशायाह 9:6)। जो भी बोझ परमेश्वर ने आपके ऊपर रखा है, उसे परमेश्वर को सौंप दें। उसे एक तरफ़ फेंकें नहीं, बल्कि उसे और अपने आप को परमेश्वर को दे दें। आप देखेंगे कि संगति के अनुभव से आपका बोझ हल्का हो गया है। अपने आप को अपने बोझ से कभी अलग नहीं करना चाहिए।

अप्रैल 14

भीतरी अजेयता

मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो ...।
मत्ती 11:29।

"प्रभु जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है ..." (इब्रानियों 12:6)। हमारी शिकायतें कितनी तुच्छ प्रकार की होती हैं। हमारा प्रभु हमें उस स्थिति पर लाने की कोशिश शुरू करता है जहाँ हम उसके साथ संगति कर सकेंगे, और हम कराह कर यह कहते हैं कि "हे प्रभु, मुझे भी दूसरे लोगों की तरह होने दे !" यीशु हमसे आग्रह कर रहा है कि हम उसके पास खड़े हो जाएँ और जूए का एक सिरा अपने ऊपर ले लें, ताकि हम उसे एक साथ खींच सकें। यीशु इसीलिए कहता है, "मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है" (मत्ती 11:30)। क्या आप यीशु के साथ घनिष्ठता में उसके इतने पास हैं ? यदि हाँ, तो आप परमेश्वर का धन्यवाद करेंगे जब आप उसके हाथ के दबाव को अपने ऊपर महसूस करेंगे।

"वह ... शक्तिहीन को बहुत सामर्थ्य देता है" (यशायाह 40:29)। परमेश्वर आता है और हमें हमारी भावुकता से बाहर निकालता है और हमारा बुड़बुड़ाना स्तुति के गीत में बदल जाता है। परमेश्वर के सामर्थ्य को जानने का एक ही तरीका यह है कि हम यीशु के जूए को अपने ऊपर ले लें और उससे सीखें।

"यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है" (नहेम्याह 8:19)। पवित्र लोगों को अपना आनन्द कहाँ मिलता है ? कुछ मसीही ऐसे होते हैं जिन्हें देखने से हमें लगता है कि उनके पास उठाने के लिए कोई बोझ नहीं। लेकिन हमें अपनी आँखो से परदा हटाने की ज़रूरत है। यह सच कि उनके पास परमेश्वर की शान्ति, ज्योति, और आनन्द है, इस बात का सबूत है कि उनके पास बोझ भी है। परमेश्वर हमारे ऊपर जो बोझ रखता है, वह बोझ हमारे जीवन के अंगूरों को निचोड़ता है और उनसे दाखरस निकालता है, लेकिन हम में से बहुत से लोग दाखरस को ही देखते हैं, बोझ को नहीं। पृथ्वी या नरक का कोई भी सामर्थ्य मनुष्य की आत्मा में वास करनेवाले परमेश्वर के आत्मा पर विजय नहीं पा सकता। यह एक भीतरी अजेयता की रचना करता है।

यदि आपके जीवन में सिर्फ़ रोना और शिकायत करना पाया जाता है, तो उसे निर्दयता से ठोकर मारकर बाहर कर दें। परमेश्वर के सामर्थ्य में निर्बल होना एक मसीही के लिए सचमुच अपराध है।

अप्रैल 15

ध्यान देने से चूक जाना

ऊँचे स्थान तो इस्राएलियों में से न ढाए गए, तौभी आसा का मन जीवन भर निष्कपट रहा।
2 इतिहास 15:17।

आसा अपने जीवन के बाहरी, दिखाई देनेवाले क्षेत्रों में पूरी तरह आज्ञाकारी नहीं था। वह उन क्षेत्रों में आज्ञाकारी था जिन्हें वह सबसे महत्त्वपूर्ण समझता था, लेकिन वह पूरी तरह से सही नहीं था। यह सोचने से हमेशा सावधान रहें कि "मेरे जीवन में उस चीज़ का ज़्यादा महत्त्व नहीं।" यही सच्चाई कि आप उस बात को ज़्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं समझते, परमेश्वर के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकती है। परमेश्वर के एक बच्चे को किसी भी मामले को मामूली नहीं समझना चाहिए। हम परमेश्वर को हमें एक बात सिखाने से कितने समय तक रोकते रहेंगे ? लेकिन वह कभी धीरज नहीं खोता। आप कहते हैं, "परमेश्वर के साथ मेरा सम्बन्ध सही है" - फिर भी आपके जीवन में "ऊँचे स्थान" बने रहते हैं। अब भी कुछ बातें हैं जहाँ आपने आज्ञा नहीं मानी है। क्या आप दृढ़ता से कहते हैं कि परमेश्वर के साथ आपके हृदय का सम्बन्ध सही है, फिर भी क्या आपके जीवन में कुछ ऐसा है जिसके सम्बन्ध में परमेश्वर ने आपके मन में सन्देह डाला है ? जब भी परमेश्वर किसी बात के बारे में सन्देह होने देता है, उस बात को तुरन्त छोड़ दें चाहे वह कुछ भी हो। हमारे जीवन की कोई भी बात परमेश्वर के लिए एक मामूली सी बात नहीं होती।

क्या आपके शारीरिक या बौद्धिक जीवन से सम्बन्धित कोई बातें हैं जिनकी ओर आप बिलकुल ध्यान नहीं देते रहे हैं ? यदि ऐसा है, तो आप यह सोच सकते हैं कि आप महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में बिलकुल सही हैं, लेकिन वास्तव में आप लापरवाह हैं - आप सही ढंग से ध्यान लगाने से चूक रहे हैं। जैसे आपका हृदय धड़कने से एक दिन की छुट्टी भी नहीं ले सकता, उसी तरह से आप भी अपने जीवन के मामलों पर आत्मिक रूप से ध्यान देने से छुट्टी नहीं ले सकते। जैसे आप नैतिकता से एक दिन छुट्टी लेने पर नैतिक नहीं रह सकते, वैसे ही आप आत्मिक रूप से एक दिन की छुट्टी लेकर आत्मिक नहीं रह सकते। परमेश्वर चाहता है कि आप पूरी तरह से उसके हों, और इसमें पूरे उतरने के लिए आपको पूरा ध्यान देने की ज़रूरत है। इसमें बहुत समय लग जाता है। फिर भी बहुत से लोगे हैं जो समझते हैं कि वे कुछ ही क्षणों के प्रयास से कई पर्वतों पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

अप्रैल 16

क्या आप पहाड़ से नीचे उतर सकते हैं ?

जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो।
यूहन्ना 12:36।

हम सब के जीवन में ऐसी घड़ियाँ आती हैं जब हम पहले से कहीं ज़्यादा बेहतर महसूस करते हैं, और हम कहते हैं, "मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं सब कुछ करने के योग्य हूँ ; काश मैं हमेशा ऐसा ही हो सकता !" हमारा ऐसा ही होना परमेश्वर के इरादे के अनुसार नहीं है। वे घड़ियाँ अन्तर्दृष्टि की घड़ियाँ होती हैं, जिनके अनुसार हमें तब भी चलना होगा जब हमारा मन ऐसा नहीं करना चाहता। हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं जो, यदि वे पर्वत की चोटी पर होने का अनुभव नहीं कर रहे हैं, तो साधारण सांसारिक जीवन के लिए बेकार हैं। हमें अपने प्रतिदिन के जीवन को उस स्तर तक पहुँचाना है जो हम पर तब प्रकट हुआ था जब हम पहाड़ की चोटी पर थे।

पहाड़ की चोटी पर जगाए गए एहसास को कभी उड़ न जाने दें। अपने मानसिक पैरों को एक ताक पर रख कर यह न कहें कि "ऐसी अद्‌भुत मानसिक स्थिति में रहना कितना सुहाना है !" तुरन्त कोई कार्यवाही करें - कुछ करें, चाहे आपकी कार्यवाही का एकमात्र कारण यही क्यों न हो कि आप कुछ नहीं करना चाहते। यदि, एक प्रार्थना सभा के दौरान, परमेश्वर आपको करने के लिए कुछ दिखाता है, तो यह न कहें, "हाँ, करूँगा" - बल्कि उसे *कर दिखाएँ*। अपने आप को गरदन से पकड़कर अपनी सारी मानवीय सुस्ती को झंझोड़ गिराएँ। पहाड़ की चोटी के अनुभव की लालसाओं में हमेशा सुस्ती दिखाई देती है; हमारी बातचीत हमेशा पहाड़ पर समय बिताने की योजना बनाने के बारे में होती है। हमने पहाड़ पर जो देखा है, हमें उसके अनुसार साधारण, निराशाजनक दिनों में जीना सीखना चाहिए।

इस कारण हिम्मत न हारें क्योंकि आप पहले कभी विस्मय में पड़ गए थे - फिर से शुरू हो जाएँ। वापस जाने के सारे रास्तों को बन्द कर दें, और अपनी इच्छा की कार्यवाही के द्वारा परमेश्वर को समर्पित हों। अपने फ़ैसलों को कभी न बदलें, लेकिन निश्चित कर लें कि आप अपने फ़ैसले उसके प्रकाश में बना रहे हैं जो आपने पहाड़ पर देखा और सीखा था।

अप्रैल 17

सब कुछ या कुछ नहीं ?

शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है, कमर में अंगरखा कस लिया ...और झील में कूद गया।
यूहन्ना 21:7।

क्या आपके जीवन में कभी कोई ऐसा संकट आया है जिसमें आपने समझ-बूझकर, इमानदारी से, और अन्धाधुन्ध होकर सब कुछ छोड़ दिया है ? यह इच्छा का संकट होता है। आप बाहरी रूप से इस स्थिति में बहुत बार आ सकते हैं, लेकिन इसका कोई असर नहीं होगा। त्याग या सम्पूर्ण समर्पण की संकट-स्थिति तक अन्दर से पहुँचा जा सकता है, बाहर से नहीं। सिर्फ़ बाहरी चीज़ों का त्याग वास्तव में आपके सम्पूर्ण रूप से दासत्व में होने का सूचक हो सकता है।

क्या आपने समझ-बूझकर अपनी इच्छा को यीशु मसीह को सौंपा है ? यह इच्छा का मामला है, भावनाओं का नहीं। इसके फलस्वरूप होनेवाली कोई भी सकारात्मक भावना इस मामले से निकलनेवाली एक सतही आशीष ही होती है। यदि आप अपना ध्यान भावना पर केन्द्रित करेंगे, तो आप यह सौदा कभी नहीं करेंगे। परमेश्वर से यह कभी न पूछें कि सौदा क्या होगा, बल्कि आप जो भी देखते हैं उसका सौदा करें चाहे वह उथले स्थान में हो या गहरे में।

यदि आपने यीशु मसीह की आवाज़ को समुद्र की लहरों पर सुना है, तो उसके साथ अपने सम्बन्ध बनाए रखें और अपनी धारणाओं और स्थिरता की चिन्ता न करें।

अप्रैल 18

तत्परता

परमेश्वर ने उसे ...पुकारा ...मूसा ने कहा, क्या आज्ञा।
निर्गमन 3:4।

जब परमेश्वर बोलता है, तो हम में से बहुत से धुँध में फँसे लोगों की तरह होते हैं, और हम कोई उत्तर नहीं देते। मूसा ने परमेश्वर को जो उत्तर दिया, उससे प्रकट होता है कि उसे पता था कि वह कहाँ है और यह भी कि वह तैयार है। तत्परता का अर्थ है परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध रखना और यह जानना कि हम कहाँ हैं। हम परमेश्वर को यह बताने में व्यस्त रहते हैं कि हम कहाँ जाना पसन्द करेंगे। लेकिन जो व्यक्ति परमेश्वर और उसके कार्य के लिए तैयार रहता है, बुलावा आने पर उसी को इनाम मिल जाता है। हम इस विचार से इन्तज़ार करते हैं कि कोई महान मौका या कोई सनसनीखेज़ बात हमारे जीवन में आएगी, और जैसे ही यह आती है, हम जल्दी से पुकार उठते हैं, "मैं यहाँ हूँ, आज्ञा दे।" जब हमें यह एहसास होता है कि यीशु किसी महान कार्य में अधिकार लेने के लिए उठ रहा है, तो हम वहाँ तैयार होते हैं, लेकिन हम किसी गुमनामी के कर्त्तव्य के लिए तैयार नहीं होते।

परमेश्वर के लिए तैयार रहने का अर्थ यह है कि हम छोटे से छोटे या बड़े से बड़े काम के लिए तैयार हैं। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि काम छोटा है या बड़ा। इसका अर्थ यह है कि हमारे पास यह चुनने का विकल्प नहीं कि हम क्या करना चाहते हैं बल्कि यह कि परमेश्वर की योजना चाहे कुछ भी हो, हम उसके लिए वहाँ तैयार हैं। जब भी कर्त्तव्य हमारे सामने आ खड़ा होता है, तो हम परमेश्वर की आवाज़ सुनते हैं, ठीक जैसे हमारे प्रभु ने उसकी आवाज़ सुनी, और हम उसके प्रति अपने प्रेम की सम्पूर्ण तत्परता से उस कर्त्तव्य के लिए तैयार होते हैं। यीशु मसीह हमारे साथ वैसे ही करना चाहता है जैसे उसके पिता ने उसके साथ किया। वह जहाँ चाहे हमें वहाँ रख सकता है, सुखदायी या दीन कर्त्तव्यों में, क्योंकि यीशु के साथ हमारी एकता बिल्कुल वैसी ही है जैसी उसकी एकता उसके पिता के साथ थी। "...वे वैसे ही एक हों, जैसे कि हम एक हैं" (यूहन्ना 17:22)।

परमेश्वर के अचानक आपके पास आने के लिए तैयार रहें। एक तैयार व्यक्ति को तैयार होने की ज़रूरत कभी नहीं होती - वह तो पहले से ही तैयार है। ज़रा सोचें कि जब परमेश्वर बुलाता है, तो हम तैयारी करने की कोशिश में कितना समय नष्ट कर देते हैं ! जलती हुई झाड़ी उन सब बातों का प्रतीक है जो एक तैयार व्यक्ति के चारों तरफ़ होती हैं, यह परमेश्वर की उपस्थिति से प्रज्वलित होती है।

सबसे छोटी सम्भावित परीक्षा से सावधान रहें

योआब अबशलोम के पीछे तो नहीं हो लिया था, परन्तु अदोनिय्याह के पीछे हो लिया था।
1 राजा 2:28।

योआब ने मोहक और महत्त्वाकांक्षी अबशलोम के पीछे न हो लेकर पूरी तरह से दाऊद का स्वामिभक्त रहने के द्वारा अपने जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा का सामना किया। फिर भी, अपने जीवन के अन्त तक पहुँचने पर वह कमज़ोर और कायर अदोनिय्याह के पीछे हो लिया। इस बात के बारे में हमेशा सचेत रहें कि जहाँ एक व्यक्ति पीछे लौट गया है, वहीं पर किसी और के पीछे लौटने की परीक्षा भी हो सकती है (1 कुरिन्थियों 10:11-13 देखें)। आप हाल में ही किसी महान संकट में विजयी रहे होंगे, लेकिन अब उन बातों के बारे में सावधान रहें जिन्हें देखकर लगता है कि वे आपकी परीक्षा लेने के लिए सबसे कम सम्भावना रखती हैं। यह समझने से सावधान रहें कि बीते दिनों में आपने अपने जीवन के जिन क्षेत्रों में विजय का अनुभव किया है, उन क्षेत्रों में आपके लड़खड़ाने और गिरने की सबसे कम सम्भावना है।

हमारी प्रवृत्ति यह कहती है कि "अपने जीवन के सबसे महान संकट से गुज़रने के बाद यह सम्भावना नहीं कि मैं फिर सांसारिक वस्तुओं की ओर लौटूँगा।" यह भविष्यवाणी करने की कोशिश न करें कि परीक्षा कहाँ आएगी। सबसे कम सम्भावना वाली चीज़ ही असली ख़तरा होती है। किसी महान आत्मिक घटना के बाद ही सबसे कम सम्भावना वाली चीज़ें प्रभावी होना शुरू करती हैं। वे बहुत प्रबल या प्रभावी न भी हों, लेकिन वे मौजूद ज़रूर होती हैं। और यदि आप पहले से सावधान नहीं होते तो वे आपको लड़खड़ा देती हैं। आप भयंकर और गम्भीर परीक्षाओं में परमेश्वर के प्रति विश्वायोग्य रहे हैं, अब अन्तर्भावना से सावधान रहें। भविष्य के बारे में डरते हुए अस्वाभाविक रूप से आत्मनिरीक्षण न करते रहें, लेकिन सचेत रहें ; अपनी याददाश्त को परमेश्वर के सामने तेज़ रखें। असावधान शक्ति वास्तव में दुगुनी निर्बलता होती है क्योंकि सबसे कम सम्भावना वाली परीक्षाएँ वहीं पर शक्ति को चूसने में प्रभावशाली होती हैं। बाइबल में लोग अपनी शक्तियों के मुद्दों पर लड़खड़ाए, अपनी निर्बलताओं के मुद्दों पर नहीं।

"...जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से ...की जाती है" - वही एकमात्र सुरक्षा है (1 पतरस 1:5)।

अप्रैल 20

क्या एक पवित्र जन परमेश्वर पर झूठा दोष लगा सकता है ?

परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएँ हैं, वे सब उसी में हाँ ... हैं ... उसके द्वारा आमीन भी हुईं। 2 कुरिन्थियों 1:20।

मत्ती 25:14-30 में यीशु का तोड़ों का दृष्टान्त एक चेतावनी थी कि हमारे लिए यह सम्भव है कि हम अपनी योग्यताओं के बारे में ग़लत अनुमान लगाएँ। इस दृष्टान्त का प्राकृतिक वरदानों और योग्यताओं से कोई सम्बन्ध नहीं, बल्कि इसका सम्बन्ध पवित्र आत्मा के दान से है जैसे वह सबसे पहले पिन्तेकुस्त के दिन दिया गया था। हमें अपनी आत्मिक योग्यता को अपनी शिक्षा या बुद्धि के आधार पर कभी नहीं नापना चाहिए: आत्मिक बातों में हमारी योग्यता परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के आधार पर नापी जानी चाहिए। यदि हम उससे कम पाएँ जितना परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास हो, तो हम उसपर झूठा दोष लगाएँगे, जैसे उस सेवक ने अपने स्वामी पर लगाया जब उसने कहा, "तूने मुझे जितना करने का सामर्थ्य दिया, उससे अधिक अपेक्षा की। तू मुझसे बहुत ज़्यादा माँग करता है, और जहाँ तूने मुझे रखा है, वहाँ मैं तेरे प्रति विश्वासयोग्य नहीं रह सकता।" जब परमेश्वर के सर्वशक्तिमान आत्मा का सवाल होता है, तो कभी यह न कहें कि, "मैं नहीं कर सकता।" अपनी प्राकृतिक योग्यता को इस मामले में न आने दें। यदि हमने पवित्र आत्मा पाया है, तो परमेश्वर अपेक्षा करता है कि पवित्र आत्मा का कार्य हम में प्रदर्शित हो।

सेवक ने हर मुद्दे पर अपने स्वामी को दोषी ठहराते हुए अपनी सफ़ाई दी, मानो वह कह रहा हो, "तू मुझसे जो माँग कर रहा है, वह उस अनुपात से कहीं अधिक है जो तूने मुझे दिया है।" परमेश्वर के यह कहने के बावजूद भी कि, "इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी" (मत्ती 6:33), क्या हम चिन्ता करने की हिम्मत करने के द्वारा परमेश्वर पर झूठा दोष लगाते रहे हैं ? चिन्ता करने का अर्थ बिलकुल वही है जो इस सेवक का अभिप्राय था - "मैं जानता हूँ कि तेरा इरादा मुझे असुरक्षित छोड़ देने का है।" प्राकृतिक रूप से आलसी व्यक्ति हमेशा आलोचना करता है और कहता है "मुझे कभी ढंग का मौका नहीं मिला,"और आत्मिक रूप से आलसी व्यक्ति परमेश्वर की आलोचना करता है। आलसी लोग हमेशा अपनी मनमानी करते हैं और दोष दूसरों को देते हैं।

इस बात को कभी न भूलें कि आत्मिक मामलों में हमारी योग्यता परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित होती हैं और उन्हीं के द्वारा नापी जाती हैं। क्या परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के योग्य है ? हमारा उत्तर इसपर निर्भर करता है कि हमने पवित्र आत्मा पाया है या नहीं।

अप्रैल 21

प्रभु का दिल न दुखाओ

हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता ?
यूहन्ना 14:9 ।

हमारे प्रभु को बार-बार हम पर आश्चर्य होता होगा - आश्चर्य कि हम कितने "अ-निष्कपट" हैं । यह हमारे अपने मत ही हैं जो हमें इतना मन्दबुद्धि बनाते हैं । जब हम सीधे-सादे होते हैं, तो कभी मन्दबुद्धि नहीं होते; हम में हर समय पहचानने की क्षमता होती है । फिलिप्पुस को भविष्य में एक महान रहस्य के प्रकटन की प्रत्याशा थी, लेकिन यीशु यानि उस व्यक्ति में नहीं जिसे वह जानता था । परमेश्वर का रहस्य इसमें नहीं जो भविष्य में होनेवाला है, बल्कि अभी है, हालाँकि हम उसकी तलाश भविष्य में प्रकट होनेवाली किसी उथल-पुथल करनेवाली घटना में करते हैं । हम में यीशु की आज्ञा मानने की अनिच्छा नहीं, लेकिन सम्भव है कि हम यह पूछने के द्वारा उसका दिल दुखा रहे हैं कि, "प्रभु, पिता को हमें दिखा दे ..."(14:8) । हमें उसका प्रत्युत्तर तुरन्त मिलता है जब वह कहता है, "क्या तुम उसे नहीं देख सकते ? वह तो यहीं है या फिर कहीं और नहीं मिल सकता ।" हम परमेश्वर की ओर देखते हैं कि वह अपने आपको अपने बच्चों *को* दिखाएगा, लेकिन परमेश्वर अपने आप को सिर्फ़ अपने बच्चों *में* दिखाता है । दूसरे लोग इसका सबूत देखते हैं, लेकिन परमेश्वर का बालक उसे नहीं देख सकता । हम इसके बारे में पूरी तरह जागरूक रहना चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे अन्दर क्या कर रहा है, लेकिन हम पूरी तरह जागरूक रहते हुए दिंमाग़ी सन्तुलन नहीं रख सकते । यदि हम परमेश्वर से अनुभव माँग रहे हैं, और उन अनुभवों की जागरूकता हमारे मार्ग में बाधा बन रही है, तो हम प्रभु का दिल दुखाते हैं । जो प्रश्न हम पूछते हैं, उन्हीं से यीशु का दिल दुखता है, क्योंकि वे एक बालक के प्रश्न नहीं होते ।

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो ..." (14:1, 27) । तो क्या मैं अपने मन को व्याकुल होने देकर यीशु का दिल दुखा रहा हूँ ? यदि मैं यीशु और उसके गुणों में विश्वास करता हूँ, तो क्या मैं अपने विश्वासों के अनुसार जी रहा हूँ ? क्या मैं किसी बात को अपने मन को अशान्त करने दे रहा हूँ ; क्या मैं ऐसे प्रश्नों को उठने दे रहा हूँ जो दोषपूर्ण या असन्तुलित हैं ? मुझे उस सम्पूर्ण सम्बन्ध की स्थिति तक पहुँचना है जो हर बात को वैसे ही ग्रहण करता है जैसे वह परमेश्वर से आता है । परमेश्वर हमारा मार्गदर्शन भविष्य में किसी समय नहीं करता है, बल्कि हमेशा यहीं और अभी करता है । इस बात को जानें कि परमेश्वर *इस समय* यहाँ है, और जो स्वतन्त्रता आप पाते हैं, वह तुरन्त मिलती है ।

अप्रैल 22

कभी कम न होनेवाला प्रकाश

जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप ... प्रकट होता है...।
2 कुरिन्थियों 3:18।

परमेश्वर के एक सेवक को इतना अकेला खड़ा होना चाहिए कि वह कभी यह न जाने कि वह अकेला है। मसीही जीवन के शुरुआती चरणों में, निराशाएँ ज़रूर आएँगी - जो लोग दीपक के समान होते थे, वे रुक-रुककर जलने के बाद बिलकुल बुझ जाएँगे, और जो हमारा साथ देते थे, वे हमें छोड़ देंगे। हमें इसके इतने आदी हो जाना चाहिए कि हम कभी यह महसूस न करें कि हम अकेले हैं। पौलुस ने कहा, "... किसी ने मेरा साथ नहीं दिया, वरन् सब ने मुझे छोड़ दिया था ...परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ दी ..." (2 तीमुथियुस 4:16-17)। हमें अपना विश्वास टिमटिमाते दीपकों पर नहीं, बल्कि उस ज्योति पर बनाना चाहिए जो कभी नहीं बुझती। जब "महत्त्वपूर्ण" लोग चले जाते हैं, तो हमें दुःख होता है, जब तक कि हम यह नहीं देखते कि उनका चला जाना ज़रूरी था, ताकि हमारे करने के लिए एक ही चीज रह जाए - कि हम खुद परमेश्वर के चेहरे में देखें।

अपने सम्बन्ध में और अपने सिद्धान्तों के सम्बन्ध में परमेश्वर के चेहरे में देखने के प्रबल संकल्प से कोई चीज़ आप को रोक न पाए। जब-जब आप प्रचार करते हैं, निश्चय कर लें कि आप सन्देश के विषय में पहले परमेश्वर के चेहरे में देख रहे हैं, तो उसके दौरान प्रताप बना रहेगा। एक मसीही सेवक वह है जो परमेश्वर के चेहरे में निरन्तर देखता रहता है, और फिर जाकर दूसरों को बताता है। मसीह की सेवकाई की विशेषता है सदा रहनेवाला वह प्रताप जिसका सेवक को कोई बोध नहीं होता - "तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण उसके (मूसा के) चेहरे से किरणें निकल रही थीं, परन्तु वह यह नहीं जानता था ..." (निर्गमन 34:29)।

हमसे यह कभी नहीं कहा जाता है कि हम खुल्लम-खुल्ला अपने सन्देहों को प्रकट करें, या परमेश्वर के साथ अपने जीवन के छिपे हुए हर्षोल्लास को व्यक्त करें। एक सेवक के जीवन का रहस्य यह है कि वह हर समय परमेश्वर के साथ तालमेल में रहे।

अप्रैल 23

क्या आप काम की उपासना करते हैं ?

हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं ...।
1 कुरिन्थियों 3:9।

परमेश्वर के लिए किए जानेवाले किसी भी ऐसे काम से सावधान रहें जो आपको परमेश्वर पर ध्यान रखने से दूर रखता है। बहुत से मसीही कार्यकर्ता अपने काम की उपासना करते हैं। मसीही कार्यकर्ताओं के लिए महत्त्व का एकमात्र विषय होना चाहिए परमेश्वर पर उनका ध्यान। इसका अर्थ यह होगा कि जीवन की सारी सीमाएँ, चाहे वे मानसिक हों, चाहे नैतिक या आत्मिक सीमाएँ, वे उस स्वतन्त्रता के साथ स्वतन्त्र हैं जो परमेश्वर अपने बालक को देता है - यानि एक आराधना करनेवाले बालक को, भटके हुए बालक को नहीं। जिस कार्यकर्ता में परमेश्वर पर ध्यान का यह गम्भीर नियन्त्रण प्रबल नहीं है, वह अपने काम के बोझ से बहुत ज़्यादा दब सकता है। अपने शरीर, मन, या आत्मा की स्वतन्त्रता न होने के कारण वह अपनी ही सीमाओं का दास बन सकता है। इसके फलस्वरूप वह अपने आप को बेजान और कुचला हुआ महसूस करता है। जीवन में कोई स्वतन्त्रता और कोई आनन्द नही रहता। उसका धैर्य, मन, और हृदय बोझ से इतने दब जाते हैं कि परमेश्वर की आशीषें उसपर ठहर नहीं सकतीं।

लेकिन इसका उल्टा भी उतना ही सच है - जब हमारा ध्यान परमेश्वर पर आ जाता है, तो हमारे जीवन की सारी सीमाएँ स्वतन्त्र हो जाती हैं और परमेश्वर के नियन्त्रण और अधीनता में आ जाती हैं। फिर काम की ज़िम्मेदारी आपके ऊपर नहीं रहती। आपकी एक ही ज़िम्मेदारी रह जाती है - कि आप निरन्तर परमेश्वर के सम्पर्क में जीते रहें और ध्यान रखें कि आप परमेश्वर के साथ अपने सहयोग में किसी भी चीज़ को बाधा नहीं बनने दे रहे हैं। पवित्रीकरण के बाद जो स्वतन्त्रता आती है, वह एक बालक की स्वतन्त्रता होती है, और जो चीज़ें आपको जकड़ कर रखती थीं, वे चली जाती हैं। लेकिन यह याद रखने का ध्यान रखें कि आपको सिर्फ़ एक चीज़ के लिए स्वतन्त्र किया गया है - कि आप अपने सहकर्मी, यानि परमेश्वर के प्रति समर्पित रहें।

हमें न तो यह फ़ैसला करने का अधिकार है कि हमें कहाँ रखा जाना चाहिए, और न ही पहले से धारणाएँ बनाने का कि परमेश्वर हमें किस काम के लिए तैयार कर रहा है। परमेश्वर सब चीज़ों का उपाय करता है; और वह हमें चाहे जहाँ भी रखे, हमारा परम लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम परमेश्वर के प्रति हार्दिक भक्ति में उस काम में अपने जीवन को उण्डेल दें। "जो काम तुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना ..." (सभोपदेशक 9:10)।

अप्रैल 24

आत्मिक सफलता की लालसा के विरुद्ध चेतावनी

तौभी इससे आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में है ...।
लूका 10:20।

मसीही कार्यकर्ता होने के नाते, हमारे लिए सबसे ख़तरनाक़ फन्दा न तो सांसारिकता होती है और न ही पाप। जिस फन्दे में हम फँस जाते हैं वह है अत्यधिक आत्मिक सफलता की लालसा; यानि वह सफलता जो हमारे समय के धार्मिक काल के ठहराए हुए रूप के अनुसार नापी जाती है। परमेश्वर की स्वीकृति को छोड़ और किसी चीज़ की खोज न करें, और हमेशा "उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलने के लिए तैयार रहें" (इब्रानियों 13:13)। लूका 10:20 में, यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे सफल सेवा में आनन्दित न हों, फिर भी यही वह एक चीज़ है जिसमें हम में से ज़्यादातर लोग आनन्दित होते हैं। हमारा दृष्टिकोण व्यापारिक होता है - हम गिनते हैं कि कितनी आत्माएँ बच गई और पवित्र की गई हैं, परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, और फिर सोचते हैं कि सब कुछ ठीक है। लेकिन, हमारा काम सिर्फ़ वहाँ से शुरू होता है जहाँ परमेश्वर के अनुग्रह ने बुनियाद डाली है। हमारा काम आत्माओं को बचाना नहीं, बल्कि उन्हें सिखाना है। उद्धार और पवित्रीकरण परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य हैं, और उसके चेले होने के नाते, हमारा काम है दूसरों को सिखाना जब तक कि वे पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित न हो जाएँ। परमेश्वर के प्रति पूरी तरह समर्पित एक जीवन उसके लिए सौ ऐसे जीवनों से ज़्यादा मूल्यवान है जो उसके आत्मा के द्वारा सिर्फ़ जगाए गए हैं। परमेश्वर के कार्यकर्ता होने के नाते, हमें आत्मिक रूप से अपनी तरह के और लोगों का प्रजनन करना है, और ये जीवन परमेश्वर के कार्यकर्ताओं के लिए परमेश्वर की साक्षी होंगे। परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा हमें जीवन के एक स्तर पर लाता है, और हम पर यह ज़िम्मेदारी है कि हम दूसरों में वही स्तर पैदा करें।

जब तक कि कार्यकर्ता ऐसा जीवन नहीं जीता जो "मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है" (कुलुस्सियों 3:3), तो यह सम्भावना है कि वह एक सक्रिय, प्रेममय चेला बनने के बजाय दूसरों को सतानेवाला तानाशाह बन जाएगा। हममें से बहुत से लोग तानाशाह हैं, जो दूसरे लोगों से और समूहों से अपनी बात मनवाते हैं। लेकिन यीशु हमसे अपनी बात मनवाने की ज़बरदस्ती नहीं करता। हमारे प्रभु ने जब भी शिष्यता की बात की, उसने उससे पहले हमेशा "यदि" शब्द लगाया, - यह नहीं कहा कि "तुम्हें ऐसा करना है।" शिष्यता के साथ-साथ एक विकल्प भी होता है।

अप्रैल 25

"समय तैयार रहना"

तू ... समय और असमय तैयार रह।
2 तीमुथियुस 4:2।

हम में से बहुतों का झुकाव है कि हम सिर्फ़ "असमय तैयार रहें।" समय के अर्थ का इशारा काल की ओर नहीं बल्कि हमारी ओर है। यह पद कहता है, "वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह।" दूसरे शब्दों मे, चाहे हमारी इच्छा हो चाहे न हो, हमें "तैयार रहना" चाहिए। यदी हम सिर्फ़ वह करें जो करने की हमारी इच्छा होती है, तो हम में से कुछ लोग कुछ भी नहीं करेंगे। कुछ लोग ऐसे हैं, जो आत्मिक क्षेत्र में काम पर रखने के योग्य हैं ही नहीं। वे आत्मिक रीति से दुर्बल और अस्वस्थ हैं, और जब तब उन्हें कोई अलौकिक प्रेरणा ने मिले, वे कुछ भी करने से इनकार कर देते हैं। परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध सही होने का सबूत यह है कि हम अपना सर्वोत्तम करेंगे, चाहे हमें इसकी प्रेरणा मिले या नहीं।

एक मसीही कार्यकर्ता जिन सबसे बुरे जालों में फँस सकता है, उनमें से एक है प्रेरणा के अपने ही असाधारण क्षणों की धुन में रहना। जब परमेश्वर का आत्मा आपको प्रेरणा और अन्तर्दृष्टि का समय देता है, तो आप कहना चाहते हैं, "ऐसी घड़ी का अनुभव करने के बाद, मैं परमेश्वर के लिए हमेशा ऐसा ही रहूँगा।" नहीं, आप ऐसे ही नहीं रहेंगे, और परमेश्वर भी पक्का करेगा कि आप ऐसे ही न रहें। उस प्रकार के समय पूरी तरह से परमेश्वर का वरदान होते हैं। आप जब चाहें उन्हें अपने आप को नहीं दे सकते हैं। यदि आप यह कहते हैं कि आप हमेशा परमेश्वर के लिए अपना सर्वोत्तम करेंगे, जैसे आपने उन असाधारण घड़ियों में किया था, तो वास्तव में आप उसके लिए एक असह्य बोझ बन जाएँगे। आप तब तक कुछ नहीं करेंगे जब तक परमेश्वर आपको हर समय अपनी प्रेरणा के प्रति जागरूक नहीं रखता। यदि आप अपनी सर्वोत्तम घड़ियों को अपना ईश्वर बना देंगे, तो आप पाएँगे कि परमेश्वर आपके जीवन से धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है, और वह कभी नहीं लौटेगा जब तक आप उस काम में विश्वासयोग्य न रहें जो उसने आपके सबसे क़रीब रखा है, और जब तक आप उसके दिए हुए असाधारण क्षणो की धुन में न लगे रहने का पाठ न सीख लें।

अप्रैल 26

सबसे ऊँचे पहाड़ पर चढ़ना

अपने पुत्र को...एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा, होमबलि करके चढ़ा।
उत्पत्ति 22:2।

एक व्यक्ति का चरित्र यह तय करता है कि वह परमेश्वर की इच्छा का क्या अर्थ निकालता है (भजन संहिता 18:25-26 देखें)। इब्राहीम ने परमेश्वर की आज्ञा का यह अर्थ निकाला कि उसे अपने पुत्र की हत्या करनी है, और वह इस पारम्परिक विश्वास को सिर्फ़ एक भयंकर परीक्षा के दर्द ही के द्वारा छोड़ सकता था। परमेश्वर उसके विश्वास को किसी और तरह से शुद्ध नहीं कर सकता था। यदि हम अपने ईमानदार विश्वास के अनुसार परमेश्वर का कहना मानते हैं, तो परमेश्वर हमें उन पारम्परिक विश्वासों से अलग करेगा जो परमेश्वर को ग़लत रूप में प्रस्तुत करते हैं। ऐसी बहुत सी विचारधाराएँ हैं जिन्हें हटाना ज़रूरी है - उदाहरण के लिए, यह विश्वास कि परमेश्वर एक बच्चे को इसलिए हटा देता है क्योंकि उसकी माँ उससे बहुत ज़्यादा प्रेम करती है। यह शैतान का एक झूठ है, और परमेश्वर के सच्चे स्वभाव का मज़ाक है। यदि शैतान हमारे सर्वोच्च पहाड़ पर चढ़ने में और परमेश्वर के बारे में हमारी ग़लत धारणाओं को दूर करने में बाधा डाल सकता है, तो वह ऐसा ज़रूर करेगा। लेकिन यदि हम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे, तो परमेश्वर हमें एक ऐसी परीक्षा से ले जाएगा जो उसके बारे में बेहतर जानने में हमारी मदद करेगी।

परमेश्वर में इब्राहीम के विश्वास से जो महान पाठ सीखा जाना चाहिए वह यह है कि वह परमेश्वर के लिए कुछ भी करने को तैयार था। वह परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए हाज़िर था, चाहे उसकी आज्ञाकारिता से उसकी कोई भी धारणा भंग क्यों न हो जाती। इब्राहीम अपने ही विश्वासों के प्रति समर्पित नहीं था, नहीं तो उसने इसहाक को मारकर यह कहा होता कि स्वर्गदूत की आवाज़ असल में शैतान की आवाज़ थी। यह एक अन्धभक्त का रवैया होता है। यदि आप परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे, तो परमेश्वर आपको हर रुकावट में से होते हुए अपने बारे में जानकारी के भीतरी कक्ष में ले जाएगा। लेकिन आपको हमेशा अपनी धारणाओं और पारम्परिक विश्वासों को छोड़ने की स्थिति पर पहुँचने के लिए तैयार होना होगा। परमेश्वर से यह न कहें कि वह आपकी परीक्षा ले। पतरस की तरह यह न कहें कि आप कुछ भी करने को तैयार हैं, यहाँ तक कि "बन्दीगृह जाने, वरन् मरने को भी" तैयार हैं (लूका 22:33)। इब्राहीम ने ऐसा कुछ नहीं कहा - वह सिर्फ़ परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहा, और परमेश्वर ने उसके विश्वास को शुद्ध किया।

अप्रैल 27

आप क्या चाहते हैं ?

क्या तू अपने लिए बड़ाई खोज रहा है ?
यिर्मयाह 45:5 ।

क्या आप अपने लिए बड़ी-बड़ी चीज़ें खोज रहे हैं ? शायद आप एक महान व्यक्ति बनने की खोज में न हों, परन्तु अपने लिए परमेश्वर से महान चीज़ें पाने की खोज में हों । परमेश्वर चाहता है कि आप उसके वरदानों को पाने से ज़्यादा उसके साथ क़रीबी सम्बन्ध रखें । वह चाहता है कि आप उससे पहचान बढ़ाएँ । एक महान चीज़ आकस्मिक होती है, वह आती है और चली जाती है । लेकिन परमेश्वर हमें आकस्मिक चीज़ें कभी नहीं देता । परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में आने से और आसान कुछ भी नहीं हो सकता, बशर्ते कि आप परमेश्वर को ढूँढ रहे हों, उन चीज़ों को नही जो वह आपको दे सकता है ।

यदि आप केवल वहीं तक पहुँचे हैं जहाँ आप परमेश्वर से चीज़ों की माँग करते हैं, तो आप समर्पण के वास्तविक अर्थ को थोड़ा सा भी समझने की स्थिति तक कभी नहीं पहुँचे हैं । आप अपनी ही शर्तों के आधार पर मसीही बने हैं । आप विरोधपूर्वक कहते होंगे, "मैंने परमेश्वर से पवित्र आत्मा माँगा था, परन्तु उसने मुझे वह विश्राम और शान्ति नहीं दी जिसकी मैं आशा कर रहा था ।" और परमेश्वर तुरन्त इसके कारण की ओर इशारा करता है - आप प्रभु की खोज तो कर ही नहीं रहे; आप अपने लिए किसी चीज़ की खोज कर रहे हैं । यीशु ने कहा, "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा..." (मत्ती 7:7) । आप जो चाहते हैं, वह परमेश्वर से माँगें और यदि आप ग़लत चीज़ माँग रहे हैं, तो माँग ही नहीं सकेंगे । जैसे-जैसे आप उसके और करीब आते जाते हैं, आप चीज़ें माँगना बिलकुल बन्द करते जाते हैं । "तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकताएँ हैं" (मत्ती 6:8) । तो फिर, आपको माँगने की ज़रूरत ही क्यों है ? इसलिए कि आप परमेश्वर को जान सकें ।

क्या आप अपने लिए महान चीज़ें खोज रहे हैं ? क्या आपने कहा है, "हे प्रभु, मुझे अपने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कर" ? यदि परमेश्वर ऐसा नहीं कर रहा है, तो इसका कारण यह है कि आप उसे पूरी तरह समर्पित नहीं हैं; कुछ ऐसा है जिसे करने से आप अभी भी इनकार कर रहे हैं । क्या आप अपने आप से यह पूछने के लिए तैयार हैं कि आप परमेश्वर से आखिर क्या चाहते हैं, और क्यों ? परमेश्वर हमेशा आपकी अन्तिम सिद्धता के पक्ष में आपकी वर्तमान सिद्धता को अनदेखा करता है । परमेश्वर आपको अभी धन्य और प्रसन्न नहीं बनाना चाहता, बल्कि वह आपके लिए अपनी अन्तिम

सिद्धता के काम पर निरन्तर लगा हुआ है - "...कि वे वैसे ही एक हों, जैसे हम एक हैं" (यूहन्ना 17:22)।

अप्रैल 28

आपको क्या मिलेगा

जहाँ कहीं तू जाएगा वहाँ मैं तेरा प्राण बचाकर तुझे जीवित रखूँगा।
यिर्मयाह 45:5।

यह प्रभु पर विश्वास करनेवालों के लिए उसका दृढ़ और अटल रहस्य है - मैं तेरा प्राण बचाकर तुझे जीवित रखूँगा।" एक व्यक्ति को अपने जीवन से बढ़कर और क्या चाहिए ? सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ तो यही है। मूल में लिखा है,"तेरे जीवन को लूट समझकर ..." जिसका अर्थ यह है कि तू जहाँ भी जाए, चाहे वह नरक में ही क्यों न हो, तू वहाँ से अपना प्राण लेकर बच निकलेगा और कोई उसे हानि न पहुँचा सकेगा। हम में से कितने हैं जो दूसरों को दिखाने के लिए अपनी चीज़ों को प्रदर्शित करते हैं, अपनी सम्पत्ति और धन-दौलत को नहीं , बल्कि अपनी आशीषों को। इन सब चीज़ों को मिटना होगा। लेकिन इससे बढ़कर कुछ है जो कभी नहीं मिट सकता - वह जीवन जो "मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है" (कुलुस्सियों 3:3)।

क्या आप उन चीज़ों की ओर ध्यान देना छोड़कर जिन्हें आप जीवन की महान चीज़ें मानते हैं, परमेश्वर को मौका देने के लिए तैयार हैं कि वह आपको अपने साथ सम्पूर्ण एकता में लाए ? क्या आप इन चीज़ों को छोड़कर सम्पूर्ण समर्पण के लिए तैयार हैं ? त्याग या समर्पण की असली परख है यह कहने से इनकार करना कि,"इसका क्या होगा ?" अपनी विचारधाराओं और अनुमानों से सावधान रहें। जैसे ही आप यह सोचते हैं कि "इसका क्या होगा ?" आप यह साबित कर देते हैं कि आपने समर्पण नहीं किया है, और आप सचमुच परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते। लेकिन जब आप एक बार समर्पण कर देंगे, आप यह सोचना बन्द कर देंगे कि परमेश्वर क्या करने जा रहा है। त्याग का अर्थ यह है कि आप अपने आप को प्रश्न पूछने का सुख देने से इनकार कर रहे हैं। यदि आप अपने आप को पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित कर देते हैं, तो वह तुरन्त आपसे कहता है, "मैं तेरा प्राण बचाकर तुझे जीवित रखूँगा।" लोग जीवन से इसलिए तंग आ जाते है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें कुछ नहीं दिया है - उन्हें अपना जीवन एक "लूट समझकर" या एक इनाम के रूप में नहीं मिला है। इस स्थिति से बाहर निकलने का मार्ग है अपने आप को परमेश्वर के प्रति त्याग देना। और एक बार जब आप सम्पूर्ण समर्पण के स्थान पर पहुँच जाएँगे, तो आप संसार के सब से आश्चर्यचकित और आनन्दित व्यक्ति होंगे। आप सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर के हो गए हैं और उसने आपको आपका जीवन दे दिया है। यदि आप उस स्थान पर नहीं हैं, तो यह अनाज्ञाकारिता के कारण या सीधा-सादा होने से इनकार करने के कारण है।

दयामय अनिश्चितता

अब तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे।
1 यूहन्ना 3:2।

स्वाभाविक रूप से, सूक्ष्मता की ओर हमारा झुकाव इतना ज़्यादा है - आगे जो होनेवाला है उसके विषय में हम हमेशा बिलकुल सही पूर्वघोषणा करने की इतनी कोशिश करते हैं कि हम अनिश्चितता को बुरी चीज़ समझते हैं। हम समझते हैं कि हमें किसी पूर्वनिर्धारित लक्ष्य तक पहुँचना है, लेकिन यह आत्मिक जीवन का गुण नहीं। आत्मिक जीवन का गुण यह है कि हम अपनी अनिश्चितता में निश्चित हों। इसलिए हम एक जगह पर जड़ें नहीं जमाते। हमारी व्यावहारिक बुद्धि कहती है, "कहीं मैं अमुक परिस्थिति में पड़ जाऊँ तो..." हमें अपने आप को ऐसी परिस्थिति में पड़ने की कल्पना नहीं करनी चाहिए जिसमें हम पहले नहीं पड़े हैं।

निश्चितता व्यावहारिक बुद्धि के जीवन का चिह्न है; दयामय अनिश्चितता आत्मिक जीवन का चिह्न है। परमेश्वर के बारे में निश्चित होने का अर्थ है कि हम अपनी बातों में अनिश्चित हैं ; हम यह नहीं जानते कि किसी भी दिन क्या होनेवाला है। आम तौर पर यह बात दुःख भरी आँह के साथ कही जाती है, जब कि वास्तव में इसे एक उत्तेजनापूर्ण प्रत्याशा के लहज़े में कहा जाना चाहिए। हमें अगले कदम के बारे में निश्चय नहीं, लेकिन परमेश्वर के बारे में निश्चय है। जैसे ही हम अपने आप को परमेश्वर को समर्पित कर देते हैं और वह कार्य करना शुरू कर देते हैं जो उसने हमें सौंपा है, वह हमारे जीवन को आश्चर्यों से भरना शुरू कर देता है। जब हम किसी विशेष धारणा को सिर्फ़ बढ़ावा देनेवाले या उसका समर्थन करनेवाले बन जाते हैं, तो हमारे अन्दर कुछ मर जाता है। यह परमेश्वर पर विश्वास नहीं बल्कि सिर्फ़ परमेश्वर के बारे में हमारी अपनी धारणाओं पर विश्वास करना है। यीशु ने कहा, "यदि तुम बालकों के समान न बनो ..." (मत्ती 18:3)। आत्मिक जीवन एक बालक का जीवन है। हम परमेश्वर के बारे में अनिश्चित नहीं हैं, सिर्फ़ इसके बारे में अनिश्चित हैं कि वह आगे क्या करने जा रहा है। यदि हमारी निश्चितता सिर्फ़ अपनी धारणाओं में है, तो हम में अपने को सही समझनेवाले का रवैया पैदा हो जाता है, हम दूसरों की आलोचना करनेवाले बन जाते हैं, और हम इस दृष्टिकोण के कारण, कि हमारी धारणाएँ ही सम्पूर्ण और स्थिर हैं, सीमाओं से बन्ध जाते हैं। लेकिन जब परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सही होता है, तो जीवन सहज और आनन्दमय अनिश्चितता और प्रत्याशा से भर जाता है। यीशु ने कहा, "मुझ पर भी विश्वास करो" (यूहन्ना 14:1)। उसने यह नहीं कहा कि "मेरे बारे में कुछ बातों पर विश्वास करो।" सब कुछ उसके हाथों में छोड़ दें, और यह तो एक महिमामय अनिश्चितता है कि वह कैसे काम करेगा, लेकिन वह करेगा ज़रूर। उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें।

अप्रैल 30

अनायास होनेवाला प्रेम

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है ...।
1 कुरिन्थियों 13:4।

प्रेम सोच विचारकर नहीं किया जाता - वह अनायास हो जाता है, यानि वह अनोखे तरीकों से फूट पड़ता है। पौलुस के द्वारा प्रेम के वर्णन में सुस्पष्ट निश्चितता की कोई बात नहीं पाई जाती। आप यह नहीं कह सकते हैं कि "अब से मैं मन में कोई बुरे विचार नहीं आने दूँगा। मैं उन सब बातों पर विश्वास करूँगा जिनपर यीशु चाहता है कि मैं विश्वास करूँ।" ऐसा नहीं है, बल्कि प्रेम की विशेषता यह है कि वह अनायास होता है। हम यीशु की कही बातों को सोच-विचार करके अपना मापदण्ड नहीं बनाते; लेकिन जब हमारे जीवन में पवित्र आत्मा का मनचाहा होता है, तो हम उसके मापदण्डों के अनुसार जीते हैं और हमें इसका बोध भी नहीं होता। जब हम पलट कर पीछे देखते हैं, तो हमें हैरानी होती है कि हम अपनी भावनाओं के विषय में कितने निश्चिन्त रहे हैं। यह असली प्रेम की सहजता की उपस्थिति का सबूत है। हमारे भीतर परमेश्वर के जीवन से सम्बन्धित सब बातों के गुण की पहचान तभी होती है जब हम उससे गुज़र चुकते हैं और वह हमारा अतीत हो जाता है।

जिन स्रोतों से प्रेम बहता है, वे परमेश्वर में हैं, हममें नहीं। यह सोचना एक बेतुकी बात है कि परमेश्वर का प्रेम हमारे अन्दर स्वाभाविक रूप से है। परमेश्वर का प्रेम वहाँ सिर्फ़ इसलिए है क्योंकि वह "पवित्र आत्मा ... के द्वारा ... हमारे मन में डाला गया है" (रोमियों 5:5)।

यदि हम परमेश्वर को यह साबित करने की कोशिश करने लगें कि हम उससे कितना प्रेम करते हैं, तो यह इसका पक्का चिह्न है कि असल में हम उससे प्रेम करते ही नहीं। उसके प्रति हमारे प्रेम का सबूत है हमारे प्रेम की सम्पूर्ण सहजता, जो हमारे अन्दर उसके स्वभाव से बहता है। और जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हम यह फ़ैसला नहीं कर पाते कि हमने कुछ काम आखिर क्यों किए, लेकिन हम यह जान सकते हैं कि हमने वे काम अपने भीतर परमेश्वर के प्रेम की सहजता के गुण के कारण किए। परमेश्वर का जीवन अपने आप को इस सहज ढंग से प्रदर्शित करता है क्योंकि उसके प्रेम के स्रोत पवित्र आत्मा में हैं (रोमियों 5:5)।

मई 1

मनोभाव नहीं, बल्कि अन्तर्दृष्टि

क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं।
2 कुरिन्थियों 5:7।

कुछ समय के लिए, हमें हमारे प्रति परमेश्वर के ख़्याल का पूरा बोध होता है। पर फिर, जब परमेश्वर हमें अपने कार्य में इस्तेमाल करने लगता है, तो हम दया के योग्य दिखने लगते हैं और सिर्फ़ अपनी परीक्षाओं और परेशानियों की चर्चा करने लगते हैं। जबकि परमेश्वर इस कोशिश में रहता है कि हमसे ऐसे छिपे हुए लोगों के रूप में काम करवाए जो प्रसिद्धि के प्रकाश में नहीं हैं। यदि हमारे वश में होता, तो हममें से कोई भी आत्मिक रूप से छिपा नहीं रहता। क्या हम अपना काम कर सकते हैं जब ऐसा लगता है मानो परमेश्वर ने स्वर्ग को बन्द कर दिया है ? हम में से कुछ तो हमेशा प्रकाश से घिरे हुए और सुनहरे प्रभामण्डल से सजे हुए और प्रेरणा की चमक रखनेवाले सन्त बनना चाहते हैं, और हर समय परमेश्वर के दूसरे सन्तों से ही वास्ता रखना चाहते हैं। एक आत्मविश्वासी पवित्र जन का परमेश्वर के लिए कोई मूल्य नहीं। वह सामान्य नहीं है और दैनिक जीवन के लिए अयोग्य है, और परमेश्वर से बिलकुल भिन्न है। हम यहाँ इसलिए हैं, ताकि बचकाने दूतों की तरह नहीं, बल्कि पुरुषों और स्त्रियों के रूप में इस जगत के काम को करें। और हमें यह काम और भी अधिक सामर्थ्य से संघर्ष का सामना करते हुए करना है क्योंकि हमारा जन्म ऊपर से हुआ है।

यदि हम लगातार प्रेरणा की उन असाधारण घड़ियों को वापस लाने की कोशिश में लगे रहते हैं, तो यह इसका सबूत है कि असल में हम जो चाहते हैं, वह परमेश्वर नहीं। हमें उन घड़ियों का जुनून होता जा रहा है जब परमेश्वर ने सचमुच आकर हमसे बात की थी, और हम हठ कर रहे हैं कि वह फिर से ऐसा करे। लेकिन परमेश्वर हमसे जो चाहता है, वह यह है कि हम "विश्वास से चलें।" हम में से कितनों ने यह कहकर अपने आप को अलग कर दिया है कि, "मैं अब कुछ और नहीं कर सकता जब तक कि परमेश्वर अपने आप को मुझ पर प्रकट नहीं करता।" वह ऐसा कभी नहीं करेगा। हमें किसी प्रेरणा या परमेश्वर के किसी आकस्मिक स्पर्श के बिना अपने आप उठ खड़ा होना है। फिर आता है हमारा आश्चर्य और हम बोल उठते हैं कि "वह हमेशा पास ही था, और मुझे पता ही नहीं चला।" उन असाधारण पलों के लिए कभी न जीएँ - वे अप्रत्याशित घटनाएँ होती हैं।

परमेश्वर हमें अपनी प्रेरणा का स्पर्श सिर्फ़ तब ही देगा जब वह देखेगा कि इनके कारण हमें पथभ्रष्ठ हो जाना का ख़तरा नहीं है। हमें अपनी प्रेरणा के पलों को कभी भी जीवन के ढंग का मापदण्ड नहीं समझना चाहिए - हमारा कर्तव्य ही हमारा मापदण्ड है।

मई 2

दर्शन के लिए ठहरने का धीरज

चाहे इस में विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना।
हबक्कूक 2:3।

धीरज और उदासीनता एक ही चीज़ नहीं हैं। धीरज ऐसे व्यक्ति की छवि दिखाता है जो बहुत ही बलवान है और सब हमलों का सामना करने के योग्य है। परमेश्वर का दर्शन पाना धीरज का स्रोत होता है क्योंकि यह हमें परमेश्वर की सच्ची और उपयुक्त प्रेरणा देता है। मूसा दृढ़ रहा, इसलिए नहीं क्योंकि उसके पास सही बात का और कर्तव्य का आदर्श था, बल्कि इसलिए क्योंकि उसके पास परमेश्वर का दर्शन था। "...क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा" (इब्रानियों 11:27)। जिस व्यक्ति के पास परमेश्वर का दर्शन है, वह किसी उद्देश्य या किसी विशेष मुद्दे के प्रति समर्पित नहीं है - वह खुद परमेश्वर के प्रति समर्पित है। जब दर्शन परमेश्वर से होगा, तो आप उसे हमेशा उस प्रेरणा के कारण जान जाएँगे जो उसके साथ आती है। सब चीज़ें आपके पास बड़ी मात्रा में आती हैं और आपके जीवन में प्राण-शक्ति डालती हैं क्योंकि हर चीज़ को परमेश्वर की शक्ति मिलती है। यदि परमेश्वर आपको एक आत्मिक समय देता है, जिसमें आपको उससे कोई वचन नहीं मिलता, जैसे उसके पुत्र ने भी जंगल में परीक्षा के समय अनुभव किया था, तो इसे झेल लें, और झेलने की शक्ति भी उपलब्ध होगी क्योंकि आप परमेश्वर को देखते हैं।

"चाहे इस में विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना।" हमारे पास दर्शन होने का सबूत यह है कि हमें जितना मिल चुका है, हम उससे ज़्यादा पाने की कोशिश कर रहे हैं। आत्मिक रूप से तृप्त होना बुरा होता है। भजनकार ने कहा, "यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूँ ? मैं उद्धार का कटोरा उठाऊँगा ..." (भजन संहिता 116:12-13)। हम अपने ही भीतर तृप्ति ढूँढते हैं और कहते हैं, "अब मुझे यह मिल गया ! अब मैं पूरी तरह पवित्रीकृत हो गया हूँ। अब मैं झेल सकता हूँ।" ऐसा बोलते ही हम विनाश के मार्ग पर चल पड़ते हैं। हम जो पाने की कोशिश कर रहे हैं, वह उससे बढ़कर होना चाहिए जो हम पा चुके हैं। पौलुस ने कहा, "यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ: पर ...दौड़ा चला जाता हूँ" (फिलिप्पियों 3:12)। यदि हमारे पास केवल वही है जिसका हमनें अनुभव किया है, तो हमारे पास कुछ भी नहीं है। परन्तु यदि हमारे पास परमेश्वर के दर्शन की प्रेरणा है, तो हमारे पास उससे कहीं बढ़कर है जिसका हम अनुभव कर सकते हैं। आत्मिक ढीलेपन के ख़तरे से सावधान रहें।

मई 3

अत्यावश्यक मध्यस्थता

हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और विनती करते रहो।
इफिसियों 6:18।

जब हम दूसरों के लिए मध्यस्थता की विनती में आगे बढ़ेंगे, तो शायद पाएँगे कि मध्यस्थता करने की परमेश्वर की आज्ञा को मानने से, जिनके लिए हम विनती कर रहे हैं उन लोगों को उसकी इतनी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी, जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की थी। ऐसे में यह ख़तरा हो जाता है कि हम उन लोगों के लिए हमदर्दी में मध्यस्थता करना शुरू कर देते हैं जिन्हें हमारी ही प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर धीरे-धीरे एक बिलकुल ही फ़र्क क्षेत्र में ला रहा है। जैसे ही हम दूसरों के प्रति परमेश्वर की रुचि और चिन्ता में परमेश्वर के साथ एक होने से पीछे हट जाते हैं, और उन्हें भावात्मक हमदर्दी दिखाने लगते हैं, वैसे ही परमेश्वर से हमारा अत्यावश्यक सम्बन्ध टूट जाता है। ऐसा करने से, हम उनके प्रति अपनी हमदर्दी और चिन्ता को एक बाधा बना देते हैं, और यह हमारे द्वारा परमेश्वर को जान-बूझकर लगाई गई फटकार होती है।

जब तक हम परमेश्वर के विषय में पूरी तरह से विश्वस्त न हों, तब तक अत्यावश्यक विनती करना हमारे लिए असम्भव होता है। और विनती करने के लिए परमेश्वर के साथ जिस विश्वस्त सम्बन्ध की ज़रूरत होती है, उसका सबसे बड़ा विनाशक होता है हमारा पहले से बना हुआ व्यक्तिगत झुकाव और हमारी व्यक्तिगत हमदर्दी। परमेश्वर के साथ एक होना मध्यस्थता की विनती की कुंजी है, और जब-जब हम परमेश्वर के साथ एक होना बन्द कर देते हैं, तो यह दूसरों के साथ हमारी हमदर्दी के कारण होता है, पाप के कारण नहीं। इसकी सम्भावना कम ही है कि परमेश्वर के साथ हमारे मध्यस्थता के सम्बन्ध में पाप आड़े आएगा, लेकिन हमारी हमदर्दी ज़रूर आड़े आएगी। वह हमारे अपने लिए या दूसरों के लिए हमदर्दी ही है जो हमसे यह कहलवाती है कि, "मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। और परमेश्वर के साथ हमारा वह अत्यधिक ज़रूरी सम्बन्ध टूट जाता है।

अत्यावश्यक मध्यस्थता करने के बाद आपके पास इतना समय या इतनी रुचि बचेगी ही नहीं कि आप अपने बेचारे खुद के लिए प्रार्थना करें। आपको अपने बारे में विचारों को दूर रखने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता क्योंकि ऐसे विचार आपके मन में होते ही नहीं। आप दूसरों के जीवन के लिए परमेश्वर की चिन्ता में उससे साथ सम्पूर्ण रूप से एक हो गए हैं। परमेश्वर हमें दूसरों के जीवन में अन्तर्दृष्टि इसलिए देता है ताकि वह हमें उनके लिए विनती करने के लिए बुलाए, इसलिए नहीं कि हम उनमें दोष निकालें।

प्रतिस्थानिक मध्यस्थता

...हमें यीशु के लोहू के द्वारा ... पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है।
इब्रानियों 10:19।

यह समझने से सावधान रहें कि मध्यस्थता का अर्थ है हमारी व्यक्तिगत हमदर्दियों और चिन्ताओं को परमेश्वर की उपस्थिति में लाना, और फिर उससे माँग करना कि जो कुछ हम माँगते हैं, परमेश्वर उसे पूरा करे। परमेश्वर की उपस्थिति में आने की हमारी योग्यता, पूरी तरह से प्रभु के हमारे बदले में, या हमारे स्थान पर, हमारे पाप के साथ जुड़ जाने के कारण है। *हमें यीशु के लोहू के द्वारा* ...पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है।

आत्मिक हठ मध्यस्थता में सबसे प्रभावशील रुकावट है, क्योंकि यह उन बातों की हमदर्दी से भरी "समझ" पर आधारित होती है जो हम अपने आप में और दूसरों में देखते हैं और सोचते हैं कि इन्हें प्रायश्चित की ज़रूरत नहीं। हम समझते हैं कि हम में से हर एक में कुछ ऐसी अच्छी बातें हैं जिन्हें मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित पर आधारित होने की ज़रूरत नहीं। इस तरह की विचारधारा से पैदा होनेवाला आलस्य और अरुचि हमें मध्यस्थता की विनती करने के अयोग्य बना देता है। हम दूसरों के लिए परमेश्वर की रुचियों और चिन्ताओं में उसके साथ एक नहीं होते, और हम परमेश्वर से खिसिया जाते हैं। फिर भी हम हमेशा अपने ही सुझावों के साथ तैयार रहते हैं, और हमारी मध्यस्थता हमारी अपनी स्वाभाविक हमदर्दियों को महिमा देने का साधन बन जाती है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि पाप के साथ यीशु का एक हो जाने का अर्थ है हमारी सारी हमदर्दियों और रुचियों में एक मूल बदलाव। प्रतिस्थानिक मध्यस्थता का अर्थ यह है कि हम समझ-बूझकर दूसरों के लिए अपनी स्वाभाविक हमदर्दी के स्थान पर परमेश्वर की रुचियों को रख देते हैं।

क्या मैं हठी हूँ या किसी के स्थान पर रखा हुआ हूँ ? क्या मैं बिगड़ा हुआ हूँ या परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में सम्पूर्ण हूँ ? क्या मैं चिड़चिड़ा हूँ या आत्मिक हूँ ? क्या मैंने तय कर लिया है कि अपनी मनमानी करूँगा, या यह तय कर लिया है कि मैं परमेश्वर के साथ एक होऊँगा ?

मई 5

न्याय और परमेश्वर का प्रेम

वह समय आ पहुँचा है, कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए।
1 पतरस 4:17।

एक मसीही सेवक को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि उद्धार परमेश्वर का विचार है, मनुष्य का नहीं। इसलिए, इसकी गहराई अथाह है। उद्धार परमेश्वर का महान विचार है, एक अनुभव नहीं। अनुभव तो केवल वह द्वार है जिसके द्वारा उद्धार हमारे जीवन के सचेत स्तर में प्रवेश करता है। इस अनुभव के बारे में कभी प्रचार न करें - प्रचार करें तो परमेश्वर की उस महान सोच का जो अनुभव के पीछे है। जब हम प्रचार करते हैं, तो यह नहीं बताते कि लोग नरक से कैसे बचाए जा सकते हैं और नैतिक और शुद्ध कैसे बनाए जा सकते हैं, बल्कि हम परमेश्वर के बारे में शुभ समाचार पहुँचाते हैं।

यीशु मसीह की शिक्षाओं में न्याय का तत्त्व हमेशा स्पष्ट किया जाता है - यह परमेश्वर के प्रेम का चिह्न है। उस व्यक्ति को कभी सहानुभूति न दिखाएँ जिसे परमेश्वर तक पहुँचने में कठिनाई होती है। इसमें परमेश्वर का कोई दोष नहीं। कठिनाई का कारण ढूँढ निकालना हमारा काम नहीं; हमारा काम केवल यह है कि हम परमेश्वर के सत्य को ऐसे प्रस्तुत करें कि परमेश्वर का आत्मा दिखाएगा कि समस्या क्या है। हमारे प्रचार की गुणवत्ता की परख यह होती है कि यह सब को न्याय तक लाता है या नहीं। जब सत्य का प्रचार होता है, तो परमेश्वर का आत्मा हर व्यक्ति का खुद परमेश्वर से आमना-सामना कराता है।

यदि यीशु ने हमें कभी ऐसा काम करने की आज्ञा दी होती जिसे पूरा करने के लिए वह हमें योग्यता देने में असमर्थ होता, तो वह झूठा होता। और यदि हम अपनी अयोग्यता को आज्ञा न मानने का बहाना बनाएँ, तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम परमेश्वर से कह रहे हैं कि कोई ऐसी बात है जिसे उसने अभी तक ध्यान में नहीं रखा। हमारी आत्मनिर्भरता के हर तत्त्व को परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा मार डाले जाने की ज़रूरत है। जिस पल हम अपनी निर्बलता को और परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को पहचान लेंगे, उसी पल परमेश्वर का आत्मा अपने सामर्थ्य को प्रदर्शित करेगा।

मई 6

स्वतन्त्रता और यीशु के मापदण्ड

मसीह ने स्वतन्त्रा के लिए हमें स्वतन्त्र किया है, सो इसी में स्थिर रहो।
गलातियों 5:1।

एक आत्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति आपके पास कभी यह माँग करता हुआ नहीं आएगा कि "इसपर या उसपर विश्वास करो"; एक आत्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति आपसे यह माँग करेगा कि आप अपने जीवन को यीशु के मापदण्डों के अनुकूल बनाएँ। हमें बाइबल पर विश्वास करने के लिए नहीं कहा जाता, बल्कि उसपर विश्वास करने के लिए कहा जाता है जिसे बाइबल प्रकट करती है (यूहन्ना 5:39 -40 देखें)। हमें इसलिए बुलाया गया है कि दूसरों के विवेक के लिए स्वतन्त्रता प्रस्तुत करें, उनके विचारों और मतों के लिए स्वतन्त्रता लाने के लिए नहीं। और यदि हम खुद मसीह की स्वतन्त्रता से मुक्त हैं, तो दूसरे भी उसी स्वतन्त्रता में लाए जाएँगे - वह स्वतन्त्रता जो यीशु मसीह के सम्पूर्ण नियन्त्रण और अधिकार का एहसास करने से आती है।

अपने जीवन को हमेशा सिर्फ़ यीशु के मापदण्डों से नापें। उसके, और सिर्फ़ उसके जुए के अधीन हों : और सावधान रहें कि आप दूसरों पर वह जुआ नहीं लाद रहे हैं जो यीशु मसीह से नहीं है। परमेश्वर को हमें यह सोचने से रोकने में बहुत समय लग जाता है कि जब तक लोग बिलकुल हमारी तरह न सोचें, वे ग़लत ही हो सकते हैं। यह परमेश्वर का दृष्टिकोण कभी नहीं रहा। सच्ची स्वतन्त्रता केवल एक ही है - यीशु की स्वतन्त्रता जो हमारे विवेक में काम करती है और हमें वह काम करने की योग्यता देती है जो सही है।

दूसरों के प्रति धीरज न खोएँ। याद करें कि परमेश्वर आपसे कैसे निपटा था - धीरज और कोमलता से। लेकिन परमेश्वर के सत्य के प्रभाव को कभी कम न करें। उसे अपना काम करने दें और उसकी ओर से कभी क्षमा न माँगें। यीशु ने कहा, "जाओ ...और चेला बनाओ ..." (मत्ती 28:19), उसने यह नहीं कहा कि, "लोगों को अपने निजी विचारों और मतों के पक्ष में परिवर्तित करो।"

मई 7

अनन्तकाल के लिए निर्माण करना

तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े,
कि पूरा करने कि विसात मेरे पास है कि नहीं ?
लूका 14:28।

हमारे प्रभु का इशारा यहाँ उस खर्च की ओर नहीं है जो हमें जोड़ना है, बल्कि उस खर्च की ओर जो वह खुद जोड़ चुका है। वह खर्च था नासरत में वे तीस वर्ष; लोकप्रियता, बदनामी, और नफ़रत के वे तीन वर्ष; वह अथाह पीड़ा जिसका अनुभव उसने गतसमनी में किया ; और वह हमला जो उसपर कलवरी पर हुआ - यानि वह केन्द्रबिन्दु जिसपर समय और अनन्तकाल घूमते हैं। यीशु मसीह खर्च को जोड़ चुका है। अन्त में लोग उसकी हँसी उड़ाकर यह नहीं कहेंगे कि, "यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका" (14:30)।

पद 26, 27, और 33 में हमारे प्रभु ने शिष्यता की जो शर्तें रखी हैं, उनका अर्थ यह है कि अपने महान निर्माण कार्य में वह जिन लोगों का इस्तेमाल करने जा रहा है, वे लोग हैं जिनमें वह सब कुछ कर चुका है। "यदि कोई मेरे पीछे आए, और ... अप्रिय न जाने, तो *वह मेरा चेला नहीं हो सकता*" (14:26)। यह पद हमें यह सिखाता है कि परमेश्वर अपने निर्माण कार्य में सिर्फ़ ऐसे लोगों को इस्तेमाल करेगा जो उससे व्यक्तिगत रूप से, सारे मन से, और पूरी भक्ति से प्रेम करते हैं - ऐसे लोगों को जो उससे इतना प्रेम करते हैं जो पृथ्वी पर के सबसे करीबी सम्बन्धों से कहीं बढ़कर है। शर्तें कड़ी तो हैं, परन्तु गौरवपूर्ण भी।

हम जिस सब का निर्माण करते हैं, उसका परीक्षण परमेश्वर के द्वारा किया जाएगा। जब परमेश्वर अपनी भेदक और शोधन करनेवाली अग्नि से हमारा निरीक्षण करेगा, तो क्या उसे यह दिखाई देगा कि हमने यीशु की नींव पर अपने ही भवनों का निर्माण किया हैं ? (1 कुरिन्थियों 3:10-15 देखें)। हम एक बहुत बड़े उद्यम के समय में जी रहें हैं, ऐसा समय जब हम परमेश्वर के लिए कार्य करने की कोशिश कर रहे हैं और यही वह जगह है जहाँ फन्दा है। गम्भीर सत्य तो यह है कि हम परमेश्वर के लिए कभी काम नहीं कर सकते। यीशु अपने निर्माण कार्य और योजनाओं के लिए हमें पूरी तरह अपने हाथों में ले लेता है और किसी को यह माँग करने का अधिकार नहीं कि उसे काम में कहाँ लगाया जाना चाहिए।

मई 8

विश्वास का धीरज

क्योंकि तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है।
प्रकाशितवाक्य 3:10।

धीरज रखने का अर्थ झेलने से बढ़कर है। एक पवित्र जन का जीवन परमेश्वर के हाथों में ऐसे होता है जैसे एक धनुर्धर के हाथ में धनुष और बाण होता है। परमेश्वर ऐसी चीज़ पर निशाना लगा रहा है जो उसके पवित्र जन को दिखाई नहीं देती, और वह तानना और खींचना जारी रखता है, और कभी-कभी पवित्र जन बोल उठता है, "मैं और नहीं सह सकता।" लेकिन परमेश्वर उसकी ओर ध्यान नहीं देता; वह खींचना जारी रखता है जब तक उसका उद्देश्य दिखाई नहीं देने लगता, और फिर वह बाण को छोड़ देता है। अपने आप को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें। क्या आपके जीवन में कुछ ऐसा है जिसके लिए आपको इसी समय धीरज की ज़रूरत है ? विश्वास में स्थिर रहने के द्वारा यीशु मसीह के साथ अपने क़रीबी सम्बन्ध को बनाए रखें।

विश्वास कोई निर्बल और दयनीय भावना नहीं बल्कि इस तथ्य पर खड़ा एक शक्तिशाली और प्रबल भरोसा है कि परमेश्वर पवित्र प्रेम है। इस समय आप न तो उसे देख सकते हैं और न ही समझ सकते हैं कि वह क्या कर रहा है, लेकिन आप *उसे* जान सकते हैं। आपके जीवन में विपत्ति तब आती है जब आप में उस मानसिक संयम की कमी होती है जो अपने आप को इस अनन्त सत्य पर स्थापित करने से आता है कि परमेश्वर पवित्र प्रेम है। विश्वास आपके जीवन का सर्वोच्च प्रयास है - आप अपने आप को निश्चिन्तता और सम्पूर्ण भरोसे के साथ परमेश्वर को सौंप देते हैं।

परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए यीशु मसीह में अपना सब कुछ दाँव पर रख दिया और अब वह चाहता है कि हम भी उसपर पूरे भरोसे के साथ अपना सब कुछ दाँव पर रख दें। हमारे जीवन के ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें उस विश्वास ने अभी तक हमारे अन्दर काम नहीं किया है - ऐसे स्थान जो अभी तक परमेश्वर के जीवन के सम्पर्क में नहीं आए हैं। यीशु के जीवन में ऐसे स्थान नहीं थे, और ये हमारे जीवन में भी नहीं होने चाहिए। यीशु ने प्रार्थना की, "और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे ... जानें" (यूहन्ना 17:3)। अनन्त जीवन का वास्तविक अर्थ है वह जीवन जो बिना डगमगाए हर चीज़ का सामना कर सकता है। यदि हम यह दृष्टिकोण अपनाएँगे, तो जीवन बहुत ही रोमांचक बन जाएगा - हर समय अद्भुत चीज़ें देखने का एक शानदार मौका। परमेश्वर हमें सामर्थ्य के इस केन्द्र-स्थान में लाने के लिए अनुशासित कर रहा है।

मई 9

जो पकड़ में है उससे अधिक प्राप्त करने की कोशिश

जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं।
नीतिवचन 29:18।

एक सिद्धान्त को थामकर रखने में और एक दर्शन पाने में फ़र्क होता है। एक सिद्धान्त नैतिक प्रेरणा से नहीं आता, एक दर्शन नैतिक प्रेरणा से आता है। जिन लोगों के दिमाग़ पर आदर्शवादी सिद्धान्त पूरी तरह छाए रहते हैं, वे अधिकतर कुछ *करते* नहीं। परमेश्वर और उसके गुणों के बारे में एक व्यक्ति के विचारों का इस्तेमाल उसके कर्तव्य की अवहेलना को उचित सिद्ध करने के लिए किया जा सकता है। योना ने परमेश्वर से यह कहते हुए आज्ञा के उल्लंघन को निर्दोष ठहराने की कोशिश की कि, "...मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करनेवाला करुणानिधान है, और दुःख देने से प्रसन्न नहीं होता" (योना 4:3)। परमेश्वर और उसके गुणों के बारे में मेरा विचार भी सही हो सकता है, पर यही वह कारण हो सकता है कि मैं अपना कर्तव्य पूरा नहीं करता। लेकिन जहाँ दर्शन होता है, वहाँ ईमानदारी का जीवन भी होता है, क्योंकि दर्शन मुझे नैतिक प्रोत्साहन देता है।

हमारे अपने आदर्शवादी सिद्धान्त वास्तव में हमें निष्क्रिय करके विनाश की ओर ले जा सकते हैं। अपनी आत्मिक जाँच करें और देखें कि आपके पास दर्शन है या केवल सिद्धान्त।

एक व्यक्ति की उड़ान उससे अधिक होनी चाहिए जो उसकी पकड़ में है,
नहीं तो स्वर्ग किस लिए है ?

"जहाँ दर्शन की बात नहीं होती..." जब हम परमेश्वर को भूल जाते हैं, तो हम लापरवाह होने लगते हैं। हम ऐसे काम करने से प्रतिबन्द हटा देते हैं जिनके बारे में हम जानते हैं कि वे ग़लत हैं। हम प्रार्थना से भी किनारा करते हैं, और जीवन की छोटी-छोटी बातों में परमेश्वर के दर्शन को पाना बन्द कर देते हैं। हम अपनी ही पहलकदमी से काम करना शुरू कर देते हैं। यदि हम आत्मनिर्भर हैं और अपनी ही पहलकदमी से काम करते हैं, और परमेश्वर के शामिल होने की प्रत्याशा नहीं करते, तो हम पतन के मार्ग पर चल रहे हैं। हमने दर्शन को खो दिया है। क्या आज हमारा रवैया ऐसा है जो परमेश्वर के दर्शन से प्रवाहित होता है ? क्या हम यह प्रत्याशा कर रहे हैं कि परमेश्वर उन कामों से भी बढ़कर काम करेगा जो उसने अब तक किए हैं ? क्या हमारे आत्मिक दृष्टिकोण में एक ताज़ापन और जीवन्तता है ?

मई 10

पहलकदमी करो

अपने विश्वास पर सद्‌गुण...बढ़ाते जाओ ।
2 पतरस 1:5 ।

''बढ़ाते जाओ'' का अर्थ यह है कि हमें कुछ करना है । हमें यह भूल जाने का ख़तरा रहता है कि हम वह नहीं कर सकते जो परमेश्वर कर सकता है, और परमेश्वर वह नहीं करेगा जो हम कर सकते हैं । हम अपने आप को न तो बचा सकते हैं और न ही अपना पवित्रीकरण कर सकते हैं - ये परमेश्वर करता है । लेकिन परमेश्वर हमें अच्छी आदतें या अच्छा चरित्र नहीं देगा; और वह हम पर ज़बरदस्ती नहीं करेगा कि हम उसके सामने खरी चाल चलें । हमें ये सब काम खुद करने होंगे । हमें ''अपने अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते'' जाना है जो परमेश्वर ने हमारे अन्दर किया है (फिलिप्पियों 2:12) । ''बढ़ाते जाओ'' का अर्थ यह है कि हमें कुछ करने की आदत डालनी होगी, और शुरू में यह कठिन होता है । पहलकदमी करने का अर्थ है शुरुआत करना - अपने आप को उस मार्ग पर चलने के निर्देश देना जिसपर आपको चलना है ।

जब आप अच्छी तरह से मार्ग जानते हैं, तो मार्ग पूछने की प्रवृत्ति से सावधान रहें । पहलकदमी करें - हिचकिचाना बन्द करें - पहला कदम उठाएँ । जब परमेश्वर आपसे बात करता है, तो वह आपसे जो कहता है उस के अनुसार तुरन्त कार्य करने की ठान लें, और अपने शुरुआती फ़ैसलों पर न तो पुनर्विचार करें और न ही उन्हें बदलें । जब परमेश्वर आपसे कुछ करने को कहता है और आप हिचकिचाते हैं, तो आप लापरवाह हो रहे हैं, और उस अनुग्रह को ठुकरा रहे हैं जिसमें आप खड़े हैं । अपने आप पहलकदमी करें, अपनी इच्छा से पहला कदम उठाएँ, और लौटना असम्भव कर दें । यह कहते हुए कि ''मैं वह पत्र ज़रूर लिखूँगा,'' या ''मैं उस कर्ज़ को ज़रूर चुकाऊँगा,'' वापसी के सारे रास्ते बन्द कर दें, और ये काम कर दिखाएँ ! इस काम को अपरिवर्तनीय कर दें ।

हमें यह पता लगाने की आदत डाल लेनी चाहिए कि परमेश्वर क्या कह रहा है । यदि संकट आने पर, हम स्वाभाविक रूप से परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, तो हम जान लेंगे कि हममें एक आदत बन गई है । हमें वहाँ पहलकदमी करनी है जहाँ हम *हैं*, वहाँ नहीं जहाँ हम नहीं हैं ।

मई 11

“एक दूसरे से प्रेम रखो”

भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ।
2 पतरस 1:7।

हम में से अधिकतर लोगों के लिए, प्रेम एक अस्पष्ट चीज़ है। जब हम प्रेम के बारे में बात करते हैं, तो नहीं जानते कि इससे हमारा अर्थ क्या है। प्रेम एक व्यक्ति की एक और व्यक्ति के लिए सब से ऊँची पसन्द है, और आत्मिक रूप से यीशु की यह माँग है कि यह सर्वश्रेष्ठ पसन्द उसके लिए हो (लूका 14:26)। जब “पवित्र आत्मा ... का प्रेम हमारे मन में डाला” जाता है (रोमियों 5:5), तो यीशु को पहले स्थान पर रखना आसान होता है। परन्तु इसके बाद हमें पतरस के द्वारा बताई गई बातों को अमल में लाना है ताकि हम उन्हें अपने जीवन में लागू होते देख सकें।

पहला काम जो परमेश्वर करता है, वह यह है कि वह मेरे जीवन से हर ढोंग, घमण्ड, और आत्मप्रदर्शन को निकाल देता है। पवित्र आत्मा मुझ पर प्रकट करता है कि परमेश्वर ने मुझसे इसलिए प्रेम नहीं रखा क्योंकि मैं प्रेम के योग्य था, बल्कि इसलिए क्योंकि प्रेम करना उसका स्वभाव है। अब वह यह कहकर कि “जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो” (यूहन्ना 15:12), मुझे आज्ञा देता है कि मैं वही प्रेम दूसरों को दिखाऊँ। वह कह रहा है कि, “मैं तुम्हारे आसपास ऐसे कई लोगों को लाऊँगा जिनका तुम सम्मान नहीं कर सकते, परन्तु तुम्हे मेरे प्रेम को उन्हें दिखाना होगा, ठीक वैसे जैसे मैंने अपना प्रेम तुम्हें दिखाया है।” इस प्रकार का प्रेम दया दिखानेवाला प्रेम नहीं है जो ऐसे व्यक्ति से किया जाए जो प्रेम के योग्य नहीं है - यह परमेश्वर का प्रेम है, और यह हम में अचानक प्रकट नहीं होगा। हम में से कुछ ने इसे ज़बरदस्ती लाने की कोशिश की होगी, लेकिन हम जल्दी ही थक गए और हताश हो गए।

प्रभु ...धीरज धरता है ...” (2 पतरस 3:9)। मुझे अपने भीतर देखना चाहिए और याद करना चाहिए कि वह कितनी अद्भुत रीति से मुझसे निपटा है। यह जानकारी कि परमेश्वर ने मेरे सारे पाप, मेरी नीचता और स्वार्थ और ग़लत कामों के बावजूद मुझसे प्रेम किया है, मुझे विवश करेगी कि मैं जगत में जाऊँ और लोगों को इसी तरह से प्रेम करूँ। मेरे प्रति परमेश्वर का प्रेम अथाह है, और मुझे भी दूसरों के प्रति ऐसा ही प्रेम दिखाना है। जैसे ही मैं खिसिया जाता हूँ, अनुग्रह में बढ़ने की प्रक्रिया रुक जाती है। कभी-कभी मैं खिसिया जाता हूँ क्योंकि मुझे ऐसे जन के साथ रहना पड़ रहा है जिसे सन्तुष्ट करना बहुत कठिन है। लेकिन ज़रा सोचें, कि मैं खुद परमेश्वर के लिए कितना कष्टदायक था। क्या मैं यीशु मसीह के साथ इस हद तक एक होने को तैयार हूँ कि उसका जीवन और उसकी मिठास लगातार मुझसे होकर बह सके ? मुझमें न तो स्वाभाविक प्रेम और न परमेश्वर का अलौकिक प्रेम बना रह सकता या बढ़ सकता है यदि इसे विकसित न किया जाए। प्रेम अनायास होता है, लेकिन इसे अनुशासन के द्वारा ही बनाकर रखा जा सकता है।

मई 12

आदतें न होने की आदत

यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएँ,
तो तुम्हें ...निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।
2 पतरस 1:8।

जब हम पहले-पहले एक आदत डालना शुरू करते हैं, तो हमें उसका पूरा बोध होता है। ऐसे मौके होते हैं जब हमें सद्गुणी और धार्मिक होने का बोध होता है, परन्तु इस बोध को सिर्फ़ ऐसा चरण होना चाहिए कि, जैसे-जैसे हम आत्मिक रूप से बढ़ते जाते हैं, हम इसमें से जल्दी से गुज़र जाएँ,। यदि हम इस चरण पर रुक जाएँ, तो हममें आत्मिक घमण्ड पैदा हो जाएगा। आदतों के साथ किया जानेवाला सही काम यह है कि उन्हें प्रभु के जीवन में ऐसा डुबो दिया जाए कि वे हमारे जीवन की ऐसी अनायास होनेवाली अभिव्यक्ति बन जाएँ कि आगे से हमें उनका बोध ही न हो। हमारा आत्मिक जीवन आत्मपरीक्षण के उद्देश्य से लगातार हमारा ध्यान हमारे भीतर केन्द्रित करता है, क्योंकि कुछ ऐसे गुण बाकी हैं जो हमने अभी तक अपने जीवन में नहीं जोड़े हैं।

आपका ईश्वर आपकी एक छोटी सी मसीही आदत हो सकता है - दिन के किसी विशेष समय पर प्रार्थना या बाइबल अध्ययन करने की आदत। यदि आप अपनी आदत की आराधना करने लग जाते हैं, बजाय इसके कि आप उसकी आराधना करें जिसका प्रतीक वह आदत है, तो ध्यान से देखें कि परमेश्वर आपकी इस नित्यचर्या को कैसे बिगाड़ डालता है। हम कहते हैं,"मैं अमुक काम अभी नहीं कर सकता; यह वह समय है जो मैं परमेश्वर के साथ अकेले में बिताता हूँ।" नहीं, वास्तव में यह वह समय है जो आप अपनी आदत के साथ अकेले में बिताते हैं। एक ऐसा गुण है जिसकी आपके जीवन में अभी भी कमी है। अपनी उस कमी को पहचानें और फिर अनुपस्थित गुण को अपने जीवन में शामिल और लागू करने के मौके ढूँढें।

प्रेम का अर्थ यह है कि कोई दिखाई देनेवाली आदतें मौजूद नहीं हैं - कि आप उस स्थान पर पहुँच गए हैं जहाँ वह आदत खो गई है और आप उसके बारे में सोचे बिना उसका अभ्यास करते हैं। यदि आपको अपनी पवित्रता का बोध है, तो आप कुछ कामों में अपने ऊपर रोकथाम लगा देते हैं - ऐसे काम जिनपर परमेश्वर बिलकुल रोक नहीं लगाता। इसका अर्थ यह है कि कोई अनुपस्थित गुण है जिसे आपके जीवन में जोड़े जाने की ज़रूरत है। एकमात्र अलौकिक जीवन वह जीवन है जो प्रभु यीशु ने जीया, और वह हर परिस्थिति में परमेश्वर के साथ परिचित था। क्या कोई ऐसा स्थान है जहाँ आप परमेश्वर के साथ परिचित नहीं हैं? यदि ऐसा है, तो चाहे वह जो भी परिस्थिति हो, परमेश्वर को उसके द्वारा काम करने दें जब तक आप उसके गुणों को जोड़ते हुए उसमें बढ़ते नहीं। इसके बाद आपका जीवन एक बालक का सा सादा जीवन बन जाएगा।

मई 13

एक साफ़ विवेक रखने की आदत

... यत्न करता हूँ कि परमेश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।
प्रेरितों के काम 24:16।

परमेश्वर ने जो आज्ञाएँ हमें दी हैं, वास्तव में वे हममें वास करनेवाले उसके पुत्र के जीवन को दी गई हैं। इस कारण, हमारे मानव स्वभाव के लिए, जिसमें परमेश्वर के पुत्र का रूप बन गया है (गलातियों 4:17), परमेश्वर की आज्ञाएँ कठिन होती हैं। लेकिन जब हम उन्हें मान लेते हैं, तो वे रहस्यात्मक ढंग से आसान हो जाती हैं।

विवेक मेरे अन्दर पाई जानेवाली वह योग्यता है जो उस सबसे ऊँचे मापदण्ड से जुड़ जाती है जिसकी मुझे जानकारी है, और फिर लगातार मुझे याद दिलाती रहती है कि वह मापदण्ड मुझसे क्या माँग करता है। यह मन की वह आँख है जो या तो परमेश्वर की और या फिर उस चीज़ की ओर देखती है जिसे मैं सबसे ऊँचा मापदण्ड मानता हूँ। यह इसका कारण बताता है कि विभिन्न लोगों में विवेक भिन्न क्यों होता है। यदि मेरी आदत है कि मैं लगातार परमेश्वर के मापदण्डों को अपने सामने रखूँ, तो मेरा विवेक मेरे ध्यान को हमेशा परमेश्वर की सिद्ध व्यवस्था की ओर ले जाएगा और बताएगा कि मुझे क्या करना चाहिए। सवाल यह है कि क्या मैं आज्ञा मानूँगा ? मुझे अपने विवेक को इतना संवेदनशील बनाने की ज़रूरत है, कि मैं किसी को ठेस न पहुँचाऊँ। मुझे परमेश्वर के पुत्र के साथ ऐसे ताल-मेल से जीना चाहिए कि मेरे मन की आत्मा जीवन की हर परिस्थिति में नई की जाए, और मैं जल्दी ही "परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा को मालूम करता रहूँ" (रोमियों 12:2; इफिसियों 4:23 भी देखें)।

परमेश्वर हमेशा हमें पूरे-पूरे निर्देश देता है। क्या मेरा कान इतना तेज़ है कि वह पवित्र आत्मा की सबसे धीमी आवाज़ भी सुन सके ताकि मैं जान सकूँ कि मुझे क्या करना है ? "परमश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो ..." (इफिसियों 4:30)। वह बादल की गर्जन के से स्वर में बात नहीं करता - उसकी आवाज़ इतनी कोमल है कि हम आसानी से उसपर ध्यान देने से चूक सकते हैं। जो एकमात्र चीज़ हमारे विवेक को परमेश्वर के प्रति संवेदनशील बनाए रखती है, वह है भीतरी रूप से परमेश्वर के प्रति खुले रहने की आदत। जब आप विवाद करने लगते हैं, तो तुरन्त चुप हो जाएँ। यह न पूछें कि " मैं यह काम क्यों नहीं कर सकता ?" आप ग़लत पटरी पर हैं। जब आपका विवेक बोल चुकता है, तो वाद-विवाद की सम्भावना ख़त्म हो जाती है। वह जो कुछ भी हो, उसे छोड़ दें, और ध्यान रखें कि आपकी अन्दरूनी दृष्टि साफ़ रहे।

मई 14

विपत्ति का आनन्द लेने की आदत

... कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।
2 कुरिन्थियों 4:10।

यह व्यक्त करने के लिए कि परमेश्वर के अनुग्रह ने हमारे अन्दर क्या किया है, हमें परमेश्वर-भक्ति की आदतों का विकास करने की ज़रूरत है। सवाल सिर्फ़ नरक से बच जाने का नहीं, बल्कि इसलिए बचने का है ताकि परमेश्वर के पुत्र का जीवन हमारी देह में प्रकट हो। और हमेशा विपत्ति ही उसके जीवन को हमारे मरनहार शरीर में प्रकट करती है। क्या मेरा जीवन परमेश्वर के पुत्र की मिठास के सार को प्रदर्शित कर रहा है, या सिर्फ़ मेरी उस "खुदी" की खिसियाहट को, जिस खुदी को मैं परमेश्वर से अलग रखना चाहता हूँ ? वह एकमात्र चीज़ जो मुझे विपत्ति का आनन्द लेने के योग्य बनाएगी, मेरी वह तीव्र उत्सुकता है कि परमेश्वर के पुत्र का जीवन मुझमें दिखाई दे। कोई बात चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हो, मुझे कहना चाहिए, "प्रभु, मैं इसमें तेरी आज्ञा मानने से आनन्दित हूँ।" परमेश्वर का पुत्र तुरन्त मेरे जीवन में सबसे आगे आ जाएगा, और मेरी देह में वह प्रकट करेगा जिससे परमेश्वर की महिमा होती है।

आपको वाद-विवाद नहीं करना चाहिए। जिस पल आप परमेश्वर के प्रकाश की आज्ञा मानते हैं, उसी पल उस विपत्ति में परमेश्वर का पुत्र आपके द्वारा चमकता है; लेकिन यदि आप परमेश्वर से वाद-विवाद करते हैं, तो आप उसके आत्मा को शोकित करते हैं (इफिसियों 4:30 देखें)। आपको अपने आप को सही स्थिति में रखना है ताकि परमेश्वर के पुत्र का जीवन आप में प्रकट हो, और यदि आप आत्मदया करने लगते हैं, तो आप अपने आप को सही स्थिति में नहीं रख सकते। हमारी परिस्थितियाँ वह साधन हैं जिनके द्वारा परमेश्वर प्रदर्शित करता है कि उसका पुत्र कितनी निराली रीति से सिद्ध और शुद्ध है। परमेश्वर के पुत्र को प्रकट करने के एक नए ढंग का पता चलने पर हमारे हृदय को एक नई उत्तेजना से धड़कना चाहिए। विपत्ति को चुनना एक चीज़ है, परमेश्वर के प्रभुत्व के द्वारा हमारी परिस्थितियों का संचालन करके उससे मधुर संगीत पैदा करना एक अलग ही बात है। और यदि परमेश्वर आपको विपत्ति में डालता है, तो वह आपकी हर एक घटी को पूरा करने के लिए काफ़ी है (फिलिप्पियों 4:19)।

परमेश्वर के पुत्र के जीवन को प्रकट करने के लिए अपने आप को उपयुक्त स्थिति में रखें। अपने पिछले अनुभवों के बल पर कभी न जीएँ, बल्कि हमेशा परमेश्वर के वचन को अपने भीतर रहने और सक्रिय होने दें।

स्थिति से निपटने की आदत

... कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कौन सी आशा होती है ...।
इफिसियों 1:18।

याद रखें कि आपका उद्धार इसलिए हुआ है कि परमेश्वर के पुत्र का जीवन आपकी देह में प्रकट हो (2 कुरिन्थियों 4:10 देखें)। अपनी शक्तियों के कुल बल का संचालन ऐसे करें कि आप उन सब चीज़ों को प्राप्त कर सकें जो, परमेश्वर के एक बालक होने के नाते, आपके लिए उपलब्ध हैं। आपके मार्ग में चाहे जैसी भी स्थिति आए, हर बार उससे निपटें।

आपने अपने उद्धार को प्राप्त करने के लिए कुछ भी नहीं किया था, लेकिन आपको उसे प्रदर्शित करने के लिए कुछ करना होगा। आपको "अपने अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जाना है" जिसे परमेश्वर आपके अन्दर पूरा कर चुका है (फिलिप्पियों 2:12)। क्या आपकी बातचीत, आपके विचार, और आपकी भावनाएँ इस बात का सबूत हैं कि आप अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जा रहे हैं ? यदि आप अब भी पहले जैसे दुःखी रहनेवाले और चिड़चिड़े व्यक्ति हैं, और अपने ही ढंग से काम करने पर अड़े रहते हैं, तो यह कहना एक झूठ होगा कि परमेश्वर ने आपका उद्धार और पवित्रीकरण किया है।

परमेश्वर प्रधान योजना बनानेवाला है, और वह आपके जीवन में विपत्तियों को इसलिए आने देता है ताकि वह देख सके कि आप उपयुक्त ढंग से उन्हें लांघ सकते हैं या नहीं - "मैं ... अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूँ" (भजन संहिता 18:29)। परमेश्वर आपको अपने पुत्र-पुत्रियाँ बनने की माँगों से बचाकर कभी नहीं रखेगा। पतरस कहता है,"हे प्रियो, जो दुःख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिए तुम में भड़की है, इस से यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है।" इससे निपटें - यह परीक्षा आपसे जो माँग करती है, वह करें। यदि यह परमेश्वर को आपकी देह में यीशु के जीवन को प्रकट करने का मौका देती है, तो इसकी परवाह न करें कि यह आपको कितनी चोट पहुँचाती है ।

काश कि अब से परमेश्वर को हममें शिकायतें नहीं, बल्कि आत्मिक जीवन्तता मिले - उन सब चीज़ों का सामना करने की तैयारी जो वह हमारे जीवन में भेज सकता है। जीवन का एकमात्र उचित लक्ष्य यह है कि हम परमेश्वर के पुत्र को प्रकट करें, और जब ऐसा होता है तो परमेश्वर के सामने अपनी माँगें रखने का सिलसिला ख़त्म हो जाता है। हमारे प्रभु ने अपने पिता को कभी आज्ञा नहीं दी; और हम इसलिए नहीं हैं कि परमेश्वर को आज्ञा दें। हम यहाँ इसलिए हैं कि अपने आप को उसकी इच्छा के अधीन करें ताकि वह हममें वह पूरा कर सके जो वह चाहता है। जब हमें इसका एहसास हो जाएगा, तो परमेश्वर हमें दूसरों को खिलाने और उनका पोषण करने के लिए तोड़ी गई रोटी और उण्डेला गया दाखरस बनाएगा।

मई 16

परमेश्वर के प्रबन्ध को पहचानने की आदत

...ताकि...तुम ...ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।
2 पतरस 1:4।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के द्वारा उसका स्वभाव पाते हुए और उसमें सहभागी होते हुए, हम "ईश्वरीय स्वभाव के समभागी" बनाए जाते हैं। इसके बाद, हमें परमेश्वर-भक्ति की आदतों का विकास करने के द्वारा इस ईश्वरीय स्वभाव को अपने मानव जीवन में उतारना है। सबसे पहले जिस आदत का विकास करने की जरूरत होती है, वह है हमारे लिए परमेश्वर के प्रबन्ध को पहचानने की आदत। हम अकसर कहते हैं, "मैं इतना खर्च करने में असमर्थ हूँ।" इस वाक्य में सबसे बुरे झूठों में से एक छिपा हुआ है। हम ऐसे बात करते हैं मानो हमारे स्वर्गीय पिता ने हमें कंगाल करके हमसे नाता तोड़ लिया है। हम समझते हैं कि अन्त में यह कहना कि "किसी तरह से आज का दिन निकल तो गया लेकिन बहुत संघर्ष करके," दीनता का चिह्न होता है। जब कि प्रभु यीशु में समस्त सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारा है। और यदि हम सिर्फ़ उसकी आज्ञा मानेगे, तो वह हमें आशीष देने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेगा। क्या यह सचमुच इतना महत्त्वपूर्ण होता है कि हमारी परिस्थितियाँ कठिन हैं ? वे कठिन क्यों न होंगी ? यदि हम आत्मदया का रास्ता अपनाते हैं या घोर दुःख में होने के सुखसाधन का मज़ा लेते है, तो हम परमेश्वर के धन-दौलत को अपने जीवन से दूर कर देते हैं और उसके प्रबन्ध में प्रवेश करने में दूसरों के लिए रुकावट डालते हैं। आत्मदया से बद्तर और कोई पाप नहीं, क्योंकि यह परमेश्वर को हमारे जीवन के सिंहासन से हटा देती है, और उसके स्थान पर हमारे स्वार्थ को बैठा देती है। आत्मदया हमारा मुँह सिर्फ़ बुड़बुड़ाने के लिए खुलवाती है, और हम आत्मिक रूप से स्पंज बन जाते है - हमेशा सोखते रहते हैं, कभी देते नहीं, और कभी सन्तुष्ट नहीं होते। हमारे जीवन के बारे में कोई बात सुन्दर या उदार नहीं होती।

इससे पहले कि परमेश्वर हमसे सन्तुष्ट हो, वह हमसे वह सब ले लेगा जिसे हम दौलत मानते हैं, जब तक हम यह नहीं सीख लेते कि वही हमारा स्रोत है; जैसे भजनकार ने कहा, "सब सोते तुझी में पाए जाते हैं" (भजन संहिता 87:7)। यदि परमेश्वर का गौरव, अनुग्रह, और सामर्थ्य हममें प्रदर्शित नहीं होते, तो परमेश्वर हमें ज़िम्मेदार ठहराता है। "और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से ...तुम्हारे पास बहुत कुछ हो" (2 कुरिन्थियों 9:8) - सो अपने आप को उदारता से देते हुए, परमेश्वर का अनुग्रह दिल खोलकर दूसरों को दें। परमेश्वर की छाप और पहचान अपने ऊपर लगने दें, और उसकी आशीष हर समय आप से होकर बहती रहेगी।

मई 17

उसका स्वर्गारोहण और हमारी पहुँच

उन्हें आशीष देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया।
लूका 24:51।

हमारे जीवन में ऐसे अनुभव नहीं पाए जाते जो यीशु के रूपान्तरण के बाद उसके जीवन की घटनाओं से मेल खाते हों। उस घड़ी के बाद से उसका जीवन पूरी तरह से प्रतिनिधिक हो गया। रूपान्तरण के समय तक उसने एक पुरुष के सामान्य, सिद्ध जीवन का प्रदर्शन किया था। लेकिन रूपान्तरण से आगे - गतसमनी, क्रूस, पुनरुत्थान - सब कुछ हमारे लिए अपरिचित है। उसका क्रूस वह द्वार है जिसके द्वारा मानवजाति का हर व्यक्ति परमेश्वर के जीवन में प्रवेश कर सकता है; उसके पुनरुत्थान के द्वारा उसे किसी को भी अनन्त जीवन देने का अधिकार है, और उसके स्वर्गारोहण के द्वारा स्वर्ग के द्वार को सारी मानवजाति के लिए खुला रखते हुए, हमारे प्रभु ने स्वर्ग में प्रवेश किया।

यीशु का रूपान्तरण स्वर्गारोहण के पर्वत पर सम्पूर्ण हुआ। यदि वह रूपान्तरण के पर्वत से सीधे स्वर्ग चला जाता, तो वह अकेला गया होता। वह हमारे लिए एक महिमामय जन से बढ़कर और कुछ न होता। लेकिन उसने उस महिमा का त्याग किया, और पहाड़ से नीचे आकर अपने आप को पतित मानव के साथ एक कर दिया।

स्वर्गारोहण रूपान्तरण का सम्पूर्ण किया जाना है। हमारा प्रभु अपनी मूल महिमा में वापस लौटा, परन्तु केवल परमेश्वर के पुत्र के रूप में ही नहीं - वह अपने पिता के पास *मनुष्य के पुत्र* के रूप में भी लौटा। मनुष्य के पुत्र के स्वर्गारोहण के कारण, अब हर एक के लिए परमेश्वर के सिंहासन तक सीधी पहुँच की स्वतन्त्रता है। मनुष्य का पुत्र होते हुए, यीशु मसीह ने समझ-बूझकर अपनी सर्वशक्तिमत्ता, सर्वव्यापिता, और सर्वज्ञता को सीमित किया। लेकिन अब ये गुण पूरे सामर्थ्य के साथ उसके हैं। मनुष्य का पुत्र होने के नाते, यीशु मसीह के पास अब परमेश्वर के सिंहासन पर सब सामर्थ्य है। उसके स्वर्गारोहण के बाद से आज तक वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।

मई 18

सरलता से जीना, फिर भी ध्यान केन्द्रित रखना

आकाश के पक्षियों को देखो ...जंगली सोसनों पर ध्यान दो ...।
मत्ती 6:26:28।

"जंगली सोसनों पर ध्यान दो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं" - वे केवल हैं! समुद्र, हवा, सूरज, चाँद, तारों के बारे में सोचें - ये सब भी केवल हैं- फिर भी हमारे लिए उनकी कार्य-सेवा कितनी महान है। कितनी बार हम एकरूप होने के और उपयोगी बनने के अपने ही सोचे-समझे प्रयासों के कारण परमेश्वर की योजना के अनुसार ठहराए गए प्रभाव को बिगाड़ देते हैं। यीशु ने कहा कि आत्मिक रूप से विकसित होने और बढ़ने का एक ही तरीका है, और वह है परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित रखने के द्वारा। यीशु के कहने का सार था, "दूसरों के काम आने के बारे में चिन्ता मत करो; केवल मुझ पर विश्वास करो।" दूसरे शब्दों में, स्रोत की ओर ध्यान लगाओ, और तुम्हारे अन्दर से "जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी" (यूहन्ना 7:38)। हम अपनी व्यावहारिक बुद्धि और तर्क से अपने प्राकृतिक जीवन के स्रोत का पता नहीं लगा सकते, और यीशु यहाँ यह सिखा रहा है कि हमारे आत्मिक जीवन में बढ़ोतरी इसपर ध्यान लगाने से नहीं बल्कि हमारे स्वर्गीय पिता पर ध्यान केन्द्रित करने से होती है। हमारा स्वर्गीय पिता हमारी परिस्थितियों को जानता है, और यदि हम अपना ध्यान अपनी परिस्थितियों के बजाय परमेश्वर पर केन्द्रित करके रखेंगे, तो "जंगली सोसनों" की तरह, हम भी आत्मिक रूप से बढ़ेंगे।

जो लोग हमें सब से ज़्यादा प्रभावित करते हैं, वे लगातार बात करके हमारा समय ख़राब करनेवाले लोग नहीं, बल्कि वे लोग हैं जो अपना जीवन आकाश के तारों, और "जंगल के सोसनों" की तरह जीते हैं - सरलता से और बिना दिखावे के। यही वे जीवन हैं जो हमें ढाँचे में ढालते और आकार देते हैं।

यदि आप परमेश्वर के काम आना चाहते हैं, तो यीशु मसीह के साथ सही सम्बन्ध बनाए रखें, और वह आपके जीवन की हर घड़ी आपको इस्तेमाल करेगा - फिर भी आपको पता भी नहीं चलेगा कि आप उसके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

मई 19

“मैं खण्डहरों में से भी उठ खड़ा होता हूँ”

कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा ?
रोमियों 8:35 ।

परमेश्वर अपने बालक को संकट से सुरक्षित नहीं रखता, बल्कि वह यह प्रतिज्ञा करता है कि “संकट में मैं उसके संग रहूँगा ...” (भजन संहिता 91:15) । एक व्यक्ति के जीवन में विपत्तियाँ चाहे कितनी भी वास्तविक या ज़बरदस्त क्यों न हों, कोई चीज़ उसे परमेश्वर के साथ सम्बन्ध से अलग नहीं कर सकती । हम “इन सब बातों में ...जयवन्त से भी बढ़कर हैं” (रोमियों 8:37) । यहाँ पौलुस काल्पनिक चीज़ों की नहीं बल्कि ऐसी चीज़ों की बात कर रहा था जो ख़तरनाक़ रीति से वास्तविक
हैं । और उसने कहा कि इनके बीच में भी हम “महा-विजयी” हैं, अपनी कुशलता के कारण नहीं, न ही अपने साहस के कारण, बल्कि इसलिए क्योंकि इनमें से कोई भी यीशु मसीह में परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को प्रभावित नहीं कर सकतीं । मुझे उस मसीही के लिए बड़ा दुःख होता है जिसकी परिस्थितियों में कुछ ऐसा नहीं है जिसके लिए वह इच्छा करता है कि यह न होती तो कितना अच्छा होता ।

“क्या क्लेश ...?” क्लेश कभी कोई भव्य घटना नहीं होता, जिसका शान से स्वागत किया जाए; लेकिन वह जो भी होता है - चाहे वह अत्याधिक थकान, चिड़चिड़ाहट, या सिर्फ़ कमज़ोरी पैदा करनेवाली चीज़ हो - यह हमें “मसीह के प्रेम से अलग” नहीं कर सकती । क्लेश या “संसार की चिन्ता” को कभी यह अनुमति न दें कि वह आपको यह याद रखने से अलग करे कि परमेश्वर आपसे प्रेम रखता है (मत्ती 13:22) ।

“क्या ... संकट... ?” क्या परमेश्वर का प्रेम तब भी स्थिर रहेगा जब ऐसा लगता है कि हमारे चारों ओर सब कुछ यह कह रहा हो कि उसका प्रेम एक झूठ है, और न्याय नाम की कोई चीज़ नहीं ?

“क्या ...अकाल ...?” जब हम भूख से मर रहे हों, क्या हम उस समय भी न केवल परमेश्वर के प्रेम पर विश्वास कर सकते हैं बल्कि “जयवन्त से भी बढ़कर ” हो सकते हैं ?

या तो यीशु मसीह एक धोखेबाज़ था जिसने पौलुस तक को धोखा दिया, या फिर उन लोगों के साथ कुछ अनोखी बात होती है जो सब सम्भावनाओं को अपने विरुद्ध होते देखने पर भी परमेश्वर के प्रेम को थामे रहते हैं । उनके विरुद्ध होनेवाली इन सब बातों के सामने, तर्क का मुँह बन्द हो जाता है । सिर्फ़ एक ही बात इसका उत्तर दे सकती है - *मसीह यीशु में परमेश्वर का प्रेम* । हर बार “मैं खण्डहरों में से भी उठ खड़ा होता हूँ ।”

मई 20

अपने प्राणों को बचाए रखना

अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे।
लूका 21:19।

जब किसी व्यक्ति का नया जन्म होता है, तो कुछ समय के लिए उसकी सोच या तर्क में पहले की तरह शक्ति नहीं होती। हमें अपने अन्दर इस नए जीवन को व्यक्त करना सीखना होता है, जो मसीह के स्वभाव को अपने अन्दर लाने से आता है (फिलिप्पियों 2:5 देखें)। लूका 21:19 का अर्थ यह है कि हम धीरज से अपने प्राणों को बचाए रखते हैं। लेकिन हम में से बहुत से ऐसे हैं जो मसीही जीवन के प्रवेशद्वार पर टिके रहना पसन्द करते हैं, बजाय इसके कि हम आगे बढ़कर अपने प्राण को उस नए जीवन के अनुसार बनाएँ और बढ़ाएँ, जिसे परमेश्वर ने हमारे अन्दर रखा है। हम इसलिए चूक जाते हैं क्योंकि हम यह नहीं जानते कि परमेश्वर ने हमें किस ढंग से बनाया है, और शैतान को उन चीज़ों के लिए दोष देते हैं, जो वास्तव में हमारे अपने अनअनुशासित स्वभावों का नतीजा होती हैं। ज़रा सोचें कि जब हम सत्य के प्रति जाग उठेंगे, तो हम क्या हो सकते हैं !

जीवन में कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनके लिए हमें प्रार्थना नहीं करनी चाहिए - उदाहरण के लिए, हमारा मिज़ाज। हम अपने मिज़ाज से प्रार्थना के द्वारा नहीं, बल्कि इसे बलपूर्वक अपने जीवन से निकालने के द्वारा ही छुटकारा पाएँगे। मिज़ाज की जड़ ज़्यादातर शारीरिक हालत में होती है, नैतिकता में नहीं। हमारी शारीरिक स्थिति के फलस्वरूप पैदा होनेवाले मिज़ाज की न सुनना एक लगातार चलनेवाला संघर्ष बन जाता है, लेकिन हमें एक पल के लिए भी इसके आगे झुकना नहीं चाहिए। हमें अपने आप को पकड़कर ज़ोर से झकझोरना चाहिए, और तब हम पाएँगे कि हम वह कर सकते हैं जो हम सोचते थे हमारे वश से बाहर है। जिस समस्या से हम श्रापित हैं वह यह है कि हम ऐसा नहीं करते। मसीही जीवन आत्मिक साहस और दृढ़ संकल्प का जीवन होता है।

मई 21

परमेश्वर का सा "बेतुका" विश्वास रखना

इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो
तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी ।
मत्ती 6:33 ।

जब हम यीशु के इन शब्दों की ओर ध्यान देते हैं, तो हमें तुरन्त ऐसा लगता है कि इससे अधिक क्रान्तिकारी शब्द मनुष्य नें कभी नहीं सुने होंगे । "...पहले तुम उसके राज्य की खोज करो ... ।" हममें से सब से अधिक धार्मिक-विचारों वाले लोग भी इसके विपरीत का पक्ष लेंगे और कहेंगे, "लेकिन मुझे जीना है; मुझे इतना पैसा कमाने की ज़रूरत है; मुझे कपड़ों की ज़रूरत है; मुझे रोटी की ज़रूरत है ।" हमारे जीवन की सबसे बड़ी चिन्ता परमेश्वर का राज्य नहीं, बल्कि यह है कि जीने के लिए हम अपना ख़्याल कैसे रखें । यीशु ने यह कहने के द्वारा इस क्रम को बदल दिया कि पहले हम परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में आएँ, और इसे अपने जीवन की प्राथमिक चिन्ता बनाएँ, और आग्रह किया कि हम जीवन की दूसरी चीज़ों की चिन्ता कभी न करें ।

"अपने प्राण के लिए ...चिन्ता न करना" (6:25) । हमारे प्रभु ने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसके दृष्टिकोण से यह बिलकुल बेतुका है कि हम चिन्ता करें कि हम कैसे जीएँगे । यीशु ने यह नहीं कहा कि जो अपने जीवन में किसी भी चीज़ की चिन्ता नहीं करता, वह धन्य है - नहीं, बल्कि ऐसा व्यक्ति तो मूर्ख है । लेकिन यीशु ने यह ज़रूर सिखाया कि उसके शिष्य को परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को अपने जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण बिन्दु बनाना चाहिए, और इसकी तुलना में, बाकी सब चीज़ों की परवाह नहीं करनी चाहिए । यीशु के कहने का अर्थ यह था कि "खाने-पीने को अपने जीवन को नियन्त्रित रखनेवाली चीज़ न बनाओ, लेकिन पूरी तरह से परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित रखो ।" कुछ लोग अपने खाने-पीने के बारे में लापरवाह होते हैं, और उन्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ती है; वे अपने कपड़ों के बारे में लापरवाह होते हैं और इसके फलस्वरूप देखने में फूहड़ और भद्दे लगते हैं । वे सांसारिक मामलों में लापरवाह होते हैं, और इसके लिए परमेश्वर उन्हें ज़िम्मेदार ठहराता है । यीशु यह कह रहा है कि हमें परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को प्रथम स्थान देना है, और बाकी सब चीज़ों को दूसरा स्थान ।

इन पदों में यीशु की शिक्षा से तालमेल बनाने के लिए पवित्र आत्मा को अनुमति देना, मसीही जीवन के सबसे कठिन, और फिर भी सबसे महत्त्वपूर्ण, अनुशासनों में से एक है ।

मई 22

हमारी कठिनाइयों का स्पष्टीकरण

कि वे सब एक हों जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों।
यूहन्ना 17:20, 21।

यदि आप अकेलेपन के दौर से गुज़र रहे हैं, आपको ऐसा महसूस हो रहा है कि आप बिलकुल अकेले हैं, तो यूहन्ना 17 पढ़ें। यह आपको स्पष्टता से समझाएगा कि आप जहाँ हैं, वहाँ क्यों हैं - यानि इसलिए क्योंकि यीशु ने प्रार्थना की कि आप पिता के साथ "एक हों" जैसे यीशु भी उसके साथ एक है। क्या आप इस प्रार्थना का उत्तर देने में परमेश्वर की मदद कर रहे हैं, या अपने जीवन के लिए आपका लक्ष्य कुछ और ही है ? जब से आप एक शिष्य बने हैं, आप उस तरह से स्वतन्त्र नहीं रह सकते जैसे पहले थे।

यूहन्ना 17 में परमेश्वर यह प्रकट करता है कि उसका उद्देश्य सिर्फ़ हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देना नहीं है, बल्कि यह कि प्रार्थना के द्वारा हम उसके मन को पहचान सकें। फिर भी, एक प्रार्थना ऐसी है जिसका उत्तर परमेश्वर को देना ही है, और वह है यीशु की प्रार्थना - "... कि वे वैसे ही एक हों, जैसे कि हम एक हैं" (17:22)। क्या हम यीशु मसीह के इतने क़रीब हैं ?

परमेश्वर को हमारी योजनाओं की परवाह नहीं। वह यह नहीं पूछता कि "क्या तुम एक प्रिय जन को खोने के अनुभव से, इस कठिनाई से, या इस हार से होकर गुज़रना चाहते हो ?" नहीं, वह अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए इन बातों को होने देता है। जिन बातों में से होकर हम गुज़र रहे हैं, वे या तो हमें और अधिक मधुर, बेहतर, और नीतिवान बनाती हैं, या वे हमें और अधिक आलोचना करनेवाला, दोष निकालनेवाल और अपनी मनमानी करनेवाला बनाती हैं। जो घटनाएँ घटती हैं, वे परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध और हमारी घनिष्ठता के अनुसार, या तो हमें दुष्ट बनाती है या और अधिक भक्तिपूर्ण। यदि हम अपने जीवन के सम्बन्ध में यह प्रार्थना करेंगे कि "तेरी इच्छा पूरी हो" (मत्ती 26:42), तो यूहन्ना 17 हमें यह प्रोत्साहन और सांत्वना देगा, कि हमारा पिता अपनी ही बुद्धि के अनुसार काम कर रहा है। जब हम परमेश्वर के उद्देश्य को समझेंगे, तब हम तंग-मन वाले और दोषदर्शी नहीं रहेंगे। यीशु ने अपने साथ एक होने की प्रार्थना की, जैसे वह भी पिता के साथ एक है। हम में से बहुत से लोग इस एक होने से बहुत दूर हैं, फिर भी परमेश्वर हमें तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक हम उसके साथ सचमुच एक नहीं हो जाते - क्योंकि यीशु ने प्रार्थना की कि "वे सब एक हों ...।"

मई 23

सोचा-समझा अविश्वास

अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएँगे ? और क्या पीएँगे ?
और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहिनेंगे ?
मत्ती 6:25 ।

यीशु ने एक शिष्य के जीवन में व्यावहारिक बुद्धि से सोची गई सावधानी को अविश्वास कहा। यदि हमने परमेश्वर का आत्मा पाया है, तो वह बलपूर्वक हमारे जीवन में प्रवेश करेगा मानो हम से पूछ रहा हो, "इस रिश्ते-नाते में, तुम्हारे छुट्टी पर जाने के मामले में, इन नई पुस्तकों के मामले में जो तुम पढ़ना चाहते हो, परमेश्वर का स्थान क्या है ?" और परमेश्वर तब तक इस पर ज़ोर देता रहता है जब तक हम सब से पहला महत्त्व उसको नहीं देते। जब भी हम दूसरी बातों को पहला स्थान देते है, गड़बड़ हो जाती है।

"...चिन्ता न करना...।" अपने प्रबन्ध का बोझ अपने ऊपर न लें। चिन्ता करना न केवल ग़लत है, बल्कि यह अविश्वास है। चिन्ता करने का अर्थ यह है कि हम यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर हमारे जीवन की व्यावहारिक बातों का ध्यान रख सकता है, और यही बातें हमारे लिए चिन्ता का कारण बनती हैं। क्या आपने कभी इसपर ध्यान दिया है कि यीशु ने किसके बारे में कहा कि वह उसके द्वारा डाले गए वचन को दबाता है ? शैतान के बारे में नहीं, बल्कि "संसार की चिन्ता" के बारे में (मत्ती 13:22)। ये हमेशा हमारी छोटी-छोटी चिन्ताएँ होती हैं। हम कहते हैं, "जब मैं देख नहीं सकता तो विश्वास नहीं करूँगा" और अविश्वास की शुरुआत यहीं से होती है। अविश्वास का एकमात्र इलाज है पवित्र आत्मा की आज्ञा मानना।

सबसे महान शब्द जो यीशु ने अपने चेलों से कहा, वह था *छोड़ देना*।

मई 24

निराशा का आनन्द

जब मैंने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा ...।
प्रकाशितवाक्य 1:17।

हो सकता है, कि प्रेरित यूहन्ना की तरह, आप यीशु मसीह को क़रीबी से जानते हों । और जब वह बिलकुल अपरिचित लक्षणों के साथ आपके सामने खड़ा हो जाता है, तो आप एक ही काम कर पाएँगे - "उसके पैरों पर मुर्दा से गिर पड़ेंगे।" ऐसे मौके होते हैं जब परमेश्वर अपने आप को गौरव में प्रकट करने के सिवा किसी और तरह से प्रकट नहीं कर सकता, और दर्शन की भयंकरता आपको निराशा के आनन्द तक ले आती है। आप निराशापूर्ण स्थिति में इस हर्ष का अनुभव करते हैं, और समझ जाते हैं कि यदि आपको कभी भी उठाया जाएगा, तो यह सिर्फ़ परमेश्वर के हाथ से होगा।

"उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखा ..." (1:17)। इस भयंकरता के बीच, आपको एक स्पर्श का एहसास होता है, और आप जानते हैं कि यह यीशु मसीह का दाहिना हाथ है। यह रोक-टोक का, या ग़लतियाँ जताने का, या ताड़ना का दाहिना हाथ नहीं, बल्कि अनन्तकाल के पिता का दाहिना हाथ है। जब भी उसका हाथ आपके ऊपर रखा जाता है, उससे आपको ऐसी शान्ति और सांत्वना मिलती हैं जो वर्णन से परे हैं, और यह एहसास होता है कि "नीचे सनातन भुजाएँ हैं" (व्यवस्थाविवरण 33:27), जो सहारे, प्रबन्ध, दिलासा, और शक्ति से परिपूर्ण हैं। और एक बार जब उसका स्पर्श मिलता है, तो कोई भी चीज़ आपको फिर से भय में नहीं डाल सकती। अपने स्वर्ग पर उठाए जाने की महिमा के बीच, प्रभु यीशु एक महत्त्वहीन शिष्य के पास आकर कहता है, "मत डर" (प्रकाशितवाक्य 1:17)। उसकी कोमलता इतनी मधुर है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। क्या मैं उसे इस रूप में जानता हूँ ?

कुछ ऐसी चीज़ों की ओर देखें जो निराशा पैदा करती हैं। एक निराशा ऐसी होती है जिसमें कोई आनन्द नहीं, बिलकुल भी सीमाएँ नहीं, और किसी बेहतर चीज़ की आशा नहीं। लेकिन निराशा का आनन्द तब आता है जब "मैं जानता हूँ कि मुझ में (अर्थात् मेरे शरीर में) कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती..." (रोमियों 7:18)। मुझे यह जानने में आनन्द होता है कि मुझमें कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर के सामने मुँह के बल गिरना है, जब वह अपने आप को मुझपर प्रकट करता है, और यह जानने में आनन्द होता है कि यदि मुझे कभी उठाकर खड़ा किया जाना है, तो यह परमेश्वर के हाथ से ही होगा। परमेश्वर मेरे लिए तब तक कुछ नहीं कर सकता जब तक मैं सम्भव की सीमा तक न पहुँच जाऊँ।

मई 25

अच्छा या सबसे अच्छा ?

यदि तू बाईं ओर जाए, तो मैं दहिनी ओर जाऊँगा;
और यदि तू दहिनी ओर जाए, तो मैं बाईं ओर जाऊँगा।
उत्पत्ति 13:9।

जैसे ही आप परमेश्वर में विश्वास का जीवन जीना शुरू करेंगे, लुभावनी और शारीरिक रूप से सन्तुष्टिदायक सम्भावनाएँ आपके सामने आकर खड़ी हो जाएँगी। इन चीज़ों पर आपका पूरा अधिकार है, लेकिन यदि आप विश्वास का जीवन जी रहे हैं, तो अपने अधिकारों को छोड़ देंगे, और परमेश्वर को मौका देंगे कि वह आपके लिए चुनाव करे। कभी-कभी परमेश्वर आपको परीक्षा के ऐसे स्थान पर आने देता है जहाँ, यदि आप विश्वास का जीवन नहीं जी रहे, तो अपनी भलाई के बारे में सोचना आपके लिए उपुयुक्त होगा। लेकिन यदि आप विश्वास का जीवन जी रहे हैं, तो आप खुशी से अपने अधिकारों को छोड़ देंगे और परमेश्वर को अपने लिए चुनाव करने का मौका देंगे। यह वह अनुशासन है जिसका परमेश्वर इस्तेमाल करता है ताकि उसकी आज्ञा मानने के द्वारा स्वाभाविक आत्मिक में बदल जाए।

जब भी हमारा अधिकार हमारे जीवन का मार्ग निर्देशक बन जाता है, हमारी आत्मिक अन्तर्दृष्टि मन्द हो जाती है। परमेश्वर में विश्वास के जीवन का सबसे बड़ा शत्रु पाप नहीं, बल्कि ऐसे चुनाव होते हैं जो अच्छे तो होते हैं लेकिन सबसे अच्छे नहीं। अच्छा हमेशा सबसे अच्छे का शत्रु होता है। इस अनुच्छेद में, ऐसा लगता है कि अब्राम के लिए सबसे समझदारी का काम होता चुनाव करना। यह उसका अधिकार था, और उसके आसपास के लोग चुनाव न करने के लिए उसे मूर्ख समझते।

हम में से बहुत से लोग आत्मिक रूप से नहीं बढ़ते, क्योंकि हम परमेश्वर के हाथ में चुनाव छोड़ने के बजाय खुद सही चीज़ का चुनाव करना पसन्द करते हैं। हमें ऐसे मापदण्ड के अनुसार चलना सीखना है, जिसकी आँख परमेश्वर पर लगी हुई हैं। और परमेश्वर हमसे कहता है, जैसे उसने अब्राम से कहा था कि, "...मेरी उपस्थिति में चल ..." (उत्पत्ति 17:1)।

मई 26

यीशु की शिक्षा के अनुसार प्रार्थना के विषय में सोचना

निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।
1 थिस्सलुनीकियों 5:17।

प्रार्थना के विषय में हमारी सोच, चाहे वह सही हो या ग़लत, हमारी अपनी धारणा पर आधारित होती है। सही धारणा यह है कि हम प्रार्थना को अपने फेफड़ों की साँस और अपने हृदयों के रक्त के समान समझें। हमारे रक्त का बहना और हमारी साँस का चलना निरन्तर जारी रहता है ; हमें इसका एहसास भी नहीं होता, लेकिन यह कभी नहीं रुकता। और हमें इसका हमेशा एहसास नहीं होता कि यीशु हमें परमेश्वर के साथ सिद्ध एकता में रख रहा है, लेकिन यदि हम उसका आज्ञापालन कर रहे हैं, तो वह हमेशा ऐसा ही कर रहा है। प्रार्थना एक अभ्यास नहीं, बल्कि जीवन होता है। ऐसी हर चीज़ से बचें जो प्रार्थना करने से रोकती है। "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" - अपने हृदय में हर समय परमेश्वर से प्रार्थना करने की बालकों-जैसी आदत बनाए रखें।

यीशु ने कभी ऐसी प्रार्थना का ज़िक्र नहीं किया जिसका उत्तर न दिया गया हो। उसे यह असीमित निश्चितता थी कि प्रार्थना का उत्तर हमेशा दिया जाता है। क्या परमेश्वर के आत्मा के द्वारा हमें प्रार्थना के विषय में वह अवर्णनीय निश्चितता है जो यीशु को थी, या हम उन मौकों के बारे में सोचते हैं जब हमें लगा कि परमेश्वर ने हमारी प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया ? यीशु ने कहा, "जो कोई माँगता है, उसे मिलता है ..." (मत्ती 7:8)। फिर भी हम कहते हैं, "लेकिन ... लेकिन... ।" परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर सबसे अच्छे ढंग से देता है, कभी-कभी ही नहीं, बल्कि हर बार। लेकिन हम जिस क्षेत्र में उत्तर माँगते हैं, उसका सबूत हमेशा तुरन्त नहीं आता। क्या हम यह प्रत्याशा करते हैं कि परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देगा ?

हमारे लिए जो ख़तरा है, वह यह है कि यीशु ने जो कहा, हम उसके प्रभाव को कम कर देते हैं और उसका अर्थ वह बना देते हैं जो हमारी व्यावहारिक बुद्धि के अनुकूल होता है। लेकिन यदि यह व्यावहारिक बुद्धि का मामला होता, तो यीशु ने जो कहा, उसका कोई ख़ास महत्त्व नहीं होता। प्रार्थना के बारे में यीशु ने जो बातें सिखाईं, वे अलौकिक सत्य हैं।

मई 27

उसको जानने के लिए जीवन

जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।
लूका 24:49।

यीशु के शिष्यों को पिन्तेकुस्त के दिन तक यरूशलेम में ठहरना था, न केवल अपनी तैयारी के लिए, लेकिन इसलिए क्योंकि उन्हें प्रभु के महिमा तक पहुँचने के लिए रुकना था। और जैसे ही उसे महिमा प्राप्त हुई, तो क्या हुआ ? "इस प्रकार, परमेश्वर के दहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिस की प्रतिज्ञा की गई थी, उस ने यह उण्डेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो" (प्रेरितों के काम 2:33)। यूहन्ना 7:39 में लिखी बात - "क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था" हम पर लागू नहीं होती। पवित्र आत्मा दिया जा चुका है; प्रभु को महिमा मिल चुकी है - हमारा ठहरना परमेश्वर के प्रबन्ध पर नहीं बल्कि आत्मिक रूप से तैयार होने की हमारी अपनी स्थिति पर निर्भर है।

पवित्र आत्मा का प्रभाव और सामर्थ्य पिन्तेकुस्त से पहले भी काम कर रहा था, परन्तु *वह* यहाँ नहीं था। एक बार जब यीशु को अपने स्वर्गारोहण में महिमा मिल गई, तो पवित्र आत्मा जगत में आ गया, और वह तब से यहाँ है। हमें प्रकट किए गए इस सत्य को स्वीकार करना है कि वह यहाँ है। अपने जीवन में पवित्र आत्मा को पाने और उसका स्वागत करने की मनोवृत्ति एक विश्वासी की लगातार रहनेवाली मनोवृत्ति होनी चाहिए। जब हम पवित्र आत्मा को पाते हैं, तो हम अपने स्वर्ग पर चढ़े प्रभु से जान डालनेवाला जीवन पाते हैं। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लोगों को नहीं बदलता; स्वर्ग पर चढ़े मसीह का पवित्र आत्मा के द्वारा उनके जीवन में आना उन्हें बदलता है। हम उन बातों को कुछ ज़्यादा ही अलग कर देते हैं जिन्हें नया नियम कभी अलग नहीं करता। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा यीशु मसीह से अलग अनुभव नहीं है - यह स्वर्ग पर चढ़े मसीह का सबूत है।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा आपको समय या अनन्तकाल के बारे में सोचने पर मजबूर नहीं करता - यह तो एक अद्‌भुत *अभी* है। "अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ ...को...जानें" (यूहन्ना 17:3)। उसे अभी जानना शुरू करें, और कभी बन्द न करें।

मई 28

निर्विवाद प्रकटीकरण

उस दिन तुम मुझसे कुछ न पूछोगे।
यूहन्ना 16:23।

"वह दिन" कब है ? वह वह दिन है जब स्वर्ग पर उठाया गया प्रभु आपको पिता के साथ एक करता है। "उस दिन" आप पिता के साथ वैसे एक हो जाएँगे जैसे यीशु है, और उसने कहा, "उस दिन तुम मुझसे कुछ न पूछोगे।" जब तक यीशु का पुनरुत्थान का जीवन पूरी तरह से आपमें प्रदर्शित नहीं होता, आपके मन में बहुत सी चीज़ों के बारे में प्रश्न उठते हैं। फिर कुछ समय के बाद आप पाते हैं कि आपके सारे प्रश्न ग़ायब हो गए हैं - आपके पास पूछने के लिए कुछ नहीं रहा। आप यीशु के पुनरुत्थान के जीवन पर सम्पूर्ण भरोसे के स्थान पर पहुँच गए हैं, जो आपको पूरी तरह से परमेश्वर के उद्देश्य के साथ एकता में ले आता है। क्या आप इस समय यह जीवन जी रहे हैं ? यदि नहीं, तो क्यों नहीं ?

"उस दिन" कई ऐसी बातें हो सकती हैं जो तब भी आपकी समझ से परे होंगी, लेकिन ये आपके हृदय और परमेश्वर के बीच नहीं आएँगी। "उस दिन तुम मुझसे कुछ न पूछोगे" - आपको पूछने की ज़रूरत भी नहीं होगी क्योंकि आपको निश्चय हो जाएगा कि परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार बातों को प्रकट करेगा। यूहन्ना 14 का विश्वास और शान्ति आपके हृदय की असली मनोदशा बन गए हैं, और पूछने के लिए प्रश्न बचे ही नहीं। यदि कोई बात आपके लिए एक रहस्य है और आपके और परमेश्वर के बीच आ रही है, तो उसके स्पष्टीकरण को अपने दिमाग़ में नहीं, बल्कि अपनी आत्मा, यानि अपने वास्तविक भीतरी स्वभाव में ढूँढें - समस्या यहीं पर है। एक बार जब आपका भीतरी आत्मिक स्वभाव यीशु के जीवन के अधीन आ जाने के लिए तैयार हो जाएगा, तो आपकी समझ बिलकुल साफ़ हो जाएगी, और आप उस स्थान पर आ जाएँगे जहाँ परमेश्वर और आपके, यानि उसके बालक के, बीच कोई दूरी नहीं रहेगी क्योंकि प्रभु ने आपको एक कर दिया है। "उस दिन तुम मुझसे कुछ न पूछोगे।"

मई 29

शान्तिपूर्ण सम्बन्ध

उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे ...क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है।
यूहन्ना 16:26-27।

"उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे...", यानि मेरे स्वभाव में माँगोगे। इसका अर्थ यह नहीं - "तुम मेरे नाम का मन्त्र के रूप में इस्तेमाल करके माँगोगे," बल्कि यह कि "तुम मेरे साथ इतने घनिष्ठ होगे कि तुम मेरे साथ एक हो जाओगे।"

"वह दिन" अगले जीवन का एक दिन नहीं, यहाँ और अभी के लिए है। "...क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है..." - परमेश्वर पिता का प्रेम इस बात का सबूत है कि यीशु के साथ हमारा एक होना पूरा और सम्पूर्ण है। हमारे प्रभु के कहने का अर्थ यह नहीं था कि हमारे जीवन बाहरी कठिनाइयों और अनिश्चितताओं से मुक्त हो जाएँगे, बल्कि यह था कि जैसे वह पिता के हृदय और मन को जानता है, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा हम भी ऊँचे स्थानों में उठाए जा सकते हैं, ताकि वह परमेश्वर की शिक्षाओं को हम पर प्रकट कर सके।

"...यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा ..." (16:23)। "वह दिन" परमेश्वर और उसके पवित्र जन के बीच शान्ति का और एक शान्तिपूर्ण सम्बन्ध का दिन है। जैसे यीशु अपने पिता की उपस्थिति में निष्कलंक और शुद्ध खड़ा हुआ, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के शक्तिशाली सामर्थ्य और प्रभावशीलता से हम भी उसी सम्बन्ध में उठाए जा सकते हैं - "...कि वे वैसे ही एक हों जैसे हम एक हैं" (यूहन्ना 17:22)।

"...वह तुम्हें देगा" (यूहन्ना 16:23)। यीशु ने कहा कि उसके नाम के कारण परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को पहचानेगा और उनका उत्तर देगा। कितनी महान चुनौती और कितना महान निमन्त्रण है - कि हम उसके नाम में प्रार्थना करें ! यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के सामर्थ्य के द्वारा, और उसके भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा, हम ऐसे सम्बन्ध में उठाए जा सकते हैं। एक बार जब हम उस अद्‌भुत स्थान पर होते हैं, जहाँ हम यीशु मसीह के द्वारा रखे जाते हैं, तो हम यीशु के नाम से, यानि उसके स्वभाव में, परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं। यह एक वरदान है जो हमें पवित्र आत्मा के द्वारा मिलता है, और यीशु ने कहा, "...यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।" यीशु मसीह का उत्तम चरित्र उसी के द्वारा कही गई बातों से परखा जाता है।

हाँ - परन्तु ...!

हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूँगा, पर ...।
लूका 9:61।

मान लें कि परमेश्वर आपसे कुछ ऐसा करने को कहता है जो आपकी व्यावहारिक बुद्धि के लिए एक महान परीक्षा है, और उसके बिलकुल विरुद्ध है, तो आप क्या करेंगे ? शारीरिक रूप से यदि आपको कोई काम करने की आदत पड़ जाती है, तो हर बार परीक्षा होने पर आप वही करेंगे, जब तक कि आप निरी दृढ़ता के दम से उस आदत को तोड़ नहीं देते। आत्मिक रीति से भी ऐसा ही होता है। आप बार-बार उसी बात पर आ पहुँचेंगे जो यीशु चाहता है, और हर बार परीक्षा के बिन्दु से लौट जाएँगे, जब तक कि आप यह दृढ़ निश्चय नहीं कर लेते कि आप अपने आप को सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर को समर्पित कर देंगे। फिर भी हममें यह कहने की प्रवृत्ति है कि, "हाँ, लेकिन - मान लो कि मैं इस मामले में परमेश्वर की आज्ञा मान लेता हूँ, तो अमुक बात का क्या होगा ?" या हम कहते हैं, "हाँ मैं परमेश्वर की आज्ञा मानूँगा, बशर्ते कि परमेश्वर मुझसे जो चाहता है, वह मेरी व्यावहारिक बुद्धि के विरुद्ध न हो, लेकिन मुझसे अन्धेरे में कदम लेने के लिए न कहना।"

जिन लोगों ने यीशु मसीह पर विश्वास किया है, उनमें वह उसी असयंमित, साहसप्रिय जोश की माँग करता है जो मनुष्य शारीरिक रूप से प्रदर्शित करता है। यदि किसी व्यक्ति को कभी भी कोई सार्थक काम करना है, तो ऐसे मौके आएँगे जब उसे हर चीज़ को दाँव पर लगाकर अन्धेरे में छलाँग लगानी होगी। आत्मिक क्षेत्र में, यीशु मसीह यह माँग करता है कि आप उन सब चीज़ों को दाँव पर लगा दें जिनपर आप अपनी व्यावहारिक बुद्धि के द्वारा विश्वास करते हैं, और विश्वास के द्वारा उसमें छलाँग लगाएँ जो परमेश्वर कहता है। एक बार जब आप आज्ञा मान लेंगे, तो तुरन्त पाएँगे कि जो वह कहता है, वह व्यावहारिक बुद्धि के बराबर ही विश्वसनीय है।

सामान्य बुद्धि की कसौटी पर यीशु मसीह की कही बातें पागलपन लग सकती हैं, लेकिन जब आप उन्हें विश्वास की परीक्षा के द्वारा परखेंगे, तो आपको जिन तथ्यों का पता चलेगा, वे आपकी आत्मा को इस विस्मयकारी सत्य से भर देंगे कि सचमुच ये परमेश्वर के वचन हैं। परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा करें, और जब वह आपको किसी नए साहसिक कार्य का मौका दिखाता है, तो उसे ज़रूर स्वीकार करें। संकट की स्थिति में हम बिल्कुल विधर्मियों की तरह हो जाते हैं - सारी भीड़ में मुश्किल से एक ही जन होगा जो अपने विश्वास को परमेश्वर के चरित्र के भरोसे रखने की हिम्मत दिखाएगा।

मई 31

परमेश्वर को पहले स्थान पर रखो

यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा ...क्योंकि वह आप ही जानता था
कि मनुष्य के मन में क्या है।
यूहन्ना 2:24-25।

परमेश्वर पर भरोसे को पहले स्थान पर रखो। हमारे प्रभु ने अपना भरोसा किसी व्यक्ति पर नहीं रखा। फिर भी उसने किसी पर सन्देह नहीं किया, किसी के प्रति कड़वाहट नहीं दिखाई, और कभी किसी के लिए आशा नहीं छोड़ी, क्योंकि उसने परमेश्वर पर अपने भरोसे को पहले स्थान पर रखा। उसने पूरी तरह से इस पर भरोसा किया कि परमेश्वर का अनुग्रह दूसरों के लिए क्या कर सकता है। यदि मैं मनुष्य में अपने भरोसे को पहले स्थान पर रखता हूँ, तो इसका अन्तिम परिणाम होगा सबके प्रति मेरी निराशा और मायूसी। मुझमें कड़ावाहट आ जाएगी क्योंकि मैंने यह माँग की है कि लोग वैसे बनें जैसा कोई व्यक्ति कभी नहीं बन सकता, यानि बिल्कुल सिद्ध और सही। अपने आप में या किसी और में परमेश्वर के अनुग्रह को छोड़ किसी और चीज़ पर कभी भरोसा न करें।

परमेश्वर की इच्छा को पहले स्थान पर रखें। "देख, मैं आ गया हूँ, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूँ" (इब्रानियों 10:9)।

एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता उसके प्रति होती है जिसे वह एक ज़रूरत के रूप में देखता है - हमारे प्रभु की आज्ञाकारिता उसके पिता की इच्छा के प्रति थी। आज की पुकार है, "हमें काम पर लगना चाहिए ! अन्यजातियाँ परमेश्वर के बिना नष्ट हो रही हैं। हमें जाकर उन्हें उसके बारे में बताना चाहिए।" लेकिन पहले हमें यह पक्का कर लेना चाहिए कि व्यक्तिगत रूप से हममें परमेश्वर की "ज़रूरतें" और इच्छा पूरी हो रही है या नहीं। यीशु ने कहा, "...जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ ... तब तक ठहरे रहो" (लूका 24:49)। हमारे मसीही प्रशिक्षण का उद्देश्य है हमें परमेश्वर की "ज़रूरतों" और उसकी इच्छा के प्रति सही सम्बन्ध में लाना। एक बार जब परमेश्वर की "ज़रूरतें" हममें पूरी हो जाएँगी, तो वह दरवाज़ा खोलेगा ताकि हम उसकी इच्छा पूरी कर सकें और कहीं और उसकी "ज़रूरतें" पूरी कर सकें।

परमेश्वर के पुत्र को पहले स्थान पर रखो। "जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है" (मत्ती 18:5)।

परमेश्वर अपने आप को मेरे सुपुर्द करते हुए, एक शिशु के रूप में आया। वह मुझसे यह प्रत्याशा करता है कि मेरा व्यक्तिगत जीवन एक "बैतलहम" हो। क्या मैं अपने अन्दर परमेश्वर के पुत्र के वास करने के द्वारा अपने जीवन को धीरे-धीरे बदलने दे रहा हूँ ? परमेश्वर का अन्तिम इरादा यह है कि उसका पुत्र मुझमें दिखाई दे।

जून 1

विस्मयकारी प्रश्न

तब उसने मुझसे पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या ये हड्डियाँ जी सकती हैं ?
यहेजकेल 37:3 ।

क्या एक पापी को एक पवित्र जन में बदला जा सकता है ? क्या एक बिगड़ा हुआ जीवन सही किया जा सकता है ? इसका एक ही उत्तर उपयुक्त है - "हे परमेश्वर यहोवा, तू ही जानता है" (37:3) । कभी अपनी धार्मिक व्यावहारिक बुद्धि के बल पर यह कहते हुए आगे न बढ़ें कि, "हाँ, क्यों नहीं, थोड़ा और बाइबल पढ़ने, भक्ति में समय बिताने, और प्रार्थना करने से मैं जान सकता हूँ कि यह कैसे हो सकता है ।"

परमेश्वर पर भरोसा रखने से कहीं ज़्यादा आसान होता है कुछ काम *करना* । हम सक्रियता देखते हैं और भगदड़ को प्रेरणा समझ बैठते हैं । इसी लिए हमें परमेश्वर के *साथ* काम करनेवाले सहकर्मी कम दिखाई देते हैं, जब कि बहुतेरे लोग उसके *लिए* काम करते हैं । हम परमेश्वर पर विश्वास करने से ज़्यादा पसन्द करते हैं उसके लिए काम करना । क्या मैं सचमुच विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर मुझमें वह काम करेगा जो मैं नहीं कर सकता ? जो निराशा मैं दूसरों के लिए महसूस करता हूँ, उसका कारण यह है कि मैंने यह कभी नहीं जाना कि परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया है । क्या मेरा व्यक्तिगत अनुभव परमेश्वर के सामर्थ्य और बल का इतना अद्भुत एहसास है कि मैं दूसरों के लिए कभी निराशा नहीं महसूस कर सकता ? क्या मुझ में कोई भी आत्मिक काम हुआ है ? मेरे जीवन में घबराहट के कारण जितनी सक्रियता पाई जाती है, वह मेरे व्यक्तिगत आत्मिक अनुभव की कमी के बराबर है ।

"हे मेरी प्रजा, मैं तुम्हारी कबरें खोलूँगा..." (37:12) । जब परमेश्वर आपको दिखाना चाहता है कि उससे अलग होते हुए मानव जीवन क्या है, तो वह आपको यह आपके भीतर दिखाता है । यदि परमेश्वर के आत्मा ने कभी भी यह दर्शन दिया है कि परमेश्वर के अनुग्रह के बिना आप क्या हैं (और वह ऐसा तब ही करेगा जब उसका आत्मा आपके अन्दर काम कर रहा हो) तो आप जानते हैं कि वास्तव में कोई अपराधी उतना बुरा नहीं है जितने, उसके अनुग्रह के बिना, आप हो सकते हैं । मेरी "कब्र" परमेश्वर के द्वारा खोली जा चुकी है और "मैं जानता हूँ, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती " (रोमियों 7:18) । परमेश्वर का आत्मा उसके बालकों पर लगातार प्रकट करता रहता है कि परमेश्वर के अनुग्रह के बिना मानव स्वभाव क्या है ।

क्या आपके दिमाग़ पर कोई विचार छाया हुआ है ?

वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है ?
ं भजन संहिता 25:12 ।

क्या आपके दिमाग़ पर कोई विचार छाया हुआ है ? शायद आप कहेंगे,''नहीं, कोई भी नहीं,'' लेकिन हम सब के दिमाग़ पर कुछ न कुछ तो ज़रूर छाया होता है - या तो हम खुद, या, यदि हम मसीही हैं, तो मसीही जीवन का हमारा अपना अनुभव । लेकिन भजनकार कहता है कि हमारे दिंमाग़ पर सिर्फ़ परमेश्वर को छाया रहना चाहिए । मसीही जीवन की सदा बनी रहनेवाली जागरूकता खुद परमेश्वर को होना चाहिए, केवल उसके बारे में विचारों को नहीं । हमारे जीवन के पूरे अस्तित्व पर, अन्दर और बाहर, परमेश्वर की उपस्थिति छाई रहनी चाहिए । एक बच्चे की जागरूकता उसकी माँ में इतनी मगन रहती है, कि हालाँकि वह सजग रूप से उसके बारे में नहीं सोचता, जैसे ही कोई समस्या खड़ी हो जाती है, उसका सदा बना रहनेवाला सम्बन्ध उसकी माँ के साथ होता है। इसी तरह से, हमें परमेश्वर में ''जीवित रहना, और चलते-फिरते, और स्थिर रहना चाहिए'' (प्रेरितों के काम 17:28), हर चीज़ को उसके सम्बन्ध में देखना चाहिए, क्योंकि उसके प्रति हमारी सदा बनी रहनेवाली जागरूकता हमारे जीवन में लगातार आगे ही रहती है ।

यदि हमारे दिमाग़ पर परमेश्वर छाया रहे, तो कोई और चीज़ हमारे जीवन में प्रवेश नहीं कर सकती - न तो परेशानियाँ, और न ही कष्ट या चिन्ताएँ । और अब हम समझते हैं कि हमारे प्रभु ने चिन्ता करने के पाप पर इतना ज़ोर क्यों दिया था । जब परमेश्वर हमें चारों ओर से घेरे हुए है, तो हम इतने अविश्वासी होने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं ? हमारे मन पर परमेश्वर के छाए रहने का अर्थ यह है कि हमारे पास शत्रु के हमलों के बचाव की एक प्रभावकारी आड़ है ।

''वह कुशल से टिका रहेगा ...'' (भजन संहिता 25:13) । यदि हमारा जीवन ''मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है'' (कुलुस्सियों 3:3), तो परमेश्वर हमें ''कुशल से टिके रहने'' की स्थिति में रखेगा, कष्टों, ग़लतफ़हमियों, और निन्दा के बीच में भी हमें चैन देगा । हम अपने आपको परमेश्वर के इस साथ के आश्चर्यजनक, प्रकट किए गए सत्य से वंचित रखते हैं । ''परमेश्वर हमारा शरणस्थान...है'' (भजन संहिता 46:1) । उसके सुरक्षित शरणस्थान को तोड़कर कोई अन्दर नहीं आ सकता ।

"यहोवा का भेद"

यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उस से डरते हैं।
भजन संहिता 25:14।

एक मित्र का लक्षण क्या होता है ? क्या यह कि वह आपको अपने छिपे हुए दुःख बताता है ? नहीं, बल्कि उसका लक्षण यह होता है कि वह आपको अपनी छिपी हुई आनन्द देनेवाली बातें बताता है। बहुत से लोग आपको अपने छिपे हुए दुःख बताएँगे, लकिन घनिष्ठता का अन्तिम निशान यह होगा कि वे आपके साथ अपनी छिपी हुई आनन्द देनेवाली बातें बाँटेंगे। क्या हमने कभी परमेश्वर को मौका दिया है कि वह हमें अपने आनन्द की बातें बताए ? या हम लगातार परमेश्वर को अपनी छिपी हुई बातें बताते रहते हैं, और उसे हमसे बात करने का मौका ही नहीं देते ? अपने मसीही जीवन के शुरू में हम परमेश्वर से माँगते रहते हैं। लेकिन फिर हमें पता चलता है कि परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ एक घनिष्ठ सम्बन्ध में बन्ध जाएँ - ताकि वह हमें अपने उद्देश्यों के सम्पर्क में ले आए। क्या हम यीशु मसीह की इस प्रार्थना के विचार से कि "तेरी इच्छा पूरी हो" (मत्ती 6:10) इतनी घनिष्ठता से एक हैं कि हम परमेश्वर के रहस्यों को पकड़ पाते हैं ? हमारे लिए परमेश्वर को इतना प्रिय बनाने वाली हमें दी गईं परमेश्वर की बड़ी-बड़ी आशीषें नहीं, बल्कि छोटी-छोटी बातें हैं, क्योंकि ये हमें उसकी आश्चर्यजनक घनिष्ठता दिखाती हैं - वह हमारे व्यक्तिगत जीवन की छोटी से छोटी बात से परिचित है।

"यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस से वह प्रसन्न होता है, चलाएगा" (भजन संहिता 25:12)। शुरू-शुरू में हम जानना चाहते हैं कि परमेश्वर हमें मार्ग दिखा रहा है। लेकिन जैसे-जैसे हम आत्मिक रूप से बढ़ते जाते हैं, हम परमेश्वर के प्रति इतना जागरूक होकर जीते हैं कि हमें यह पूछने की ज़रूरत ही नहीं होती कि उसकी इच्छा क्या है, क्योंकि कोई और रास्ता चुनने का विचार हमारे मन में आएगा ही नहीं। यदि हमारा उद्धार और पवित्रीकरण हो गया है, तो परमेश्वर प्रतिदिन के चुनावों के द्वारा हमारा मार्गदर्शन करता है। यदि हम वह चुनने वाले हैं जो वह नहीं चाहता, तो वह हमारे मन में एक सन्देह या रोक का एहसास देगा। जब भी सन्देह हो, तुरन्त रुक जाएँ। यह कहते हुए कि, "पता नहीं, मुझे ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए," कभी तर्क-वितर्क न करें। हम जो चुनाव करते हैं, उसमें परमेश्वर हमें आदेश देता है, यानि, वह वास्तव में हमारी व्यावहारिक बुद्धि का मार्गदर्शन करता है। और जब हम अपने आप को उसकी शिक्षाओं और मार्गदर्शन के प्रति सौंप देते हैं, तो हम बार-बार यह पूछकर कि, "हे प्रभु, अब तेरी इच्छा क्या है ?" उसके आत्मा के लिए अब रुकावट नहीं बनते।

कभी न त्यागनेवाला परमेश्वर

उस ने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।
इब्रानियों 13:5।

मेरे विचार कौन सी दिशा में जाते हैं ? क्या मैं उसकी ओर जाता हूँ जो परमेश्वर कहता है, या अपने निजी भय की ओर ? क्या मैं परमेश्वर की कही बातों को सिर्फ़ दोहरा रहा हूँ, या क्या मैं सचमुच सीख रहा हूँ कि उसकी बात सुनूँ और यह सुनने के बाद कि वह क्या कह रहा है, उसका प्रत्युत्तर दूँ ? "क्योंकि उस ने आप ही कहा है, 'मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।' इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं : 'कि प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ?" (13:5-6)।

"मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा.." - किसी भी कारण नहीं; मेरे पाप, स्वार्थ, ढिठाई, या ज़िद्द के कारण भी नहीं। क्या मैंने सचमुच परमेश्वर को मौका दिया है कि वह मुझसे कहे कि वह मुझे कभी नहीं छोड़ेगा ? यदि मैंने परमेश्वर के इस आश्वासन को सचमुच नहीं सुना है, तो मुझे फिर से सुनना चाहिए।

"मैं तुझे कभी न ... त्यागूँगा। कभी-कभी जीवन की कठिनाई नहीं, बल्कि उसकी नीरसता मुझे यह सोचने पर मजबूर करती है कि परमेश्वर मुझे त्याग देगा। जब विजय पाने के लिए कोई बड़ी कठिनाई नहीं होती, परमेश्वर से कोई दर्शन नहीं होता, कोई अद्‌भुत या सुन्दर बात नहीं होती - सिर्फ़ जीवन के रोज़मर्रा कामकाज होते हैं - तो क्या मैं इनके बीच में भी परमेश्वर के आश्वासन को सुनता हूँ ?

हमारी यह धारणा है कि परमेश्वर कोई असाधारण काम करने जा रहा है - कि वह हमें भविष्य में होनेवाले किसी विशेष काम के लिए तैयार और लैस कर रहा है। लेकिन जैसे-जैसे हम उसके अनुग्रह में बढ़ते जाते हैं, हम देखते हैं कि परमेश्वर अभी और यहीं, इसी घड़ी, अपने आप की महिमा कर रहा है। यदि परमेश्वर का आश्वासन हमारे पीछे रहता है, तो सबसे अधिक आश्चर्यजनक सामर्थ्य हमारा हो जाता है, और हम जीवन के मामूली दिनों और ढंगों में उसकी महिमा करते हुए गीत गाना सीख जाते हैं।

जून 5

परमेश्वर का आश्वासन

उस ने आप ही कहा है ...इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं ..."
इब्रानियों 13:5-6 ।

मेरे आश्वासन को उस आश्वासन पर बना होना चाहिए जो परमेश्वर ने मुझे दिया है । परमेश्वर कहता है, "मैं तुझे कभी न छोडूँगा, इसलिए मैं " बेधड़क होकर कहता हूँ कि प्रभु मेरा सहायक है; मैं न डरूँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ?" (13:5-6) । दूसरे शब्दों में, मैं अपने डर को अपने मन पर छाने नहीं दूँगा । इसका अर्थ यह नहीं कि मैं डरने की परीक्षा में नहीं पडूँगा, बल्कि यह कि मैं परमेश्वर के आश्वासन के शब्दों को याद रखूँगा । मैं साहस से भरा रहूँगा, एक ऐसे बालक की तरह जो अपने पिता के द्वारा ठहराए गए मापदण्ड तक पहुँचने के लिए परिश्रम करता है । जब संकट की आशंकाएँ विचारों में आ जाती हैं, तो बहुत से लोगों का विश्वास डगमगाने लगता है, और वे परमेश्वर के आश्वासन का अर्थ भूल जाते हैं - वे एक गहरी आत्मिक साँस लेना भूल जाते हैं । अपने जीवन से डर को हटाने का एकमात्र तरीका है परमेश्वर के द्वारा हमें दिए गए आश्वासन को सुनना ।

आपको किस चीज़ का डर है ? वह जो भी हो, आप उसके बारे में कायर नहीं हैं - आपने उसका सामना करने का संकल्प कर लिया है, फिर भी आपको डर का एहसास होता है । जब ऐसा लगता है कि आपकी सहायता करनेवाला कोई नहीं, तो अपने आप से कहें, "लेकिन इसी घड़ी, मेरी वर्तमान परिस्थिति में भी, प्रभु मेरा सहायक है ।" क्या आप बोलने से पहले परमेश्वर की सुनना सीख रहे हैं, या क्या आप बातें बोल रहे हैं और फिर परमेश्वर के वचन को अपने द्वारा कही गई बात के अनुकूल बनाने की कोशिश कर रहे हैं ? पिता परमेश्वर के आश्वासन को कसकर पकड़ लें और फिर साहस से कहें, "मैं न डरूँगा ।" इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कौन सी बुराई या ग़लत बात हमारे रास्ते में आती है, क्योंकि "उस ने आप ही कहा है, 'मैं तुझे कभी न छोडूँगा ...।' "

मनुष्य की कमज़ोरी एक और चीज़ है जो परमेश्वर के आश्वासन के शब्दों और हमारे अपने शब्दों और विचारों के बीच आ जाती है । जब हमें यह एहसास होता है कि कठिनाइयों का सामना करने में हम कितने निर्बल हैं, तो कठिनाइयाँ दानवों की तरह बन जाती हैं, हम टिड्डों की तरह बन जाते हैं, और लगता है कि परमेश्वर है ही नहीं । लेकिन हमें दिए गए परमेश्वर के आश्वासन को याद रखें, "मैं तुझे कभी न ...त्यागूँगा ।" क्या हमने परमेश्वर के मूलस्वर को सुनने के बाद गीत गाना सीख लिया है ? क्या हम लगातार इतने साहस से भरे रहते हैं कि हम कह सकें, "प्रभु मेरा सहायक है," या हम अपने आप को डर के हवाले कर रहे हैं ?

जून 6

"जो काम करने का प्रभाव परमेश्वर तुम्हारे मन में डालता है, उसे पूरा करते रहो"

...अपने उद्धार का कार्य पूरा करते रहो...क्योकि परमेश्वर ही है
जिसने ...तुम्हारे मन में...करने का प्रभाव डाला है।
फिलिप्पियों 2:12-13।

आपकी इच्छा परमेश्वर के साथ सहमत है, लेकिन आपकी देह में एक ऐसा स्वभाव है जो आपको वह काम करने के लिए असमर्थ बना देता है जो आप जानते हैं आपको करना चाहिए। जब प्रभु शुरू-शुरू में हमारे विवेक के सम्पर्क में आता है, तो पहला काम जो हमारा विवेक करता है, वह होता है हमारी इच्छा को जगाना, और हमारी इच्छा हमेशा परमेश्वर से सहमत होती है। फिर भी आप कहते है, "लेकिन मुझे नहीं पता कि मेरी इच्छा परमेश्वर के साथ सहमत है या नहीं।" यीशु की ओर ताकते रहें और आप पाएँगे कि आपकी इच्छा और आपका विवेक हर बार उसके साथ सहमत होंगे। जो आपसे यह कहलवाता है कि "मैं आज्ञा नहीं मानूँगा" वह आपकी इच्छा से कम गहरा और कम भेदनेवाला होता है। ये भ्रष्टता और ज़िद्दीपन हैं, और ये कभी परमेश्वर के साथ सहमत नहीं होते। एक व्यक्ति में सबसे गहरी बात उसकी इच्छा होती है, उसका पाप नहीं।

परमेश्वर के द्वारा मनुष्य की सृष्टि में एक अत्यावश्यक तत्व है इच्छा - पाप तो एक विकृत स्वभाव है जिसने लोगों के अन्दर प्रवेश किया। जिस व्यक्ति का नए सिरे से जन्म हुआ है, उसके अन्दर इच्छा का स्रोत सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। "क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।" अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करते हुए और बड़ी सावधानी से, आपको वह कार्य पूरा करना है जिसे करने का प्रभाव परमेश्वर डालता है - "अपने निजी उद्धार" को कमाने या प्राप्त करने के लिए काम नहीं करना है, बल्कि उद्धार के कार्य को पूरा करना है ताकि आप एक ऐसे जीवन का सबूत प्रदर्शित कर सकें जो प्रभु के सम्पूर्ण और सिद्ध छुटकारे पर एक दृढ़निश्चय वाले, अटल विश्वास पर टिका हुआ है। जब आप ऐसा करेंगे, तब आप परमेश्वर का विरोध करनेवाली इच्छा को खड़ा नहीं करेंगे - परमेश्वर की इच्छा आपकी इच्छा *है*। आपके स्वाभाविक चुनाव परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होंगे, और ऐसा जीवन जीना साँस लेने की तरह स्वाभाविक होगा। ज़िद्दीपन मन्दबुद्धि का एक अवरोध होता है, जो ज्ञान के प्रवाह को रोक देता है। ज़िद्दीपन के इस अवरोध को हटाने के लिए एक ही चारा है, और वह है इसे "डाइनामाइट" से उड़ा देना, और यह "डाइनामाइट" है पवित्र आत्मा की आज्ञा मानना।

क्या मैं विश्वास करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर मेरी इच्छा का स्रोत है ? परमेश्वर मुझसे केवल प्रत्याशा ही नहीं करता कि मैं उसकी इच्छा पूरी करूँ, बल्कि वह इसे पूरा करने के लिए मुझमें है।

सामर्थ्य का सबसे महान स्रोत

जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा ।
यूहन्ना 14:13 ।

क्या मैं अपने जीवन के गुप्त, एकान्त स्थानों की गहराइयों में विनती की सेवकाई को पूरा कर रहा हूँ ? सच्ची विनती में धोखा खाने या घमण्ड दिखाने का कोई फन्दा या ख़तरा नहीं । यह एक गुप्त सेवकाई है जो ऐसा फल लाती है जिससे परमेश्वर पिता की महिमा होती है । क्या मैं अपने आत्मिक जीवन को बरबाद होने दे रहा हूँ, या क्या मेरा पूरा ध्यान एक ही बात पर है और मैं सब बातों को एक केन्द्रबिन्दु पर ला रहा हूँ , यानि मेरे प्रभु का प्रायश्चित ? क्या यीशु मसीह मेरे जीवन की हर रुचि में और अधिक हावी होता जा रहा है ? यदि मेरे जीवन का केन्द्रबिन्दु, या उसका सबसे सामर्थी प्रभाव प्रभु का प्रायश्चित है, तो मेरे जीवन का हर पहलू उसके लिए फल लाएगा ।

लेकिन मुझे यह समझने के लिए समय निकालना होगा कि सामर्थ्य का यह केन्द्रबिन्दु क्या है । क्या मैं इसपर ध्यान देने के लिए हर घण्टे में से एक मिनट देने के लिए तैयार हूँ ? "यदि तुम मुझ में बने रहो ..." यानि यदि तुम उस केन्द्रबिन्दु से काम करना, सोचना, और कार्यवाही करना जारी रखो, तो "जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा" (यूहन्ना 15:7) । क्या मैं बना रह रहा हूँ ? क्या मैं बना रहने के लिए समय निकाल रहा हूँ ? मेरे जीवन में सामर्थ्य का सबसे महान स्रोत क्या है ? क्या वह मेरा काम, सेवा, और दूसरों के लिए बलिदान है, या वह परमेश्वर के लिए कार्य करने के लिए मेरा घोर प्रयास है ? इसे इनमें से कोई भी नहीं होना चाहिए - जिस बात को मेरे जीवन में सबसे महान सामर्थ्य लाना चाहिए, वह है प्रभु का प्रायश्चित । हम जिस बात में सबसे ज़्यादा समय लगाते हैं, वह हमें सबसे ज़्यादा नहीं ढालता । सबसे ज़्यादा ढालनेवाली चीज़ वह होती है जो हम पर सबसे ज़्यादा प्रभाव रखती है । हमें यह दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि हम अपनी इच्छाओं और रुचियों को सीमित रखें और उन्हें मसीह के क्रूस के द्वारा छुटकारे पर केन्द्रित करें ।

"जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा ..." जो शिष्य यीशु में बना रहता है, वह परमेश्वर की इच्छा है, और जो उसके स्वतन्त्र चुनाव जान पड़ते हैं, वास्तव में वे परमेश्वर के पूर्वनिर्धारित निर्णय होते हैं । क्या यह रहस्यमय है ? क्या यह तर्क के विपरीत या बिलकुल बेतुका लगता है । हाँ, लेकिन परमेश्वर के पवित्र जन के लिए यह कैसा शानदर सत्य है !

जून 8

आगे क्या करना है ?

तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।
यूहन्ना 13:17।

दूसरों से ज़्यादा जानने का संकल्प करो। यदि आप खुद उस डोर को नहीं काटेंगे जो आपको घाट से बाँधे हुए है, तो उसे काटने के लिए परमेश्वर को एक तूफ़ान भेजना पड़ेगा ताकि वह आपको समुद्र में भेज सके। परमेश्वर के उद्देश्य के बढ़ते हुए ज्वार-भाटे पर निकलते हुए अपने जीवन की हर चीज़ को परमेश्वर के ऊपर तैरने दें, और आपकी आँखें खुल जाएँगी। यदि आप यीशु पर विश्वास करते हैं, तो आपको अपना सारा समय बन्दरगाह के अन्दर के शान्त जल में नहीं बिताना चाहिए, जो आनन्द से तो भरा होता है लेकिन हमेशा घाट से बँधा रहता है। आपको बन्दरगाह से बाहर निकलकर परमेश्वर की महान गहराइयों में आना है, और बातों को अपने लिए जानना शुरू करना है - यानि आत्मिक रूप से समझना शुरू करना है।

जब आप जानते हैं कि आपको कुछ करना है और आप वह करते हैं, तो आप तुरन्त और जान जाते हैं। परखें कि आप कहाँ सुस्त हो गए हैं, आत्मिक रूप से आपकी रुचि कब कम होनी शुरू हुई थी, और आप पाएँगे कि यह तब हुआ था जब आपने वह काम नहीं किया जो आपको करना चाहिए था। आपने उसे इसलिए नहीं किया था क्योंकि आपको उसे तुरन्त करने की ज़रूरत नहीं महसूस हई थी। लेकिन अब आपके पास अन्तर्दृष्टि नहीं रही, और संकट के समय में आप आत्मिक रूप से संयमित रहने के बजाय विचलित हो जाते हैं। सीखना और जानना जारी रखने से इनकार करना बड़ा ख़तरनाक होता है।

आज्ञापालन की नक़ल मन की वह स्थिति होती है जिसमें आप आत्म-त्याग करने के मौके खुद पैदा करते हैं, और आपके जोश और उत्साह को अन्तर्दृष्टि समझ लिया जाता है। आत्म-त्याग करना रोमियों 12:1-2 में लिखे अपने आत्मिक पूर्वनिर्धारित उद्देश्य को पूरा करने से कहीं ज़्यादा आसान होता है। परमेश्वर की इच्छा को जानने के द्वारा अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करना आत्म-त्याग के बड़े-बड़े काम करने से कहीं ज़्यादा बेहतर होता है। "सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से...उत्तम है" (1 शमूएल 15:22)। जब परमेश्वर चाहता है कि आप वह बनें जो आप पहले कभी नहीं थे, तो पहले जैसी स्थिति में वापस जाने से सावधान रहें। "यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह ...जान जाएगा" (यूहन्ना 7:17)।

जून 9

फिर इसके आगे क्या करना है ?

जो कोई माँगता है, उसे मिलता है।
लूका 11:10।

यदि आपको नहीं मिला है, तो माँगें। माँगने से और कठिन कुछ नहीं होता। हमें कुछ विशेष चीज़ों की लालसा और अभिलाषा होगी, और उनके पूरे न होने के फलस्वरूप हमें कष्ट भी होगा, लेकिन जब तक हम निराशा की सीमा तक नहीं पहुँच जाते, हम *माँगते* नहीं। आत्मिक रूप से वास्तविक न होने का एहसास हमसे मँगवाता है। क्या आपने कभी अपनी सम्पूर्ण अपर्याप्तता या ग़रीबी की गहराइयों में होते हुए माँगा है ? "यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से माँगे ..." (याकूब 1:5), लेकिन माँगने से पहले पक्का कर लें कि आपको सचमुच बुद्धि की घटी है। आप अपने आप को आत्मिक वास्तविकता के स्थान पर जब चाहें तब नहीं ला सकते। जब आपको यह एहसास हो जाता है कि आप आत्मिक रूप से वास्तविक नहीं हैं, तो सबसे अच्छा काम यह होगा कि आप अपनी विनती को यीशु मसीह की प्रतिज्ञा पर आधारित करते हुए, परमेश्वर से पवित्र आत्मा माँगें। पवित्र आत्मा ही वह व्यक्ति है जो यीशु के द्वारा किए गए सारे कामों को आपके जीवन में वास्तविक बना सकता है।

"जो कोई माँगता है, उसे मिलता है ...।" इसका अर्थ यह नहीं कि यदि आप नहीं माँगेंगे, तो आपको नहीं *मिलेगा,* बल्कि इसका अर्थ यह है कि जब तक आप माँगने की स्थिति पर नहीं पहुँचेंगे, आप परमेश्वर से *पाएँगे* नहीं (मत्ती 5:45 देखें)। पाने के योग्य होने का अर्थ यह है कि आपको परमेश्वर की सन्तान के सम्बन्ध में आना होगा, और फिर आप मानसिक, नैतिक, और आत्मिक समझ से यह जान सकेंगे और इस बात की क़दर कर सकेंगे कि ये चीज़ें परमेश्वर से आती हैं।

"यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो..." यदि आपको घटी का एहसास होता है, तो यह इसलिए है क्योंकि आप आत्मिक वास्तविकता के सम्पर्क में आ गए हैं - अब दोबारा आँखों पर तर्क की पट्टी न बाँधें। लोग कहते हैं, "हमें सरल सुसमाचार सुनाओ: यह न कहो कि हमें पवित्र बनना है क्योंकि यह कंगाली का एहसास दिलाता है, और कंगाल होने का एहसास किसी को नहीं पसन्द।" माँगने का अर्थ वास्तव में "भीख माँगना" है। कुछ लोग इतने ग़रीब होते हैं कि उन्हें अपनी ग़रीबी में रुचि होती है, और हम में से कुछ लोग आत्मिक रूप से इतने ग़रीब हैं कि अपनी रुचि दिखाएँ। यदि हम अपने मन में कोई विशेष परिणाम रखते हुए माँगेंगे, तो कभी नहीं पाएँगे, क्योंकि हम अपनी लालसा के कारण माँग रहे हैं, अपनी ग़रीबी के कारण नहीं। एक भिखारी केवल अपनी ग़रीबी की निराशाजनक और दुःखदायी स्थिति के कारण माँगता है। उसे भीख माँगने से शर्म नहीं आती - धन्य हैं वे, जो मन के भिखारी हैं (मत्ती 5:3 देखें)।

जून 10

और फिर उसके बाद क्या करना है ?

ढूँढों, तो तुम पाओगे।
लूका 11:9।

यदि आप ने पाया नहीं है, तो ढूँढें। "तुम माँगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से माँगते हो ..." (याकूब 4:3)। यदि आप परमेश्वर के बजाय जीवन से चीज़ें माँगते हैं, तो "बुरी इच्छा से माँगते हैं"; यानि आप आत्म-सन्तुष्टि की अभिलाषा से माँगते हैं। आप अपनी सन्तुष्टि जितनी ज़्यादा करेंगे, परमेश्वर की खोज उतनी ही कम करेंगे। " ढूँढों, तो तुम पाओगे ...।" काम में लग जाएँ - अपने सारे ध्यान और सारी रुचि को इस एक काम में लगा दें। क्या आपने कभी अपने पूरे हृदय से परमेश्वर की खोज की है, या भावनात्मक रूप से किसी दु:खदायी अनुभव के बाद सिर्फ़ एक कमज़ोर सी आवाज़ से पुकारा है ? "...ढूँढो (इस एक चीज़ पर ध्यान केन्द्रित करो) और तुम पाओगे ...।"

"अहो, सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ ..." (यशायाह 55:1)। क्या आप प्यासे हैं, या आत्मसन्तुष्ट और उदासीन हैं - अपने अनुभव से इतने सन्तुष्ट कि आपको परमेश्वर का और कुछ नहीं चाहिए ? अनुभव तो केवल एक द्वार होता है, अन्तिम लक्ष्य नहीं। अपने विश्वास को अनुभव पर बनाने से सावधान रहें, नहीं तो आपकेजीवन में सच्चाई नहीं झलकेगी, बल्कि उसमें सिर्फ़ एक आलोचनात्मक आत्मा की झलक दिखाई देगी। याद रखें, आपने जो पाया है, उसे किसी और को कभी नहीं दे सकते, लेकिन आप उसके मन में उस चीज़ को पाने की उमंग ज़रूर जगा सकते हैं।

"...खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा" (लूका 11:9)। "परमेश्वर के निकट आओ ..." (याकूब 4:8)। खटखटाइए - दरवाज़ा बन्द है, और जब आप खटखटाते हैं, तो आपके दिल की धड़कनें बढ़ जाती हैं। "अपने हाथ शुद्ध करो ..." (4:8)। ज़रा और ज़ोर से खटखटाइए - आपको एहसास होता है कि आप अशुद्ध हैं। "अपने हृदय को पवित्र करो ..." (4:8)। अब यह और भी व्यक्तिगत बनता जा रहा है - अब आप निराश और गम्भीर हो गए हैं - आप कुछ भी करने को तैयार हैं। "दुखी होओ ..." (4:9)। क्या आप अपने भीतरी जीवन की हालत के लिए शोक प्रकट करते हुए परमेश्वर के सामने कभी दु:खी हुए हैं ? अब कोई आत्मदया नहीं बची है, केवल एक हृदयविदारक कठिनाई और आश्चर्य जो यह देखने से आता है कि वास्तव में आप किस तरह के व्यक्ति हैं। "दीन बनो ..." (4:10)। परमेश्वर के द्वार पर खटखटाना एक दीन बनानेवाला अनुभव होता है - आपको क्रूस पर चढ़ाए गए चोर के साथ खटखटाना पड़ता है। "जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा" (लूका 11:10)।

वहाँ पहुँचना

...मेरे पास आओ ...।
मत्ती 11:28।

जहाँ पाप और दुःख खत्म हो जाते हैं, और पवित्र जन का गीत शुरू हो जाता है। क्या मैं सचमुच वहाँ पहुँचना चाहता हूँ ? मैं इसी घड़ी वहाँ पहुँच सकता हूँ। जीवन में जो प्रश्न सचमुच माइने रखते हैं, वे थोड़े से ही हैं, और उन सब का उत्तर इन शब्दों से मिलता है - "मेरे पास आओ।" हमारे प्रभु के शब्द ये नहीं हैं कि "यह करो, या यह नहीं करो," बल्कि ये हैं कि "मेरे पास आओ।" यदि मैं केवल यीशु के पास आ जाऊँगा, तो मेरा असली जीवन मेरी असली अभिलाषाओं के तालमेल में आ जाएगा। मैं सचमुच पाप करना बन्द कर दूँगा, और पाऊँगा कि प्रभु का गीत मेरे जीवन में शुरू हो रहा है।

क्या आप कभी यीशु के पास आए हैं ? अपने हृदय के ज़िद्दीपन को देखें। आप बालकों के समान एक सरल से काम - यानि "मेरे पास आओ" - को छोड़ और कोई भी काम करना ज़्यादा पसन्द करेंगे। यदि आप सचमुच पाप करना बन्द करना चाहते हैं, तो आपको यीशु के पास आना होगा।

यीशु मसीह आपकी असलियत का पता चलाने के लिए अपने आप को परीक्षा बनाता है। उसने *आओ* शब्द का इस्तेमाल किया। आपके जीवन की सबसे अप्रत्याशित घड़ियों में प्रभु की धीमी सी आवाज़ आती है - "मेरे पास आओ," और आप तुरन्त उसकी ओर खिंच जाते हैं। यीशु के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क सब कुछ बदल देता है। उसके पास आने की, और जो वह कहता है, उसके प्रतिबद्ध होने की "मूर्खता" करें। उसके पास आने के लिए जिस मनोवृत्ति की ज़रूरत होती है, वह ऐसी मनोवृत्ति है जहाँ आपकी इच्छा ने सब कुछ त्याग देने का और समझ-बूझकर सब कुछ उसे समर्पित कर देने का संकल्प कर लिया है।

"...मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" - यानि, "मैं तुम्हे सम्भाले रखूँगा, जिससे तुम दृढ़ खड़े रह सकोगे।" वह यह नहीं कह रहा है कि "मैं तुम्हें बिस्तर में लेटाऊँगा, तुम्हारा हाथ थामूँगा, और लोरी सुनाकर तुम्हें सुलाऊँगा।" लेकिन, वह ऐसे कह रहा है कि, "मैं तुम्हें बिस्तर से - तुम्हारी बेरुखी और थकित और जीवित होते हुए भी अधमरे होने की स्थिति से उठाऊँगा। मैं तुम्हारे अन्दर जीवन की आत्मा फैला दूँगा, और तुम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सक्रियता की सिद्धता के द्वारा सम्भाले जाओगे।" फिर भी हम इतने दुर्बल और दयनीय बन जाते हैं और प्रभु की इच्छा को "सहने" की बात करते हैं। इसमें परमेश्वर के पुत्र का सामर्थ्य और शानदार जीवन्तता कहाँ है ?

जून 12

वहाँ पहुँचना

उन्होंने उस से कहा, हे रब्बी...तू कहाँ रहता है ? उस ने उन से कहा, चलो, तो देख लोगे।
यूहन्ना 1:38-39।

जहाँ हमारा स्वार्थ सोता है और असली रुचि जागती है। "उस दिन (वे) उसी के साथ रहे...।" हम में से कुछ हैं जो सिर्फ़ इतना ही करेंगे। हम थोड़ी देर के लिए उसके साथ रहेंगे, और फिर जीवन की अपनी ही वास्तविकताओं के प्रति जागेंगे। हमारा स्वार्थ उठ जाता है और उसके साथ रहने का समय बीत जाता है। फिर भी जीवन में ऐसी कोई परिस्थिति नहीं जिसमें हम यीशु में नहीं बने रह सकते।

"तू...शमौन है, तू केफा... कहलाएगा" (1:42)। परमेश्वर हमारा नया नाम हमारे जीवन के सिर्फ़ उन स्थानों पर लिखता है जहाँ उसने हमारे घमण्ड, आत्म-निर्भरता, और स्वार्थ को मिटा दिया है। हम में से कुछ लोगों का नया नाम, आत्मिक खसरे की तरह, कुछ चित्तियों में लिखा होता है। और अपने जीवन के इन क्षेत्रों में हम ठीक लगते हैं। जब हम अपनी सबसे अच्छी आत्मिक मनोदशा में होते हैं, तो लगता है जैसे कि हम सबसे ऊँचे दर्जे के पवित्र लोग हैं। लेकिन जब हम उस मनोदशा में नहीं होते, तो हमारी ओर देखने की हिम्मत भी न करें। एक सच्चा शिष्य वह होता है जिसका नया नाम उसपर हर जगह लिखा होता है - स्वार्थ, घमण्ड और आत्म-निर्भरता पूरी तरह से मिट चुके होते हैं।

घमण्ड "अपने आप" को अपना ईश्वर बनाने का पाप होता है। और हम में से कुछ लोग आज ऐसा ही करते हैं, फरीसी की तरह नहीं, बल्कि चुंगी लेनेवाले की तरह (लूका 18:9-14)। आपका यह कहना कि, "मैं कोई सन्त थोड़े ही हूँ," घमण्ड के मनुष्यों के मापदण्डों के द्वारा स्वीकार योग्य है, लेकिन यह अनजाने में परमेश्वर की निन्दा करने के बराबर है। आप परमेश्वर को चुनौती देते हैं कि वह आपको पवित्र जन नहीं बना सकता, मानो आप कह रहे हों, "मैं मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित के लिए बहुत ज़्यादा निर्बल और हताश हूँ और उसकी पहुँच से बाहर हूँ।" आप पवित्र जन क्यों नहीं हैं ? या तो इसलिए क्योंकि आप पवित्र जन बनना ही नहीं चाहते, या फिर आप विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर आपको एक पवित्र जन बना सकता है। आप कहते हैं कि यह ठीक होगा यदि परमेश्वर आपका उद्धार करके आपको सीधे स्वर्ग में ले जाए। और वह ऐसा ही करेगा ! और हम न केवल उसके साथ अपना घर बनाते हैं, लेकिन यीशु ने अपने पिता और अपने विषय में कहा, "...हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे" (यूहन्ना 14:23)। अपने जीवन पर कोई शर्तें न लगाएँ - यीशु को अपना सब कुछ होने दें, और वह आपको अपने साथ घर ले जाएगा, सिर्फ़ एक दिन के लिए नहीं, बल्कि अनन्तकाल के लिए।

जून 13

वहाँ पहुँचना

...और आकर मेरे पीछे हो ले।
लूका 18:22।

जहाँ हमारी व्यक्तिगत अभिलाषा मर जाती है और पवित्रीकृत समर्पण जीवित रहता है। यीशु के पास आने में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक होती है हमारे अपने व्यक्तिगत स्वभाव का बहाना। हम अपने स्वभाव और अपनी प्राकृतिक अभिलाषाओं को यीशु के पास आने में बाधाएँ बना देते हैं। फिर भी जब हम यीशु के पास आ जाते हैं, तो जिस पहली बात का हमें एहसास होता है वह यह है कि वह हमारी प्राकृतिक अभिलाषाओं की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देता। हमारी यह धारणा है कि हम अपने दान परमेश्वर को समर्पित कर सकते हैं। लेकिन जो हमारा है ही नहीं, उसे हम कैसे समर्पित कर सकते हैं ? वास्तव में तो ऐसी एक ही चीज़ है जिसे हम परमेश्वर को अर्पित कर सकते हैं, और वह है अपने ऊपर अपना अधिकार (रोमियों 12:1 देखें)। यदि आप अपने ऊपर अपने अधिकार को परमेश्वर को दे देंगे, तो वह आपको एक पवित्र प्रयोग बनाएगा, और उसके प्रयोग हमेशा सफल होते हैं। परमेश्वर के एक पवित्र जन का एकमात्र चिह्न वह भीतरी रचनात्मकता होती है जो यीशु मसीह को पूरी तरह समर्पित होने से प्रवाहित होती है। एक पवित्र जन के जीवन में यह आश्चर्यजनक कूआँ होता है जो मूल जीवन का एक लगातार रहनेवाला स्रोत होता है। एक पवित्र जन को यह एहसास होता है कि वह परमेश्वर ही है जो उसकी परिस्थितियों पर नियन्त्रण रखता है; इसके फलस्वरूप कोई शिकायतें नहीं, बल्कि यीशु के प्रति सिर्फ़ असंयमित समर्पण होता है। अपने अनुभव को कभी भी दूसरों के लिए एक सिद्धान्त न बनाएँ, बल्कि परमेश्वर को दूसरों के लिए उतना ही रचनात्मक और मौलिक होने दें जितना वह आपके साथ है।

यदि आप सब कुछ यीशु को समर्पित कर देंगे, और जब वह "आओ" कहता है, तो आएँगे, तो वह आपके द्वारा "आओ" कहना जारी रखेगा। आप मसीह के "आओ" की प्रतिध्वनि बनते हुए जगत में जाएँगे। यह हर उस आत्मा में पाया जानेवाला फल है जो सब कुछ त्याग कर यीशु के पास आ गया है।

क्या मैं उसके पास आ गया हूँ ? क्या मैं *अभी* आऊँगा ?

जून 14

शुरू कर दें !

...मुझ में बने रहो ...।"
यूहन्ना 15:4।

संकल्प के मामले में। मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित से यीशु का आत्मा मेरे अन्दर डाल दिया जाता है। इसके बाद, मुझे धीरज के साथ अपनी सोच को अपने प्रभु से साथ सिद्ध तालमेल में लाने की ज़रूरत होती है। परमेश्वर मुझे यीशु की तरह सोचने के लिए मजबूर नहीं करेगा - मुझे ऐसा खुद करना होगा। मुझे "हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देना है" (2 कुरिन्थियों 10:5)। "मुझमें बने रहो" - बौद्धिक मामलों में, रुपये-पैसे के मामलों में, मानव जीवन के सब मामलों में। हमारा जीवन एक अकेले सीमित क्षेत्र का नहीं बना होता।

क्या मैं यह कहने के द्वारा परमेश्वर को अपनी परिस्थितियों में काम करने से रोक रहा हूँ कि इससे मेरी और उसकी संगति में सिर्फ़ बाधा ही आ सकती है ? यह कितना असम्बद्ध और अपमानजनक विचार है ! इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि मेरी परिस्थितियाँ क्या हैं। उनमें से किसी भी परिस्थिति में मुझे यीशु में बने रहने का उतना ही आश्वासन मिल सकता है जितना किसी प्रार्थना सभा में। अपने आप अपनी परिस्थिति को बदलने या व्यवस्थित करने की कोई ज़रूरत नहीं। हमारे प्रभु का भीतरी बना रहना शुद्ध और निष्कलंक था। उसका शरीर जहाँ भी था, वहाँ वह परमेश्वर से परिचित था। उसने अपनी परिस्थितियों को कभी नहीं चुना, बल्कि वह अपने आप को अपने पिता की योजनाओं और आदेशों के अधीन रखते हुए, नम्र बना रहा। ज़रा सोचें कि हमारे प्रभु का जीवन कितना चैन-भरा था ! लेकिन हम अपने जीवन में परमेश्वर को अत्यधिक उत्तेजना का स्थान देते हैं। हमारे अन्दर उस जीवन की शान्ति नहीं पाई जाती जो " मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है" (कुलुस्सियों 3:3)।

उन बातों के बारे में सोचें जो आपको मसीह में बने रहने की स्थिति से निकाल देती हैं। आप कहते हैं, "हाँ, प्रभु, बस एक मिनट और - अभी मुझे यह काम ख़त्म करना है। हाँ, जैसे ही यह ख़त्म हो जाएगा, तो मैं ज़रूर बना रहूँगा, या जैसे ही यह हफ़्ता बीत जाएगा। तब सब ठीक हो जाएगा, प्रभु। फिर मैं तुझ में बना रहूँगा।" शुरू हो जाएँ - बने रहना *अभी* शुरू कर दें। प्रारम्भिक चरणों में बने रहने के लिए लगातार प्रयास करना ज़रूरी होगा, लेकिन जैसे-जैसे आप इसे जारी रखेंगे, यह आपके जीवन का ऐसा भाग बन जाएगा कि आपके जानबूझकर प्रयास किए बिना भी आप उसमें बने रहेंगे। दृढ़ निश्चय कर लें कि आप अभी जहाँ कहीं भी हैं, या भविष्य में जहाँ कहीं भी रखे जाएँगे, आप यीशु में बने रहेंगे।

जून 15

शुरू कर दें !

...अपने विश्वास पर ...बढ़ाते जाओ।
2 पतरस 1:5।

नीरस काम के मामले में। इस अनुच्छेद में पतरस कहता है कि हम "ईश्वरीय स्वभाव के सम्भागी" हो गए हैं और अब हमें परमेश्वर-भक्ति की आदतें डालने पर ध्यान देने के लिए "सब प्रकार के यत्न" करने चाहिए (1:4-5)। हमें उन सब बातों को जो चरित्र का अर्थ हैं, अपने जीवन में "बढ़ाते" जाना है। कोई भी प्राकृतिक या अलौकिक रूप से चरित्र के साथ पैदा नहीं होता; चरित्र का विकास करना पड़ता है। न ही हम आदतों के साथ पैदा होते हैं - हमें परमेश्वर-भक्ति की आदतों को उस नए जीवन के आधार पर बनाना पड़ता है जो परमेश्वर ने हमारे अन्दर रख दिया है। हमें परमेश्वर के सिद्ध, चमकते हुए उदाहरणों की तरह नहीं, बल्कि साधारण जीवन की तरह दिखाई देना है जो परमेश्वर के अनुग्रह के आश्चर्यकर्म को प्रदर्शित करते हैं। नीरस काम असली चरित्र की परख होते हैं। हमारे आत्मिक जीवन की सबसे बड़ी बाधा यह होती है कि हम बड़े-बड़े काम करना चाहते हैं। फिर भी, "यीशु ...अंगोछा लेकर ...चेलों के पाँव धोने लगा ...।" यूहन्ना 13:3-5)।

हम सबके जीवन में ऐसे समय आते हैं जब चमकती हुई ज्योतियाँ नहीं दिखाई देती और जीवन में कोई रोमांच नहीं प्रतीत होता, जब हम प्रतिदिन के साधारण कामों की दिनचर्या को छोड़ और किसी चीज़ का अनुभव नहीं करते। वास्तव में जीवन की दिनचर्या परमेश्वर का वह उपाय होता है जो हमें परमेश्वर से आनेवाले महान प्रेरणा के मौकों के बीच बचाकर रखता है। परमेश्वर से हमेशा यह प्रत्याशा न करें कि वह आपको रोमांचित करनेवाले पल देगा, बल्कि परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा जीवन की नीरसता की साधारण परिस्थितियों में जीना सीखें।

पतरस यहाँ जिस "बढ़ाते रहने" का ज़िक्र कर रहा है, हमारे लिए वह कठिन काम है। हम कहते हैं कि हम परमेश्वर से यह प्रत्याशा नहीं करते कि वह हमें फूलों की सेज पर स्वर्ग ले जाएगा; फिर भी हम ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि हमारी प्रत्याशा यही है ! मुझे जानने की ज़रूरत है कि जीवन की छोटी से छोटी बात में मेरी आज्ञाकारिता के पीछे परमेश्वर के अनुग्रह का सारा सर्वशक्तिशाली सामर्थ्य है। यदि मैं अपने कर्तव्य पूरा करूँगा, कर्तव्य पालन करने के कारण नहीं बल्कि इसलिए कि मुझे विश्वास है कि परमेश्वर मेरी परिस्थितियों पर नियन्त्रण रख रहा है, तो मेरी आज्ञाकारिता के समय, मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित से परमेश्वर का सारा अनुग्रह मेरा होता है।

जून 16

क्या तुम अपना प्राण दोगे ?

इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे।
... मैं ने तुम्हें मित्र कहा है।
यूहन्ना 15:13,15।

यीशु मुझे अपने लिए मरने को नहीं कहता, बल्कि उसके लिए अपना प्राण दे देने के लिए कहता है। पतरस ने प्रभु से कहा, "मैं तो तेरे लिए अपना प्राण दूँगा," और उसने यह सच्चे दिल से भी कहा (यूहन्ना 13:37)। पतरस की वीरता का भाव बड़ा शानदार था। हमारे लिए वही बात न कह पाना जो पतरस ने कही, एक बुरी बात होगी - हमारे कर्तव्य की भावना हमारी वीरता की भावना ही से पूरी होती है। क्या प्रभु ने आपसे कभी पूछा है,"क्या तुम मेरे लिए अपना प्राण दोगे?" (यूहन्ना 13:38)। परमेश्वर की ऊँची बुलाहट के साथ लगातार अपना प्राण दे देने से मर जाना कहीं ज़्यादा आसान होता है। हमें जीवन के चमकदार पलों के लिए नहीं बनाया गया है, लेकिन हमें अपने प्रतिदिन के मार्गों में उनके प्रकाश में चलना है। यीशु के जीवन में एक ही चमकदार पल आया था और वह था रूपान्तरण के पहाड़ पर। वहाँ पर उसने दूसरी बार अपने आप को अपनी महिमा से खाली कर दिया, और फिर दुष्टात्माओं से ग्रस्त घाटी में उतर आया (मरकुस 9:1-29 देखें)। तैंतीस वर्ष यीशु ने अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए अपना प्राण दे दिया। "हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए" (1 यूहन्ना 3:16)। लेकिन ऐसा करना हमारे मानुषिक स्वभाव के विरुद्ध होता है।

यदि मैं यीशु का मित्र हूँ, तो मुझे सोच-समझकर और ध्यानपूर्वक अपना प्राण उसके लिए दे देना चाहिए। ऐसा करना कठिन होता है, और परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यह कठिन होता है। हमारे लिए उद्धार इसलिए आसान है क्योंकि परमेश्वर को इसकी इतनी भारी कीमत चुकानी पड़ी थी। लेकिन उद्धार को मेरे जीवन में प्रदर्शित करना कठिन होता है। परमेश्वर एक व्यक्ति का उद्धार करता है, उसे पवित्र आत्मा से भर देता है, और इसके बाद मानो यह कहता है कि "अब तुम इस कार्य को अपने जीवन में पूरा करते जाओ, और मेरे प्रति विश्वासयोग्य रहो, बावजूद इसके कि तुम्हारे चारों ओर की चीज़ों की प्रवृत्ति यह है कि वे तुम्हें विश्वासघाती बनने के लिए मजबूर करती हैं।" और यीशु हमसे कहता है, "...मैंने तुम्हें मित्र कहा है ..." अपने मित्र के प्रति विश्वासयोग्य रहें, और याद रखें कि उसका मान-सम्मान आपके शारीरिक जीवन में दाँव पर रखा है।

जून 17

दूसरों की आलोचना करने से सावधान रहें

दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।
मत्ती 7:1।

दूसरों पर दोष लगाने के सम्बन्ध में यीशु का आदेश बहुत सरल है; वह कहता है, "मत।" एक सामान्य मसीही संसार का सबसे ज़्यादा चुभानेवाला आलोचक होता है। आलोचना लोगों की साधारण क्रियाओं में से एक होती है, लेकिन आत्मिक क्षेत्र में इससे कुछ प्राप्त नहीं होता। जिस व्यक्ति की आलोचना की जा रही है, आलोचना उसकी क्षमताओं को विभाजित कर देती है। केवल पवित्र आत्मा ही आलोचना करने के उचित स्थान पर है, और केवल वह ही बिना दिल दुखाए और बिना ठेस पहुँचाए दिखा सकता है कि क्या ग़लत है। जब आप एक आलोचनात्मक मनोदशा में होते हैं, तो परमेश्वर के साथ संगति में प्रवेश करना असम्भव हो जाता है। आलोचना आपको कठोर, दण्डात्मक, और क्रूर बनाने का काम करती है, और आपके मन में यह शान्तिदायक और प्रशंसा करनेवाला विचार लाती है कि किसी न किसी तरह से आप दूसरों से बेहतर हैं। यीशु कहता है कि उसका शिष्य होने के नाते, आपको एक ऐसे स्वभाव को बढ़ावा देना है जो कभी आलोचनात्मक नहीं होता। यह जल्दी तो नहीं होगा लेकिन कुछ समय के अन्दर इसका विकास हो जाना चाहिए। आपको लगातार ऐसी हर चीज़ से सावधान रहना चाहिए जो आपके मन में यह विचार लाती है कि आप औरों से बेहतर हैं।

यीशु के द्वारा की जानेवाली मेरे जीवन की भेदक जाँच-पड़ताल से बचना असम्भव है। यदि मैं आपकी आँख के तिनके को देखता हूँ, तो इसका अर्थ यह है कि मेरी अपनी आँख में लकड़ी का लट्ठा है (7:3-5 देखें)। हर ग़लत चीज़ जो मैं आपमें देखता हूँ, वह परमेश्वर को मुझ में दिखाई देती है। हर बार जब मैं दोष देता हूँ, मैं अपने आप को दोषी ठहराता हूँ (रोमियों 2:17-24 देखें)। दूसरों को नापने के लिए पैमाना रखना बन्द करें। हर व्यक्ति की परिस्थिति में कम से कम एक और ऐसा तथ्य होता है जिसके बारे में हमें कुछ पता नहीं होता। सबसे पहला काम जो परमेश्वर करता है, वह यह है कि वह आत्मिक रूप से हमारी पूरी सफ़ाई करता है। इसके बाद, हमारे अन्दर घमण्ड के बचने की कोई सम्भावना नहीं रहती। मेरी मुलाकात ऐसे व्यक्ति से कभी नहीं हुई जिसके लिए मैं निराश हो जाऊँ, या सारी आशा छोड़ दूँ, यह जानने के बाद कि परमेश्वर के अनुग्रह के बिना मुझ में क्या है।

जून 18

यीशु को पहचानते जाएँ

पतरस...यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। पर हवा को देखकर डर गया...
मत्ती 14:29-30।

हवा सचमुच तेज़ थी और लहरें सचमुच ऊँची थीं, लेकिन शुरू में पतरस ने उन्हें नहीं देखा। उसने उनके बारे में बिलकुल नहीं सोचा ; उसने केवल अपने प्रभु को पहचाना, और उसकी पहचान में कदम बढ़ाकर "पानी पर चलने लगा।" इसके बाद, वह अपने चारों ओर की चीज़ों पर ध्यान देने लगा, और तुरन्त डूबने लगा। हमारा प्रभु उसे लहरों के ऊपर जैसे चला सकता था, वैसे लहरों के नीचे क्यों नहीं चला सका ? वह चला तो सकता था, लेकिन दोनों काम ही तब तक नहीं हो सकते थे जब तक पतरस प्रभु यीशु को पहचानना जारी नहीं रखता।

कुछ बातों में हम परमेश्वर को पहचानते हुए कदम बढ़ाते हैं, फिर हमारे मन में अपने बारे में सोच-विचार आ जाते हैं, और हम डूबने लगते हैं। यदि आप सचमुच अपने प्रभु को पहचान रहे हैं, तो आपको यह सोचने का कोई अधिकार नहीं कि वह आपकी परिस्थिति को कैसे और कहाँ नियन्त्रित करता है। आपके चारों ओर जो चीज़ें हैं, वे असली हैं, लेकिन जब आप उनकी ओर देखते हैं, तो तुरन्त हारने लगते हैं, और यीशु को भी नहीं पहचान पाते। तब उसकी डाँट आती है, "तूने क्यों सन्देह किया ?" (14:31)। आपकी वास्तविक परिस्थितियाँ चाहे कुछ भी हों, यीशु को पहचानते रहें, और उसपर पूरा भरोसा रखते रहें।

यदि परमेश्वर के बोलने के बाद आप एक क्षण के लिए भी वाद-विवाद करते हैं, तो जान लें कि सब समाप्त हो गया। यह कहना मत शुरू करें कि, "अब पता नहीं कि उसने सचमुच मुझ से बात की थी या नहीं ?" अपना सब कुछ परमेश्वर पर डाल देने के द्वारा, तुरन्त दु:साहसी हो जाएँ - पूरी तरह से असंयमित और हर चीज़ को दाँव पर रखने के लिए तैयार। आप नहीं जानते कि उसकी आवाज़ आपके पास कब आएगी, लेकिन जैसे ही आपको परमेश्वर का एहसास होता है, चाहे वह कितना भी धीमा क्यों न हो, संकल्प कर लें कि आप दु:साहस से अपने आप को त्याग देंगे, और अपना सब कुछ परमेश्वर को समर्पित कर देंगे। केवल अपने आप को और अपनी परिस्थितियों को त्याग देने के द्वारा ही आप परमेश्वर को पहचानेंगे। आप उसकी आवाज़ को और अधिक स्पष्टता से केवल दु:साहस से ही पहाचानेंगे - जब आप अपने सब कुछ को दाँव पर रखने के लिए तैयार होंगे।

जून 19

जोशीली भक्ति की सेवा

...क्या तू मुझ से प्रेम रखता है ? ...मेरी भेड़ों की रखवाली कर ।
यूहन्ना 21:16।

यीशु ने यह नहीं कहा कि हम लोगों को अपनी सोच के अनुकूल परिवर्तित करें, बल्कि उसने यह कहा कि हम उसकी भेड़ों की रखवाली करें, ताकि उन्हें परमेश्वर के ज्ञान का भोजन मिल सके। हम मसीही कार्य के नाम से जो कुछ करते हैं, उसे सेवा मानते हैं, लेकिन यीशु मसीह ने सेवा उसे कहा जो हम उसके लिए *हैं*, न कि उसे जो हम उसके लिए *करते* हैं। शिष्यता केवल यीशु मसीह के प्रति भक्ति पर आधारित होती है, किसी विशेष धारणा या सिद्धान्त के पीछे चलने पर नहीं। "यदि कोई मेरे पास आए और ...अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:26)। इस पद में, यीशु की ओर से उसके पीछे चलने के लिए कोई विवाद या दबाव नहीं है; वह तो मानो सिर्फ़ यह कह रहा है,"यदि तुम मेरे चेले होना चाहते हो, तो तुम्हें सिर्फ़ मेरे प्रति समर्पित होना चाहिए।" जिस व्यक्ति को परमेश्वर के आत्मा के स्पर्श का अनुभव होता है, वह अचानक बोल पड़ता है, "अब मैं देख सकता हूँ कि यीशु कौन है !" - भक्ति का स्रोत यही है।

आज हमने व्यक्तिगत विश्वास की जगह सैद्धान्तिक विश्वास को दे दी है, और यही कारण है कि इतने लोग धर्म के कामों के प्रति समर्पित हैं, और इतने थोड़े लोग यीशु मसीह के प्रति। वास्तव में लोग यीशु के प्रति नहीं, बल्कि उसके द्वारा शुरू किए गए काम के प्रति समर्पित होना चाहते हैं। आजकल के शिक्षित दिमाग़ों के लिए यीशु मसीह अत्यन्त अपमानजनक है, यानि, उन लोगों के लिए जो उसे सिर्फ़ अपने मित्र के रूप में चाहते हैं, और जो उसे किसी और रूप में ग्रहण करने को तैयार नहीं। हमारे प्रभु की प्रमुख आज्ञाकारिता अपने पिता की इच्छा के प्रति थी, लोगों की ज़रूरतों के प्रति नहीं - लोगों का उद्धार पिता की इच्छा के प्रति उसकी आज्ञाकारिता का स्वाभाविक परिणाम था। यदि मैं सिर्फ़ मानवता के लाभ के प्रति समर्पित हूँ, तो मैं जल्दी ही थक जाऊँगा और उस स्थिति में पहुँच जाऊँगा जहाँ मेरा प्रेम डगमगाता और ठोकर खाता है। लेकिन यदि मैं यीशु मसीह से व्यक्तिगत रूप से और जोश के साथ प्रेम करता हूँ, तो मैं मनुष्य की सेवा कर सकता हूँ, चाहे लोग मुझे "पायदान" की तरह मानें। एक चेले के जीवन का रहस्य यीशु मसीह के प्रति उसका समर्पण है, और ऐसे जीवन की विशेषता वह है जो उसकी तुच्छता और नम्रता लगती हैं। लेकिन यह गेहूँ के एक दाने की तरह है जो "भूमि में पड़कर मर जाता है" - वह अचानक उठ खड़ा होगा और सारे दृश्य को बदल डालेगा (यूहन्ना 12:24)।

क्या आप ''जब'' तक पहुँच गए हैं ?

जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया।
अय्यूब 42:10।

एक दयनीय, और स्वार्थी प्रार्थना, और परमेश्वर के साथ सही होने का दृढ़ संकल्प और स्वार्थपूर्ण अभिलाषा नए नियम में कहीं नहीं पाई जाती । यह सत्य कि मैं परमेश्वर के साथ सही होने की कोशिश कर रहा हूँ, वास्तव में इस बात का चिह्न है कि मैं मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित के विरुद्ध विद्रोह कर रहा हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ, "प्रभु, मैं अपने मन को शुद्ध करूँगा यदि तू मेरी प्रार्थना का उत्तर देगा - मैं तेरे सामने सही चाल चलूँगा यदि तू मेरी मदद करेगा।'' लेकिन सच तो यह है कि मैं अपने आपको परमेश्वर के साथ सही *नहीं* कर सकता ; मैं अपने जीवन को सिद्ध *नहीं* बना सकता। मैं परमेश्वर के साथ सही तभी हो सकता हूँ यदि मैं प्रभु यीशु मसीह के प्रायश्चित को वरदान के रूप में ग्रहण करूँ। क्या मैं इतना नम्र हूँ कि इसे ग्रहण कर सकूँ ? मुझे अपने सारे अधिकारों को और अपनी सारी माँगों को त्यागना होगा, अपने हर निजी प्रयत्न को बन्द करना होगा। मुझे अपने आप को पूरी तरह उसके हाथों में डाल देना होगा, और फिर मैं अपने जीवन को विनती करने के याजकीय कार्य में बहाना शुरू कर पाऊँगा। बहुत सी प्रार्थना प्रायश्चित में अविश्वास से भी आती है। यीशु हमारा उद्धार करना अभी नहीं शुरू कर रहा है - वह तो पूरी तरह से हमारा उद्धार कर चुका है। यह एक सम्पूर्ण किया गया तथ्य है, और जब हम उससे यह विनती करते हैं कि वह उस काम को करे जो वह पहले से कर चुका है, तो उसका अपमान करते हैं।

यदि आप अभी वह "सौ गुना'' नहीं पा रहे हैं जिसकी यीशु ने प्रतिज्ञा की थी (मत्ती 19:29 देखें), और परमेश्वर के वचन में अन्तर्दृष्टि नहीं पा रहे हैं, तो अपने मित्रों के लिए प्रार्थना करनी शुरू कर दें - भीतरी जीवन की सेवा में प्रवेश करें। "*जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की*, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया।'' एक उद्धार पाए हुए प्राण होने के नाते, आपके जीवन का असली कार्य विनती की प्रार्थना है। परमेश्वर आपको चाहे जिस भी परिस्थिति में रखे, हमेशा तुरन्त प्रार्थना करें कि उसका प्रायश्चित दूसरों के जीवन में भी वैसे ही पहचाना जाए और उतनी ही पूर्णता से समझा जाए जैसा आपके जीवन में हुआ है। अपने मित्रों के लिए *अभी* प्रार्थना करें, और उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जिनके सम्पर्क में आप *अभी* आ रहे हैं।

जून 21

भीतरी जीवन की सेवकाई

तुम एक....राज-पदधारी याजकों का समाज ...हो।
1 पतरस 2:9।

हम "राज-पदधारी याजकों का समाज" किस अधिकार से बन गए हैं ? यह मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित के द्वारा पूरा किया गया है। क्या हम अपने आप की अनदेखी करने का फ़ैसला करते हुए प्रार्थना के याजकीय कार्य में निकल पड़ने के लिए तैयार हैं ? यह जानने के लिए कि क्या हम वह हैं जो हमें होना चाहिए, हम जो लगातार भीतरी जाँच-पड़ताल करते रहते हैं, उससे एक स्वार्थी, कमज़ोर मसीहियत पैदा होती है, परमेश्वर के एक बालक का जानदार और सरल जीवन नहीं। जब तक हम परमेश्वर के साथ इस सही और उचित सम्बन्ध में नहीं आते, तब तक यह सिर्फ़ किसी तरह से पकड़ कर लटके रहने के बराबर होता है, जब कि हम कहते यह हैं, कि "वाह, मुझे कितनी अद्भुत विजय मिली है।" लेकिन इसमें ऐसा कुछ नहीं जो छुटकारे के आश्चर्यकर्म को दिखाता है। इस दुःसाहसी, स्वच्छन्द विश्वास में निकल पड़ें कि छुटकारे का कार्य पूरा हो चुका है। इसके बाद अपने बारे में और चिन्ता न करें, बल्कि वह करें जो यीशु मसीह ने कहा है, यानि यह कि "उस मित्र के लिए प्रार्थना करो जो तुम्हारे पास आधी रात को आता है, परमेश्वर के पवित्र जनों के लिए प्रार्थना करो, और सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना करो।" यह जानते हुए प्रार्थना करें कि आप केवल मसीह यीशु में सिद्ध हैं, इस सफ़ाई के आधार पर नहीं कि, "हे प्रभु, मैंने अपना सर्वोत्तम कर दिया है; कृपा करके अब मेरी सुन ले।"

सिर्फ़ अपने बारे में सोचने की हानिकर आदत से हमें छुड़ाने में परमेश्वर को कितना समय लग जाएगा ? हमें उस स्थिति पर पहुँचना है जहाँ हम खुद से बिलकुल तंग आ गए हों, ऐसी स्थिति पर जहाँ, यदि परमेश्वर हमें हमारे बारे में कुछ बताए, तो हमें कोई आश्चर्य नहीं होगा। हम अपनी ही अपर्याप्तता की गहराइयों तक कभी नहीं पहुँच सकते और न ही उसे समझ सकते हैं। एक ही स्थान है जहाँ हम परमेश्वर के साथ सही होते हैं, और वह है मसीह यीशु में। एक बार जब हम वहाँ पहुँच जाते हैं, तो हमें भीतरी जीवन की इस सेवकाई में अपने जीवन को पूरी तरह उण्डेल देने की ज़रूरत है।

दोष लगाने का न बदलनेवाला नियम

जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा;
और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।
मत्ती 7:2।

यह कथन कोई ऊटपटांग परिकल्पना नहीं बल्कि परमेश्वर का एक अनन्त नियम है। जिस तरह का न्याय आप दूसरों के साथ करेंगे, उसी तरह का न्याय आपके साथ भी किया जाएगा। बदला देने और उचित दण्ड देने में फ़र्क होता है। यीशु ने कहा कि जीवन का आधार उचित दण्ड देना है - "जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।" यदि आपने दूसरों की कमियाँ निकालने में समझदारी दिखाई है, तो याद रखें कि आपको भी बिलकुल इसी तरह से नापा जाएगा। जिस तरह से आप भुगतान करते हैं, उसी तरह से आपके साथ भी भुगतान किया जाएगा। परमेश्वर के सिंहासन से लेकर हमारे साथ भी यही नियम लागू होता है (भजन संहिता 18:25-26 देखें)।

रोमियों 2:1 यह कहकर इसे और भी स्पष्टता से लागू करता है, कि जो व्यक्ति दूसरों पर दोष लगाता है, वह उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है। परमेश्वर सिर्फ़ काम की ओर नहीं देखता बल्कि उसे करने की सम्भावना की ओर भी देखता है, जो उसे हमारे हृदय की ओर देखने से दिखाई देती है। पहली बात तो यह है कि हम बाइबल में कही गई बातों पर विश्वास नहीं करते। उदाहरण के लिए, क्या हम सचमुच इस कथन पर विश्वास करते हैं जो यह कहता है कि हम दूसरों में उन्हीं बातों की आलोचना करते हैं जिनके लिए हम खुद दोषी होते हैं। हम दूसरों में पाखण्ड, धोखा, और ईमानदारी की कमी इसलिए देखते हैं क्योंकि ये सब बातें हमारे अपने हृदयों में भी होती हैं। एक पवित्र जन की सबसे महान विशेषता उसकी नम्रता होती है, जो इससे साबित होती है कि वह ईमानदारी और नम्रता से कह सकता है, "यदि परमेश्वर का अनुग्रह मुझ पर नहीं हुआ होता, तो ये सब, और बहुत सी और बुराइयाँ, मुझ में प्रदर्शित होतीं। इसलिए, मुझे दोष लगाने का कोई अधिकार नहीं।"

यीशु ने कहा, "दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए" (मत्ती 7:1)। उसने आगे यह भी जताया कि, "यदि तुम दोष लगाओगे, तो तुम्हारे ऊपर भी बिलकुल उसी तरह से दोष लगाया जाएगा।" हममें से किसकी इतनी हिम्मत होगी कि वह कह सके, "मेरे परमेश्वर, जैसे मैंने दूसरों पर न्याय किया है, वैसे ही मुझ पर भी न्याय कर" ? हमने दूसरों पर न्याय करके उन्हें पापी ठहराया है - यदि परमेश्वर हमारा न्याय वैसे ही करेगा, तो हम नरक जाने के योग्य ठहराए जाएँगे। फिर भी परमेश्वर हमारा न्याय मसीह के क्रूस के आश्चर्यजनक प्रायश्चित के आधार पर करता है।

जून 23

शोक से जान पहचान

रोग (शोक) से उसकी जान पहचान थी ।
यशायाह 53:3 ।

शोक या कष्ट से हमारी वैसी जान पहचान नहीं है जैसी यीशु की थी । हम शोक को झेल लेते हैं और उसमें से होकर गुज़र जाते हैं, लेकिन हम उससे सुपरिचित नहीं होते । अपने जीवन के शुरू में हम अपने आप को पाप की वास्तविकता से निपटने के स्थान पर नहीं लाते । हम जीवन को तर्क के दृष्टिकोण से देखते हैं और कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति अपनी प्राकृतिक प्रवृत्ति को नियन्त्रण में रखेगा, और अपने आप को सिखाएगा, तो वह एक ऐसा जीवन बना सकता है जिसका धीरे-धीरे परमेश्वर के जीवन में विकास हो जाएगा । लेकिन जैसे-जैसे हम जीवन में आगे बढ़ते जाते हैं, हमें एक ऐसी चीज़ की उपस्थिति मिलती है जिसका हमें ध्यान नहीं था, यानि, पाप - और इससे हमारी सारी सोच और योजनाएँ उलट-पुलट हो जाती हैं । पाप ने हमारी सोच की बुनियाद को ऐसा बना दिया है जिसके बारे में पहले से कुछ कहा न जा सके, जो नियन्त्रण में नहीं होती, और जो बेतुकी होती है ।

हमें यह पहचानने की ज़रूरत है कि पाप जीवन का एक तथ्य है, सिर्फ़ एक कमी नहीं । पाप परमेश्वर के विरुद्ध घोर विद्रोह है, और मेरे जीवन में या तो पाप को मरना है या परमेश्वर को । नया नियम हमें सीधे इस एक मुद्दे पर लाकर खड़ा कर देता है - यदि मुझ में पाप शासन करेगा, तो मेरे अन्दर परमेश्वर का जीवन मर जाएगा; यदि मुझ में परमेश्वर शासन करेगा, तो मेरे अन्दर का पाप मर जाएगा । कोई और बात इससे ज़्यादा बुनियादी नहीं हो सकती । यीशु मसीह का क्रूस पर चढ़ाना पाप की पराकाष्ठा थी, और जो पृथ्वी पर परमेश्वर के इतिहास में सच था, वह मेरे और आपके इतिहास में भी सच होगा - यानि यह, कि पाप हमारे अन्दर परमेश्वर के जीवन को मार डालेगा । हमें मानसिक रूप से पाप के बारे में इस तथ्य के साथ सहमत हो जाना ज़रूरी है । यह वह एकमात्र कारण है कि यीशु मसीह पृथ्वी पर आया, और यही जीवन के शोक और दुःख का कारण है ।

जून 24

पाप के तथ्य का निपटारा करना

यह तुम्हारी घड़ी है, और अन्धकार का अधिकार है।
लूका 22:53।

जीवन की सारी विपत्तियाँ पाप के तथ्य को स्वीकार न करने से - उसे पहचानकर उसका निपटारा करने से इनकार करने से पैदा होती हैं। आप मनुष्य के जीवन के ऊँचे सद्‌गुणों के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन मनुष्य के स्वभाव में कुछ ऐसा है जो आपके हर सिद्धान्त का मज़ाक उड़ाएगा। यदि आप इस तथ्य को मानने से इनकार कर दें कि मनुष्यों में दुष्टता और स्वार्थ है, घृणित और ग़लत बातें हैं, तो जब ये आपके जीवन पर हमला करती हैं, तब उन्हें स्वीकार करने के बजाय, आप उनके साथ समझौता कर लेंगे और कहेंगे कि उनसे लड़ना बेकार है। क्या आपने "इस घड़ी को और अन्धकार के अधिकार" को ध्यान में रखा है, या अपने आप के बारे में आपका ऐसा रवैया है जिसमें पाप की पहचान बिलकुल शामिल नहीं होती ? यदि नहीं, तो आप जल्दी ही उसके फन्दे में फँस जाएँगे और उससे समझौता कर बैठेंगे। लेकिन यदि आप पाप के तथ्य को स्वीकार करेंगे, तो आप उसके ख़तरे को तुरन्त पहचान लेंगे और कहेंगे कि, "हाँ, मैं समझ सकता हूँ कि इस पाप का परिणाम क्या होगा।" पाप की पहचान मित्रता के आधार को नष्ट नहीं करती - वह हमारे मन में सिर्फ़ इस तथ्य के प्रति मान्यता स्थापित करती है कि एक पापमय जीवन का आधार तबाही मचानेवाला होता है। जीवन के किसी भी ऐसे मूल्यांकन से सावधान रहें जो इस तथ्य को मान्यता नहीं देता कि पाप एक वास्तविकता है।

यीशु मसीह ने कभी मनुष्य के स्वभाव पर भरोसा नहीं किया, फिर भी वह दोषदर्शी या आलोचनात्मक नहीं था, क्योंकि उसे इसपर पूरा भरोसा था कि वह मनुष्य के स्वभाव के लिए क्या कर सकता है। नुकसान से बचाकर शुद्ध स्त्रियों और पुरुषों को रखा जाता है, निर्दोष व्यक्तियों को नहीं। जिन्हें निर्दोष लोग माना जाता है, वे कभी सुरक्षित नहीं होते। लोगों को निर्दोष होने की कोशिश करने का कोई अधिकार नहीं। परमेश्वर की माँग यह है कि वे शुद्ध और सद्‌गुणी हों। निर्दोषता एक बच्चे की विशेषता होती है। यदि कोई व्यक्ति पाप के तथ्य को मानने के लिए तैयार न हो, तो वह इस योग्य है कि उसपर दोष लगाया जाए।

जून 25

दुःख की अग्नि में अपने आप को पाना

...मैं क्या कहूँ ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा ? परन्तु मैं इसी
कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।
यूहन्ना 12:27-28।

परमेश्वर का पवित्र जन होने के नाते, दुःख और कठिनाई की ओर मेरी मनोवृत्ति यह नहीं होनी चाहिए कि इन्हें रोक दिया जाए, बल्कि मुझे परमेश्वर से विनती करनी चाहिए कि वह मेरी रक्षा करे ताकि अपने दुःखों की आग के बावजूद भी मैं वह बना रहूँ जो होने के लिए उसने मेरी सृष्टि की। हमारे प्रभु ने अपनी स्थिति को मानते हुए और अपने उद्देश्य को पहचानते हुए, दुःख की आग के बीच में, अपने आप को पाया। उसे उस घड़ी *से* नहीं, बल्कि घड़ी *में से* बचाया गया।

हम कहते हैं कि कोई दुःख नहीं होना चाहिए, लेकिन दुःख होता है, और हमें अपने आप को उसकी आग में स्वीकार करना और पाना चाहिए। यदि हम दुःख से बचने की कोशिश करते हैं और उसका निपटारा करने से इनकार करते हैं, तो हम मूर्ख हैं। दुःख जीवन के सबसे बड़े तथ्यों में से एक है, और यह कहना बेकार है कि दुःख नहीं होना चाहिए। पाप, दुःख, और कष्ट वास्तव में होते हैं, और हमें यह कहने का कोई अधिकार नहीं कि परमेश्वर ने उनकी अनुमति देकर ग़लती की है।

दुःख एक व्यक्ति का काफ़ी छिछलापन दूर कर देता है, लेकिन वह हमेशा उस व्यक्ति को बेहतर नहीं बनाता। दुःख भोगना या तो मुझे मुझको दे देता है या मुझे नष्ट कर देता है। आप अपने आप को सफलता के द्वारा न तो ढूँढ निकाल सकते हैं, और न ही पा सकते हैं, क्योंकि आप घमण्ड में अपना नियन्त्रण खो बैठते हैं। और आप अपने आप को प्रतिदिन के जीवन की नीरसता के द्वारा नहीं पा सकते क्योंकि आप शिकायत करने लगते हैं। एक ही तरीका है कि आप अपने आप को पा सकें, और वह है दुःख की आग में। ऐसा क्यों होता है, यह जानना महत्त्वपूर्ण नहीं। सच तो यह है कि बाइबल में और मनुष्य के अनुभव में यह ही सत्य है। आप हमेशा पहचान सकते हैं कि कौन दुःख की आग में से होकर गुज़रा है और किसने अपने आप को पाया है, और आप जानते हैं कि अपनी परेशानी की घड़ी में आप उसके पास जा सकते हैं और पाते हैं कि उसके पास आपके लिए बहुत समय है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति दुःख की आग में से नहीं गुज़रा है, तो सम्भव है कि वह आपका मज़ाक उड़ाए, उसके पास आपके लिए न तो मान होगा न समय, और वह आपसे मुँह मोड़ लेगा। यदि आप अपने आप को दुःख की आग में पाएँगे, तो परमेश्वर आपको दूसरों के लिए पोषण बनाएगा।

परमेश्वर के अनुग्रह का उपयोग करना - अभी

हम...यह ... समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो।
2 कुरिन्थियों 6:1।

जो अनुग्रह आपके पास कल था, वह आज के लिए काफ़ी नहीं होगा। अनुग्रह परमेश्वर की उमड़नेवाली कृपा है, और आप हमेशा भरोसा कर सकते हैं कि जब-जब आपको इसकी ज़रूरत होगी, यह उपलब्ध होगा। "...बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकट से" हमारे धीरज की परख होती है (6:4)। क्या आप इनमें परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा रखने से चूक रहे हैं ? क्या आप अपने आप से कह रहे हैं, "इस बार तो मैं उसपर भरोसा नहीं रखूँगा" ? यह परमेश्वर से प्रार्थना करने का और उससे मदद माँगने का सवाल नहीं है - सवाल परमेश्वर के अनुग्रह को *अभी* ले लेने का है। हमारी प्रवृत्ति यह होती है कि प्रार्थना को अपनी सेवा की तैयारी बना दें , लेकिन बाइबल में ऐसा कहीं नहीं है। प्रार्थना परमेश्वर के अनुग्रह को उपयोग में लाने का अभ्यास है। यह न कहें कि "जब तक मैं प्रार्थना के लिए समय नहीं निकाल सकता, तब तक इसे सह लूँगा।" इसी समय प्रार्थना करें - अपनी ज़रूरत की घड़ी में परमेश्वर के अनुग्रह को उपयोग में लाएँ। प्रार्थना सबसे सामान्य और उपयोगी चीज़ है। यह सिर्फ़ परमेश्वर के लिए आपकी भक्ति की प्रतिक्रिया नहीं है। हम प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह को उपयोग में लाना सीखने में बहुत ढीले होते हैं।

"कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लड़ों से, परिश्रम से..." (6:5)। इन सब चीज़ों से, अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को उपयोग में लाना दिखाएँ, जो आपको और दूसरों को इस बात का सबूत दिखाएगा की आप परमेश्वर का एक आश्चर्यकर्म हैं। उसके अनुग्रह का उपयोग अभी करें, बाद में नहीं। आत्मिक शब्दावली में प्रमुख शब्द है *अभी*। परिस्थितियाँ आपको चाहे जहाँ भी ले जाती हैं, उन्हें ले जाने दें, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह को उपयोग में लाते रहें चाहे आप अपने आप को किसी भी हालत में क्यों न पाएँ। इसका सबसे बड़ा सबूत कि आप परमेश्वर के अनुग्रह का उपयोग कर रहे हैं, यह होता है कि आप दूसरों के सामने पूरी तरह से अपमानित किए जाने पर भी परमेश्वर के अनुग्रह को छोड़ और किसी चीज़ का लेशमात्र भी प्रदर्शन नहीं करेंगे।

"...कंगालों के ऐसे हैं..." कभी किसी चीज़ को बचाकर न रखें। अपना सर्वोत्तम देते हुए, अपने आप को उण्डेल दें, और हमेशा ग़रीब रहें। परमेश्वर आपको जो खज़ाना देता है, उसके साथ कभी चतुर और सावधान न हों। "...तौभी सब कुछ रखते हैं ..." यही विजयी दरिद्रता है (6:10)।

जून 27

परमेश्वर के व्यक्तिगत छुटकारे से ढँका होना

‘...तुझे छुड़ाने के लिए मैं तेरे साथ हूँ,’ यहोवा की यह वाणी है।
यिर्मयाह 1:8।

परमेश्वर ने यिर्मयाह से यह प्रतिज्ञा की कि वह खुद उसे छुड़ाएगा - “...तेरा प्राण बचा रहेगा ...” (यिर्मयाह 39:18)। परमेश्वर अपनी सन्तान से इतनी ही प्रतिज्ञा करता है। परमेश्वर हमें जहाँ कहीं भी भेजेगा, वहाँ हमारे जीवन की रक्षा करेगा। हमें अपनी सम्पत्ति और अपने सामान के प्रति उदासीन रहना चाहिए और इन चीज़ों पर हमारी पकड़ बहुत ढीली होनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं है, तो हमें घबराहट, दुःख, और मानसिक व्यथा होगी। उचित दृष्टिकोण का होना परमेश्वर के व्यक्तिगत छुटकारे से ढँके होना का सबूत होता है।

पहाड़ी उपदेश यह संकेत देता है कि जब हम यीशु मसीह के कार्य में लगे होते हैं, तो हमारे पास अपनी सफ़ाई देने का समय नहीं होता। यीशु मानो यह कहता है, “इसकी चिन्ता मत करो कि तुम्हारे साथ न्याय किया जा रहा है या नहीं।” न्याय की तलाश करना वास्तव में इस बात का चिह्न है कि हमारा ध्यान परमेश्वर की भक्ति से हट गया है। इस संसार में न्याय की तलाश कभी न करें, लेकिन न्याय करना कभी न छोड़ें। यदि हम न्याय की तलाश करेंगे, तो हम सिर्फ़ शिकायत करने लगेंगे और अपने आप को आत्मदया के असन्तोष में डुबाने लगेंगे, मानो हम कह रहे हों कि, “मेरे साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया जा रहा है ?” यदि हम यीशु मसीह को समर्पित हैं, तो जिन चीज़ों से हमारा सामना होता है उनसे हमें कोई मतलब नहीं होगा, चाहे वह उचित हो या अनुचित। यीशु मानो यह कहता है कि “मैंने जो तुम्हें करने के लिए कहा है, उसमें दृढ़ता से बढ़ते जाओ, और मैं तुम्हारे जीवन की रक्षा करूँगा। यदि तुम खुद उसकी रक्षा करने की कोशिश करोगे, तो तुम अपने आप को मेरे छुटकारे से दूर कर दोगे।” हममें से सबसे परमेश्वर-भक्त लोग भी इस मामले में नास्तिक बन जाते हैं - हम परमेश्वर की बात का विश्वास नहीं करते। हम अपनी व्यावहारिक बुद्धि को सिंहासन पर बैठा देते हैं और फिर उसपर परमेश्वर का नाम चिपका देते हैं। हम सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखने के बजाय *अपनी* बुद्धि का सहारा लेते हैं (नीतिवचन 3:5-6)।

परमेश्वर की पकड़ में रहना

उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूँ, जिस के लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।
फिलिप्पियों 3:12।

परमेश्वर के कार्यकर्ता बनने का चुनाव कभी न करें, लेकिन एक बार जब परमेश्वर आपको अपनी बुलाहट देता है, तो यदि आप "दाहिने या बाएँ मुड़ें" तो आप पर हाय (व्यवस्थाविवरण 5:32)। हम परमेश्वर की सेवा करने के लिए यहाँ इसलिए नहीं हैं क्योंकि हमने ऐसा करने का चुनाव किया है, बल्कि इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने हमें "पकड़ा था।" और जब वह ऐसा करता है, तो हम यह कभी नहीं सोचते कि, "मैं इस काम के लिए उपयुक्त नहीं हूँ।" आपको जो प्रचार करना है, वह भी परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किया जाता है, आपके स्वाभाविक झुकाव या अभिलाषाओं के द्वारा नहीं। अपनी आत्मा को दृढ़ता से परमेश्वर से जोड़ कर रखें, और याद रखें कि आपको सिर्फ़ अपनी गवाही देने के लिए नहीं, बल्कि सुसमाचार प्रचार करने के लिए भी बुलाया गया है। हर मसीही को परमेश्वर के सत्य की गवाही देनी चाहिए, लेकिन जब प्रचार करने की बुलाहट की बात आती है, तो आपके ऊपर परमेश्वर की पीड़ा देनेवाली पकड़ होनी चाहिए - आपका जीवन इसी उद्देश्य के लिए परमेश्वर की पकड़ में होता है। हममें से कितने ऐसी पकड़ में हैं ?

परमेश्वर के वचन के प्रभाव को कभी कम न करें, बल्कि उसे उसकी शुद्ध सख़्ती के साथ ही सुनाएँ। परमेश्वर के वचन के प्रति निडर विश्वासयोग्यता का होना ज़रूरी है, लेकिन जब दूसरों के साथ व्यक्तिगत व्यवहार की बात आती है, तो याद रखें कि आप कौन हैं - आप स्वर्ग में सृजे गए एक विशेष प्राणी नहीं, बल्कि अनुग्रह से बचाए गए एक पापी हैं।

"हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है" (फिलिप्पियों 3:13-14)।

जून 29

सबसे सख़्त अनुशासन

यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उस को काटकर अपने पास से फेंक दे,
क्योंकि तेरे लिए यही भला है, कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए
और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
मत्ती 5:30।

यीशु ने यह नहीं कहा कि सब को अपना दाहिना हाथ काट कर फेंक देना चाहिए, बल्कि यह कि परमेश्वर के साथ चाल में "यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए," तो उसे "काट कर फेंक देना" बेहतर है। बहुत सी बातें ऐसी हैं जो बिलकुल वैध होती हैं, लेकिन यदि आप परमेश्वर पर ध्यान लगाने जा रहे हैं, तो आप उन्हें नहीं कर सकते। आपका दाहिना हाथ आपके सबसे अच्छे अंगों में से एक है, पर यीशु कहता है कि यदि वह यीशु के निर्देशों के अनुसार चलने में आपके लिए बाधा बन रहा है, तो उसे "काट कर फेंक दें।" जो सिद्धान्त यहाँ सिखाया गया है, वह मनुष्य पर प्रहार करनेवाला सबसे सख़्त अनुशासन या पाठ है।

जब परमेश्वर उद्धार देने के द्वारा आपको बदलता है, और आत्मिक रूप से नए जन्म के द्वारा आपको नया जीवन देता है, तो शुरू-शुरू में आपके जीवन में अपंग होने की विशेषता होती है। सैंकड़ों ऐसे काम होते हैं जिन्हें करने की हिम्मत आपको नहीं होती - ऐसे काम जो आपके लिए पाप होंगे, जो आपको सचमुच जाननेवाले लोगों के द्वारा पाप के रूप में पहचाने जाएँगे। लेकिन आपके चारों ओर ग़ैर-आत्मिक लोग कहेंगे, "उस काम में कौन सी खराबी है ? तुम कितने बेतुके हो !" ऐसा कोई पवित्र जन नहीं है जिसने शुरू-शुरू में अपंग जीवन नहीं जीया है। फिर भी जीवन में अपंग होकर प्रवेश करना और परमेश्वर की दृष्टि में सुन्दर होना इससे बेहतर है कि हम मनुष्य की दृष्टि में सुन्दर लगें और परमेश्वर की दृष्टि में अपंग। शुरू-शुरू में, अपने आत्मा के द्वारा, यीशु मसीह को आपको बहुत से ऐसे काम करने से रोकना पड़ता है, जो सबके लिए उचित होंगे लेकिन आपके लिए उचित नहीं। फिर भी, ध्यान रहे कि आप अपनी पाबन्दी का इस्तेमाल करके किसी और की आलोचना नहीं कर रहे हैं।

शुरू-शुरू में मसीही जीवन एक अपंग जीवन होता है, लेकिन पद 48 में यीशु ने हमें एक निष्कलंक सम्पूर्णता के जीवन की तस्वीर दी है - "तुम सिद्ध बनोगे, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।"

जून 30

तुरन्त करो !

अपने मुद्दई ...से झटपट मेल कर ले ...।
मत्ती 5:25।

इस पद में, यीशु मसीह ने यह कहकर एक बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त स्थापित किया है कि "जो तू जानता है कि तुझे करना पड़ेगा, उसे *अभी* कर। उस काम को जल्दी से कर। यदि तू ऐसा नहीं करेगा, तो एक ऐसी प्रक्रिया चालू हो जाएगी जिसे बदला नहीं जा सकता 'जब तक तू दर्द, पीड़ा और कष्ट के साथ कौड़ी-कौड़ी भर न दे'(5:26)। परमेश्वर के नियम अपरिवर्तनशील हैं और उनसे बचना असम्भव है। यीशु की शिक्षाएँ भेदती हुई हमारे अस्तित्व के बीच में जा पहुँचती हैं।

यह तो एक स्वाभाविक चीज़ है कि मैं यह सुनिश्चित करना चाहूँगा कि मेरा विरोधी मुझे मेरे सारे अधिकार दे। लेकिन यीशु कहता है कि यह ऐसा मामला है जिससे बचना असम्भव है और जिसका महत्त्व अनन्त है, कि मैं अपने विरोधी का कर्ज़ चुका दूँ। हमारे प्रभु के दृष्टिकोण से, यह महत्त्वपूर्ण नहीं कि मेरे साथ धोखा किया गया है या नहीं, लेकिन यह ज़रूर महत्त्वपूर्ण है कि मैं किसी के साथ धोखा न करूँ। क्या मैं अपने अधिकारों के लिए लड़ रहा हूँ, या मैं वह चुकाने को तैयार हूँ जिसका मैं यीशु की दृष्टि में देनदार हूँ ?

यह काम झटपट करें - अपने आप को अभी न्याय के लिए लाएँ। नैतिक और आत्मिक मामलों में आपको तुरन्त कार्यवाही करनी चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे, तो एक अनिवार्य, कठोर प्रक्रिया काम करने लग जाएगी। परमेश्वर ने निश्चय कर लिया है कि अपने बालक को बर्फ़ की तरह शुद्ध, साफ़, और सफ़ेद बनाएगा, और जब तब उसकी शिक्षा के प्रति कोई भी अनाज्ञाकारिता रहेगी, वह अपने आत्मा को यह अनुमति देगा कि वह हमें आज्ञाकारी बनाने के लिए किसी भी ज़रूरी प्रक्रिया का इस्तेमाल करे। जब हम यह साबित करने पर अड़ जाते हैं कि हम सही हैं, तो इससे लगभग हमेशा यह साबित होता है कि कहीं न कहीं अनाज्ञाकारिता का मुद्दा है। इसीलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं कि परमेश्वर का आत्मा इतने बलपूर्वक हमसे आग्रह करता है कि हम लगातार ज्योति में रहें (यूहन्ना 3:19-21 देखें)।

"अपने मुद्दई ...से झटपट मेल कर ले ..." क्या आप किसी के साथ सम्बन्ध में अचानक किसी विशेष स्थिति पर पहुँच गए हैं, और पाते हैं कि आपके मन में क्रोध है। जल्दी से उसे मान लें - परमेश्वर के सामने सब ठीक-ठाक कर लें। उस व्यक्ति के साथ मेल-मिलाप कर लें - यह *काम अभी करें!*

जुलाई 1

अनिवार्य दण्ड

जब तक तू कौड़ी कौड़ी भर न दे तब तक वहाँ से छूटने न पाएगा।
मत्ती 5:26।

ऐसा कोई स्वर्ग नहीं जिसके एक छोटे से कोने में नरक हो। परमेश्वर ने आपको शुद्ध, पवित्र, और सही बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया है और वह आपको पवित्र आत्मा के बारीकी से किए गए परीक्षण से एक पल के लिए भी बचने न देगा। जब उसने आपको दोषी ठहराया, तो तुरन्त न्याय के लिए आने का आग्रह किया, लेकिन आपने उसकी एक न सुनी। फिर वह अनिवार्य प्रक्रिया चालू हो गई जो अनिवार्य दण्ड लेकर आई। अब आप "बन्दीगृह में डाल दिए गए हैं, (और) ... जब तक आप कौड़ी-कौड़ी भर न दें, तब तक वहाँ से छूटने न पाएँगे" (मत्ती 5:25-26)। फिर भी आप पूछते हैं, "क्या यह दया और प्रेम का परमेश्वर है ?" जब इसे परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखा जाता है, तो यह प्रेम की एक शानदार सेवकाई है। परमेश्वर आपको शुद्ध, निष्कलंक, और बेदाग़ बनाकर लाएगा, लेकिन वह चाहता है कि आप उस स्वभाव को पहचानें जिसे आप प्रदर्शित कर रहे थे - यानि अपने प्रति अपने अधिकार की माँग करनेवाले स्वभाव को। जिस पल आप तैयार हो जाएँगे कि परमेश्वर आपके स्वभाव को बदल दे, उसी पल उसका पुनः सृष्टि करनेवाला सामर्थ्य काम करना शुरू कर देगा। और जिस पल आप को एहसास होगा कि परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि आपको अपने साथ सही सम्बन्ध में लाए, वह सही मार्ग पकड़ने में आपकी मदद करने के लिए कोई कसर बाकी न छोड़ेगा। अभी फ़ैसला करें और यह कहें कि "हाँ प्रभु, मैं वह पत्र *ज़रूर* लिखूँगा," या मैं *अभी* उस व्यक्ति से मेल-मिलाप करूँगा,"।

यीशु मसीह के ये उपदेश आपकी इच्छा और आपके विवेक के लिए दिए गए, आपके दिमाग़ के लिए नहीं। यदि आप अपने दिमाग़ से पहाड़ी उपदेश के इन पदों पर विवाद करेंगे, तो आप अपने हृदय के प्रति इनके आकर्षण को मन्द कर देंगे।

यदि आपके मन में यह प्रश्न उठता है कि, "पता नहीं मैं परमेश्वर के साथ आत्मिक रूप से क्यों नहीं बढ़ रहा हूँ?" तो अपने आप से पूछें कि परमेश्वर के दृष्टिकोण से, क्या आप अपना कर्ज़ चुका रहे हैं। जो आपको एक न एक दिन करना ही पड़ेगा, उसे *अभी* करें। हर नैतिक प्रश्न या बुलाहट अपने पीछे एक "करना चाहिए" लेकर आती है - यह बोध कि हमें क्या करने की ज़रूरत है।

जुलाई 2

शिष्यता की शर्तें

यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहनों
वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने...और जो कोई अपना क्रूस न उठाए;
और मेरे पीछे न आए...इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे,
तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
लूका 14:26-27, 22।

यदि एक चेले के जीवन के सबसे क़रीबी सम्बन्ध यीशु मसीह के अधिकारों का विरोध करते हैं, तो हमारे प्रभु की माँग यह है की हम तुरन्त उसकी आज्ञा मानें। शिष्यता का अर्थ है एक व्यक्ति, यानि हमारे प्रभु यीशु मसीह, के प्रति व्यक्तिगत, जोशीली भक्ति। एक व्यक्ति के प्रति भक्ति और सिद्धान्तों या धर्म के काम के प्रति भक्ति में ज़मीन-आसमान का फ़र्क होता है। हमारे प्रभु ने कभी धर्म के काम के पक्ष में प्रचार नहीं किया - उसने सिर्फ़ अपने प्रति भक्ति के पक्ष में प्रचार किया। एक चेला होने का अर्थ है ऐसा समर्पित दास होना जो प्रभु यीशु के लिए अपने प्रेम से प्रेरित हो। हम में से बहुत से लोग जो अपने आप को मसीही कहते हैं, वास्तव में यीशु मसीह को समर्पित नहीं हैं। पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं जिस के पास प्रभु यीशु के लिए यह जोशीला प्रेम हो यदि उसे यह प्रेम पवित्र आत्मा से न मिला हो। हम उसकी प्रशंसा कर सकते हैं, उसका आदर-सम्मान कर सकते हैं, लेकिन अपने बल पर उससे प्रेम नहीं कर सकते। वह एकमात्र व्यक्ति जो प्रभु यीशु से प्रेम करता है, पवित्र आत्मा है और उसी ने "परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला" है (रोमियों 5:5)। जब कभी भी पवित्र आत्मा आपके द्वारा यीशु को महिमा देने का मौका देखेगा, वह आपके पूरे अस्तित्व को ले लेगा और यीशु मसीह के प्रति दमकती हुई भक्ति के साथ आपको प्रज्वलित कर देगा।

मसीही जीवन एक ऐसा जीवन है जिसकी विशेषता है सच्ची और अनायास होनेवाली रचनात्मकता। इस कारण एक चेले पर वही दोष लगाया जा सकता है जो यीशु मसीह पर लगाया गया, यानि हमेशा एकरूप न होने का दोष। लेकिन यीशु मसीह परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में हमेशा एकरूप रहा, और एक मसीही को अपने अन्दर कठोर, न झुकनेवाले सिद्धान्तों के प्रति एकरूप नहीं होना चाहिए, बल्कि परमेश्वर के पुत्र के जीवन के साथ अपने सम्बन्ध में एकरूपता दिखानी चाहिए। लोग अपने आप को अपने सिद्धान्तों में उण्डेल देते हैं, और इससे पहले कि वे यीशु मसीह को समर्पित हो सकें, परमेश्वर को उनके पहले से बने विचारों में विस्फोट करके उन्हें उन विचारों से बाहर निकालना पड़ता है।

जुलाई 3

व्यक्तिगत पाप का केन्द्रीकरण

हाय ! हाय! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ ...।
यशायाह 6:5।

जब मैं परमेश्वर की उपस्थिति में आता हूँ, तो मुझे अनिश्चित रूप से पापी होने का एहसास नहीं होता, बल्कि मुझे अचानक यह एहसास होता है कि मेरा सारा ध्यान अपने जीवन के एक विशेष क्षेत्र में पाप के केन्द्रीकरण की ओर जा रहा है। एक व्यक्ति आसानी से कह सकता है, "हाँ, मैं जानता हूँ कि मैं पापी हूँ," लेकिन जब वह परमेश्वर की उपस्थिति में आता है, तो ऐसा कह देने से बच कर नहीं निकल सकता। हमारा दोषी होने का एहसास हमारे किसी ख़ास पाप पर केन्द्रित हो जाता है, और यशायाह की तरह हमें एहसास होता है कि वास्तव में हम क्या हैं। यह हमेशा इस बात का चिह्न होता है कि एक व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में है। ऐसे समय पर, पाप का कोई अनिश्चित सा एहसास नहीं होता, बल्कि सारा ध्यान जीवन के किसी ख़ास, व्यक्तिगत क्षेत्र में पाप के केन्द्रीकरण की ओर जाता है। पवित्र आत्मा हमारा ध्यान जिस बात की ओर ले गया है, परमेश्वर उस ही बात के लिए हमें क़ायल करना शुरू कर देता है। यदि हम समर्पण कर देंगे, और उस पाप के बारे में उसके द्वारा क़ायल किए जाने के अधीन हो जाएँगे, तो वह हमें वहाँ ले जाएगा जहाँ वह पाप के विस्तृत मूल स्वभाव को प्रकट कर सकेगा। यही वह तरीका है जिसके द्वारा परमेश्वर हमेशा हमारे साथ व्यवहार करता है जब हम उसकी उपस्थिति के प्रति जागरूक होते हैं।

व्यक्तिगत पाप के केन्द्रीकरण की ओर हमारे ध्यान को ले जाए जाने का अनुभव, सबसे बड़े सन्त से लेकर सबसे बुरे पापी तक, हर एक के जीवन में सच्चा होता है। जब एक व्यक्ति अनुभव की सीढ़ी चढ़ना शुरू करता है, तो वह कह सकता है कि, "मुझे नहीं पता कि मैंने क्या ग़लती की है," लेकिन परमेश्वर का आत्मा उसे कोई निश्चित और विशेष चीज़ दिखाएगा। परमेश्वर की पवित्रता के बारे में यशायाह के दर्शन का प्रभाव यह हुआ कि उसका ध्यान इस तथ्य की ओर ले जाया गया कि वह "अशुद्ध होंठवाला मनुष्य" है। "उस ने उस से मेरे मुह को छूकर कहा, 'देख, इस ने तेरे होंठों को छू लिया है, इसलिए तेरा अधर्म दूर हो गया, और तेरे पाप क्षमा हो गए' " (6:7)। पवित्र करनेवाली आग को वहाँ लगाना पड़ा जहाँ पाप केन्द्रित था।

जुलाई 4

परमेश्वर के महान ''मत'' में से एक

मत कुढ़, उस से बुराई ही निकलेगी।
भजन संहिता 37:8।

कुढ़ने का अर्थ है मानसिक या आत्मिक रूप से उखड़ा हुआ होना। ''मत कुढ़'' कहना एक बात है, लेकिन ऐसा स्वभाव रखना जिसमें आप कुढ़ नहीं सकते, अलग ही बात है। यह कहना तो बहुत आसान है कि ''यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसका आस्रा रख'' (37:8) जब तक कि हमारा अपना छोटा सा संसार उलट नहीं जाता, और बहुत से दूसरे लोगों की तरह हमें भी मानसिक उलझन और पीड़ा में नहीं रहना पड़ता। क्या ऐसे समय में ''यहोवा के सामने चुपचाप रहना'' सम्भव है ? यदि यह ''मत'' यहाँ काम नहीं आता, तो यह कहीं भी काम नहीं आएगा। इस ''मत'' को हमारे कठिनाई और निश्चितता के दिनों के साथ-साथ हमारे शान्ति के दिनों में भी काम आना चाहिए, नहीं तो यह कहीं भी काम नहीं आएगा। और यदि यह आपके विशेष मामले में काम नहीं आएगा, तो किसी और के लिए भी काम न आएगा। यहोवा के सामने चुपचाप रहना आपकी बाहरी परिस्थितियों पर नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध पर निर्भर होता है।

चिन्ता करने का परिणाम हमेशा पाप होता है। हम सोचते हैं कि थोड़ी सी चिन्ता सिर्फ़ इस बात का संकेत देती है कि वास्तव में हम कितने बुद्धिमान हैं, लेकिन वास्तव में यह इस बात का बेहतर संकेत देती है कि असल में हम कितने दुष्ट हैं। कुढ़न मनमानी करने के हमारे संकल्प से पैदा होती है। हमारे प्रभु ने कभी चिन्ता नहीं की क्योंकि उसका उद्देश्य अपनी योजनाओं को पूरा करना नहीं, बल्कि परमेश्वर की योजनाओं को पूरा करना था। परमेश्वर के बालक के लिए, कुढ़ना दुष्टता होती है।

क्या आप अपने मूर्ख प्राण को इस विचार का सहारा देते रहे हैं कि आपकी परिस्थितियों का निपटारा करना परमेश्वर के वश की बात नहीं ? अपने सारे मतों और अनुमानों को किनारे रख दें और ''सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएँ'' (भजन संहिता 91:1)। परमेश्वर को बताएँ कि जो बातें आपको चिन्तित करती हैं, उनके बारे में आप कुढ़ेंगे नहीं। हमारे कुढ़ने और चिन्ता करने का कारण होता है परमेश्वर के बिना योजना बनाना।

जुलाई 5

परमेश्वर के बिना योजना न बनाएँ

अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।
भजन संहिता 37:5।

परमेश्वर के बिना योजना न बनाएँ। लगता है कि परमेश्वर के पास हमारे द्वारा बनाई गई उन योजनाओं को बिगाड़ने का एक आनन्दप्रद तरीका है, जो हमने उसकी ओर ध्यान दिए बिना बनाई हैं। हम अपने आप को ऐसी परिस्थितियों में फँसा देते हैं जो परमेश्वर के द्वारा नहीं चुनी गई थीं, और हमें अचानक यह एहसास होता है कि हम अपनी योजनाएँ उसके बिना बना रहे थे - कि अपने जीवन के लिए योजना बनाते समय, हमने उसे एक अत्यावश्यक, जीवन्त घटक नहीं समझा। और फिर भी जो एकमात्र बात हमें चिन्ता करने की सम्भावना तक से बचाएगी, वह यह है कि हम परमेश्वर को सबसे बड़ा घटक समझते हुए अपनी सारी योजनाओं में लाएँ।

आत्मिक मामलों में परमेश्वर को पहला स्थान देना हमारे लिए सामान्य है, लेकिन हम सोचते हैं कि अपने जीवन के व्यावहारिक, प्रतिदिन के मुद्दों में उसे पहला स्थान देना अनुचित और अनावश्यक है। यदि हम यह समझते हैं कि परमेश्वर के क़रीब आने से पहले हमें अपना "आत्मिक मुखौटा" पहनना होगा, तो हम कभी उसके क़रीब नहीं आ पाएँगे। हम जिस हालत में हैं, हमें उसी हालत में आने की ज़रूरत है।

मन में बुराई का ख़्याल रखते हुए योजनाएँ न बनाएँ। क्या परमेश्वर सचमुच चाहता है कि हम योजनाएँ बनाते समय अपने चारों ओर पाई जानेवाली बुराइयों को ध्यान में न रखें ? "प्रेम ...बुरा नहीं मानता" (1 कुरिन्थियों 13:4-5)। प्रेम बुराई के अस्तित्व के बारे में अनजान नहीं है, लेकिन योजना बनाते समय, वह इसका ख़्याल नहीं रखता। जब हम परमेश्वर से अलग थे, तो हम बुराई का ख़्याल रखते हुए अपनी सारी योजनाएँ बनाते थे, और इस दृष्टिकोण से अपने कार्य के बारे में तर्क-वितर्क करते थे।

दुर्दिन का ख़्याल रखते हुए योजनाएँ न बनाएँ। यदि आप सचमुच मसीह पर भरोसा रखें हुए हैं, तो दुर्दिन के लिए जमाखोरी नहीं करेंगे। यीशु ने कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो ..." (यूहन्ना 14:1)। परमेश्वर आपके मन को व्याकुल होने से नहीं रोकेगा। यह एक आज्ञा है - "न होने दो ..." ऐसा करने के लिए, अपने आपको लगातार उठाते रहें, चाहे आप दिन में सौ बार भी क्यों न गिरें, जब तक कि आप परमेश्वर को पहला स्थान देने की और योजना बनाते समय उसे ध्यान में रखने की आदत में न पड़ जाएँ।

जुलाई 6

दर्शनों का वास्तविकता बन जाना

मृगतृष्णा ताल बन जाएगी...।
यशायाह 35:7 ।

किसी चीज़ के एक वास्तविकता बनने से पहले, हमें हमेशा उसका दर्शन होता है। जब हमें यह एहसास होता है कि दर्शन वास्तविक तो है लेकिन अभी तक हम में वास्तविकता नहीं बना है, उस समय शैतान अपनी परीक्षाओं के साथ हमारे पास आता है, और हम यह कहना चाहते हैं कि आगे बढ़ने का फ़ायदा ही क्या है। बजाय इसके कि दर्शन हमारे लिए वास्तविकता बन जाए, हम अपमान की घाटी में प्रवेश कर जाते हैं।

जीवन एक अक्रिय कच्ची धातु नहीं,
बल्कि निराशा की गहराइयों से खोदकर निकाला हुआ लोहा है
जिसे दुखों के हथौड़े से पीटा गया है,
ताकि उसे सही आकार देकर इस्तेमाल किया जाए।

परमेश्वर हमें एक दर्शन देता है, और उसके बाद हमें नीचे घाटी में ले जाता है ताकि पीट-पीटकर हमें उस दर्शन के आकार के अनुकूल बनाए। हम में से बहुत से लोग हैं जो इसी घाटी में हार मान लेते हैं और कमज़ोर होकर गिर पड़ते हैं। यदि हम सिर्फ़ धीरज धरे रहें तो परमेश्वर का दिया हुआ हर दर्शन वास्तविकता बन जाएगा। ज़रा उस ढेर से खाली समय के बारे में सोचें जो परमेश्वर के पास है! वह कभी जल्दी में नहीं होता। लेकिन हम हमेशा जल्दबाज़ी करते हैं। जब हम दर्शन के प्रकाश और तेज में ही होते हैं, तो काम करने के लिए निकल पड़ते हैं, लेकिन तब तक दर्शन हम में एक वास्तविकता नहीं होता। परमेश्वर को हमें घाटी में ले जाना पड़ता है, और हमें सही आकार में पीटने के लिए, हमें आग और पानी में से ले जाना पड़ता है, जब तक कि हम उस स्थिति में नहीं पहुँच जाते जहाँ वह दर्शन की वास्तविकता के बारे में हमपर भरोसा नहीं रख सकता। जब से परमेश्वर ने हमें दर्शन दिया है, तब से वह काम में लगा हुआ है। वह हमें उस लक्ष्य के आकार में ला रहा है जो उसने हमारे लिए ठहराया है, और फिर भी हम बार-बार महान "मूर्तिकार" के हाथ से बच निकलने की कोशिश करते हैं ताकि अपने आप को पीट-पीटकर अपने ही लक्ष्य के अनुसार आकार दे सकें।

परमेश्वर जो दर्शन देता है, वह किसी हवाई महल का नहीं जहाँ तक पहुँचना असम्भव हो, बल्कि उस काम का दर्शन होता है जो परमेश्वर आपसे यहाँ, पृथ्वी पर करवाना चाहता है। महान कुम्हार को अनुमति दें कि वह आपको अपने चक्र पर रखे और अपनी इच्छा के अनुसार घुमाए। फिर, जिस निश्चयता से परमेश्वर परमेश्वर है, और आप आप हैं, उसी निश्चयता से आप बिलकुल दर्शन के अनुरूप बन जाएँगे। लेकिन इस प्रक्रिया में हताश न हों। यदि आपको परमेश्वर से कभी कोई दर्शन मिला है, तो आप उससे कम स्तर पर सन्तुष्ट होने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर ऐसा नहीं होने देगा।

जुलाई 7

श्रेष्ठता के लिए सब प्रयास कठिन होते हैं।

सकेत फाटक से प्रवेश करो,... क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग
जो जीवन को पहुँचाता है ..."
मत्ती 7:13-14।

यदि हमें यीशु के चेले होकर जीना है, तो हमें याद रखना होगा कि श्रेष्ठता के लिए सब प्रयास कठिन होते हैं। मसीही जीवन कठिन तो होता है, लेकिन इसकी कठिनाई न तो हमें कमज़ोर करती है और न ही हार मानने पर मजबूर, बल्कि यह हमें विजयी होने के लिए उत्तेजित करती है। क्या हम यीशु मसीह के आश्चर्यजनक उद्धार की इतनी क़दर करते हैं कि परमेश्वर के सर्वोच्च के लिए अपना सर्वोत्तम हो सकें - उसकी महिमा के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ ?

परमेश्वर अपने उत्तम अनुग्रह से यीशु के प्रायश्चित के द्वारा लोगों का उद्धार करता है, "और परमेश्वर ही है जिस ने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, और दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है" (फिलिप्पियों 2:13)। लेकिन हमें अपने प्रतिदिन के व्यावहारिक जीवन में इस उद्धार के "कार्य को पूरा करते रहना है" (फिलिप्पियों 2:12)। यदि हम केवल उसके छुटकारे के आधार पर वह करना शुरू कर दें जिसकी वह आज्ञा देता है, तो हम पाएँगे कि हम इसे कर सकते हैं। यदि हम असफल होते हैं, तो यह इसलिए है क्योंकि हमने अभी तक उसपर अमल करना शुरू नहीं किया है जो परमेश्वर ने हमारे अन्दर रखा है। लेकिन एक संकट यह प्रकट कर देगा कि हम इसपर अमल करते रहें हैं या नहीं। यदि हम परमेश्वर के आत्मा की आज्ञा मानेंगे और परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा जो हमारे अन्दर रखा है, उसे अपने शारीरिक जीवन में अमल में लाएँगे, तो संकट आने पर हम पाएँगे कि परमेश्वर के अनुग्रह के साथ-साथ हमारा अपना स्वभाव भी हमारा साथ दे रहा है।

परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि वह हमें करने के लिए कठिन काम देता है ! उसका उद्धार एक आनन्दमय चीज़ है, लेकिन साथ में यह ऐसी चीज़ भी है जिसमें बहादुरी, साहस, और पवित्रता की ज़रूरत होती है। यह हमारी परीक्षा करता है कि हम कितने योग्य हैं। यीशु "बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुँचा रहा है" (इब्रानियों 2:10), और परमेश्वर हमें पुत्र होने की माँगों से बचाकर नहीं रखेगा। परमेश्वर का अनुग्रह ऐसे स्त्री-पुरुषों को बनाता है जिनमें यीशु मसीह के परिवार की समानता दिखाई देती है। जीवन की वास्तविकताओं में यीशु के शिष्य का श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए ज़बरदस्त अनुशासन की ज़रूरत होती है। और हमारे लिए हमेशा ज़रूरी होता है कि हम श्रेष्ठ जीवन जीने का प्रयास करें।

जुलाई 8

विश्वासयोग्य होने की इच्छा

...आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे ...।
यहोशू 24:15 ।

एक व्यक्ति की इच्छा सम्पूर्ण व्यक्ति की क्रियाओं में साकार होती है । मैं अपनी इच्छा को *त्याग* नहीं सकता - मुझे उसपर कार्यवाही करके उसे व्यवहार में लाना है । मुझे आज्ञा मानने की *इच्छा* करनी है, और मुझे परमेश्वर के आत्मा को ग्रहण करने की *इच्छा* करनी है । जब परमेश्वर मुझे सत्य का दर्शन देता है, तो यह सवाल कभी नहीं उठता कि परमेश्वर क्या करेगा, बल्कि सवाल सिर्फ़ यह उठता है कि मैं क्या करूँगा । परमेश्वर हम में से हर एक के सामने कुछ बड़े प्रस्ताव और कुछ बड़ी योजनाएँ रखता रहा है । सबसे अच्छा काम यह होगा कि आप याद करें कि परमेश्वर के द्वारा छूए जाने से पहले आप क्या करते थे । वह घड़ी याद करें जब आपका उद्धार हुआ था, या जब आपने पहली बार यीशु को पहचाना था, या आपको किसी सत्य का एहसास हुआ था । उस समय अपनी स्वामिभक्ति परमेश्वर को समर्पित करना कितना आसान था । जब भी परमेश्वर का आत्मा आपके सामने कोई नया प्रस्ताव लाता है, तुरन्त उन घड़ियों को याद करें ।

"...आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे ...।" आपके चुनाव को एक समझ-बूझकर किया गया फ़ैसला होना चाहिए - यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसमें आप अपने आप बह जाएँगे । और जब तक आप फ़ैसला नहीं कर लेंगे, तब तक आपके जीवन की बाकी सारी बातें कुछ समय के लिए स्थगित हो जाएँगी । यह प्रस्ताव आपके और परमेश्वर के बीच में होता है - इस विषय में "माँस और लोहू से सलाह" न लें (गलातियों 1:16) । हर नए प्रस्ताव के साथ, हमारे चारों ओर के लोग और अधिक अलग होते हुए जान पड़ेंगे, और यहीं पर तनाव बढ़ना शुरू होता है । परमेश्वर ऐसा होने देता है कि उसके दूसरे पवित्र लोगों की राय से आपको फ़र्क पड़े, लेकिन इसके बावजूद भी आपको इसका और अधिक एहसास होता जाता है कि लोग आपके द्वारा लिए जानेवाले कदम को नहीं समझ रहे हैं । आपको यह पता चलाने का कोई अधिकार नहीं कि परमेश्वर आपको कहाँ ले जा रहा है - जो एकमात्र चीज़ परमेश्वर आपको समझाएगा, वह वह खुद है ।

उससे खुल्लम-खुल्ला घोषित कर दें कि "मैं विश्वासयोग्य रहूँगा ।" लेकिन याद रखें कि जैसे ही आप यीशु मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहने का फ़ैसला करेंगे, आप "आप ही (अपने विरुद्ध) साक्षी हो जाएँगे...।" (यहोशू 24:22) । दूसरे मसीहियों से सलाह-मशवरा न करें, बल्कि सरलता और स्वतन्त्रता से परमेश्वर के सामने घोषित करें कि "मैं तेरी सेवा करूँगा ।" विश्वासयोग्य होने की इच्छा करें - और दूसरे लोगों को भी विश्वासयोग्य होने के लिए श्रेय दें ।

जुलाई 9

क्या आप अपने आप को जाँचेंगे ?

यहोशू ने लोगों से कहा, 'तुमसे परमेश्वर की सेवा नहीं हो सकती ...।'
यहोशू 24:19।

क्या परमेश्वर के सिवा किसी और व्यक्ति या चीज़ पर आपका थोड़ा सा भी भरोसा है ? क्या आपके अन्दर किसी गुण पर या कुछ विशेष परिस्थितियों पर भरोसा बचा है ? जिस नए प्रस्ताव या योजना को परमेश्वर ने आपके सामने रखा है, क्या आप उसके विषय में किसी भी तरह से अपने आप पर भरोसा रख रहे हैं ? क्या आप इन भेदनेवाले प्रश्नों के द्वारा अपने आप को जाँचेंगे ? यह कहना वास्तव में सच है कि "मैं एक पवित्र जीवन नहीं जी सकता," लेकिन आप यह फ़ैसला कर सकते हैं कि यीशु मसीह को मौका देंगे कि वह आपको पवित्र बनाए। आपसे "परमेश्वर की सेवा नहीं हो सकती ..." - लेकिन आप अपने आप को उस सही स्थिति में रख सकते हैं जहाँ परमेश्वर का सर्वशक्तिमान सामर्थ्य आपमें से होकर बहे। क्या परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध इतना है कि आप यह प्रत्याशा कर सकें कि वह अपने अद्‌भुत जीवन को आप में प्रदर्शित करेगा ?

"लोगों ने यहोशू से कहा, 'नहीं; हम यहोवा ही की सेवा करेंगे !" (24:21)। यह जल्दबाज़ी में किया गया काम नहीं, बल्कि सोच-समझकर की गई प्रतिबद्धता है। हम कहते हैं, "लेकिन परमेश्वर इस काम के लिए *मुझे* तो कभी नहीं बुला सकता है। मैं तो इसके लिए बिलकुल अयोग्य हूँ। यह बुलाहट *मेरे* लिए नहीं हो सकती।" यह बुलाहट आप ही के लिए है, और आप जितने ज़्यादा दुर्बल और अयोग्य हैं, उतना ही अच्छा है। जो व्यक्ति अभी भी अपने अन्दर किसी चीज़ पर भरोसा रख रहा है, वह यह कहने की स्थिति से अभी बहुत दूर है कि, "मैं तो यहोवा ही की सेवा करूँगा।"

हम कहते हैं, "काश, मैं इस बात पर विश्वास कर सकता !" सवाल तो यह है कि, "क्या मैं विश्वास *करूँगा ?*" इसीलिए तो यीशु मसीह ने अविश्वास के पाप पर इतना बल दिया। "उस ने वहाँ उन के अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ्य के काम नहीं किए" (मत्ती 13:58)। यदि हम सचमुच यह मान लेंगे कि परमेश्वर जो कहता है, वह मज़ाक में नहीं कहता, तो ज़रा सोचें कि हम कैसे हो जाएँगे! क्या मेरी इतनी हिम्मत है कि मैं अपने लिए परमेश्वर को वह सब होने दूँ जो वह कहता है कि वह होगा ?

जुलाई 10

आत्मिक रूप से आलसी पवित्र जन

और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिए एक दूसरे की चिन्ता किया करें,
और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें ...।
इब्रानियों 10:24-25।

हम सब में आत्मिक रूप से आलसी पवित्र लोग होने की क्षमता है। हम जीवन के कठिन मार्गों से दूर रहना चाहते हैं, और हमारा प्रमुख उद्देश्य यह है कि हम अपने लिए संसार से हटकर एक एकान्तवास सुरक्षित करें। इब्रानियों 10 के इन पदों में जो विचार रखे गए हैं, वे एक दूसरे को उत्तेजित करने और एक साथ रखने के बारे में हैं। इन दोनों के लिए पहलकदमी की ज़रूरत है - हमें अपने आप की अनुभूति की ओर नहीं, बल्कि मसीह की अनुभूति की ओर पहला कदम उठाने के लिए तैयार होने की ज़रूरत है। एक रूखा, ग़ैर-मिलनसार, एकान्त जीवन मसीह के द्वारा सिखाई गई आत्मिकता के बिलकुल विपरीत है।

हमारी आत्मिकता की सच्ची परख तब होती है जब हम अन्याय, बदनामी, अकृतज्ञता, और मन की खलबली का सामना करते हैं, क्योंकि ये सब बातें हमें आत्मिक रूप से आलसी बना देती है। जब हमारी परीक्षा होती है, तो हम एक शान्त और एकान्त स्थान पाने के उद्देश्य से प्रार्थना करने और बाइबल पढ़ने का इस्तेमाल करना चाहते हैं। हम परमेश्वर का इस्तेमाल सिर्फ़ शान्ति और आनन्द पाने के लिए करते हैं। हम यीशु मसीह की सच्ची अनुभूति की खोज नहीं, बल्कि उसका आनन्द लेने की खोज करते हैं। यह ग़लत दिशा में लिया जानेवाला पहला कदम होता है। ये सारी बातें जिनकी हम खोज कर रहे हैं, परिणाम होती हैं, जबकि हम इन्हें कारण बनाने की कोशिश करते हैं।

"मैं अपने लिए उचित समझता हूँ, कि... तुम्हें सुधि दिला दिलाकर उभारता रहूँ" (2 पतरस 1:13)। जब कोई ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर हमें उभारने के लिए इस्तेमाल कर रहा हो - ऐसा व्यक्ति जो आत्मिक सक्रियता से भरपूर हो, हमपर प्रहार करता है, तो इससे मन बड़ा व्याकुल हो जाता है। साधारण सक्रिय काम और आत्मिक सक्रियता एक ही चीज़ नहीं हैं। सक्रिय काम वास्तव में आत्मिक सक्रियता का नकली रूप हो सकता है। आत्मिक आलस्य का असली ख़तरा यह होता है कि हम नहीं चाहते कि हमें उत्तेजित किया जाए - हम तो सिर्फ़ संसार से आत्मिक सेवानिवृत्ति चाहते हैं। लेकिन यीशु मसीह सेवानिवृत्ति के विचार को कभी प्रोत्साहन नहीं देता - वह कहता है, "मेरे भाइयों से जाकर कहो ..." (मत्ती 28:10)।

जुलाई 11

आत्मिक रूप से उत्साही पवित्र जन

कि मैं उस को... जानूँ।
फिलिप्पियों 3:10।

एक पवित्र जन को अपने आप की अनुभूति की ओर नहीं, बल्कि मसीह को जानने की ओर पहला कदम उठाना चाहिए। आत्मिक रूप से उत्साही पवित्र जन कभी यह नहीं सोचता कि परिस्थितियाँ संयोग से हो जाती हैं, न ही वह यह सोचता है कि उसका जीवन दो, यानि, सांसारिक और आत्मिक भागों में बँटा हुआ है। वह अपने आप को जिस भी परिस्थिति में पाता है, उसे यीशु मसीह के बारे में और जानकारी पाने के साधन के रूप में देखता है, और उसमें एक स्वच्छन्द त्याग और सम्पूर्ण समर्पण की मनोवृत्ति पाई जाती है। पवित्र आत्मा ने तय कर लिया है कि हमें अपने जीवन के हर क्षेत्र में यीशु मसीह का एहसास होगा, और जब तक ऐसा नहीं होता, वह हमें बार-बार उसी स्थान पर वापस लाता रहेगा। अपने आप की अनुभूति सिर्फ़ अच्छे कामों को महिमा देती है, जब कि परमेश्वर का पवित्र जन अपने अच्छे कामों के द्वारा यीशु मसीह को महिमा देता है। हम चाहे कुछ भी कर रहे हों - हमारे खाने, पीने, या चेलों के पाँव धोने में भी - हमें उसमें यीशु मसीह की अनुभूति करने और उसे पहचानने में पहलकदमी करनी होगी। हमारे जीवन के हर पक्ष का प्रतिपक्ष यीशु के जीवन में होता है। सबसे तुच्छ कामों में भी हमारे प्रभु को परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध का एहसास था। "यीशु ने यह जान कर कि ...मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ, और परमेश्वर के पास जाता हूँ, ...अंगोछा लिया और ...चेलों के पाँव ...धोने लगा" (यूहन्ना 13:3-5)।

आत्मिक रूप से उत्साही पवित्र जन का लक्ष्य होता है, " कि मैं उस को... जानूँ।" क्या मैं उसे वहाँ जानता हूँ जहाँ मैं आज हूँ ? यदि नहीं, तो मैं परमेश्वर को निराश कर रहा हूँ। मैं यहाँ अपने आप की अनुभूति करने के लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह को जानने के लिए हूँ। मसीही कार्य में हमारी पहलकदमी और प्रेरणा ज़्यादातर इस एहसास का परिणाम होती हैं कि बहुत सा काम किया जाना है और इस हमें ही करना है। लेकिन आत्मिक रूप से उत्साही पवित्र जन का ऐसा रवैया कभी नहीं होता। उसका लक्ष्य यह होता है कि उसे सब परिस्थितियों में यीशु मसीह की अनुभूति हो।

जुलाई 12

आत्मिक रूप से स्वार्थी कलीसिया

जब तक कि हम मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएँ।
इफिसियों 4:13।

मेल मिलाप का अर्थ है सारी मानव जाति और परमेश्वर के बीच सम्बन्ध को बहाल करना, उसे परमेश्वर की योजना के अनुसार स्थिति में ले आना। छुटकारे में यीशु मसीह ने यह ही किया। जब कलीसिया स्वार्थी हो जाती है और उसकी रुचि सिर्फ़ अपनी संस्था के विकास में होती है, तो वह आत्मिक नहीं रहती। परमेश्वर की योजना के अनुसार मानव जाति के मेल मिलाप का अर्थ यह होता है कि हम उसका एहसास न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में ही करें, बल्कि अपने सामूहिक जीवनों में भी। यीशु मसीह ने प्रेरितों और शिक्षकों को इसी उद्देश्य से भेजा - कि एक सामुदायिक व्यक्तित्व का एहसास किया जा सके। हम यहाँ इसलिए नहीं हैं कि अपने ही आत्मिक जीवन का विकास करें, या एक शान्त एकान्तवास का आनन्द लें। हम यहाँ इसलिए हैं ताकि यीशु मसीह की देह को बनाने के उद्देश्य से हमें उसका पूरा एहसास हो सके।

क्या मैं मसीह की देह को बना रहा हूँ या मेरी रुचि सिर्फ़ मेरे अपने ही व्यक्तिगत विकास में है ? यीशु मसीह के साथ मेरे व्यक्तिगत सम्बन्ध की प्रमुख बात यह है कि "मैं उसको ...जानूँ" (फिलिप्पियों 3:10)। मेरे लिए परमेश्वर की जो सिद्ध योजना है, उसे पूरा करने के लिए मेरे सम्पूर्ण समर्पण की ज़रूरत है। जब-जब मैं सिर्फ़ अपने लिए कुछ माँगता हूँ, यह सम्बन्ध बिगड़ जाता है। और जब भी मैं यह मान लूँगा और समझ जाऊँगा कि वास्तव में मेरी रुचि यीशु मसीह के एहसास में नहीं, बल्कि यह जानने में थी कि उसने मेरे लिए क्या किया है, तो मुझे बड़ी शर्मिन्दगी महसूस होगी।

मेरा लक्ष्य खुद परमेश्वर है, आनन्द या शान्ति नहीं,
आशीषें भी नहीं, पर खुद वह है, यानि, मेरा परमेश्वर।

क्या मैं अपने जीवन को इस मापदण्ड से नाप रहा हूँ या इससे छोटे मापदण्ड से ?

जुलाई 13

दर्शन की कीमत

जिस वर्ष उज्जियाह राजा मरा, मैं ने प्रभु को ...देखा।
यशायाह 6:1।

परमेश्वर के साथ हमारी आत्मा का व्यक्तिगत इतिहास अकसर हमारे जीवन में किसी सम्मानित व्यक्ति की मृत्यु का ब्यौरा होता है। परमेश्वर को बार-बार हमारे मित्रों को हटाकर उनकी जगह पर अपने आप को रखना पड़ता है, और यही वह समय होता है जब हम लड़खड़ाते हैं, असफल और निराश हो जाते हैं। यदि मैं इसके बारे में व्यक्तिगत रूप से सोचता हूँ कि उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद, जो मेरे लिए परमेश्वर का प्रतिनिधि था, क्या मैंने अपना सब कुछ त्याग दिया ? क्या मैं बीमार पड़ गया ? क्या मैं हताश हो गया ? या मैंने प्रभु को देखा ?

परमेश्वर का मेरा दर्शन मेरे चरित्र की अवस्था पर निर्भर होता है। मेरा चरित्र यह तय करता है कि सत्य मुझ पर प्रकट किया जा सकता है या नहीं। इससे पहले कि मैं कह सकूँ, "मैंने प्रभु को देखा," मेरे चरित्र में कुछ ऐसा होना चाहिए जो परमेश्वर की समानता के अनुकूल हो। जब तक मैं नए सिरे से जन्म नहीं लेता, और सचमुच परमेश्वर के राज्य को देखना शुरू नहीं करता, मैं सिर्फ़ अपने पक्ष के दृष्टिकोण ही से देखता हूँ। मुझे बाहरी घटनाओं को हटाकर भीतरी शुद्धता लाने के लिए परमेश्वर की शल्य चिकित्सा की ज़रूरत है।

आपकी प्राथमिकताएँ ये होनी चाहिए : पहले स्थान पर परमेश्वर, दूसरे स्थान पर परमेश्वर, तीसरे स्थान पर परमेश्वर, जब तक कि आपका जीवन हर समय परमेश्वर के आमने-सामने न रहे, और जब तक किसी और को ध्यान में रखना बन्द न हो जाए। ऐसा होने पर आपकी प्रार्थना यह होगी कि, "प्रिय परमेश्वर, सारे संसार में तुझे छोड़ और कोई नहीं है; तुझे छोड़ और कोई नहीं है।"

कीमत चुकाते रहें। परमेश्वर को देखने दें कि आप दर्शन के अनुसार जीने के लिए तैयार हैं।

जुलाई 14

सताव को सहना

मैं तुम से कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे
दहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।
मत्ती 5:39।

यह पद एक मसीही होने के अपमान को प्रकट करता है। साधारण जीवन में, यदि एक व्यक्ति थप्पड़ का जवाब थप्पड़ से नहीं देता, तो यह इसलिए होता है क्योंकि वह कायर है। लेकिन आत्मिक जीवन में, यदि वह बदला नहीं लेता, तो यह इस बात का सबूत होता है कि परमेश्वर का पुत्र उसमें है। जब आपका अपमान होता है, तो आपको सिर्फ़ बुरा मानने से ही नहीं बचना चाहिए, बल्कि आपको इस मौके का फ़ायदा उठाकर अपने जीवन में परमेश्वर के पुत्र को प्रदर्शित करना चाहिए। और आप यीशु के स्वभाव की नकल नहीं कर सकते - वह आपके जीवन में या तो है, या नहीं है। व्यक्तिगत अपमान एक पवित्र जन के लिए प्रभु यीशु की अविश्वास्य मधुरता को प्रकट करने का मौका बन जाता है।

पहाड़ी उपदेश की शिक्षा यह नहीं है कि "अपने कर्तव्य का पालन करो," बल्कि एक तरह से यह है कि "वह करो जो तुम्हारा कर्तव्य नहीं है।" यह आपका कर्तव्य नहीं कि आप दूसरा कोस जाएँ, या दूसरा गाल फेर दें, लेकिन यीशु ने कहा कि यदि हम उसके शिष्य हैं, तो हमेशा ये काम करेंगे। हम यह नहीं कहेंगे कि "अब मैं और नहीं कर सकता, और मुझे इतने ग़लत ढंग से प्रस्तुत किया गया है और ग़लत समझा गया है।" जब-जब मैं अपने अधिकारों के लिए लड़ता हूँ, मैं परमेश्वर के पुत्र का दिल दुखाता हूँ, जब कि यदि मैं प्रहार को खुद सह लूँ तो यीशु को चोट लगने से बचा सकता हूँ। "मसीह के क्लेशों की घटी ...अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ" (कुलुस्सियों 1:24) का वास्तविक अर्थ यही है। एक शिष्य को यह एहसास होता है कि उसका अपना मान-सम्मान नहीं, बल्कि उसके प्रभु का मान-सम्मान दाँव पर लगा हुआ है।

दूसरे व्यक्ति में धार्मिकता की तलाश न करें, लेकिन खुद धार्मिक बनना भी बन्द न करें। हम हमेशा न्याय की तलाश करते हैं, लेकिन पहाड़ी उपदेश की शिक्षा का सार है - न्याय की तलाश कभी न करो, लेकिन न्याय करना कभी न छोड़ो।

जुलाई 15

मेरे जीवन का आत्मिक मान और कर्तव्य

मैं यूनानियों का और अन्यजातियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूँ ।
रोमियों 1:14।

पौलुस यीशु मसीह का कर्जदार होने के एहसास से दबा हुआ था, और इसे व्यक्त करने के लिए उसने अपना सारा जीवन लगा दिया। पौलुस के जीवन की सबसे महान प्रेरणा यीशु मसीह के प्रति उसका यह दृष्टिकोण था कि यीशु उसका आत्मिक लेनदार है। क्या मैं उद्धार न पाई हुई हर आत्मा के विषय में यीशु का कर्जदार होने की यही भावना महसूस करता हूँ ? एक पवित्र जन होने के नाते, मेरा आत्मिक मान और कर्तव्य यह है कि मैं इन खोई हुई आत्माओं के सम्बन्ध में मसीह का कर्ज चुकाऊँ। अपने जीवन के छोटे से छोटे अंश के लिए, जिसकी कोई कीमत है, मैं यीशु मसीह के छुटकारे का कर्जदार हूँ। क्या मैं ऐसा कुछ कर रहा हूँ जिससे वह अपने छुटकारे की प्रकट होनेवाली वास्तविकता दूसरों के जीवन में ला सके ? मैं ऐसा तब ही कर सकूँगा जब परमेश्वर का आत्मा कर्जदार होने की यह भावना मेरे अन्दर डालेगा।

मैं दूसरे लोगों से श्रेष्ठ व्यक्ति नहीं हूँ - मैं यीशु मसीह का एक दास हूँ। पौलुस न कहा, "...तुम अपने नहीं हो ...तुम दाम देकर मोल लिए गए हो ..." (1 कुरिन्थियों 6:19-20)। पौलुस ने अपने आप को यीशु मसीह को बेच दिया और उसने मानो ऐसा कहा कि, "यीशु के सुसमाचार के कारण मैं पृथ्वी पर के सारे लोगों का कर्जदार हूँ; मैं सिर्फ़ इसलिए स्वतन्त्र हूँ ताकि पूरी तरह से उसका दास बन सकूँ।" जब आत्मिक मान और कर्तव्य का यह स्तर वास्तविक बन जाता है, तो एक मसीही के जीवन की विशेषता यही हो जाती है। अपने लिए प्रार्थना करना बन्द कर दें और दूसरों के लिए यीशु का दास बन जाएँ। वास्तविक जीवन में तोड़ी गई रोटी और उण्डेले गए दाखरस का सच्चा अर्थ यही है।

जुलाई 16

ईश्वरीय नियन्त्रण की धारणा

तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा ?
मत्ती 7:11।

इस अनुच्छेद में यीशु उन लोगों के लिए व्यवहार के नियम ठहरा रहा है जिनके पास उसका आत्मा है। वह हमसे आग्रह करता है कि हम सारी चीज़ों पर परमेश्वर के नियन्त्रण की धारणा से अपने मनों को भरा रखें, जिसका अर्थ यह है कि एक शिष्य को सम्पूर्ण भरोसे की और माँगने और ढूँढने की उत्सुकता की मनोवृति बनाकर रखनी चाहिए ।

अपने मन को इस विचार से भर दें कि परमेश्वर सचमुच है। और जब आपका मन सचमुच इस विचार से भर जाएगा, तो जब आप कठिनाइयों का सामना करेंगे, आप आसानी से याद रख सकेंगे कि "मेरे स्वर्गीय पिता को इसके बारे में सब कुछ पता है !" इसके लिए आपको कोई यत्न नहीं करना पड़ेगा, कठिनाइयों और अनिश्चितताओं के आने पर ऐसा सोचना आपके लिए स्वाभाविक हो जाएगा। ईश्वरीय नियन्त्रण की इस धारणा को प्रबलता से अपने मन में बनाने से पहले, आप विभिन्न लोगों के पास जाकर मदद लिया करते थे, लेकिन अब आप परमेश्वर के पास जाते हैं। यीशु उन लोगों के लिए व्यवहार के नियम ठहरा रहा है जिनके पास उसका आत्मा है, और यह नियम इस सिद्धान्त पर काम करता है : परमेश्वर मेरा पिता है, वह मुझसे प्रेम करता है, और मैं ऐसी किसी बात के बारे में नहीं सोच सकता जिसे वह भूल सकता है, तो फिर मैं चिन्ता क्यों करूँ ?

यीशु कहता है कि ऐसे समय भी होते हैं जब परमेश्वर आपके पास से अन्धकार को नहीं हटा सकता, लेकिन आपको परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। कभी-कभी परमेश्वर एक निर्दयी मित्र की तरह लगेगा, लेकिन वह ऐसा नहीं है; वह एक अन्यायी न्यायाधीश की तरह लगेगा, लेकिन वह ऐसा नहीं है। इस विचार को, कि सब बातों के पीछे परमेश्वर की बुद्धि है, प्रबल होने दें और बढ़ने दें। जीवन की छोटी से छोटी बात भी तब तक नहीं हो सकती जब तक उसके पीछे परमेश्वर की इच्छा न हो। इसलिए, आप उस पर पूरा भरोसा रखते हुए चैन और आराम से रह सकते हैं। प्रार्थना केवल माँगना ही नहीं होता, बल्कि मन की ऐसी प्रवृत्ति भी, जो वह वातावरण पैदा करती है जिसमें माँगना बिलकुल स्वाभाविक हो जाता है। "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा ..." (7:7)।

जुलाई 17

विश्वास का चमत्कार

मेरे वचन और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं ...।"
1 कुरिन्थियों 2:4।

पौलुस सबसे ऊँचे दर्जे का विद्वान और भाषणकर्ता था; यहाँ वह नम्रता की भावना से नहीं बोल रहा है, बल्कि यह कह रहा है कि, जब वह सुसमाचार का प्रचार करता था, तब यदि वह अपने भाषण की उत्कृष्ठता से लोगों को प्रभावित करता तो वह परमेश्वर के सामर्थ्य को छिपा देता। यीशु पर विश्वास लाना एक ऐसा चमत्कार होता है जो सिर्फ़ छुटकारे के कारगर होने से आता है, प्रभावशाली भाषण से, या निवेदन या ज़बरदस्ती करने से नहीं, बल्कि परमेश्वर के उस सामर्थ्य से पैदा होता है जिसे बाहरी सहायता की कोई ज़रूरत नहीं। छुटकारे का रचनात्मक सामर्थ्य सुसमाचार के प्रचार के द्वारा आता है, लेकिन प्रचारक के व्यक्तित्व के द्वारा कभी नहीं।

एक प्रचारक का असली और असरदार उपवास भोजन से परहेज़ करना नहीं, बल्कि भाषा के धाराप्रवाह प्रयोग, प्रभावशाली भाषण-शैली, और हर ऐसी चीज़ से परहेज़ करना है जो परमेश्वर के सुसमाचार के सुनाए जाने में बाधा डाल सकती है। प्रचारक परमेश्वर का प्रतिनिधि होकर प्रचार करता है - "...मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता (विनती करता) है ..." (2 कुरिन्थियों 5:20)। वह वहाँ परमेश्वर के सुसमाचार को प्रस्तुत करने के लिए है। यदि लोग सिर्फ़ मेरे प्रचार के कारण बेहतर बनना चाहते हैं, तो वे यीशु मसीह के क़रीब कभी नहीं आएँगे। सुसमाचार के प्रचार में यदि ऐसी कोई भी बात हो जो मेरी अपनी प्रशंसा करती है, वह मुझे यीशु के प्रति विश्वासघाती बनाती है, और इसके द्वारा मैं उसके छुटकारे के रचनात्मक सामर्थ्य के काम करने में रुकावट डालता हूँ।

"ओर मैं यदि ... ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खींचूँगा" (यूहन्ना 12:32)

जुलाई 18

विश्वास करने का रहस्य

उसने पूछा, 'हे प्रभु, तू कौन है ?'
प्रेरितों के काम 9:5।

छुटकारे के आश्चर्यकर्म के द्वारा तरसुस का शाऊल एक दृढ़-निश्चयी और प्रभावशाली फरीसी से बदल कर प्रभु यीशु का एक नम्र और समर्पित दास बन गया।

जिन बातों को हम समझा सकते हैं, उनमें आश्चर्य या रहस्य की कोई बात नहीं होती। जिन बातों को हम समझा सकते हैं, उनपर हमारा नियन्त्रण रहता है, इसलिए हर बात का स्पष्टीकरण पाने की कोशिश करना स्वाभाविक ही होता है। आज्ञा मानना स्वाभाविक नहीं होता, फिर भी यह ज़रूरी नहीं कि आज्ञा का उल्लंघन करना पापमय ही हो। न तो वास्तविक अनाज्ञाकारिता और न ही आज्ञाकारिता में कोई नैतिक सद्‌गुण तब तक सम्भव है जब तक कि एक व्यक्ति आदेश देनेवाले के ऊँचे अधिकार को मान्यता न दे। यदि यह मान्यता अस्तित्व में नहीं है, तो आदेश देनेवाला व्यक्ति भी दूसरे व्यक्ति के आज्ञा-उल्लंघन को स्वतन्त्रता मान सकता है। यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर यह कहकर शासन करता है कि, "तुम्हें यह करना है," और "तुम यह करोगे," तो वह मनुष्य की आत्मा को तोड़ देता है और उसे परमेश्वर के लिए अनुपयुक्त बना देता है। यदि एक व्यक्ति के आज्ञा मानने के पीछे एक पवित्र परमेश्वर की मान्यता नहीं है, तो आज्ञा मानने से वह सिर्फ़ एक दास बन जाता है।

बहुत से लोग परमेश्वर के पास तब आना शुरू करते हैं जब वे धार्मिक बनना छोड़ देते हैं, क्योंकि मनुष्य के मन का एक ही स्वामी होता है - यानि, यीशु मसीह, धर्म नहीं। लेकिन, यदि *उसे* देखने के बाद भी मैं उसकी *आज्ञा न मानूँ* तो मुझ पर हाय ! (यशायाह 6:5, पद 1 भी देखें)। यीशु कभी ज़िद्द नहीं करेगा कि मैं आज्ञा मानूँ, लेकिन यदि मैं आज्ञा नहीं मानता, तो मैंने अपने मन में परमेश्वर के पुत्र के मृत्यु प्रमाण-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया है। जब मैं यीशु मसीह के सामने खड़े होकर कहता हूँ कि, "मैं आज्ञा नहीं मानूँगा," तो वह कभी ज़िद्द नहीं करेगा। लेकिन जब मैं ऐसा करता हूँ, तो उसके छुटकारे के पुनः सृजित करनेवाले सामर्थ्य से पीछे हट रहा हूँ। परमेश्वर के अनुग्रह पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि मैं कितना घृणित हूँ, यदि मैं ज्योति में आने के लिए तैयार हूँ। लेकिन यदि मैं ज्योति के निकट आने से इनकार कर दूँ, तो मुझ पर हाय ! (यूहन्ना 3:19-21 देखें)।

जुलाई 19

विश्वासी की अधीनता

तुम मुझे गुरु, और प्रभु कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।
यूहन्ना 13:13।

हमारा प्रभु हमारे ऊपर अधिकार रखने की ज़िद्द नहीं करता। वह कभी यह नहीं कहता कि, "तुम्हें मेरे अधीन *होना* पड़ेगा।" नहीं, वह हमें चुनाव करने की पूरी स्वतन्त्रता देता है - इतनी स्वतन्त्रता कि हम उसके मुँह पर थूक सकते हैं, उसे मार डाल सकते हैं, जैसे दूसरों ने किया भी; और फिर भी वह एक शब्द न बोलेगा। लेकिन एक बार जब छुटकारे के द्वारा उसका जीवन मुझ में पैदा कर दिया जाता है, मैं उसी क्षण अपने ऊपर उसके सम्पूर्ण अधिकार को मान लेता हूँ। यह एक सम्पूर्ण और प्रभावशाली शासन होता है, जिसमें मैं मानता हूँ कि, "प्रभु...तू ही ...योग्य है" (प्रकाशितवाक्य 4:11)। यह सिर्फ़ मेरे अन्दर की अयोग्यता है जो मुझे उस व्यक्ति के सामने झुकने से या उसके अधीन होने से रोकती है, जो सचमुच योग्य है। जब मेरी मुलाक़ात ऐसे व्यक्ति से होती है जो मुझसे ज़्यादा पवित्र है, और मैं उसकी योग्यता को नहीं पहचानता, और न ही उसके द्वारा मुझे दिए गए आदेशों का पालन करता हूँ, तो यह मेरी अपनी अयोग्यता के प्रकट होने का चिह्न है। परमेश्वर उन लोगों का इस्तेमाल करके हमें सिखाता है, जो हमसे कुछ बेहतर हैं, बौद्धिक रूप से बेहतर नहीं, बल्कि हमसे ज़्यादा पवित्र। और वह तब तक ऐसा करता रहता है जब तक हम अपनी इच्छा से अधीन नहीं हो जाते। इसके बाद हमारे जीवन का सारा रवैया परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का हो जाता है।

यदि हमारे प्रभु ने हमारी आज्ञाकारिता की ज़िद्द की होती, तो वह सिर्फ़ एक कठोर काम करवानेवाला होता और उसके पास असली अधिकार नहीं होता। वह कभी आज्ञाकारिता की ज़िद्द नहीं करता, लेकिन जब हम उसे सचमुच देखेंगे, तो तुरन्त उसकी आज्ञा मानेंगे। तब वह आसानी से हमारे जीवन का प्रभु होता है और हम सुबह से रात तक उसकी आराधना में जीते हैं। अनुग्रह में मेरे बढ़ने का स्तर इससे प्रकट होता है कि आज्ञाकारिता के प्रति मेरा दृष्टिकोण कैसा है। आज्ञाकारिता शब्द के प्रति हमारा दृष्टिकोण और ऊँचा होना चाहिए, और हमें इसे संसार के दलदल से बचा लेना चाहिए। आज्ञाकारिता सिर्फ़ उन लोगों के बीच सम्भव होती है जो एक दूसरे के साथ अपने सम्बन्ध में बराबर होते हैं, जैसे पिता-पुत्र का सम्बन्ध, स्वामी और सेवका का सम्बन्ध नहीं। यीशु ने इस सम्बन्ध को यह कहते हुए दिखाया कि, "मैं और पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30)। "... पुत्र होने पर भी, उस ने दुःख उठा उठा कर आज्ञा माननी सीखी" (इब्रानियों 5:8)। हमारा छुड़ानेवाला होने के नाते, पुत्र आज्ञाकारी था, *क्योंकि वह पुत्र था,* इसलिए नहीं ताकि वह पुत्र बन जाए।

जुलाई 20

परमेश्वर की उपस्थिति पर आश्रित होना

जो यहोवा की बाट जोहते हैं...वे चलेंगे और थकित न होंगे।
यशायाह 40:31।

चलने में हमारे लिए कोई आनन्द नहीं होता, फिर भी यह हमारे सारे स्थिर और टिकाऊ गुणों की परख है। "चलना और थकित न होना" बल के नाप का सबसे ऊँचा सम्भव स्तर है। बाइबल में "चलने"शब्द का इस्तेमाल एक व्यक्ति के चरित्र को दिखाने के लिए किया गया है। यूहन्ना ...ने यीशु पर जो जा (चल) रहा था...दृष्टि करके कहा, 'देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है' " (यूहन्ना 1:35-36)। बाइबल में कुछ भी निराकार या अस्पष्ट नहीं है ; सब कुछ स्पष्ट और वास्तविक है। परमेश्वर यह नहीं कहता कि, "आत्मिक बनो," बल्कि यह कि, "मेरी उपस्थिति में चल..." (उत्पत्ति 17:1)।

जब हम शारीरिक या भावनात्मक रूप से अस्वस्थ हालत में होते हैं, तो हमेशा जीवन में रोमांच की तलाश करते हैं। हमारे शारीरिक जीवन में, यह हमें पवित्र आत्मा के काम की नकल करने की कोशिश करवाता है। हमारे भावनात्मक जीवन में, यह हमें विभिन्न प्रकार के जुनून और नैतिकता के विनाश की ओर ले जाता है। और हमारे आत्मिक जीवन में, यदि हम सिर्फ़ रोमांचक बातों के पीछे भागते हैं, जैसे "उकाबों की नाईं उड़ना" (40:31), तो इसके परिणामस्वरूप हमारी आत्मिकता नष्ट हो जाएगी।

परमेश्वर की उपस्थिति की वास्तविकता हमारी किसी विशेष परिस्थिति या स्थान में होने पर आश्रित नहीं, बल्कि यह सिर्फ़ हमारे इस संकल्प पर आश्रित है कि हम परमेश्वर को लगातार अपने सामने रखें। हमारी समस्याएँ तब खड़ी होती हैं जब हम अपना भरोसा उसकी उपस्थिति की वास्तविकता पर नहीं रखते। जब भजनकार यह कहता है कि, "हम को कोई भय नहीं, चाहे..." (भजन संहिता 46:2), तो वह जिस अनुभव की बात कर रहा है, वह हमारा भी हो जाता है जैसे ही हम परमेश्वर की उपस्थिति की वास्तविकता की सच्चाई में स्थापित हो जाते हैं; उसकी उपस्थिति के प्रति एक साधारण जागरूकता ही नहीं, बल्कि उसकी वास्तविकता की समझ। और फिर हम बोल उठते हैं कि, "वह तो हर समय यहीं पर था !" अपने जीवन में संकट की घड़ियों में परमेश्वर से मार्गदर्शन माँगना ज़रूरी हो जाता है, लेकिन हर समय यह कहना ज़रूरी नहीं होना चाहिए कि, "हे प्रभु, इस मामले में या उस मामले में मुझे मार्ग दिखा।" मार्ग तो वह दिखाएगा ही, बल्कि अभी भी दिखा रहा है ! यदि हमारे प्रतिदिन के फ़ैसले उसकी इच्छा के अनुसार नहीं हैं, तो वह उन पर रोक लगा देगा। तब हमें शान्त होकर उसकी उपस्थिति के मार्गदर्शन के लिए ठहरना होगा।

जुलाई 21

स्वर्ग के राज्य का प्रवेशद्वार

धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं ...।
मत्ती 5:3।

हमारे प्रभु को सिर्फ़ एक गुरु मानने से सावधान रहें। यदि यीशु मसीह सिर्फ़ एक गुरु है, तो वह मेरे सामने एक ऐसा आदर्श रखकर जिस तक मैं पहुँच नहीं सकता, मेरी आशाओं पर सिर्फ़ पानी फेर सकता है। मेरे सामने इतना ऊँचा आदर्श रखने का क्या फ़ायदा जिसके पास मैं पहुँच नहीं सकता ? मेरे लिए बेहतर होता यदि मुझे इसके बारे में पता ही न होता। मुझसे वह करने को कहने का क्या फ़ायदा जो मैं कभी नहीं कर सकता - मन शुद्ध रखना (5:8), अपने कर्तव्य से बढ़कर करना, पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित होना ? मुझे यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानने की ज़रुरत है, इससे पहले कि उसकी शिक्षा मेरे लिए - एक ऊँचे आदर्श को छोड़ जिसका परिणाम सिर्फ़ निराशा ही हो सकता है - कोई और माइने रख सके। लेकिन जब पवित्र आत्मा के द्वारा मेरा नए सिरे से जन्म होता है, तो मैं जान लेता हूँ कि यीशु मसीह सिर्फ़ शिक्षा देने के लिए नहीं आया - वह इसलिए आया कि मुझे वह बनाए जिसकी वह शिक्षा देता है। छुटकारे का अर्थ यह है कि यीशु मसीह हर किसी के अन्दर उसी स्वभाव को डाल सकता है जो उसके अपने जीवन पर शासन करता था, और वे सारे मापदण्ड जो परमेश्वर देता है, उसी स्वभाव पर आधारित हैं।

पहाड़ी उपदेश की शिक्षा एक साधारण मनुष्य में निराशा की भावना पैदा करती है - और यीशु का उद्‌देश्य भी यही था। जब तक हमारे मन में अहंकार है कि हम अपने प्रभु की शिक्षा के अनुसार चल सकते हैं, तब तक परमेश्वर हमें उसी मार्ग पर चलने देगा जब तक हम मार्ग में किसी चीज़ से ठोकर खाने के द्वारा अपने ही अज्ञान की पोल नहीं खोल देते। इसके बाद ही हम भिखारियों की तरह उसके पास आकर उससे पाने के लिए तैयार होते हैं। "धन्य हैं वे जो मन के दीन(ग़रीब) हैं ..." यह परमेश्वर के राज्य का पहला सिद्धान्त है। यीशु मसीह के राज्य की मूल बुनियाद ग़रीबी है, सम्पत्ति नहीं, यीशु के पक्ष में फ़ैसले करना नहीं, बल्कि सम्पूर्ण रूप से बेकार होने की ऐसी भावना कि अन्त में हम मान लेते हैं कि, "प्रभु, मैं यह करना शुरू भी नहीं कर सकता।" तब यीशु कहता है, "धन्य हो तुम ..." (5:11)। यही स्वर्ग के राज्य का प्रवेशद्वार है, और फिर भी हमें यह विश्वास करने में इतना समय लग जाता है कि वास्तव में हम ग़रीब हैं ! हमारी अपनी ग़रीबी का ज्ञान ही वह चीज़ है जो हमें उस उपयुक्त स्थान पर लाता है जहाँ यीशु मसीह अपना काम पूरा कर सकता है।

जुलाई 22

पवित्रीकरण

परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो ...।
1 थिस्सलुनीकियों 4:3।

मृत्यु का पहलू। पवित्रीकरण में परमेश्वर को हमारे साथ मृत्यु के पहलू पर और जीवन के पहलू पर निपटना पड़ता है। पवित्रीकरण की माँग है कि हम मृत्यु के स्थान पर आएँ, लेकिन हम में से बहुत से लोग वहाँ पर इतना समय बिताते हैं, कि हम अस्वस्थ हो जाते हैं। पवित्रीकरण के पूरे होने से पहले एक ज़बरदस्त युद्ध होता है - हमारे भीतर कुछ है जो मसीह की माँगों के विरुद्ध कुढ़न दिखाता है। जब पवित्र आत्मा हमें यह दिखाना शुरू करता है कि पवित्रीकरण का अर्थ क्या है, तो संघर्ष तुरन्त शुरू हो जाता है। यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:26)।

पवित्रीकरण की प्रक्रिया के दौरान, पवित्र आत्मा मुझे बिलकुल नंगा कर देगा जब तक कि मुझे छोड़ और कुछ नहीं बचेगा, और यही मृत्यु का स्थान होता है। क्या मैं तैयार हूँ कि मैं सिर्फ़ "मैं" रह जाऊँ और इससे बढ़कर कुछ और नहीं ? क्या मैं तैयार हूँ कि मेरे पास मित्र, पिता, भाई, और कोई स्वार्थ न रहे - और मैं सिर्फ़ मृत्यु के लिए तैयार रहूँ ? पवित्रीकरण के लिए इसी शर्त को पूरा करने की ज़रूरत होती है। इसीलिए तो यीशु ने कहा कि, "मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ" (मत्ती 10:34)। यही वह स्थान है जहाँ युद्ध होता है, और जहाँ हम में से बहुत से लोग लड़खड़ा जाते हैं। हम इस मुद्दे पर यीशु मसीह की मृत्यु में शामिल होने के लिए तैयार नहीं होते। हम कहते हैं, "लेकिन यह तो बड़ी कठोरता है। वह मुझसे ऐसी माँग कैसे कर सकता है ?" हमारा प्रभु *सचमुच* कठोर है, और वह *सचमुच* हमसे यही माँग करता है।

क्या मैं अपने आप को तब तक घटाने के लिए तैयार हूँ जब तक कि मैं सिर्फ़ "मैं" न रह जाऊँ। क्या मैंने इतना दृढ़ संकल्प कर लिया है कि मैं अपने आप को उन सब चीज़ों से नंगा कर दूँगा जो मेरे मित्र मेरे बारे में सोचते हैं। क्या मैं अपने साधारण, नंगे "स्वयं" को परमेश्वर को सौंपने के लिए तैयार हूँ ? जब मैं तैयार हो जाऊँगा, तो वह तुरन्त मुझे पूरी तरह से पवित्र बना देगा, और मेरा जीवन परमेश्वर को छोड़ और सब चीज़ों के प्रति दृढ़निश्चय और हठी होने से मुक्त हो जाएगा (1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24)।

जब मैं प्रार्थना करूँगा कि, "हे प्रभु, मुझे दिखा कि मेरे लिए पवित्रीकरण का अर्थ क्या है," तो वह मुझे दिखाएगा। इसका अर्थ है यीशु के साथ एक हो जाना। पवित्रीकरण कोई ऐसी चीज़ नहीं जो यीशु मेरे अन्दर डालता है - वह *खुद* मुझमें होता है (1 कुरिन्थियों 1:30)।

जुलाई 23

पवित्रीकरण

परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो ...जो ...हमारे लिए ...पवित्रता ठहरा ।
1 कुरिन्थियों 1:30 ।

जीवन का पहलू । पवित्रीकरण का रहस्य यह है कि जैसे ही विश्वास के द्वारा मुझे यह एहसास होता है कि "वह मेरे लिए पवित्रता ठहरा," यीशु मसीह के सिद्ध गुण एक वरदान के रूप में मुझे प्रदान किए जाते है, धीरे-धीरे नहीं, बल्कि तुरन्त । पवित्रता का अर्थ केवल यह है कि यीशु की पवित्रता मेरी हो जाती है और मेरे जीवन में प्रदर्शित होती है ।

एक पवित्र जीवन जीने का सबसे अद्‌भुत भेद यीशु की नकल करने में नहीं होता, बल्कि यीशु के सिद्ध गुणों को मेरे मानुषिक शरीर में प्रदर्शित करने में होता है । पवित्रीकरण का अर्थ है "मसीह मुझ में ..."(कुलुस्सियों 1:27) । वह उसका अद्‌भुत जीवन है जो पवित्रीकरण में मुझे प्रदान किया जाता है - जो विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान के रूप में प्रदान किया जाता है । क्या मैं तैयार हूँ कि परमेश्वर पवित्रीकरण को मुझ में उतना ही वास्तविक बनाए जितना वह उसके वचन में है ?

पवित्रीकरण का अर्थ है यीशु मसीह के पवित्र गुणों को मुझे प्रदान किया जाना । यह उसके धीरज, प्रेम, पवित्रता, विश्वास, शुद्धता, और भक्ति का वरदान है जो हर पवित्र किए गए मन में और उसके द्वारा प्रदर्शित किया जाता है । पवित्रीकरण का अर्थ यीशु से पवित्र होने का सामर्थ्य प्राप्त करना नहीं, बल्कि यीशु से उस पवित्रता ही को प्राप्त करना है जो उसमें प्रदर्शित हुई थी, और जिसे वह अब मुझ में प्रदर्शित करता है । पवित्रीकरण का अर्थ प्रदान करना है, नकल करना नहीं । नकल करना एक अलग ही चीज़ होती है । सब चीज़ों की परिपूर्णता यीशु मसीह में है, और पवित्रीकरण का सत्य यह है कि यीशु के सारे सिद्ध गुण मेरे लिए उपलब्ध हैं । इसके फलस्वरूप, मैं धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से एक सुव्यवस्था, निर्दोषता, और पवित्रता का जीवन जीना शुरू कर देता हूँ - और मेरी रक्षा "...परमेश्वर की सामर्थ से ...की जाती है" (1 पतरस 1:5) ।

जुलाई 24

उसका स्वभाव और हमारे कर्म

यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो,
तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे ।
मत्ती 5:20 ।

एक शिष्य की विशेषता यह नहीं कि वह अच्छे काम करता है, बल्कि यह कि वह अपने उद्देश्यों में अच्छा होता है, क्योंकि उसे परमेश्वर के अलौकिक अनुग्रह से अच्छा बना दिया गया है । अच्छा करने से बढ़कर एक ही चीज़ है, और वह है अच्छा होना । यीशु मसीह इसलिए आया कि वह हर ऐसे व्यक्ति के अन्दर जो उसे ऐसा करने दे, एक आनुवंशिकता, यानि, अपने लक्षण अपने बच्चों में पहुँचा देनेवाली प्रवृत्ति, रखे जिसकी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर हो । यीशु मसीह कह रहा है, "यदि तुम मेरे शिष्य हो, तो तुम्हें न केवल अपने कर्मों में सही होना चाहिए, बल्कि अपने उद्देश्यों में, अपनी आकांक्षाओं में, और अपने विचारों की गहराइयों में भी सही होना चाहिए ।" आपके उद्देश्यों को इतना शुद्ध होना चाहिए कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर को डाँटने-फटकारने के लिए कुछ न दिखाई दे । ऐसा कौन है जो परमेश्वर के अनन्त प्रकाश में खड़ा रह सके जिसमें ऐसा कुछ न हो जो परमेश्वर की डाँट-फटकार के योग्य हो ? सिर्फ़ परमेश्वर का पुत्र ही ऐसा व्यक्ति है, और यीशु मसीह यह दावा करता है कि अपने छुटकारे के द्वारा वह किसी भी व्यक्ति के अन्दर अपने स्वभाव को डाल सकता है और उसे एक बच्चे की तरह शुद्ध और सरल बना सकता है । परमेश्वर जिस शुद्धता की माँग करता है वह तब तक असम्भव है जब तक कि मैं अपने भीतर फिर से न बनाया जाऊँ, और यही वह कार्य है जो यीशु ने अपने छुटकारे के द्वारा अपने हाथों में लिया है ।

नियमों का पालन करने से कोई अपने आप को शुद्ध नहीं कर सकता । यीशु मसीह हमे नियमों की सूची नहीं देता - वह हमें अपनी शिक्षाएँ देता है जो ऐसे सत्य हैं जिनका अर्थ केवल उसका वह स्वभाव ही बता सकता है जो वह हमारे अन्दर रखता है । यीशु मसीह के उद्धार का महान चमत्कार यह है कि वह हमारी आनुवंशिकता को बदल देता है । वह मनुष्य के स्वभाव को नहीं बदलता - वह उसके स्रोत को बदल देता है, और इस तरह से, उसके उद्देश्यों को भी ।

जुलाई 25

क्या मैं इतना धन्य हूँ ?

धन्य हैं ...।
मत्ती 5:3-11।

जब हम पहली बार यीशु की कही बातों को पढ़ते हैं, तो वे बड़ी अद्‌भुत रीति से सरल और साधारण लगती हैं, और वे हमारा ध्यान अपनी ओर खींचे बिना हमारे अर्द्धचेतन मन में धँस जाती हैं। उदाहरण के लिए, शुरू-शुरू में लगता है कि यीशु के धन्यवचन अत्यधिक आत्मिक और बेकार से लगनेवाले लोगों के लिए शान्त करनेवाले और सुन्दर उपदेश हैं, लेकिन जिस संसार में *हम* रहते हैं, उसके कठोर, तेज़-रफ़्तार से चलनेवाले समय में इनकी व्यावहारिक उपयोगिता बहुत कम है। लेकिन हमें जल्दी ही पता चल जाता है कि धन्यवचनों में पवित्र आत्मा का "डाइनामाईट" होता है। और वे "विस्फोट" करते हैं जब हमारे जीवन की परिस्थितियाँ ऐसा करवाती हैं। जब पवित्र आत्मा हमें किसी एक धन्यवचन की याद दिलाता है, तो हम कहते हैं कि, "यह कितनी चौंका देनेवाली बात है!" फिर हमें फ़ैसला करना पड़ता है कि हम उस ज़बरदस्त आत्मिक उथल-पुथल को स्वीकार करेंगे या नहीं जो हमारी परिस्थिति में आएगी यदि हम उसके वचन का पालन करेंगे। परमेश्वर का आत्मा इसी तरह से काम करता है। हमें शाब्दिक रूप से पहाड़ी उपदेश को लागू करने के लिए नए सिरे से जन्म लेने की ज़रूरत नहीं। पहाड़ी उपदेश की शाब्दिक व्याख्या करना तो बच्चों के खेल की तरह आसान है। लेकिन जब परमेश्वर का आत्मा हमारे प्रभु के द्वारा कही गई बातों को हमारी परिस्थितियों पर लागू करता है, तो उसकी व्याख्या एक पवित्र जन का कठोर और कठिन काम बन जाता है।

यीशु की सारी शिक्षाएँ हमारे शारीरिक दृष्टिकोण की तुलना में बहुत ऊँची हैं और शुरू-शुरू में वे हमारे पास बड़ी आश्चर्यजनक बेचैनी लेकर आती हैं। लेकिन जब पवित्र आत्मा यीशु के उपदेशों को हमारी परिस्थितियों में लागू करता है, तो धीरे-धीरे हमें अपनी चाल और बातचीत को उनके अनुकूल बनाना होता है। पहाड़ी उपदेश नियमों की सूची नहीं - यह उस जीवन की तस्वीर है जो हम तब जीएँगे जब पवित्र आत्मा हमारे जीवन में बिना रुकावट के काम कर रहा होगा।

शुद्धता का मार्ग

पर जो कुछ मुँह से निकलता है, वह मन से निकलता है ... क्योंकि कुचिन्ता,
हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती हैं।
ये ही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।
मत्ती 15:18-20।

शुरू-शुरू में हम अपने अज्ञान पर भरोसा रखते हैं और उसे निर्दोषता का नाम देते हैं। इसके बाद हम अपनी निर्दोषता पर भरोसा रखते हैं और उसे शुद्धता का नाम देते हैं। फिर हम अपने प्रभु से ये कठोर बातें सुनते हैं, और संकुचित होकर कहते हैं कि, "लेकिन मैंने तो अपने मन में इतनी बुरी चीज़ें कभी महसूस नहीं कीं।" जो वह प्रकट करता है, उससे हम अप्रसन्न होते हैं। यीशु मसीह या तो मनुष्य के हृदय का सबसे बड़ा जानकार है, या फिर वह इस योग्य नहीं कि उसकी बातों पर ध्यान भी दिया जाए। क्या मैं अपने हृदय में उसके वचन के भेदन पर भरोसा रखने के लिए तैयार हूँ, या मैं अपने ही "निर्दोष अज्ञान" पर भरोसा रखना ज़्यादा पसन्द करूँगा? यदि मैं ईमानदारी से अपनी ओर देखूँगा, और जिसे मैं निर्दोषता समझता हूँ, उसके प्रति पूरी तरह से जागरूक होते हुए उसकी परीक्षा लूँगा, तो शायद चौंक कर जाग उठूँगा और देखूँगा कि यीशु मसीह ने जो कहा वह सच है, और मेरे अन्दर की बुराइयों और ख़राबियों की सम्भावनाएँ मुझे दहला देंगी। लेकिन जब तक मैं अपनी "निर्दोषता" की झूठी सुरक्षा की छाया में रहूँगा, मैं एक मिथ्या स्वर्ग में रह रहा हूँ। यदि मैंने कभी खुल्लम-खुल्ला अशिष्ट व्यवहार या गाली-गलौज नहीं किया है, तो इसका कारण मेरी अपनी कायरता के साथ-साथ वह सुरक्षा की भावना है जो मुझे एक सभ्य जीवन जीने से मिलती है। लेकिन जब मैं परमेश्वर के सामने खुला और बिलकुल नंगा खड़ा होता हूँ, तो पाता हूँ कि मेरे बारे में यीशु मसीह का निदान सही है।

वह एकमात्र चीज़ जो सचमुच सुरक्षा देती है, यीशु मसीह का छुटकारा है। यदि मैं अपने आप को सिर्फ़ उसके सुपुर्द कर दूँगा, तो मुझे उन भयंकर सम्भावनाओं का कभी सामना नहीं करना पड़ेगा जो मेरे मन में पड़ी हैं। शुद्धता इतनी गहरी चीज़ है कि मैं स्वाभाविक रूप से इस तक कभी नहीं पहुँच सकता। लेकिन जब पवित्र आत्मा मेरे अन्दर आ जाता है, तो वह मेरे व्यक्तिगत जीवन के बीचोबीच उस आत्मा को ले आता है जो यीशु मसीह के जीवन में प्रदर्शित था, यानि, *पवित्र* आत्मा, जो बिलकुल निष्कलंक शुद्धता है।

ज्ञान का मार्ग

यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा ...।
यूहन्ना 7:17।

आत्मिक समझ पाने के लिए जिस सुन्हरे नियम का पालन करना होता है, वह बुद्धि नहीं, बल्कि आज्ञाकारिता है। यदि किसी व्यक्ति को वैज्ञानिक ज्ञान चाहिए, तो बौद्धिक जिज्ञासा को उसका मार्गदर्शक होना होगा; लेकिन यदि उसे उन बातों की अन्तर्दृष्टि चाहिए जो यीशु मसीह सिखाता है, तो यह उसे सिर्फ़ आज्ञाकारिता के द्वारा मिल सकती है। यदि मुझे आत्मिक बातें अन्धकारमय लगती हैं, तो मुझे जान लेना चाहिए कि मेरे जीवन में कहीं न कहीं अनाज्ञाकारिता है। बौद्धिक अन्धकार अज्ञान से आता है; आत्मिक अन्धकार इसलिए आता है क्योंकि कोई ऐसी बात है जिसमें मैं आज्ञा का पालन नहीं करना चाहता।

जब भी किसी व्यक्ति को परमेश्वर का वचन मिलता है, उसे तुरन्त परीक्षा का सामना करना पड़ता है। हम आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और फिर हमें आश्चर्य होता है कि हम आत्मिक रूप से बढते क्यों नहीं। यीशु ने कहा, "यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा" (मत्ती 5:23-24)। यीशु की शिक्षा हम पर वहाँ वार करती है जहाँ हम रहते हैं। हम ढोंगी के रूप में एक क्षण के लिए भी यीशु के सामने खड़े नहीं हो सकते। वह छोटी से छोटी बात के लिए हमें निर्देश देता है। परमेश्वर का आत्मा अपने आपको निर्दोष ठहराने वाली हमारी आत्मा पर से पर्दा हटाता है और हमें उन चीज़ों के प्रति संवेदनशील बनाता है जिनके बारे में हमने पहले कभी सोचा भी न था।

जब यीशु अपने वचन के द्वारा हमें कुछ समझाता है, तो उससे जी न चुराएँ। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आप एक धार्मिक पाखण्डी बन जाएँगे। उन बातों की जाँच करें जिनको आप टाल जाते हैं, और जिनका आपने आज्ञापालन नहीं किया है, और आप जानेंगे कि आप आत्मिक रूप से क्यों नहीं बढ़ते। "जाकर पहले" - चाहे लोग आपको सनकी समझें, फिर भी आपको परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना है।

जुलाई 28

परमेश्वर का उद्‌देश्य या मेरा ?

उस ने अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उस से पहले उस पार ...चले जाएँ। मरकुस 6:45।

हम ऐसा समझते हैं कि यदि यीशु मसीह हम से कोई काम करने की ज़बरदस्ती करता है, और हम उसकी आज्ञा मानते हैं, तो वह हमें बड़ी-बड़ी सफलताएँ दिलाएगा। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि सफलताओं के हमारे सपने हमारे लिए परमेश्वर का उद्‌देश्य हैं; बल्कि उसका उद्‌देश्य इनका बिलकुल उल्टा हो सकता है। हम समझते हैं कि परमेश्वर हमें किसी विशेष परिणाम या इच्छित लक्ष्य की ओर ले जा रहा है, लेकिन ऐसा नहीं है। इस सवाल का महत्त्व बहुत कम है कि हम किसी विशेष लक्ष्य तक पहुँचते हैं या नहीं, उस तक पहुँचना मार्ग का सिर्फ़ एक पड़ाव होता है। जिसे हम लक्ष्य तक पहुंचने की प्रक्रिया समझते हैं, परमेश्वर उसे ही लक्ष्य समझता है।

मेरे लिए परमेश्वर के उद्‌देश्य का मेरा दर्शन क्या है ? वह चाहे जो भी हो, मेरे लिए परमेश्वर का उद्‌देश्य यह है कि मैं *अभी* उस पर और उसके सामर्थ्य पर आश्रित रहूँ। यदि मैं जीवन की खलबली के बीच में भी शान्त, विश्वासयोग्य, और घबराहट से मुक्त रह सकता हूँ, तो परमेश्वर के उद्‌देश्य का लक्ष्य मुझ में पूरा हो रहा है। परमेश्वर किसी विशेष अन्त के लिए काम नहीं कर रहा है - प्रक्रिया ही उसका उद्‌देश्य है। वह मेरे लिए जो चाहता है, वह यह है कि मैं उसे "झील पर चलते देखूँ" जहाँ कोई किनारा या सफलता या लक्ष्य नहीं दिखाई देता, लेकिन सिर्फ़ यह निश्चितता होती है कि सब कुछ ठीक है क्योंकि मैं उसे "झील पर चलते देख सकता हूँ" (6:49)। परिणाम नहीं, बल्कि प्रक्रिया परमेश्वर को महिमा दे रही है।

परमेश्वर का प्रशिक्षण अभी के लिए है, आगे के लिए नहीं। उसका उद्‌देश्य इस क्षण के लिए है, भविष्य में किसी समय के लिए नहीं। हमें इससे कोई मतलब नहीं कि हमारी आज्ञाकारिता का परिणाम क्या होगा, और इसके बारे में चिन्ता करना भी हमारे लिए ग़लत है। जिसे लोग तैयारी कहते हैं, परमेश्वर की दृष्टि में वही लक्ष्य होता है।

परमेश्वर का उद्‌देश्य यह है कि वह मुझे यह देखने की योग्यता दे कि वह इसी समय मेरे जीवन के तूफ़ानों पर चल सकता है। यदि हमारे मन में इससे बढ़कर कोई लक्ष्य है, तो इसका अर्थ यह है कि हम वर्तमान की ओर पूरा ध्यान नहीं दे रहे हैं। लेकिन यदि हमें यह एहसास हो जाता है कि हर पल की आज्ञाकारिता ही लक्ष्य है, तो जैसे-जैसे हर पल आता है, वह बहुमूल्य होता है।

जुलाई 29

क्या आप यीशु को अपने बादलों में देखते हैं ?

देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है ...।
प्रकाशितवाक्य 1:7।

बाइबल में, बादलों का सम्बन्ध हमेशा परमेश्वर के साथ होता है। हमारे जीवन में या उसके बाहर के दुःख, कष्ट, या परमेश्वर के द्वारा भेजी गई परिस्थितियाँ बादल होते हैं, जो परमेश्वर की प्रभुता का खण्डन करते हुए लगते हैं। फिर भी इन्हीं बादलों के द्वारा परमेश्वर का आत्मा हमें सिखा रहा है कि हमें विश्वास से कैसे चलना है। यदि हमारे जीवन में बादल कभी न होते, तो हमारे पास विश्वास नहीं होता। "बादल उसके पाँवों की धूलि है" (नहूम 1:3)। ये इसका चिह्न हैं कि परमेश्वर वहाँ उपस्थित है। यह जानना कितना बड़ा रहस्योद्घाटन है कि दुःख, शोक, और कष्ट वास्तव में वे बादल हैं जो परमेश्वर के साथ आते हैं! बादलों के बिना परमेश्वर हमारे पास नहीं आ सकता - वह चमक-दमक के साथ नहीं आता।

यह कहना सच नहीं कि परमेश्वर हमारी परीक्षाओं के द्वारा हमें कुछ सिखाना चाहता है। वह चाहता है कि हमारे मार्ग में लाए जानेवाले हर बादल के द्वारा हम किसी सीखी हुई बात को भुला दें। बादल का इस्तेमाल करने का उसका उद्देश्य यह है कि वह हमारी धारणाओं को सरल बना दे जब तक कि उसके साथ हमारा सम्बन्ध बिलकुल एक बच्चे के सम्बन्ध के समान न बन जाए - यानि, ऐसा सम्बन्ध जो सिर्फ़ परमेश्वर और हमारी आत्मा के बीच हो, जहाँ और लोग सिर्फ़ परछाइयों की तरह हों। जब तक और लोग हमारे लिए परछाइयाँ न बन जाएँ, तब तक बादल और अन्धकार कभी-कभार आते रहेंगे। क्या परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध पहले से ज़्यादा सरल बनता जा रहा है ?

"...जब वे बादल से घिरने लगे, तो डर गए" (लूका 9:34)। क्या आपके बादल में यीशु को छोड़ कोई और है ? यदि है, तो बादल अन्धकारमय होता जाएगा जब तक कि आप उस स्थिति पर न पहुँच जाएँ जहाँ "यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखेंगे" (मरकुस 9:8; पद 2-7 भी देखें)।

जुलाई 30

भ्रमभंग होने के विषय में शिक्षा

यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा ...
क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है।
यूहन्ना 2:24-25।

भ्रमभंग का अर्थ है आगे से जीवन में और ग़लतफ़हमियाँ, झूठी धारणाएँ, और झूठे न्याय न होना; इसका अर्थ है इन धोखों से मुक्त होना। लेकिन हालाँकि हम आगे धोखा नहीं खाते, फिर भी हमारे भ्रमभंग का अनुभव हमें दूसरों के विषय में फ़ैसला करने में दोषदर्शी और ज़रूरत से ज़्यादा आलोचनात्मक बना सकता है। लेकिन परमेश्वर से आनेवाला भ्रमभंग हमें उस स्थान पर ले आता है जहाँ हम लोगों को वैसा देखते हैं जैसे वे सचमुच हैं, लेकिन किसी प्रकार की दोषदर्शिता और कटु आलोचना के बिना। जीवन में बहुत सी ऐसी चीज़ें जो सबसे अधिक चोट, दुःख, या दर्द पहुँचाती हैं, इस तथ्य से आती हैं कि हम भ्रम के शिकार हो जाते हैं। हम एक दूसरे के साथ *तथ्यों* के रूप में पेश नहीं आते, और न ही एक-दूसरे को वैसे देखते हैं जैसे हम सचमुच हैं। हम दूसरों के बारे में अपने ग़लत *विचारों* पर विश्वास करते हैं। हमारी सोच के अनुसार, हर चीज़ या तो आनन्ददायक और अच्छी है, या वह बुरी, द्वेषपूर्ण, और कायर है।

मनुष्य के जीवन के बहुत से कष्टों का कारण यह है कि हम भ्रमों को भंग नहीं होने देते। और यह कष्ट इस तरह से आता है - यदि हम किसी से प्रेम रखते हैं, लेकिन परमेश्वर से प्रेम नहीं रखते, तो हम उस व्यक्ति से सम्पूर्ण सिद्धता और धार्मिकता की माँग करते हैं, और जब ये हमें नहीं मिलतीं, तो हम निर्दयी और बदला लेने की भावना रखनेवाले बन जाते हैं: फिर भी हम एक मनुष्य से ऐसी चीज़ की माँग करते हैं जिसे देना उसके लिए असम्भव है। ऐसा एक ही व्यक्ति है जो एक ठेस खाए हुए मनुष्य के हृदय की गहराइयों को पूरी तरह से तृप्त कर सकता है, और वह व्यक्ति है प्रभु यीशु मसीह। हमारा प्रभु किसी भी मानुषिक सम्बन्ध के साथ समझौता नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि जो भी सम्बन्ध उसके प्रति विश्वासयोग्यता पर आधारित नहीं, उसका अन्त विनाश में ही होगा। हमारे प्रभु ने किसी पर भरोसा नहीं रखा, लेकिन फिर भी वह कभी सन्देह करनेवाला या कड़वाहट से भरा नहीं था। हमारे प्रभु को परमेश्वर पर, और परमेश्वर का अनुग्रह किसी के लिए जो कुछ कर सकता है, उसपर इतना भरोसा था कि उसने कभी किसी के लिए आशा नहीं छोड़ी। यदि हमारा भरोसा मनुष्यों पर होगा, तो हम सब लोगों के लिए आशा छोड़ बैठेंगे।

जुलाई 31

पूरी तरह से उसके हो जाना

धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ
और तुम में किसी बात की घटी न रहे।
याकूब 1:4।

हम में से बहुत से लोग साधारण रूप से देखने में तो ठीक-ठाक लगते हैं, लेकिन अभी भी ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जिनमें हम लापरवाह और सुस्त हैं। यह पाप का मामला नहीं, बल्कि हमारे शारीरिक जीवन के बचे हुए अंश हैं जो हमें लापरवाह बना देते हैं। लापरवाही पवित्र आत्मा का अपमान है। हम में किसी तरह की लापरवाही नहीं पाई जानी चाहिए, चाहे वह परमेश्वर की आराधना करने के ढंग में हो, या हमारे खाने-पीने के ढंग में।

परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को ही सही नहीं रहना चाहिए, बल्कि उस सम्बन्ध को बाहरी रूप से व्यक्त करने के ढंग को भी सही होना चाहिए। अन्त में परमेश्वर किसी चीज़ को बचकर निकलने नहीं देगा। हमारे जीवन की छोटी से छोटी बात भी उसकी दृष्टि में है। परमेश्वर अनेकों तरीकों से हमें बार-बार उसी स्थान पर वापस लाएगा जब तक कि हम इस पाठ को सीख नहीं लेते, क्योंकि उसका उद्देश्य यह है कि वह "तैयार माल" को बनाए। यह हमारे जल्दबाज़ स्वभाव के कारण होनेवाली समस्या हो सकती है, लेकिन लगातार धीरज दिखाते हुए, परमेश्वर बार-बार हमें उस विशेष मुद्दे पर वापस लाया है। या फिर हमारी समस्या हो सकती है हमारे बेकार और भटकते हुए विचार, या हमारा स्वच्छन्द स्वभाव या स्वार्थ। इस प्रक्रिया के द्वारा, परमेश्वर हमें हमारे जीवन की वह एक चीज़ दिखाने की कोशिश कर रहा है जो पूरी तरह से ठीक नहीं है।

हम हमारे परमेश्वर के छुटकारे के प्रकट किए गए सत्य का अध्ययन करने में अद्भुत समय बिता रहे हैं, और परमेश्वर के प्रति हमारे हृदय सिद्ध हैं। और हमारे अन्दर उसका अद्भुत काम हमें यह दिखाता है कि कुल मिलाकर देखा जाए तो उसके साथ हमारा सम्बन्ध ठीक है। "धीरज को अपना पूरा काम करने दो।" याकूब के द्वारा बोलते हुए पवित्र आत्मा ने कहा, "अब अपने धीरज को तैयार माल बन जाने दो।" जीवन की छोटी-छोटी बातों में लापरवाह होने से सावधान रहें। यह न कहें कि, "*अभी* के लिए तो इतना ही काफ़ी है।" चाहे वह जो कुछ भी हो, परमेश्वर लगातार उसकी ओर इशारा करता रहेगा जब तक कि हम पूरी तरह से उसके नहीं हो जाएँगे।

अगस्त 1

यीशु के तौर-तरीकों के बारे में सीखना

जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका,
तो वह उन के नगरों मे उपदेश और प्रचार करने चला गया।
मत्ती 11:1।

वह वहाँ आ जाता है जहाँ से हमें जाने की आज्ञा देता है। जब परमेश्वर ने आपको जाने की आज्ञा दी थी, तो यदि आप इसलिए नहीं गए क्योंकि आपको घर पर अपने सगे-सम्बन्धियों की चिन्ता थी, तो वास्तव में आपने उन्हें खुद यीशु मसीह की शिक्षा से वंचित रखा। जब आपने आज्ञा मान ली और सारे परिणामों को परमेश्वर के हाथों में छोड़ दिया, तो प्रभु शिक्षा देने के लिए आपके नगर में गया, लेकिन जब आपने आज्ञा नहीं मानी, तो आपने उसका रास्ता रोक दिया। सावधान रहें कि आप उसके साथ कहाँ पर बहस करना शुरू कर देते हैं, और जिसे आप अपना कर्तव्य कहते हैं, उसका मुक़ाबला परमेश्वर की आज्ञाओं के साथ करने लगते हैं। यदि आप कहें कि "मुझे पता है कि उसने मुझसे जाने के लिए कहा, लेकिन मेरा कर्तव्य यहाँ पर है," तो इसका अर्थ यह है कि आप यह नहीं मानते कि यीशु जो भी कहता है, वह मज़ाक में नहीं कहता।

वह वहाँ शिक्षा देता है जहाँ वह हमें शिक्षा न देने के निर्देश देता है। "हे स्वामी ...हम तीन मण्डप बनाएँ ..." (लूका 9:33)।
क्या हम दूसरों के जीवन में एक अनाड़ी विधाता की भूमिका निभाने की कोशिश कर रहे हैं ? क्या हम दूसरों को निर्देश देते हुए इतना शोर मचाते हैं कि परमेश्वर उनके पास नहीं पहुँच पाता ? हमें अपना मुँह बन्द रखना और अपनी आत्मा को सजग रखना होगा। परमेश्वर हमें अपने पुत्र के बारे में सिखाना चाहता है, और वह हमारे प्रार्थना के समय को रूपान्तरण के पहाड़ में बदल देना चाहता है। जब हमें निश्चय हो जाता है कि परमेश्वर किसी ख़ास तरीके से काम करेगा, तो वह उस तरीके से फिर कभी काम नहीं करेगा।

वह वहाँ काम करता है जहाँ हमें ठहरने के लिए भेजता है।
"जब तक ...तब तक... ठहरे रहो" (लूका 24:49)।
"यहोवा की बाट जोहता रह" और वह काम करेगा (भजन संहिता 37:34)। लेकिन आत्मिक रूप से रूठ कर न ठहरें सिर्फ़ इसलिए क्योंकि आपको अपने सामने कुछ नहीं दिखाई दे रहा है ! क्या हम भावनाओं के अपने ही आत्मिक दौरों से इस हद तक अलग हो गए हैं कि हम "धीरज से उसका आस्रा" रख सकें ? (37:7)। आस्रा रखने या ठहरने का अर्थ यह नहीं कि हम हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहें; उसका अर्थ है वह काम करना सीखना जो हमें बताया गया है।

ये परमेश्वर के तौर-तरीकों के कुछ पहलू हैं जिन्हें हम कम ही पहचानते हैं।

अगस्त 2

कष्टों के बारे में शिक्षा

संसार में तुम्हे कष्ट होता है, परन्तु ढाढ़स बान्धों, मैं ने संसार को जीत लिया है।
यूहन्ना 16:33।

मसीही जीवन के बारे में आम धारणा यह है कि इसका अर्थ है सारे कष्टों से छुटकारा पाना। लेकिन वास्तव में इसका अर्थ होता है कष्टों में छुटकारा पाना, और दोनों बातों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क है। "जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा ...कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा" (भजन संहिता 91:1,10)। कोई दुःख उस स्थान पर नहीं आ सकता जहाँ आप परमेश्वर के साथ एक हैं।

यदि आप परमेश्वर की सन्तान हैं, तो यह निश्चित है कि आपको विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा, लेकिन यीशु ने कहा कि जब वे आएँगी, तो आपको हैरान नहीं होना चाहिए।" संसार में तुम्हें कष्ट होता है, परन्तु ढाढ़स बान्धों, मैं ने संसार को जीत लिया है।" वह कह रहा है, "तुम्हें घबराने की कोई ज़रूरत नहीं।" जो लोग उद्धार पाने से पहले अपने कष्टों के बारे में बात भी नहीं करना चाहते थे, नए सिरे से जन्म लेने के बाद शिकायत और चिन्ता करते हैं क्योंकि परमेश्वर के पवित्र लोग होने के बारे में उनकी विचारधारा ग़लत है।

परमेश्वर हमें विजयी जीवन नहीं देता - वह हमें जीवन देता है जैसे-जैसे हम विजयी होते हैं। जीवन के तनाव ही हमारे बल को बढ़ाते हैं। यदि कोई तनाव न हो, तो कोई बल भी नहीं होगा। क्या आप परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि वह आपको जीवन, स्वतन्त्रता, और आनन्द दे ? वह तब तक नहीं दे सकता जब तक कि आप तनाव को स्वीकार करने के लिए तैयार न हों। और जैसे ही आप तनाव का सामना करेंगे, आपको बल मिल जाएगा। अपने शर्मीलेपन पर जय पाकर पहला कदम उठाएँ। तब परमेश्वर आपको पोषण देगा - "जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से ...फल खाने को दूँगा" (प्रकाशितवाक्य 2:7)। जब आप शारीरिक रूप से अपने आप को खर्च करते हैं, तो आप थक कर चूर हो जाते हैं। लेकिन जब आप आत्मिक रूप से अपने आप को खर्च करते हैं, तो आपको और शक्ति मिलती है। परमेश्वर हमें कल के लिए या आनेवाले समय के लिए कभी शक्ति नहीं देता। वह हमें मौजूदा घड़ी के लिए शक्ति देता है। हमारी परीक्षा यह होती है कि हम अपनी व्यावहारिक बुद्धि के दृष्टिकोण से कष्टों का सामना करना चाहते हैं। लेकिन जब एक पवित्र जन कष्टों से कुचल जाता है तब भी वह "ढाढ़स बान्ध" सकता है क्योंकि परमेश्वर को छोड़ और सब लोगों के लिए विजय एक असम्भव बात लगती है।

अगस्त 3

परमेश्वर का बाध्यकारी उद्देश्य

उस ने ...उन से कहा, देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं ...।
लूका 18:31।

हमारे प्रभु के जीवन में, यरूशलेम उस जगह को दिखाता है जहाँ वह परमेश्वर की इच्छा की बुलन्दी पर पहुँचा। यीशु ने कहा "मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ" (यूहन्ना 5:30)। "पिता की इच्छा" चाहना हमारे प्रभु के सारे जीवन की प्रमुख दिलचस्पी थी। उसने मार्ग में जिन-जिन चीज़ों का सामना किया, चाहे वे आनन्द था या दुःख, सफलता थी या असफलता, वह इस उद्देश्य से कभी नहीं हटा। "...उस ने यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़ किया" (लूका 9:51)।

हमारे याद रखने के लिए सबसे बड़ी बात यह है कि हम परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए यरूशलेम जाते हैं, अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए नहीं। हमारे शारीरिक जीवन में हमारी आकांक्षाएँ हमारी अपनी होती हैं, लेकिन मसीही जीवन में हमारे अपने कोई लक्ष्य नहीं होते। आजकल हम मसीह के लिए फ़ैसला करने के बारे में बहुत कुछ बोलते हैं, लेकिन नए नियम में जो एकमात्र पहलू प्रदर्शित होता है वह है परमेश्वर का बाध्यकारी उद्देश्य। "तुम ने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना है..." (यूहन्ना 15:16)।

हम परमेश्वर के उद्देश्य के साथ सहमति में जानकारी के साथ नहीं लाए जाते - हम परमेश्वर के उद्देश्य में इसके बोध के बिना लाए जाते हैं। हमें इसकी कोई जानकारी नहीं कि परमेश्वर का लक्ष्य क्या हो सकता है; जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, परमेश्वर का उद्देश्य और धुँधला होता जाता है। ऐसा लगता है कि परमेश्वर का निशाना चूक गया है, क्योंकि हम इतने निकटदर्शी हैं कि हमें वह लक्ष्य जिसपर वह निशाना लगा रहा है, दिखाई ही नहीं देता। मसीही जीवन के आरम्भ में, परमेश्वर के उद्देश्य के बारे में हमारे अपने ही विचार होते हैं। हम कहते हैं, "परमेश्वर चाहता है कि मैं वहाँ जाऊँ," और, "परमेश्वर ने मुझे यह ख़ास काम करने के लिए बुलाया है।" हम वह करते हैं जो हम ठीक समझते हैं, और फिर भी परमेश्वर का बाध्यकर उद्देश्य हमारे ऊपर रहता है। जो काम हम करते हैं, परमेश्वर के बाध्यकर उद्देश्य की तुलना में तुच्छ होते हैं। वे उसके कार्य और उसकी योजना के चारों ओर मचान के समान हैं। उस ने बारहों को साथ लेकर (अलग ले जाकर) ..." (लूका 18:31)। परमेश्वर हर समय हमें अलग ले जाता है। परमेश्वर के बाध्यकर उद्देश्य के बारे में जानने के लिए जितना कुछ है, उसे हम अभी तक नहीं समझे हैं।

अगस्त 4

परमेश्वर की साहसी मित्रता

फिर उस ने बारहों को साथ लेकर (अलग ले जाकर) ... ।
लूका 18:31

हम पर भरोसा रखने के लिए परमेश्वर का साहस क्या खूब है ! क्या आप कहते हैं, "लेकिन उसने मुझे चुनने में मूर्खता की है, क्योंकि मुझमें कोई अच्छाई नहीं और मेरा मूल्य कुछ भी नहीं है" ? यही तो वह कारण है कि उसने आपको चुना है । जब तक आप सोचते हैं कि उसके लिए आपका कोई मूल्य है, तब तक वह आपको नहीं चुन सकता, क्योंकि आपके पास पूरे करने के लिए अपने ही उद्देश्य हैं । लेकिन यदि आप उसे अनुमति देंगे कि वह आपको आपकी आत्म-निर्भरता के अन्त तक ले जाए, तो वह आपको अपने साथ "यरूशलेम को" ले जाने के लिए चुनेगा (18:31) । और इसका अर्थ होगा ऐसे उद्देश्यों को पूरा करना जिनके बारे में वह आपके साथ विचार-विमर्श नहीं करेगा ।

हम यह कहते हैं कि क्योंकि एक व्यक्ति में प्राकृतिक योग्यता है, वह एक अच्छा मसीही बनेगा । सवाल हमारे पास उपलब्ध साधनों का नहीं, बल्कि हमारी ग़रीबी का है; उन चीज़ों का नहीं जो हम अपने साथ लाते हैं, बल्कि उसका जो परमेश्वर हमारे अन्दर रख देता है; प्राकृतिक गुणों का, चरित्र के बल का, ज्ञान का, या अनुभव का नहीं - इस मामले में इनसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता । इसमें जो एकमात्र चीज़ महत्त्वपूर्ण है वह है परमेश्वर के बाध्यकर उद्देश्य में शामिल कर लिया जाना और उसके मित्र बना लिए जाना (1 कुरिन्थियो 1:26-31) । परमेश्वर की मित्रता उन लोगों के साथ है जो अपनी ग़रीबी को जानते हैं । वह उस व्यक्ति को लेकर कुछ नहीं कर सकता जो यह सोचता है कि वह परमेश्वर के लिए बहुत उपयोगी है । मसीही होने के नाते, हम अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए यहाँ बिलकुल नहीं हैं - हम यहाँ परमेश्वर के उद्देश्य के लिए हैं, और ये दोनों बातें एक नहीं हैं । हम यह नहीं जानते कि परमेश्वर का बाध्यकर उद्देश्य क्या है, लेकिन चाहे जो भी हो जाए, हमें उसके साथ अपने सम्बन्ध को बनाकर रखना चाहिए । हमें किसी चीज़ को परमेश्वर और हमारे बीच सम्बन्ध को नुकसान नहीं पहुँचाने देना चाहिए, लेकिन यदि कोई चीज़ इसे नुकसान पहुँचा देती है, तो हमें समय लगाकर फिर से उससे मेल मिलाप कर लेना चाहिए । मसीहियत का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू वह काम नहीं जो हम करते हैं, बल्कि वह सम्बन्ध है जिसे हम बनाकर रखते हैं, और इस सम्बन्ध से चारों ओर होनेवाले प्रभाव और गुण हैं । परमेश्वर यह माँग करता है कि हम अपना पूरा ध्यान केवल इस ओर दें, और यही वह एकमात्र चीज़ है जिसपर लगातार हमला होता रहता है ।

अगस्त 5

परमेश्वर की चकित करनेवाली बुलाहट

...और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के लिए भविष्यवक्ताओं के द्वारा लिखी गई हैं,
वे सब पूरी होंगी। और उन्होंने इन बातों में से कोई बात न समझी ...।
लूका 18:31, 34।

परमेश्वर ने यीशु मसीह को जिस काम के लिए बुलाया, वह घोर संकट लगता था। और यीशु मसीह ने अपने चेलों को बुलाया कि वे उसे क्रूस पर चढ़ाए जाते हुए देखें, और वह उनमें से हर एक को ऐसे स्थान पर लाया जहाँ उनके हृदय टूट गए। परमेश्वर के दृष्टिकोण को छोड़ और हर दृष्टिकोण से उसका जीवन एक असफलता लगता था। लेकिन जो बात मनुष्य के दृष्टिकोण से असफलता लगती है, वह परमेश्वर के दृष्टिकोण से एक विजय थी, क्योंकि मनुष्य का उद्देश्य परमेश्वर का उद्देश्य कभी नहीं हो सकता।

परमेश्वर की यह चकित करनेवाली बुलाहट हमारे जीवन में भी आती है। परमेश्वर की बुलाहट को पूरी तरह से या बाहरी तरह से कभी नहीं समझा जा सकता। यह ऐसी बुलाहट है जिसे सिर्फ़ हमारे भीतर हमारे सच्चे अन्द्रूनी स्वभाव के द्वारा समझा जा सकता है। परमेश्वर की बुलाहट समुद्र की पुकार की तरह होती है - उसे उस व्यक्ति को छोड़ जिसके अन्दर समुद्र का स्वभाव है, कोई और नहीं सुन सकता। परमेश्वर हमें किस काम के लिए बुला रहा है, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसकी बुलाहट सिर्फ़ यह है कि हम उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उसके मित्र बनें। हमारी असली परीक्षा यह है कि हम सचमुच विश्वास करें कि परमेश्वर जानता है कि उसकी इच्छा क्या है। जो कुछ होता है, वह संयोग से नहीं होता - वह केवल परमेश्वर के आदेश से होता है। परमेश्वर पूरी प्रभुता के साथ अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहा है।

यदि हम परमेश्वर के साथ संगति और एकता में हैं, और समझते हैं कि वह हमें अपने उद्देश्यों में शामिल कर रहा है, तो हम कभी यह जानने की कोशिश नहीं करेंगे कि उसके उद्देश्य क्या हैं। जैसे-जैसे हम मसीही जीवन में आगे बढ़ते हैं, यह हमारे लिए और सरल होता जाता है, और हम यह पूछना कम कर देते हैं, कि "पता नहीं, परमेश्वर ने ऐसा क्यों होने दिया।" हम जीवन की सारी बातों के पीछे परमेश्वर के बाध्यकर उद्देश्यो को देखना शुरू कर देते हैं; यह देखना शुरू कर देते हैं कि परमेश्वर अलौकिक ढंग से हमें उस उद्देश्य के अनुकूल ढाल रहा है। एक मसीही वह है जो परमेश्वर के ज्ञान और उसकी बुद्धि पर भरोसा रखता है, अपनी योग्यताओं पर नहीं। यदि हमारे पास अपना ही उद्देश्य होता है, तो वह उस सरलता, शान्ति, और आराम की चाल को नष्ट कर देता है जो परमेश्वर की सन्तान की विशेषताएँ होनी चाहिए।

अगस्त 6

प्रार्थना में क्रूस

उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे।
यूहन्ना 16:26।

हम मसीह के क्रूस के बारे में अकसर यह सोचते हैं कि हमें इसमें से होकर गुज़रना है, जब कि वास्तव में इसे पार करने का उद्देश्य यह है कि हम इसके *अन्दर* आ सकें। क्रूस हमारे लिए एक ही चीज़ को दिखाता है - कि हम प्रभु यीशु मसीह के साथ पूरी तरह से और हर तरह से एक हैं, और यह एक होना सबसे ज़्यादा वास्तविक प्रार्थना में होता है।

"तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यक्ता है" (मत्ती 6:8)। तो फिर हम माँगें ही क्यों ? प्रार्थना का उद्देश्य परमेश्वर से उत्तर पाना नहीं, बल्कि उसके साथ सिद्ध और सम्पूर्ण एकता में होना है। यदि हम सिर्फ़ इसलिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि हमें प्रार्थना के उत्तर चाहिए, तो हम परमेश्वर के साथ खिसिया जाएँगे और नाराज़ हो जाएँगे। हर बार जब हम प्रार्थना करते हैं, तो उसका उत्तर मिलता ज़रूर है, लेकिन वह हमेशा हमारी प्रत्याशा के अनुसार नहीं होता, और आत्मिक रूप से हमारी चिड़चिड़ाहट यह दिखाती है कि वास्तव में हम प्रार्थना में अपने प्रभु के साथ एक होने से इनकार कर रहे हैं। हम यहाँ यह साबित करने के लिए नहीं हैं कि परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के जीवन्त विजयोपहार होने के लिए हैं।

...मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हारे लिए पिता से विनती करूँगा; क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है..." (यूहन्ना 16:26-27)। क्या आप परमेश्वर के साथ इतनी घनिष्ठता के सम्बन्ध के स्तर पर पहुँच गए हैं कि आपके प्रार्थना के जीवन का एकमात्र कारण यह है कि वह यीशु मसीह के प्रार्थना के जीवन के साथ एक हो गया है ? क्या हमारे प्रभु ने आपके जीवन को अपने जानदार जीवन के साथ बदल दिया है ? यदि हाँ, तो "उस दिन" आप यीशु के साथ इतनी घनिष्ठता से एक होंगे कि कोई फ़र्क नहीं दिखाई देगा।

जब ऐसा लगता है कि प्रार्थना का उत्तर नहीं मिला, तो किसी और पर दोष लगाने से सावधान रहें। यह हमेशा शैतान का फंदा होता है। जब ऐसा लगता है कि प्रार्थना का उत्तर नहीं मिल रहा है, तो इसका हमेशा कोई कारण होता है - परमेश्वर ऐसे समय का इस्तेमाल आपको कोई गहरी शिक्षा देने के लिए करता है जो आपके सिवा और किसी के लिए नहीं होती।

परमेश्वर के भवन में प्रार्थना

...उन्होंने उसे ...मन्दिर में पाया। उसने उन से कहा,"क्या तुम नहीं जानते
कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है ?"
लूका 2:46,49।

हमारे प्रभु की बाल-अवस्था ऐसी अपरिपक्वता नहीं थी जो पुरुषत्व में बदलने का इन्तज़ार कर रही थी - उसकी बाल-अवस्था एक अनन्त तथ्य है। क्या मैं अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के साथ एक होने के परिणामस्वरूप परमेश्वर का एक पवित्र, निर्दोष बालक हूँ ? क्या परमेश्वर का पुत्र मेरे अन्दर अपने पिता के भवन में रह रहा है ?

जो एकमात्र सदा बनी रहनेवाली वास्तविकता है, वह परमेश्वर खुद है, और उसकी सुव्यवस्था पल-पल मेरे पास आती जाती है। क्या मैं लगातार परमेश्वर की वास्तविकता के सम्पर्क में रहता हूँ, या सिर्फ़ तब ही प्रार्थना करता हूँ जब कोई परेशानी खड़ी हो जाती है - जब मेरे जीवन में कोई हलचल होती है ? मुझे अपने प्रभु के साथ घनिष्ठता से ऐसे तरीकों से एक होना सीखना है जिनके बारे में हम में से बहुत से लोगों ने सीखना शुरू भी नहीं किया है। "...मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है" - और मुझे अपने जीवन की हर घड़ी अपने पिता के कामों में लगे रहना सीखना है।

अपनी परिस्थितियों के बारे में सोचें। क्या आप प्रभु के जीवन के साथ इतनी एकता में हैं कि आप सिर्फ़ परमेश्वर के एक बालक हैं, हर समय उस से बातचीत करते हैं और जानते हैं कि सब कुछ उसी के हाथों से आता है ? क्या वह अनादि बालक आपके अन्दर अपने पिता के भवन में वास कर रहा है ? क्या उसके सेवा करनेवाले जीवन का अनुग्रह आपके द्वारा आपके घर में, आपके काम-धन्धे में, आपके मित्रों के घेरे में काम कर रहा है ? क्या आप यह सोच कर हैरान हो रहे हैं कि आपको कुछ विशेष परिस्थितियों में से होकर क्यों गुज़रना पड़ रहा है ? वास्तव में, ऐसा नहीं है कि *आपको* उनमें से होकर गुज़रना है। यह परमेश्वर के उस पुत्र के साथ आपके सम्बन्ध के कारण है, जो अपने पिता की इच्छा के द्वारा आपके जीवन में आता है। आपको उसके साथ एक होकर रहते हुए, उसे आपके जीवन में अपनी इच्छा पूरी करने की अनुमति देनी होगी।

आपके प्रभु के जीवन को आपका सक्रिय, सरल जीवन बनना है, और जिस तरह से उसने पृथ्वी पर रहते समय लोगों के बीच में वास किया और काम किया, उसी तरह से उसे आपके जीवन में रहना और काम करना चाहिए।

अगस्त 8

पिता के सम्मान में प्रार्थना

वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।
लूका 1:35।

यदि परमेश्वर के पुत्र ने मेरे शरीर में जन्म ले लिया है, तो क्या मैं उसकी पवित्र निर्दोषता, सरलता, और परमेश्वर के साथ एकता को मौका दे रहा हूँ कि वह मुझ में प्रदर्शित हो सके ? जो परमेश्वर के पुत्र के पृथ्वी पर जन्म लेने के इतिहास में कुँवारी मरियम के लिए सच था, वह हर पवित्र जन के लिए भी सच है। परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर के प्रत्यक्ष कार्य के द्वारा मुझ में जन्म लेता है। फिर, उसकी सन्तान होने के नाते, मुझे सन्तान के अधिकार का इस्तेमाल करना चाहिए - प्रार्थना के द्वारा हमेशा अपने स्वर्गीय पिता के आमने-सामने होने का अधिकार। क्या मैं आश्चर्य से लगातार अपनी व्यावहारिक बुद्धि से कहता हूँ कि, "तू मुझे इधर मुड़ने या उधर जाने को क्यों कहता है ? क्या तू नहीं जानता कि मुझे अपने पिता के काम में लगे रहना है ?" (लूका 2:49)। हमारी परिस्थितियाँ चाहे कुछ भी हों, उस पवित्र, निर्दोष, और अनादि बालक को अपने पिता के सम्पर्क में रहना है।

क्या मैं इतना निष्कपट हूँ कि अपने प्रभु के साथ इस तरह से एक हो जाऊँ ? क्या वह मुझमें अपनी अद्भुत इच्छा पूरी कर रहा है ? क्या परमेश्वर के पुत्र का रूप मुझ में बन जाने के द्वारा उसकी इच्छा मुझ में पूरी हो रही है, या मैंने बड़ी सावधानी से उसे किनारे धकेल दिया है ? आजकल इतना शोर-शराबा क्यों हो रहा है ! सब लोग इतना शोर क्यों मचा रहे हैं ? लोग चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि परमेश्वर के पुत्र को मार डाला जाए। इस समय यहाँ परमेश्वर के पुत्र के लिए जगह नहीं - पिता के साथ शान्त, पवित्र संगति और एकता के लिए कोई जगह नहीं।

क्या परमेश्वर का पुत्र पिता का सम्मान करते हुए, मुझ में प्रार्थना कर रहा है, या मैं उसे आज्ञा दे रहा हूँ कि वह मेरी माँगे पूरी करे ? क्या वह मेरे अन्दर वह सेवकाई कर रहा है जो उसने अपने पुरुष होने के दौरान पृथ्वी पर की थी ? क्या मुझ में वास करनेवाला परमेश्वर का पुत्र अपने कष्टों और दुःखों में से गुज़र रहा है ताकि उसके अपने उद्देश्य पूरे हो सकें ? एक व्यक्ति परमेश्वर के सबसे अधिक परिपक्व पवित्र लोगों के भीतरी जीवन को जितनी अच्छी तरह से जानता है, उतनी ही अच्छी तरह से वह देख सकता है कि परमेश्वर का उद्देश्य वास्तव में यह है कि मैं "मसीह के क्लेशों की घटी अपने शरीर में पूरी करूँ ..." (कुलुस्सियों 1:24)। और जब हम सोचते हैं कि "पूरा करने" के लिए क्या ज़रूरत होती है, तो हमेशा यह पाते हैं कि अभी भी कुछ करना बाकी है।

अगस्त 9

परमेश्वर की सुनने की सीमा में प्रार्थना करना

यीशु ने आँखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली। यूहन्ना 11:41।

जब परमेश्वर का पुत्र प्रार्थना करता है, उसका ध्यान और जागरूकता अपने पिता की ओर होती है। परमेश्वर हमेशा अपने पुत्र की प्रार्थनाओं को सुनता है, और यदि परमेश्वर के पुत्र का रूप मुझ में बन गया है (गलातियों 4:19 देखें) तो पिता मेरी प्रार्थनाओं को हमेशा सुनेगा। लेकिन मुझे ध्यान रखना है कि परमेश्वर का पुत्र मेरे मानव शरीर में प्रदर्शित हो। "...तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है ..." (1 कुरिन्थियों 6:19), यानि, आपकी देह परमेश्वर के पुत्र का बैतलहम है। क्या परमेश्वर के पुत्र को मुझ में काम करने का मौका मिल रहा है? क्या उसके जीवन की सरलता मुझ में बिलकुल वैसे ही पूरी हो रही है जैसे पृथ्वी पर उसके जीवन में होती थी ? जब मैं एक साधारण मनुष्य होने के नाते जीवन की प्रतिदिन की घटनाओं के सम्पर्क में आता हूँ, तो क्या परमेश्वर के आनादि पुत्र की अपने पिता से प्रार्थनाएँ मुझमे की जा रही हैं ? यीशु कहता है, "उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे ..." (यूहन्ना 16:26)। वह किस दिन की बात कर रहा है ? वह उस दिन की ओर इशारा कर रहा है जब पवित्र आत्मा मेरे पास आ गया और उसने मुझे मेरे प्रभु के साथ एक कर दिया।

क्या प्रभु यीशु मसीह आपके जीवन से बहुतायत से सन्तुष्ट किया जा रहा है, या आप उसके सामने आत्मिक घमण्ड की चाल प्रदर्शित कर रहे हैं ? अपनी व्यावहारिक बुद्धि को कभी इतना महत्त्वपूर्ण और प्रबल न बनने दें कि वह परमेश्वर के पुत्र को एक ओर कर दे। व्यावहारिक बुद्धि एक वरदान है जो परमेश्वर ने हमारे मानुषिक स्वभाव को दिया है - लेकिन व्यावहारिक बुद्धि उसके पुत्र का वरदान नहीं। उसके पुत्र का वरदान अलौकिक बुद्धि है, और हमें अपनी व्यावहारिक बुद्धि को सिंहासन पर कभी नहीं बैठाना चाहिए। पुत्र हमेशा पिता को पहचानता है और उसके साथ एक होता है, लेकिन व्यावहारिक बुद्धि ने ऐसा न तो कभी किया है, और न ही कभी करेगी। हमारी साधारण योग्यताएँ परमेश्वर की आराधना तब तक नहीं करेंगी जब तक कि वे परमेश्वर के पुत्र के हमारे अन्दर वास करने के द्वारा बदल न जाएँ। हमें सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि हमारा मानव शरीर उसकी सम्पूर्ण अधीनता में रहता है, और परमेश्वर को हर पल उसके द्वारा काम करने देता है। क्या हम यीशु मसीह पर मानव निर्भरता के इस स्तर पर जी रहे हैं कि उसका जीवन हर घड़ी हम में प्रदर्शित हो रहा है ?

एक पवित्र जन का पवित्र कष्ट

जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कष्ट उठाते हैं, वे भलाई करते हुए,
अपने अपने प्राण को ...(उस) के हाथ में सौंप दें।
1 पतरस 4:19।

यदि आप कष्ट उठाने का चुनाव करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि आप में ही कोई गड़बड़ है ; लेकिन परमेश्वर की इच्छा चुनना - चाहे ऐसा करने से आपको दुःख भी क्यों न उठाना पड़े - एक अलग ही बात है। कोई भी सामान्य, स्वस्थ पवित्र जन अपनी इच्छा से दुःख उठाने का चुनाव नहीं करता; वह सिर्फ़ परमेश्वर की इच्छा का चुनाव करता है, बिलकुल जैसे यीशु ने किया, चाहे इसका अर्थ दुःख उठाना हो या नहीं। और किसी पवित्र जन को किसी और पवित्र जन के जीवन में दुःख उठाना सिखाए जाने के पाठ में दख़ल देने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए।

जो पवित्र जन परमेश्वर के हृदय को सन्तुष्ट करता है, वह दूसरे पवित्र लोगों को भी परमेश्वर के लिए सशक्त और परिपक्व बनाएगा। लेकिन जो लोग हमें सशक्त बनाते हैं, वे ऐसे लोग कभी नहीं होते जो हमारे साथ हमदर्दी जताते हैं; बल्कि जो लोग हमें हमदर्दी जताते हैं, वे हमारे लिए रुकावट बनते हैं, क्योंकि हमदर्दी हमें सिर्फ़ निर्बल बनाती है। जो पवित्र जन यीशु से इतना घनिष्ठ है जितना सम्भव हो सकता है, उससे बेहतर कोई एक दूसरे पवित्र जन को कभी नहीं समझ सकता। यदि हम किसी और पवित्र जन की हमदर्दी को ग्रहण कर लेते हैं, तो हमारे मन में अपने आप यह भावना आ जाती है कि "परमेश्वर मेरे साथ बड़ी कठोरता से व्यवहार कर रहा है और मेरे जीवन को बहुत ज़्यादा कठिन बना रहा है।" इसीलिए ही तो यीशु ने कहा कि आत्मदया शैतान की ओर से होती है (मत्ती 16:21-23)। हमें परमेश्वर की नेकनामी का ध्यान रखना चाहिए। परमेश्वर के चरित्र पर धब्बा लगाना हमारे लिए बहुत आसान होता है क्योंकि परमेश्वर कभी हमें उल्टा जवाब नहीं देता; वह कभी अपना बचाव नहीं करता, और न ही अपनी सफ़ाई देता है। यह सोचने से सावधान रहें कि पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान यीशु को हमदर्दी की ज़रूरत हुई थी। उसने लोगों की हमदर्दी को ग्रहण करने से इनकार कर दिया क्योंकि अपनी महान बुद्धि से वह जानता था कि पृथ्वी पर का कोई भी व्यक्ति उसके उद्देश्य को नहीं समझता था (16:23 देखें)। उसने सिर्फ़ अपने पिता और स्वर्गदूतों की हमदर्दी को ग्रहण किया (लूका 15:19 देखें)।

संसार की सोच के अनुसार, परमेश्वर के पवित्र लोगों की बेकारी की ओर ज़रा ध्यान दें। ऐसा लगता है कि परमेश्वर अपने पवित्र लोगों को सबसे बेकार जगहों में काम पर लगाता है। और फिर हम कहते हैं कि, "परमेश्वर की इच्छा है कि मैं यहाँ पर काम करूँ क्योंकि मैं उसके लिए इतना उपयोगी हूँ।" परमेश्वर अपने पवित्र लोगों को वहाँ रखता है जहाँ वे उसे सबसे ज़्यादा महिमा पहुँचाएँगे, और यह फ़ैसला करना कि यह जगह कहाँ होगी, हमारी योग्यता से बिलकुल परे है।

इस अनुभव का आना ज़रूरी है

एल्लियाह बवण्डर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया और ...एलीशा को फिर देख न पड़ा।
2 राजा 2:11-12।

जब तक परमेश्वर आपको आपका "एल्लियाह" देता है, तब तक उसपर आश्रित होना ग़लत नहीं। लेकिन याद रखें, कि वह समय आएगा जब उसे जाना होगा और वह आपका मार्गदर्शन और अगुवा नहीं रहेगा, क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा नहीं कि वह टिका रहे। इसका विचार भी आपको यह कहने के लिए बाध्य करता है कि, "मैं अपने 'एल्लियाह' के बिना आगे नहीं जा सकता।" फिर भी, परमेश्वर कहता है कि आपको आगे जाना होगा।

अपने "यरदन" पर अकेले (2:4)। यरदन नदी एक ऐसे अलग होने का प्रतीक है जहाँ किसी और के साथ आपकी संगति नहीं होती, और जहाँ कोई और आपसे आपकी ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता। अब आपको उन सब बातों को परखना होगा जो आपने तब सीखी थीं जब आप अपने "एल्लियाह" के साथ थे। आप एल्लियाह के साथ बार-बार यरदन को गए, लेकिन आज आप अकेले उसका सामना कर रहे हैं। यह कहना बेकार है कि आप नहीं जा सकते - अनुभव की घड़ी आपके सामने है, और आपको जाना होगा। यदि आप सचमुच जानना चाहते है कि क्या परमेश्वर वही परमेश्वर है जैसा आपका विश्वास उसे मानता है, तो अपनी "यरदन नदी" को अकेले पार करें।

अपने "यरीहो" पर अकेले (2:15)। यरीहो उस स्थान का प्रतीक है जहाँ आपने अपने "एल्लियाह" को बहुत से महान कार्य करते देखा था। लेकिन जब आप अपने "यरीहो" पर अकेले पहुँचते हैं, तो परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए पहला कदम लेने की आपकी अनिच्छा प्रबल होती है, इसके बदले में आप किसी और के लिए ठहरे रहते हैं कि वह यह कदम उठाए। लेकिन यदि आप उसके प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे जो आपने अपने "एल्लियाह" के साथ रहते हुए सीखा था, तो आपको एक चिह्न मिलेगा कि परमेश्वर आपके साथ है, जैसे एलीशा को भी मिला था।

अपने बेतेल पर अकेले (2:23)। अपने "बेतेल" पर, आप अपने आप को अपनी चतुराई के अन्त पर और परमेश्वर की बुद्धि के आरम्भ होने के स्थान पर पाते हैं। जब आप अपनी बुद्धि के अन्त पर पहुँच जाते हैं और आपको लगता है कि आप भय का शिकार हो जाएँगे, तो घबराएँ नहीं ! परमेश्वर के प्रति सच्चे और विश्वासयोग्य रहें और वह सत्य को इस ढंग से बाहर लाएगा जो आपके जीवन को आराधना की अभिव्यक्ति बना देगा। आपने अपने "एल्लियाह" के साथ रहते समय जो कुछ सीखा है, उसे अमल में लाएँ - उसकी चद्दर का इस्तेमाल करें और प्रार्थना करें (2:13-14 देखें)। परमेश्वर पर भरोसा रखने का संकल्प करें, और आगे से एल्लियाह की तलाश न करें।

अगस्त 12

परमेश्वर में विश्राम करने का धर्मविज्ञान

हे अल्पविश्वासियो, क्यों डरते हो ?
मत्ती 8:26।

जब हम डरे हुए होते हैं, तो कम से कम परमेश्वर से प्रार्थना तो कर सकते हैं, लेकिन हमारे प्रभु को यह अधिकार है कि वह यह प्रत्याशा कर सके कि जो उसके नाम से कहलाते हैं, वे उसपर भरोसा रखें। परमेश्वर यह प्रत्याशा करता है कि उसके बच्चे उसपर इतना भरोसा रखेंगे कि किसी भी संकट में भरोसेमन्द रहनेवाले लोग वही होंगे। लेकिन परमेश्वर पर हमारा भरोसा एक ख़ास सीमा तक होता है, इसके बाद हम ऐसे लोगों की घबराई हुई प्रार्थनाओं पर वापस आ जाते हैं जो परमेश्वर को जानते तक नहीं। हम अपनी बुद्धि के अन्त पर आ जाते हैं और यह दिखा देते हैं कि हमें उस पर या संसार पर उसकी प्रभुता के नियन्त्रण पर ज़रा सा भी भरोसा नहीं। हमें लगता है कि वह सो रहा है, और हमें समुद्र में अपने आगे ऊँची-ऊँची लहरें दिखाई देती हैं।

"...हे अल्पविश्वासियो !" चेलों के हृदयों में कितनी पीड़ा हुई होगी और उनके मन में ज़रूर यह ख़्याल आया होगा कि, "हम फिर से निशाना चूक गए !" और हमारे हृदय में भी कितनी पीड़ा होगी जब हमें अचानक यह एहसास होगा कि, कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद भी, यीशु पर पूरा भरोसा रखने के द्वारा हम उसके हृदय में सम्पूर्ण आनन्द पैदा कर सकते थे।

ऐसे समय भी होते हैं जब हमारे जीवन में कोई तूफ़ान या संकट नहीं होता, और हम वह सब करते हैं जो मनुष्य के लिए सम्भव होता है। लेकिन जब कोई संकट आ पहुँचता है, तो हम तुरन्त दिखा देते हैं कि हम किस पर भरोसा करते हैं। यदि हम परमेश्वर की आराधना करना और अपना भरोसा उसपर रखना सीख रहे हैं, तो वह संकट साबित कर देगा कि हम टूट जाने के कगार पर पहुँच कर भी परमेश्वर पर अपने भरोसे को नहीं टूटने देते।

हम पवित्रीकरण के बारे में काफ़ी बातें करते रहे हैं, लेकिन हमारे जीवन में इसका क्या परिणाम होगा ? हमारे जीवन में यह शान्ति से परमेश्वर में विश्राम करने के द्वारा दिखाई देगा, जिसका अर्थ है परमेश्वर के साथ सम्पूर्ण एकता। और यह एकता उसकी दृष्टि में हमें न केवल निर्दोष ही बनाएगी, बल्कि उस के लिए एक गहरा आनन्द भी बनेगी।

अगस्त 13

"आत्मा को न बुझाओ"

आत्मा को न बुझाओ।
1 थिस्सलुनीकियों 5:19।

परमेश्वर के आत्मा की आवाज़ वसन्त ऋतु में चलनेवाले मन्द समीर की तरह कोमल होती है - इतनी कोमल कि, यदि आप परमेश्वर के साथ सम्पूर्ण संगति और एकता में नहीं जी रहे हैं, तो वह आपको कभी सुनाई नहीं देगी। जब परमेश्वर का आत्मा हमें चेतावनी देता है या हमपर रोक लगाता है, तो वह सबसे आश्चर्यजनक कोमल ढंग से हमारे पास आता है। यदि आपके पास उसकी आवाज़ पहचानने की संवेदनशीलता न हो, तो आप उसे बुझा देंगे, और आपका आत्मिक जीवन कमज़ोर हो जाएगा। यह रोके जाने का एहसास हमेशा एक "दबे हुए धीमे शब्द" के रूप में आएगा (1 राजा 19:12), इतनी धीमी आवाज़ में कि परमेश्वर के पवित्र जन को छोड़ इसे कोई दूसरा नहीं सुन पाएगा।

अपनी व्यक्तिगत गवाही देते समय यदि आपको पीछे मुड़कर देखना पड़ता है और बार-बार यह कहना पड़ता है कि "बहुत साल पहले मेरा उद्धार हुआ था," तो ऐसी गवाही देने से सावधान रहें। यदि आप ज्योति में चल रहे हैं, तो इसमें "पीछे देखना" नहीं होता - पिछली बातें परमेश्वर के साथ हमारी मौजूदा संगति और एकता के आश्चर्य में धीरे-धीरे समा जाती हैं (लूका 9:62; 1 यहन्ना 1:6-7 भी देखें)। यदि आप ज्योति से बाहर निकल जाते हैं, तो आप एक भावुक मसीही बन जाते हैं, और सिर्फ़ अपनी यादों के बल पर जीते हैं, और आपकी गवाही में एक कठोर खनक होगी। जब आप "ज्योति में चला करते थे" उन दिनों के बीते हुए अनुभवों को याद करने के द्वारा मौजूदा समय में "ज्योति में चलने" से इनकार करने पर पर्दा डालने की कोशिश न करें (1 यूहन्ना 1:7)। पवित्र आत्मा जब भी आपको यह एहसास दिलाता है कि वह आपको रोक रहा है, तो तुरन्त रुक जाएँ और सब कुछ ठीक कर लें नहीं तो आप उसे बुझाते रहेंगे और उसे शोकित करते रहेंगे, और आपको इसका बोध भी नहीं होगा कि आप ऐसा कर रहे हैं।

मान लें कि परमेश्वर आपको एक संकट-स्थिति में लाता है और आप लगभग पूरे संकट को झेल लेते हैं, लेकिन पूरी तरह नहीं। तो वह संकट को फिर से लाएगा, लेकिन इस बार उसकी कुछ प्रबलता खो जाएगी। आपकी अन्तर्दृष्टि कम होगी और आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण आपकी शर्मिन्दगी ज़्यादा होगी। यदि आप उसके आत्मा को शोकित करना जारी रखेंगे, तो एक समय आएगा जब उस संकट का दोहराया जाना सम्भव नहीं होगा, क्योंकि आपने आत्मा को पूरी तरह से बुझा दिया होगा। लेकिन यदि आप संकट में से गुज़र जाएँगे, तो आपका जीवन परमेश्वर की प्रशंसा का एक भजन बन जाएगा। कभी किसी ऐसी चीज़ से मोह न करें जो परमेश्वर को दुःखी करना जारी रखती है। परमेश्वर को उस चीज़ को चोट पहुँचानी पड़ेगी जिसका जाना ज़रूरी है।

प्रभु का अनुशासन

...हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान,
और जब वह तुझे घुड़के, तो हियाव न छोड़।
इब्रानियों 12:5।

परमेश्वर के आत्मा को शोकित करना बहुत आसान होता है; हम परमेश्वर के अनुशासन को हलकी बात जानने के द्वारा, उसके घुड़कने पर साहस छोड़ने के द्वारा, उसे शोकित करते हैं। यदि हमारे पाप से अलग किए जाने का और पवित्रीकरण की प्रक्रिया के द्वारा पवित्र बनाए जाने का अनुभव अभी भी बहुत छिछला है, तो हम परमेश्वर की वास्तविकता को कुछ और ही समझ बैठते हैं। और जब परमेश्वर का आत्मा हमें चेतावनी देता है या रोकता है, तो ग़लतफ़हमी का शिकार होते हुए हम कहते हैं, "यह शैतान की ओर से होगा।"

"आत्मा को मत बुझाओ" (1 थिस्सलुनीकियों 5:19), और जब वह आपसे कहता है कि, "इस मामले में अब अन्धे मत बने रहो - तुम आत्मिक रूप से उतना आगे नहीं बढ़े हो जितना तुम सोचते थे। अब तक मैं यह बात तुम पर प्रकट नहीं कर पाया हूँ, लेकिन अभी, इसी समय, कर रहा हूँ," तो आप उसका अपमान न करें। जब प्रभु इस तरह से आपको अनुशासन में लाता है, तो उसे अपनी इच्छा पूरी करने दें। उसे अनुमति दें कि वह आपको परमेश्वर के सामने एक सही सम्बन्ध में रख सके।

"...और जब वह तुझे घुड़के, तो हियाव न छोड़।" हम अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करने लगते हैं, परमेश्वर से खिसिया जाते हैं, और फिर कहते हैं, "अब मैं ऐसा किए बिना नहीं रह सकता। मैंने प्रार्थना की लेकिन सब कुछ सही नहीं हुआ। तो अब मैं छोड़ रहा हूँ।" ज़रा सोचें कि, यदि आप अपने जीवन के किसी और क्षेत्र में इस प्रकार का व्यवहार करेंगे, तो क्या होगा!

क्या मैं पूरी तरह से तैयार हूँ कि वह मुझे अपने सामर्थ्य से पकड़ ले और मुझ में ऐसा काम करे जो सचमुच उसके नाम के योग्य है? पवित्रीकरण मेरा वह विचार नहीं है जो मैं चाहता हूँ परमेश्वर मेरे लिए करे - पवित्रीकरण परमेश्वर का विचार है कि वह मेरे साथ क्या करना चाहता है। लेकिन उसे मुझे मन और आत्मा की ऐसी स्थिति में लाना होगा जहाँ मैं उसे अनुमति दूँगा कि वह मुझे सम्पूर्ण रूप से पवित्र करे, चाहे उसकी क़ीमत कुछ भी क्यों न हो (1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24)।

अगस्त 15

नए जन्म का प्रमाण

तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है ।
यूहन्ना 3:7 ।

नीकुदेमुस ने प्रश्न किया कि "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है ?" इसका उत्तर यह है कि, "सिर्फ़ तब जब वह अपने अधिकार, अपनी अच्छाइयों, और अपने धर्म समेत अपने जीवन की बाकी सारी चीज़ों के लिए मरने को तैयार हो, और एक ऐसे नए जीवन को ग्रहण करने के लिए तैयार हो जिसका उसने पहले कभी अनुभव न किया हो (3:4) । यह नया जीवन अपने आप को हमारे सचेत पश्चात्ताप में और हमारी अचेत पवित्रता के द्वारा प्रकट करता है ।

"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया..." (यूहन्ना 1:12) । क्या यीशु के बारे में मेरा ज्ञान मेरे अपनी भीतरी आत्मिक बोध का परिणाम है, या यह वह है जो मैंने दूसरों की बातें सुनने के द्वारा सीखा है ? क्या मेरे जीवन में कुछ ऐसा है जो मुझे मेरे व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में प्रभु यीशु के साथ जोड़ देता है ? यीशु मसीह के व्यक्तिगत ज्ञान को मेरे आत्मिक इतिहास की मूल बुनियाद होना चाहिए । नए सिरे से जन्म लेने का अर्थ यह है कि मैं यीशु को देखता हूँ ।

"...यदि कोई नए सिरे से न जन्मे, तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता" (यूहन्ना 3:3) । क्या मैं सिर्फ़ परमेश्वर के राज्य के सबूत को ढूँढ रहा हूँ, या मैं सचमुच उसकी सम्पूर्ण प्रभुता को पहचान रहा हूँ ? नया जन्म मुझे दृष्टि का एक नया सामर्थ्य देता है जिसके द्वारा मैं परमेश्वर के नियन्त्रण को पहचानने लगता हूँ । उसकी प्रभुता तो हर समय उपस्थित थी, लेकिन क्योंकि परमेश्वर अपने स्वभाव के प्रति ईमानदार है, इसलिए मैं उसे तब तक नहीं देख सकता था जब तक मुझे उसका निजी स्वभाव नहीं मिल गया ।

"जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता ..." (1 यूहन्ना 3:9) । क्या मैं पाप करना बन्द करने की कोशिश कर रहा हूँ या मैंने पाप करना सचमुच बन्द कर दिया है ? परमेश्वर से जन्म लेने का अर्थ यह है कि मेरे पास पाप करना छोड़ने का परमेश्वर का अलौकिक सामर्थ्य है । बाइबल यह कभी नहीं पूछती कि "क्या एक मसीही को पाप करना चाहिए ?" बाइबल बलपूर्वक कहती है कि *एक मसीही को पाप नहीं करना चाहिए* । नए जन्म का कार्य हम में तब ही प्रभावशाली हो रहा होता है जब हम पाप नहीं करते; सिर्फ़ यह ही नहीं कि हमारे पास पाप न करने का सामर्थ्य है, बल्कि यह कि हमने सचमुच पाप करना छोड़ दिया है । फिर भी 1 यूहन्ना 3:9 का अर्थ यह नहीं कि हम पाप *नहीं* कर सकते - उसका अर्थ केवल यह है कि यदि हम अपने अन्दर परमेश्वर के जीवन की आज्ञा मानेंगे, तो हमें पाप करने की ज़रूरत नहीं होगी ।

अगस्त 16

क्या वह मुझे जानता है ?

वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है।
यूहन्ना 10:3।

जब मैंने, दुर्भाग्य से, उसे ग़लत समझा है ? (यूहन्ना 20:11-18 देखें)। सिद्धान्तों के बारे में सब कुछ जानना और फिर भी यीशु को न जानना सम्भव है। एक व्यक्ति की आत्मा गम्भीर ख़तरे में होती है जब सिद्धान्तों का ज्ञान यीशु को मात कर देता है और उसके साथ घनिष्ठ सम्पर्क रखने से कतराता है। मरियम क्यों रो रही थी ? उसके लिए सिद्धान्तों का महत्त्व उतना था जितना उसके पैरों के नीचे की घास का। बल्कि, कोई भी फरीसी सिद्धान्त के आधार पर मरियम को मूर्ख साबित कर सकता था, लेकिन एक चीज़ जिसका वे मज़ाक नहीं उड़ा सकते थे, वह यह सच्चाई थी कि यीशु ने उसके अन्दर से सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं (लूका 8:2 देखें)। फिर भी, खुद यीशु को जानने की तुलना में उसकी आशीषें मरियम के लिए नहीं के बराबर थीं। "...वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है ...यीशु ने उससे कहा, 'मरियम !' " (यूहन्ना 20:14, 16)। जैसे ही उसने मरियम को नाम लेकर पुकारा, वह तुरन्त जान गई कि बोलनेवाले के साथ उसका व्यक्तिगत इतिहास जुड़ा हुआ है। "उसने पीछे फिरकर उस से ...कहा, 'रब्बूनी !' " (20:16)।

जब मैंने हठपूर्वक, उसपर सन्देह किया है ? (यूहन्ना 20:24-29)। क्या मैं यीशु के बारे में सन्देह करता रहा हूँ - शायद किसी अनुभव के बारे में जिसकी दूसरे लोग गवाही दे रहे हैं, परन्तु जिसका अनुभव मैंने खुद अभी तक नहीं किया है ? दूसरे चेलों ने थोमा से कहा, "हमने प्रभु को देखा है।" (20:25)। लेकिन थोमा ने सन्देह करते हुए कहा, "जब तक मैं...न देख लूँ ...तब तक मैं प्रतीति नहीं करूँगा" (20:25)। थोमा को यीशु के व्यक्तिगत स्पर्श की ज़रूरत थी। उसके स्पर्श कब आएँगे, हम कभी नहीं जान सकते, लेकिन जब वे आते हैं, तो इतने अनमोल होते हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। "थोमा ने उत्तर दिया,'हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर !' " (20:28)।

जब मैंने स्वार्थी होकर उसका इनकार किया है ? (यूहन्ना 21:15-17 देखें)। पतरस ने धिक्कार देकर और शपथ खाकर यीशु मसीह का इनकार किया (मत्ती 26:69-75 देखें), और फिर भी अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु पतरस से अकेले में मिला। यीशु ने पतरस को पहले अकेले में बहाल किया, और उसके बाद सबके सामने बहाल किया। और पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु ...तू यह जानता है कि मैं तुझसे प्रीति रखता हूँ" (यूहन्ना 21:17)।

क्या यीशु मसीह के साथ मेरा व्यक्तिगत इतिहास है ? शिष्यता का एकमात्र सच्चा चिह्न है यीशु के साथ घनिष्ठ एकता - यीशु की जानकारी जिसे कोई चीज़ हिला नहीं सकती।

अगस्त 17

क्या आप निराश हैं या समर्पित हैं ?

यीशु ने उससे कहा, 'तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बाँट दे ... और मेरे पीछे हो ले।' वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था।
लूका 18:22-23।

क्या आपने कभी स्वामी को आपसे बहुत कठिन बात कहते हुए सुना है ? यदि नहीं, तो मेरे मन में प्रश्न उठता है कि क्या आपने उसे कुछ भी कहते सुना है। यीशु हमसे बहुत सी ऐसी बातें कहता हैं जिन्हें हम सुनते तो हैं, लेकिन जिनकी ओर हम ध्यान नहीं देते। और जब हम उसे सुन लेते हैं, तो उसकी बात कठोर और कड़ी लगती है।

यीशु ने ज़रा सी भी रुचि नहीं दिखाई कि यह धनी अगुवा यीशु के कहे के अनुसार कर रहा है या नहीं, न ही यीशु ने उसे अपने पास रखने की कोई कोशिश की। उसने उससे सिर्फ़ यह कहा कि, "अपना सब कुछ बेचकर ... मेरे पीछे हो ले।" हमारे प्रभु ने उससे विनती नहीं की; उसे लुभाने की कोशिश नहीं की - उसने सिर्फ़ वह सबसे कठोर शब्द कहे जो मनुष्य के कानों ने कभी सुने थे, और फिर उसे उसके हाल पर छोड़ दिया।

क्या मैंने यीशु को मुझसे कभी कोई कठिन और सख़्त बात कहते सुना है ? क्या उसने व्यक्तिगत रूप से मुझसे कुछ कहा है जिसे मैंने जान-बूझकर सुना है - कोई ऐसी बात नहीं जिसे मैं दूसरों के लिए समझा सकूँ, बल्कि ऐसी बात जो मैंने उसे सिर्फ़ मुझसे कहते सुनी है ? यह व्यक्ति समझ गया कि यीशु ने क्या कहा। उसने उसे स्पष्टता से सुना, उसके पूरे अर्थ के प्रभाव को समझा, और उससे उसका दिल टूट गया। वह विद्रोह करनेवाले व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक उदास और निराश व्यक्ति के रूप में चला गया। वह यीशु के पास जोश और संकल्प की ज्वाला में दहकता हुआ आया था, लेकिन यीशु के शब्दों ने उसे ठण्डा कर दिया। यीशु के प्रति जोशीली भक्ति पैदा करने के बजाय, उन्होंने हृदय तोड़ देनेवाली निराशा पैदा की। और यीशु उसके पीछे नहीं गया, लेकिन उसे जाने दिया। हमारे प्रभु को अच्छी तरह पता था कि जब उसका वचन सुना जा चुका है, तो कभी न कभी वह फल ज़रूर लाएगा। भयानक बात तो यह है कि हम में से कुछ लोग उसके वचनों को हमारे मौजूदा जीवन में फल लाने से रोक देते है। पता नहीं, कि अन्त में जब हम उस मुद्दे पर उसके प्रति समर्पित होने का फ़ैसला करेंगे, तो हम क्या कहेंगे ? एक बात तो पक्की है - वह हमारी बीती हुई असफलताओं को हमारे मुँह पर कभी नहीं मारेगा।

अगस्त 18

क्या आप कभी दुःखों के कारण मूक रह गए हैं ?

वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था।
लूका 18:22-23।

वह धनी अगुवा दुःख से मूक होकर यीशु के पास से चला गया क्योंकि उसके पास यीशु की बात का कोई उत्तर नहीं था। यीशु ने उससे जो कहा, उसके या उसके अर्थ के बारे में उसे कोई सन्देह नहीं था और उसके हृदय में ऐसा दुःख हुआ कि उसके पास प्रत्युत्तर देने के लिए शब्द नहीं रहे। क्या आप कभी ऐसी स्थिति में पड़े हैं ? क्या परमेश्वर का वचन कभी आपके पास ऐसे आया है, जब उसने आपके जीवन के किसी क्षेत्र की ओर इशारा किया है और आपसे माँग की है कि आप उसे परमेश्वर को समर्पित करें। हो सकता है उसने कुछ व्यक्तिगत गुणों, अभिलाषाओं, रुचियों, या आपके हृदय या मन के सम्बन्धों की ओर इशारा किया हो। यदि हाँ, तो आप कई बार दुःख से मूक हो गए होंगे। प्रभु आपके पीछे नहीं जाएगा, और वह आपसे विनती भी नहीं करेगा। लेकिन हर बार जब वह आपसे उस स्थान पर मिलेगा जिसकी ओर उसने इशारा किया है, तो वह सिर्फ़ अपने शब्दों को दोहराएगा कि, "यदि तू ये सब गम्भीरता से कह रहा है, तो शर्तें ये हैं।"

"अपना सब कुछ बेचकर ..." (18:22)। दूसरे शब्दों मे, परमेश्वर के सामने, उन सब चीज़ों से पीछा छुड़ा लें जिन्हें सम्पत्ति समझा जा सकता है, जब तक कि आप उसके सामने महज़ एक सचेत मानव के रूप में न खड़े हों, और फिर उसे भी परमेश्वर को दे दें। यही वह जगह है जहाँ युद्ध सचमुच लड़ा जाता है - यानि, परमेश्वर के सामने आपकी इच्छा के क्षेत्र में। क्या आपका समर्पण यीशु से बढ़कर आपकी इस धारणा के प्रति है कि यीशु क्या चाहता है ? यदि हाँ, तो सम्भव है कि आप यीशु का एक ऐसा कठोर और सख़्त वचन सुनेंगे जिससे आपके हृदय में दुःख उत्पन्न होगा। यीशु जो कहता है, वह सचमुच कठिन है - यह तब ही आसान होता है जब यह उन लोगों के द्वारा सुना जाता है जिन के अन्दर उसका स्वभाव होता है। किसी भी चीज़ को यीशु के कठोर शब्दों को कोमल बनाने की अनुमति देने से सावधान रहें।

मैं अपनी ही ग़रीबी में, या इस बोध में कि मैं कुछ भी नहीं हूँ, इतना धनी हो सकता हूँ कि मैं यीशु का चेला कभी नहीं हो सकता। या मैं इस बोध में कि मैं कुछ हूँ, इतना धनी हो सकता हूँ कि मैं कभी चेला नहीं हो सकता। क्या मैं अपनी लाचारी और ग़रीबी के बोध में भी लाचार और ग़रीब होने के लिए तैयार हूँ ? यदि नहीं, तो यही वह कारण है कि मैं निराश हो जाता हूँ। निराशा आत्मप्रेम का मोहभंग होती है, और आत्मप्रेम यीशु के प्रति मेरे समर्पण के लिए प्रेम भी हो सकता है।

अपने आपके के प्रति जागरूकता

मेरे पास आओ ... ।
मत्ती 11:28 ।

परमेश्वर की हमारे लिए यह इच्छा है कि हम मसीह यीशु में एक सर्वतोमुखी या सम्पूर्णात्मक जीवन जीएँ, लेकिन ऐसे समय आते हैं जब जीवन पर बाहर से हमले होते हैं । ऐसे समय पर हम फिर से आत्मनिरीक्षण का सहारा लेने लगते हैं - यानि उस आदत का, जो हम सोचते थे छूट चुकी है । अपने आपके प्रति जागरूकता वह पहली चीज़ है जो परमेश्वर में हमारे जीवन की सम्पूर्णता को छिन्न-भिन्न कर देती है, और हमारे जीवन में लगातार संघर्ष और खलबली का एहसास भर देती है । अपने आप के प्रति जागरूकता पाप नहीं है, और यह घबरा जानेवाली मनोवृत्ति के कारण या अचानक नई परिस्थितियों में डाल दिए जाने के कारण पैदा हो सकती है । लेकिन परमेश्वर की इच्छा यह कभी नहीं कि हम परमेश्वर में सम्पूर्ण होने से थोड़े से भी कम रह जाएँ । कोई भी चीज़ जो परमेश्वर में हमारे विश्राम को भंग करती है, उसका तुरन्त इलाज करना ज़रूरी है, और इसका इलाज इसे अनदेखा करने से नहीं, बल्कि यीशु मसीह के पास आने से होगा । यदि हम उसके पास आएँगे और उससे विनती करेंगे कि वह हममें मसीह के प्रति जागरूकता भर दे, तो वह ऐसा ही करेगा, जब तक कि हम उसमें बने रहना नहीं सीख जाते ।

जो चीज़ मसीह के साथ आपके जीवन की एकता को विभाजित या नष्ट करती है, उसका सामना किए बिना उसे कभी न छोड़ें । अपने मित्रों के प्रभाव या अपनी परिस्थितियों को कभी अनुमति न दें कि वह आपके जीवन को विभाजित कर दे । ऐसी हर चीज़ से सावधान रहें जो परमेश्वर के साथ आपकी एकता को विभाजित करती है और आपको अपने आप को उससे अलग देखने पर मजबूर करती है । आत्मिक रूप से सही रहने से अधिक महत्त्वपूर्ण और कुछ नहीं । इसका सबसे महान उपाय सबसे आसान भी है, “मेरे पास आओ ।” हमारी बौद्धिक, नैतिक, और आत्मिक वास्तविकता की गहराई इन्हीं शब्दों से परखी जाती है । अपने जीवन के जिन पहलुओं में हम वास्तविक नहीं हैं, उनमें हम आने के बदले विरोध करेंगे ।

अगस्त 20

मसीह के प्रति जागरूकता

... और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।
मत्ती 11:28

जब भी कोई चीज़ यीशु मसीह के साथ आपके जीवन को तोड़ना शुरू करती है, तो तुरन्त मसीह की ओर फिरें और उससे विनती करें कि वह आपके विश्राम को फिर से स्थापित करे। कभी किसी ऐसी चीज़ को अपने जीवन में न रहने दें जो उसमें अशान्ति ला रही हो। आपके जीवन की छोटी से छोटी चीज़ जो विघटन कर रही है, उसे ऐसी चीज़ के रूप में देखें जिसे सहन नहीं करना है, बल्कि जिसके विरुद्ध लड़ाई करनी है। परमेश्वर से विनती करें कि वह आपके अन्दर अपने प्रति जागरूकता डाल दे, और आपकी आत्मजागरूकता गायब हो जाएगी। फिर परमेश्वर आपका सब कुछ बन जाएगा। अपने आप के प्रति जागरूकता को जारी न रहने दें नहीं तो वह धीरे-धीरे, लेकिन निश्चितता से आपके अन्दर आत्मदया पैदा कर देगी, और आत्मदया शैतानी होती है। अपने आप को यह न कहने दें कि, "उन्होंने मुझे ग़लत समझा है और इसके लिए उन्हें मुझसे क्षमा माँगनी चाहिए; मुझे इस बात को उनके साथ साफ़ कर देना चाहिए।" इस मामले में दूसरों को उनके हाल पर छोड़ दें और प्रभु से विनती करें कि वह आपको मसीह के प्रति जागरूकता दे, और वह आपको स्थिर करेगा जब तक कि उसमें आपकी सम्पूर्णता चरम सीमा पर नहीं पहुँच जाती।

एक सम्पूर्ण जीवन एक बालक का जीवन होता है। जब मैं मसीह के प्रति अपनी जागरूकता के सम्बन्ध में पूरी तरह सचेत होता हूँ, तो इसका अर्थ यह है कि कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है। सिर्फ़ एक बीमार व्यक्ति ही सचमुच जान सकता है कि स्वास्थ्य क्या होता है। परमेश्वर के एक बालक को परमेश्वर की इच्छा की जागरूकता नहीं क्योंकि वह खुद परमेश्वर की इच्छा है। जब हम परमेश्वर की इच्छा से थोड़ा सा भी हट जाते हैं, तो हम पूछना शुरू कर देते हैं कि, "प्रभु, तेरी इच्छा क्या है ?" परमेश्वर का बालक कभी यह प्रार्थना नहीं करता कि उसे इसके प्रति जागरूक बनाया जाए कि परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है, क्योंकि वह इस निश्चितता में विश्राम करता है कि परमेश्वर हमेशा ही प्रार्थना का उत्तर देता है।

यदि हम अपनी ही व्यावहारिक बुद्धि के द्वारा अपने आप के प्रति जागरूकता पर विजय पाने की कोशिश करेंगे, तो हम सिर्फ़ अपनी आत्म-जागरूकता को ही बढ़ाने का काम करेंगे। यीशु ने कहा, " ... मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" यानि, मसीह-जागरूकता आत्मजागरूकता की जगह ले लेगी। यीशु जहाँ कहीं भी आता है, वहाँ विश्राम स्थापित करता है - हमारे जीवन के कार्यों के सम्पूर्ण होने का विश्राम जो अपने आप के प्रति कभी जागरूक नहीं होता।

अगस्त 21

अनदेखे लोगों की सेवकाई

धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं ...
मत्ती 5:3।

नया नियम ऐसी चीज़ों की ओर ध्यान देता है जो हमारे मापदण्डों के अनुसार ध्यान देने योग्य नहीं हैं। "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं ..." शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है, "धन्य हैं कंगाल।" कंगाल बिलकुल ही मामूली होते हैं। आजकल का प्रचार एक व्यक्ति की इच्छा के बल या उसके चरित्र की सुन्दरता की ओर इशारा करता है - ऐसी चीज़ें जो आसानी से दिखाई देती हैं। जिस बात को हम अकसर सुनते हैं, "यीशु मसीह के लिए फ़ैसला करो," ऐसी बात पर बल देता है जिसपर हमारे प्रभु ने कभी भरोसा नहीं रखा। वह हमसे कभी नहीं कहता कि हम उसके लिए फ़ैसला करें, बल्कि यह कहता है कि हम उसे समर्पित हों, जो कि एक अलग ही बात है। यीशु मसीह के राज्य की नींव पर उन लोगों की असली सुन्दरता है जो बिलकुल मामूली हैं। मैं अपनी ग़रीबी में सचमुच धन्य हूँ। यदि मैं जानता हूँ कि मेरी इच्छा में बल नहीं और मेरे स्वभाव में कोई योग्यता या अच्छाई नहीं, तो यीशु मुझ से कहता है "धन्य हो तुम, क्योंकि अपनी ग़रीबी के द्वारा तुम मेरे राज्य में प्रवेश कर सकते हो। मैं अपनी अच्छाई के द्वारा उसके राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता - मैं सिर्फ़ बिलकुल कंगाल होते हुए ही उसमें प्रवेश कर सकता हूँ।

जिस सुन्दरता से परमेश्वर की महिमा होती है, उसका सच्चा लक्षण यह होता है कि जिस व्यक्ति में वह गुण पाया जाता है, उसे खुद उसका बोध नहीं होता। जिस प्रभाव का हमें बोध होता है, वह स्वाभिमानी होता है और मसीही कहलाने के योग्य नहीं। यदि मैं यह जानने के लिए उत्सुक होता हूँ कि मैं परमेश्वर के किसी काम का हूँ या नहीं, तो मैं तुरन्त परमेश्वर के स्पर्श की सुन्दरता और ताज़गी को खो देता हूँ। "जो मुझ पर विश्वास करेगा ...उसके हृदय में से जल की नदियाँ बह निकलेंगी" (यूहन्ना 7:38)। और यदि मैं बहनेवाली चीज़ की ओर ध्यान देने लगता हूँ, तो परमेश्वर के स्पर्श को गँवा देता हूँ।

वे किस तरह के लोग हैं जिन्होंने हमें सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है ? निश्चित रूप से, ये वे लोग नहीं जो सोचते थे कि उन्होंने हमें प्रभावित किया, बल्कि वे लोग जिन्हें इसका कोई बोध नही था कि वे हमें प्रभावित कर रहे हैं। मसीही जीवन में, ईश्वरीय प्रभाव को कभी अपना बोध नहीं होता। यदि हमें अपने प्रभाव का बोध होता है, तो उसकी वह सच्ची सुन्दरता ख़त्म हो जाती है जो यीशु के स्पर्श की विशेषता होती है। हम हमेशा जान लेते हैं जब यीशु कार्य कर रहा होता है क्योंकि वह हम में वह मामूली चीज़ पैदा करता है जो प्रेरणाप्रद होती है।

अगस्त 22

मैं तो...परन्तु... वह

मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु...
वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
मत्ती 3:11।

क्या मैं अपने जीवन में कभी इस स्थान पर पहुँचा हूँ जहाँ मैं यह कह सकूँ कि, “मैं तो ...परन्त वह ”? जब तक वह पल नहीं आ जाता, मैं कभी नहीं जान पाऊँगा कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का अर्थ क्या है। *मैं तो* सचमुच अन्त तक पहुँच गया हूँ, और कुछ और नहीं कर सकता - *परन्तु* वह वहीं से काम करना शुरू करता है - वह ऐसे कार्य करता है जो कोई और कभी नहीं कर सकता। क्या मैं उसके आने के लिए तैयार हूँ ? यीशु तब तक नहीं आ सकता और तब तक मेरे अन्दर अपना काम शुरू नहीं कर सकता जब तक कोई भी रुकावट उपस्थित हो, चाहे वह कोई अच्छी चीज़ हो चाहे बुरी। जब वह मेरे पास आएगा, तो क्या मैं तैयार हूँ कि वह मेरे द्वारा की गई हर बात को बाहर खींच कर ज्योति में ले आए ? वह ऐसी स्थिति में ही आता है। जहाँ-जहाँ मैं जानता हूँ कि मैं अशुद्ध हूँ, वह वहीं पर अपने पाँव जमाकर खड़ा हो जाएगा, और जहाँ-जहाँ मैं सोचता हूँ कि मैं शुद्ध हूँ, वहाँ से वह अपने पाँव हटाकर चला जाएगा।

पश्चात्ताप पाप का एहसास नहीं दिलाता - वह अवर्णनीय अयोग्यता का एहसास दिलाता है। जब मैं पश्चात्ताप करता हूँ, मुझे एहसास होता है कि मैं बिलकुल असहाय हूँ, मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि मैं उसकी जूती उठाने के योग्य भी नहीं। क्या मैंने इस तरह से पश्चात्ताप किया है, या मुझ में अपनी कर्मों की सफ़ाई देने की कोशिश करने का विचार बाकी है ? परमेश्वर मेरे जीवन में इसलिए नहीं आ सकता क्योंकि मैं अभी तक पूरे पश्चात्ताप की स्थिति तक नहीं पहुँचा हूँ।

“वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।” यहाँ पर यूहन्ना पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के बारे में उसे एक अनुभव समझकर बात नहीं कर रहा, बल्कि यीशु मसीह के द्वारा किए गए एक कार्य के रूप में। “*वह* तुम्हें ...बपतिस्मा देगा।” जो लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं, उन्हें जिस एकमात्र अनुभव का बोध होता है, वह है उनके पूरी तरह से अयोग्य होने के बोध का अनुभव।

“*मैं तो*” अतीत में ऐसा था, “*परन्तु वह*” आया और एक आश्चर्यजनक बात हो गई। उस स्थान पर पहुँच जाएँ जहाँ आप खुद कुछ और नहीं कर सकते, लेकिन जहाँ वह सब कुछ करता है।

अगस्त 23

प्रार्थना - “गुप्त स्थान” में युद्ध ।

जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा ।
मत्ती 6:6 ।

यीशु ने यह नहीं कहा कि, “अपने पिता के बारे में, जो गुप्त में है, स्वप्न देख,” बल्कि उसने यह कहा कि, “...अपने पिता से जो गुप्त में है, प्रार्थना कर ...।” प्रार्थना इच्छा का प्रयास होता है । जब हम अपने गुप्त स्थान में प्रवेश करते हैं और द्वार बन्द कर लेते हैं, तो सबसे कठिन काम होता है प्रार्थना करना । हम अपने मन को काम करने की सही स्थिति में नहीं ला पाते, और जिस बात से हमें सबसे पहले युद्ध करना पड़ता है, वह है हमारे भटकते हुए विचार । हमें अपने मन को अनुशासन में लाना और जान-बूझकर की गई प्रार्थना पर ध्यान केन्द्रित करना सीखना है ।

प्रार्थना के लिए हमारे पास एक विशेष चुना हुआ स्थान होना चाहिए, लेकिन जैसे ही हम वहाँ पहुँचते हैं, विचारों के भटकने की परेशानी हमें आ घेरती है, और हम सोचने लगते हैं कि, “अभी यह काम करना बाकी है, और मुझे इसे आज ही पूरा करना है ।” यीशु कहता है कि “द्वार बन्द कर ले ।” परमेश्वर के सामने एक गुप्त शान्ति रखने का अर्थ है जान-बूझकर अपनी भावनाओं के मुँह पर द्वार बन्द कर देना, और परमेश्वर को याद करना । परमेश्वर गुप्त में है, और वह हमें गुप्त “स्थान में देखता है” - वैसे नहीं जैसे और लोग हमें देखते हैं या जैसे हम अपने आप को देखते हैं । जब हम सचमुच “गुप्त स्थान” में रहते हैं, तो परमेश्वर पर सन्देह करना असम्भव हो जाता है । हम और सब चीज़ों से ज़्यादा उसके विषय में विश्वस्त हो जाते हैं । यीशु कहता है कि “तेरा पिता गुप्त में है, कहीं और नहीं ।” गुप्त स्थान में प्रवेश करें, और आप पाएँगे कि परमेश्वर आपकी प्रतिदिन की परिस्थितियों के बीच में हर समय उपस्थित था । हर बात के बारे में परमेश्वर से सम्पर्क करने की आदत डाल लें । यदि आप पूरी तरह से अपने जीवन का द्वार नहीं खोलेंगे और अपने जागने की पहली घड़ी से परमेश्वर को अन्दर नहीं आने देंगे, तो आप सारे दिन ग़लत स्तर पर काम करते रहेंगे । लेकिन यदि आप अपने जीवन का द्वार पूरी तरह खोलेंगे और “अपने पिता से जो गुप्त में है, प्रार्थना करेंगे,” तो आपके जीवन की सारी खुली बातों पर परमेश्वर की उपस्थिति की अनन्त छाप लग जाएगी ।

अगस्त 24

आत्मिक खोज

तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी माँगे, तो वह उसे पत्थर दे ?
मत्ती 7:9 ।

हमारे प्रभु ने प्रार्थना की जो तस्वीर दिखाई है, वह एक अच्छे बच्चे की है जो एक अच्छी चीज़ माँग रहा है । हम प्रार्थना के बारे में ऐसे बात करते हैं मानो परमेश्वर हमारी हमेशा सुनता है चाहे उसके साथ हमारा सम्बन्ध कैसा भी क्यों न हो (मत्ती 5:45) । कभी यह न कहें कि यह परमेश्वर की इच्छा नहीं कि आपको वह दे जो आप माँग रहे हैं । कमज़ोर न पड़ें और हार न मानें, बल्कि पता चलाएँ कि आपने क्यों नहीं पाया; अपनी खोजबीन के ज़ोर को बढ़ाएँ और सबूत की जाँच करें । क्या अपने जीवनसाथी के साथ, अपने बच्चों के साथ, अपने सहपाठियों के साथ आपका सम्बन्ध सही है ? क्या आप इन सम्बन्धों में एक "अच्छे बच्चे" हैं ? क्या आपको प्रभु से कहना पड़ता है कि, "मैं चिड़चिड़ा और खिन्न तो रहा हूँ, लेकिन फिर भी मैं आत्मिक आशीषें चाहता हूँ ।" जब तक आपकी मनोवृत्ति एक "अच्छे बच्चे" की मनोवृत्ति नहीं होगी, तब तक आप नहीं पा सकते और आपको पाए बिना रहना होगा ।

हम विद्रोह को भक्ति समझने की भूल कर बैठते हैं, और अपने आप को परमेश्वर को समर्पित करने के बजाय उससे बहस करते हैं । हम उस सबूत की ओर ध्यान देने से इनकार कर देते हैं जो सफ़ाई से दिखाता है कि हम ग़लत हैं । क्या मैं परमेश्वर से किसी चीज़ के लिए पैसे माँग रहा हूँ, जब कि मैं किसी से लिया गया कर्ज़ चुकाने से इनकार कर रहा हूँ ? क्या मैं परमेश्वर से स्वतन्त्रता माँग रहा हूँ जब कि मैं किसी ऐसे जन को स्वतन्त्रता देने से इनकार कर रहा हूँ जो मेरी सम्पत्ति है ? क्या मैंने किसी को क्षमा करने से इनकार कर दिया है, और उस व्यक्ति के साथ निर्दयता से व्यवहार किया है ? क्या मैं अपने सम्बन्धियों और मित्रों के साथ परमेश्वर का बालक होकर रहता रहा हूँ ? (मत्ती 7:12 देखें) ।

मैं सिर्फ़ नए सिरे से जन्म लेने के द्वारा परमेश्वर का बालक हूँ, और उसका बालक होने के नाते मैं सिर्फ़ तब ही अच्छा हूँ जब मैं "ज्योति में चल रहा हूँ"(1 यूहन्ना 1:7) । हम में से अधिकतर लोगों के लिए, प्रार्थना केवल कोई हल्की-फुल्की धार्मिक अभिव्यक्ति, या परमेश्वर के साथ किसी रहस्यात्मक और भावनात्मक संगति का मामला बन जाती है । हम सब ऐसी आत्मिक धुँध बनाने में माहिर हैं जो हमारी दृष्टि को अन्धा कर देती है । लेकिन यदि हम सबूत की खोज करके ध्यान से उसकी जाँच पड़ताल करेंगे, तो हम सफ़ाई से देख पाएँगे कि क्या ग़लत हो रहा है - कोई अनुचित मित्रता, कोई कर्ज़ जो चुकाया न गया हो, कोई अनुचित रवैया । यदि हम परमेश्वर के बच्चों के योग्य जीवन नहीं जी रहे हैं, तो प्रार्थना करने का कोई फ़ायदा नहीं । फिर यीशु अपने बच्चों के लिए कहता है, "जो माँगता है, वह पाता है ..." (मत्ती 7:8) ।

अगस्त 25

बलिदान और मित्रता

...मैंने तुम्हें मित्र कहा है... ।
यूहन्ना 15:15 ।

हम आत्म-बलिदान के आनन्द को तब तक नहीं जान सकते जब तक हम अपने जीवन की छोटी से छोटी बात में समर्पण न करें । लेकिन आत्म-समर्पण हमारे लिए सबसे कठिन काम होता है । हम यह कहते हुए इसके साथ शर्त जोड़ देते हैं कि, "मैं समर्पण कर दूँगा यदि ...।" या हम यह कहते हैं कि, "लगता है, मुझे अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित करना ही होगा ।" हमें इन दोनों में से किसी भी तरीके से आत्म-समर्पण का आनन्द नहीं मिलेगा ।

लेकिन जैसे ही हम पूरी तरह से समर्पण कर देते हैं, पवित्र आत्मा हमें अपना आनन्द चखने देता है । आत्म-समर्पण का अन्तिम लक्ष्य यह है कि हम अपने मित्र के लिए अपना प्राण दे दें । जब पवित्र आत्मा हमारे जीवन में आता है, तो हमारी सबसे बड़ी अभिलाषा यह होती है कि हम यीशु के लिए अपना प्राण दे दें । लेकिन हमारे मन में आत्म-बलिदान का विचार कभी नहीं आता, क्योंकि बलिदान पवित्र आत्मा के प्रेम की परम अभिव्यक्ति है ।

हमारा प्रभु आत्म-बलिदान का उदाहरण है, और उसने भजन संहिता 40:8 का सिद्ध आदर्श बनकर दिखाया, "हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ ।" उसने ज़बरदस्त व्यक्तिगत बलिदान को सह लिया, लेकिन उमड़ते हुए आनन्द के साथ । क्या मैंने अपने आप को कभी यीशु मसीह की पूरी अधीनता के सुपुर्द किया है ? यदि यीशु मसीह वह जन नहीं है जिसकी ओर मैं मार्गदर्शन के लिए देख रहा हूँ, तो मेरे बलिदान का कोई फ़ायदा नहीं । लेकिन जब मेरा बलिदान उस पर आँखें लगाकर किया जाता है, तो धीरे-धीरे परन्तु निश्चितता के साथ उसका ढालने वाला प्रभाव मेरे जीवन में दिखाई देता है । (इब्रानियों 12:1-2) ।

प्रेम में अपनी चाल में अपनी स्वाभाविक अभिलाषाओं को रुकावट न डालने दें । स्वाभाविक प्रेम को मार डालने वाला सबसे क्रूर तरीका उस तिरस्कार के द्वारा होता है जो प्रेम को स्वाभाविक अभिलाषाओं पर बनाने के द्वारा आता है । एक पवित्र जन की सच्ची अभिलाषा प्रभु यीशु होता है । परमेश्वर के लिए प्रेम कोई भावात्मक चीज़ नहीं - एक पवित्र जन के लिए वैसे प्रेम करना जैसे परमेश्वर प्रेम करता है, एक बहुत ही व्यावहारिक बात होती है ।

"मैंने तुम्हें मित्र कहा है ..." यीशु के साथ हमारी मित्रता उस नए जीवन पर आधारित होती है जिसे उसने हमारे अन्दर पैदा किया है, जिसकी हमारे पुराने जीवन के साथ नहीं, बल्कि सिर्फ़ परमेश्वर के जीवन के साथ समानता होती है । यह ऐसा जीवन है जो सम्पूर्ण रूप से नम्र, शुद्ध, और परमेश्वर के प्रति भक्तिपूर्ण होता है ।

अगस्त 26

क्या आप कभी परेशान होते हैं ?

मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ।
यूहन्ना 14:27।

हमारे जीवन में ऐसे मौके आते हैं जब हमारी शान्ति सिर्फ़ हमारे अपने अज्ञान पर आधारित होती है। लेकिन जब हम जीवन की वास्तविकताओं के प्रति जाग उठते हैं, तो सच्ची भीतरी शान्ति तब तक असम्भव होती है जब तक कि वह यीशु से नहीं मिलती। जब हमारा प्रभु शान्ति उच्चारित करता है, तो वह शान्ति की सृष्टि करता है, क्योंकि जो बातें वह हमसे कहता है, "वे आत्मा हैं और जीवन भी हैं" (यूहन्ना 6:63)। क्या मैंने कभी उसे पाया है जो यीशु उच्चारित करता है ? "... अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ ..." ऐसी शान्ति जो उसके चेहरे में देखने से और उसके खामोश सन्तोष को पूरी तरह समझने और पाने से आती है।

क्या आप अभी, इसी समय सख़्त परेशान हैं ? जिन लहरों और तूफ़ानों को परमेश्वर आपके जीवन में आने दे रहा है, क्या आप उनसे डरे और चकराए हुए हैं। क्या अपने विश्वास का हर सम्भव उपाय करने के बाद भी आपको शान्ति, आनन्द, या तसल्ली का कोई कूआँ नहीं मिला ? क्या आपको अपना जीवन बिलकुल अनुपजाऊ लगता है ? तो ऊपर की ओर देखें और प्रभु यीशु के शान्त सन्तोष को ग्रहण करें। उसकी शान्ति को प्रतिबिम्बित करना इस बात का सबूत है कि परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध ठीक है, क्योंकि आप अपने मन को उसकी ओर फिराने की स्वतन्त्रता प्रदर्शित कर रहे हैं। यदि परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध सही नहीं है, तो आप अपना मन अपने आप को छोड़ किसी और चीज़ पर नहीं लगा सकते। यदि आप किसी चीज़ को अनुमति देंगे कि वह यीशु मसीह का चेहरा आपसे छिपा दे, तो या तो आप परेशान हो जाएँगे या आपको सुरक्षा का झूठा एहसास होगा।

जो समस्या आपको इस समय तंग कर रही है, उसके मामले में क्या आप "यीशु की ओर ताकते रह रहे हैं" (इब्रानियों 12:2) और उससे शान्ति पा रहे हैं ? यदि हाँ, तो परमेश्वर आप में और आपके द्वारा प्रदर्शित शान्ति की एक दयामय आशीष होगा। लेकिन यदि आप सिर्फ़ चिन्ता करके अपनी समस्या से निकलने की कोशिश करते हैं, तो आप अपने अन्दर परमेश्वर की प्रभावशीलता को नष्ट कर देते हैं, और आपको वही मिलता है जिसके आप योग्य हैं। हम परेशान हो जाते हैं क्योंकि हम परमेश्वर को ध्यान में नहीं रखते रहे हैं। जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह से परामर्श करता है, तो गड़बड़ी खत्म हो जाती है क्योंकि मसीह में कोई गड़बड़ी नहीं। सब उसके सामने डाल दें, और जब कठिनाई, शोक, और दुःख आपके सामने होते हैं, तो मसीह को यह कहते हुए सुनें कि, "तुम्हारा मन न घबराए और न डरे ..." (यूहन्ना 14:27)।

अगस्त 27

अपने धर्मविज्ञान को जीना

जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, तब तक चले चलो;
ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे ...।
यूहन्ना 12:35।

आप परमेश्वर के साथ पहाड़ की चोटी पर रहते समय जो देखते हैं, उसपर कार्यवाही न करने से सावधान रहें। यदि आप ज्योति की आज्ञा नहीं मानेंगे, तो वह अन्धकार में बदल जाएगी। "वह उजियाला जो तुझमें है, यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा" (मत्ती 6:23)। जिस पल आप पवित्रीकरण के मामले को त्याग देते हैं या किसी ऐसी चीज़ को अनदेखा कर देते हैं जिसपर परमेश्वर ने आपको अपना प्रकाश दिया है, उसी पल आपका आत्मिक जीवन आपके अन्दर सड़ना शुरू हो जाता है। सत्य को लगातार अपने असली जीवन में बाहर लाते रहें, और हर क्षेत्र में उसपर कार्य करते रहें, नहीं तो आपके पास जितना भी प्रकाश है वह एक श्राप बन जाएगा।

जिस व्यक्ति से निपटना सबसे ज़्यादा कठिन होता है, वह ऐसा व्यक्ति होता है जिसके पास एक बीते हुए अनुभव का घमण्ड-भरा आत्मसन्तोष है, लेकिन वह अपने प्रतिदिन के जीवन में उस अनुभव पर कार्य नहीं कर रहा है। यदि आप *कहते हैं* कि आप पवित्र किए गए हैं, तो उसे *दिखाएँ* भी। वह अनुभव इतना सच्चा होना चाहिए कि आपके जीवन में दिखाई दे। ऐसी हर विचारधारा से सावधान रहें जो आपको असंयमी या आत्मसन्तुष्ट बनाती है; ऐसी विचारधारा नरक के गढ़े से आई है, चाहे सुनने में वह कितनी भी सुन्दर क्यों न लगती हो।

आपके धर्मविज्ञान को आपके सबसे ज़्यादा व्यावहारिक सम्बन्धों में कार्य करना चाहिए। हमारे प्रभु ने कहा कि, "यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे" (मत्ती 5:20)। दूसरे शब्दों में, आपको अपनी जानकारी के सबसे अधिक नैतिक व्यक्ति से भी बढ़कर नैतिक होना चाहिए। आप पवित्रीकरण के सिद्धान्त के बारे में सब कुछ जानते होंगे, लेकिन क्या आप उसे अपने जीवन के प्रतिदिन के मुद्दों पर लागू कर रहे हैं ? आपके जीवन की छोटी से छोटी बात, चाहे वह शारीरिक हो चाहे नैतिक या आत्मिक, उसका फैसला मसीह के क्रूस के प्रायश्चित के मापदण्ड के अनुसार किया जाना चाहिए।

अगस्त 28

प्रार्थना का उद्देश्य

उसके चेलों में से एक ने कहा, “हे प्रभु...हमें भी तू (प्रार्थना करना) सिखा दे।”
लूका 11:1।

प्रार्थना एक साधारण मनुष्य के जीवन का सामान्य अंग नहीं है। हमने लोगों को कहते सुना होगा कि यदि एक व्यक्ति प्रार्थना नहीं करेगा, तो उसके जीवन का नुकसान होगा, लेकिन मैं ऐसा नही समझता। मेरे विचार से, जिस चीज़ का नुकसान होगा, वह है उस व्यक्ति में परमेश्वर के पुत्र का जीवन, जिसका पोषण भोजन से नहीं, बल्कि प्रार्थना से होता है। जब एक व्यक्ति ऊपर से नए सिरे से जन्म लेता है, तो परमेश्वर के पुत्र का जीवन उसमें पैदा हो जाता है, और वह व्यक्ति उस जीवन को या तो भूखा मार सकता है या उसका पोषण कर सकता है। प्रार्थना ही वह एकमात्र तरीका है जिसके द्वारा हमारे अन्दर परमेश्वर के जीवन का पोषण किया जा सकता है। प्रार्थना से सम्बन्धित हमारे सामान्य विचार नए नियम में नहीं पाए जाते। हम प्रार्थना के बारे में यह समझते हैं कि यह सिर्फ़ एक साधन है जिसके द्वारा हम अपने लिए कुछ चीज़ें प्राप्त कर सकते हैं , लेकिन बाइबल के अनुसार, प्रार्थना का उद्देश्य यह है कि हम परमेश्वर को जान सकें।

“माँगो, तो पाओगे ...” (यूहन्ना 16:24)। हम परमेश्वर से शिकायत करते हैं, और कभी-कभी हम अपना खेद व्यक्त करते या उसके प्रति उदासीनता दिखाते हैं, लेकिन जहाँ *माँगने* का सवाल आता है, हम उससे कम ही चीज़ें माँगते हैं। लेकिन एक बच्चा माँगने का कैसा ज़बरदस्त साहस प्रदर्शित करता है ! हमारे प्रभु ने कहा, “यदि तुम...बालकों के समान न बनो ...” (मत्ती 18:3)। माँगें और परमेश्वर पूरा करेगा। यीशु मसीह को काम करने का मौका और स्थान दें। समस्या तो यह है कि कोई ऐसा तब तक नहीं करेगा जब तक उसकी अपनी बुद्धि काम करना बन्द न कर दे। जब एक व्यक्ति की बुद्धि काम करना बन्द कर देती है, तब प्रार्थना करना कायरता नहीं लगता; बल्कि परमेश्वर के सत्य और उसकी वास्तविकता से सम्पर्क बनाने के लिए उसके पास यही एक तरीका रह जाता है। परमेश्वर के सामने कोई ढोंग न करें, और अपनी समस्याओं को उसके सामने रखें - यानि, उन चीज़ों को जो आपको इस स्थिति में लाई हैं कि आपका दिमाग़ आपका साथ नहीं दे रहा है। लेकिन जब तक आप यह समझते हैं कि आप आत्म-निर्भर हैं, तब तक आपको परमेश्वर से कुछ माँगने की ज़रूरत नहीं।

यह कहना भी इतना सही नहीं कि “प्रार्थना स्थिति को बदल देती है,” जितना यह सही है कि प्रार्थना *मुझे* बदलती है और मैं स्थिति को बदल देता हूँ। परमेश्वर ने स्थितियों को ऐसे स्थापित किया है ताकि, छुटकारे के आधार पर, प्रार्थना एक व्यक्ति के स्थिति को देखने के ढंग को बदल दे। प्रार्थना बाहरी रूप से स्थिति को बदलने का मामला नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के भीतरी स्वभाव में आश्चर्यकर्म करने का मामला है।

अगस्त 29

परखे हुए विश्वास की अद्वितीय घनिष्ठता

यीशु ने उससे कहा, क्या मैंने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी,
तो परमेश्वर की महिमा देखेगी ?
यूहन्ना 11:40 ।

जब-जब आप अपने विश्वास के जीवन में जोखिम उठानेवाला काम करेंगे, आप अपनी परिस्थितियों में कुछ ऐसा पाएँगे, जो व्यावहारिक बुद्धि के दृष्टिकोण से, आपके विश्वास का साफ़-साफ़ खण्डन करेगा । व्यावहारिक बुद्धि विश्वास नहीं है, और विश्वास व्यावहारिक बुद्धि नहीं है, बल्कि ये दोनों एक दूसरे से इतने फ़र्क हैं जितने शारीरिक जीवन और आत्मिक जीवन हैं । क्या आप यीशु मसीह पर भरोसा रख सकते हैं जहाँ आपकी व्यावहारिक बुद्धि ऐसा नहीं कर सकती ? क्या आप यीशु मसीह की कही बात पर साहस के साथ जोखिम उठाने के लिए तैयार हो सकते हैं, जब आपकी व्यावहारिक बुद्धि के जीवन के तथ्य चिल्ला-चिल्लाकर कहेंगे, "यह सब झूठ है" ? जब आप पहाड़ की चोटी पर होते हैं, तब यह कहना बहुत आसान होता है कि, "हाँ, मुझे पूरा विश्वास है कि परमेश्वर यह कर सकता है," लेकिन आपको पहाड़ से उतरकर दुष्टात्मा से जकड़ी हुई घाटी में आना पड़ता है, और उन वास्तविकताओं का सामना करना पड़ता है जो आपके रूपान्तरण-के-पहाड़ के विश्वास की हँसी उड़ाती हैं (लूका 9:28-42) । हर बार जब मेरा धर्मविज्ञान मेरे अपने मन में स्पष्ट हो जाता है, मेरा सामना किसी ऐसी चीज़ से होता है जो उसका खण्डन करती है । जैसे ही मैं कहता हूँ कि, "मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर मेरी हर घटी पूरी करेगा," वैसे ही मेरे विश्वास की परीक्षा शुरू हो जाती है (फिलिप्पियों 4:19) । जब मेरी सारी शक्ति ख़त्म हो जाएगी और हर आशा टूट जाएगी, क्या मैं अपने विश्वास की परीक्षा में विजयी होऊँगा या हार कर पीछे हट जाऊँगा ?

विश्वास की परीक्षा होना ज़रूरी है क्योंकि यह संघर्ष के द्वारा ही एक व्यक्तिगत सम्पत्ति बन सकता है । इस समय आपके विश्वास को कौन चुनौती दे रहा है ? परीक्षा या तो यह साबित कर देगी कि आपका विश्वास सही है, या उसे ख़त्म कर देगी । यीशु ने कहा, "धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए" (मत्ती 11:6) । सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है यीशु पर भरोसा । उसपर लगातार भरोसा रखे रहें, और वे सारी चीज़ें जिनका आपको सामना करना पड़ेगा, आपके विश्वास को और मज़बूत बनाएँगी । विश्वास के जीवन में लगातार परीक्षा होती रहती है, और आखिरी परीक्षा होती है मृत्यु । विश्वास परमेश्वर पर सम्पूर्ण भरोसा है, जो मन में कभी यह विचार नहीं आने दे सकता कि परमेश्वर हमें छोड़ सकता है ।

उपयोगिता या सम्बन्ध ?

इससे आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं,
परन्तु इस से अनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।
लूका 10:20।

यहाँ यीशु मसीह यह कह रहा है कि, "अपनी सफल सेवा में आनन्दित मत हो, बल्कि इसलिए आनन्दित हो कि मेरे साथ तम्हारा सम्बन्ध ठीक है।" मसीही जीवन में जिस फन्दे में आप गिर सकते हैं, वह है सफल सेवा में आनन्दित होना, इस बात के लिए आनन्दित होना कि परमेश्वर ने आपको इस्तेमाल किया है। आप इसका अन्दाज़ भी नहीं लगा सकते कि यदि यीशु मसीह के साथ आपका सम्बन्ध सही है, तो परमेश्वर आपके द्वारा क्या कुछ करेगा। उसके साथ अपना सम्बन्ध सही रखें, फिर आप चाहे जैसी भी परिस्थिति में हों, और आप हर दिन चाहे जिन लोगों के सम्पर्क में आएँ, परमेश्वर आपके द्वारा "जीवन की नदियाँ बहाएगा (यूहन्ना 7:38)। और यह उसी की कृपा है कि वह आपको इसका बोध भी नहीं होने देता। जब उद्धार और पवित्रीकरण के द्वारा, आप परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में आ जाते हैं, तो याद रखें, कि आप चाहे जहाँ कहीं भी हों, वहाँ परमेश्वर के द्वारा रखे गए हैं। यदि "जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही आप भी ज्योति में चलना" जारी रखते हैं (1 यूहन्ना 1:7), तो परमेश्वर अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए आपकी परिस्थितियों के प्रति आपकी प्रतिक्रिया का इस्तेमाल करेगा।

आज हमारी प्रवृत्ति ऐसी है कि हम सेवा पर ज़ोर देते हैं। उन लोगों से सावधान रहें जो किसी की उपयोगिता के आधार पर किसी से सहायता की विनती करते हैं। यदि आप उपयोगिता को कसौटी बनाते हैं, तो यीशु मसीह संसार का सबसे ज़्यादा असफल व्यक्ति था। एक पवित्र जन के लिए, मार्गदर्शन खुद परमेश्वर से आता है, पवित्र जन की उपयोगिता के नाप से नहीं। महत्त्व उस काम का होता है जो परमेश्वर हमारे द्वारा करता है, उस काम का नहीं जो हम उसके लिए करते हैं। हमारा प्रभु किसी व्यक्ति के जीवन में जिस बात पर ध्यान देता है, वह है परमेश्वर के साथ उस व्यक्ति का सम्बन्ध; यह ऐसी चीज़ है जो प्रभु के लिए बहुत मूल्यवान है। यीशु "बहुत से *पुत्रों* को महिमा में पहुँचा रहा है ..." (इब्रानियों 2:10)।

अगस्त 31

मेरा आनन्द...तुम्हारा आनन्द

मैंने यह बातें तुम से इसलिए कहीं हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे,
और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
यूहन्ना 15:11।

यीशु के पास कौन सा आनन्द था ? आनन्द और प्रसन्नता एक ही चीज़ नहीं; बल्कि प्रसन्नता शब्द को यीशु के साथ जोड़ना उसका अपमान करना है। यीशु का आनन्द अपने पिता के प्रति उसका सम्पूर्ण आत्म-समर्पण और आत्म-बलिदान था - उस काम को करने का आनन्द जिसके लिए पिता ने उसे भेजा था। "हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ ..." (भजन संहिता 40:8)। यीशु ने प्रार्थना की कि हमारा आनन्द पूरा होता रहे जब तक वह वैसा आनन्द न बन जाए जैसा उसका आनन्द है। क्या मैंने यीशु मसीह को अपना आनन्द मेरे अन्दर लाने दिया है ?

एक सम्पूर्ण और उमड़ता हुआ जीवन शारीरिक स्वास्थ्य में, परिस्थितियों में, या परमेश्वर के कार्य की सफलता में नहीं, बल्कि परमेश्वर के बारे में सिद्ध समझ में, और उसी संगति और एकता में पाया जाता है जिसका खुद यीशु ने आनन्द लिया। लेकिन इस आनन्द में रुकावट डालनेवाली पहली चीज़ वह भरमानेवाला चिड़चिड़ापन होता है जो अपनी परिस्थितियों पर ज़्यादा ध्यान देने से आता है। यीशु ने कहा, "संसार की चिन्ता ...वचन को दबा देती है" (मरकुस 4:19)। इससे पहले कि हमें यह एहसास हो पाए कि क्या हुआ है, हम अपनी चिन्ताओं में फँस जाते हैं। परमेश्वर ने हमारे लिए जो सब किया है, वह सिर्फ़ आरम्भ है - वह चाहता है कि हम उस स्थिति पर पहुँचें जहाँ हम उसके गवाह होंगे और सब को बताएँगे कि यीशु कौन है।

परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध रखें, और अपना आनन्द वहाँ ही पाएँ, और आपके अन्दर से "जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी" (यूहन्ना 7:38)। एक ऐसा सोता बनें जिसके द्वारा यीशु अपना "जीवन का जल" बहा सकता है। ढोंगी और घमण्डी होना बन्द करें, सिर्फ़ अपने प्रति जागरूक न रहें, और "मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ" जीवन जीएँ (कुलुस्सियों 3:3)। जिस व्यक्ति का परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध होता है, वह जहाँ भी जाता है, ऐसा जीवन जीता है जो साँस लेने की तरह स्वाभाविक होता है। जिन लोगों के जीवन से आपको सबसे ज़्यादा आशीष मिली है, वे ऐसे लोग हैं जिन्हें खुद यह नहीं पता कि वे एक आशीष बने थे।

सितम्बर 1

पवित्र होने के लिए ठहराया जाना

...लिखा है कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।
1 पतरस 1:16।

हमें अपने आप को लगातार अपने जीवन के उद्देश्य के बारे में याद दिलाते रहना चाहिए। हमारा पूर्वनिर्धारित उद्देश्य खुशी या स्वास्थ्य नहीं, बल्कि पवित्रता है। आजकल के दिनों में, हमारे पास बहुत ज़्यादा अभिलाषाएँ और रुचियॉ होती हैं, और ये हमारे जीवन को खा रहीं है और उसे बरबाद कर रही हैं। इनमें से बहुत सी अभिलाषाएँ और रुचियाँ उचित और अच्छी हो सकती हैं, और हो सकता है कि आगे चलकर ये पूरी भी हो जाएँ, लेकिन तब तक परमेश्वर को हमारे लिए उनके महत्त्व को घटाना होगा। वह एकमात्र चीज़ जो कोई महत्त्व रखती है, यह है कि क्या एक व्यक्ति उस परमेश्वर को ग्रहण करेगा जो उसे पवित्र बनाएगा। एक व्यक्ति को हर कीमत पर परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध बनाकर रखना ज़रूरी है।

क्या मैं यह मानता हूँ कि मुझे पवित्र होने की ज़रूरत है? क्या मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर मेरे अन्दर आकर मुझे पवित्र बना सकता है? यदि आप अपने प्रचार के द्वारा मुझे विश्वास दिलाते हैं कि मैं अपवित्र हूँ, तो मैं आपके प्रचार का बुरा मानता हूँ। सुसमाचार का प्रचार एक ज़बरदस्त कुढ़न पैदा करता है क्योंकि इसका उद्देश्य यह है कि मेरी अपवित्रता को प्रकट करे, लेकिन यह मेरे अन्दर एक ज़बरदस्त लालसा भी पैदा करता है। मनुष्य के लिए परमेश्वर का एक ही पूर्वनिर्धारित उद्देशय है - पवित्रता। उसका लक्ष्य सिर्फ़ पवित्र लोगों को पैदा करना है। परमेश्वर कोई अनन्त आशीष देने की मशीन नहीं है जिसका लोग इस्तेमाल कर सकते हैं, न ही वह तरस खाकर हमें बचाने के लिए आया। वह लोगों को इसलिए बचाने आया क्योंकि उसने उन्हें पवित्र होने के लिए रचा था। प्रायश्चित का अर्थ यह है कि यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर मुझे आपने साथ सिद्ध एकता में इस तरह वापस ला सकता है कि हमारे बीच किसी चीज़ का निशान भी न रहे।

अपने या दूसरों के प्रति हमदर्दी के कारण किसी ऐसे व्यवहार को सहन न करें जो एक पवित्र परमेश्वर के अनुकूल न हो। पवित्रता का अर्थ है परमेश्वर के सामने आपकी चाल की सम्पूर्ण शुद्धता, यानि जो शब्द आपके मुँह से निकलते हैं, और आपके मन में आनेवाला हर विचार - और आपके जीवन की छोटी से छोटी बात को परमेश्वर की पैनी दृष्टि के नीचे रखना। पवित्रता केवल वह नहीं जो परमेश्वर मुझे देता है, बल्कि वह जो परमेश्वर ने मुझे दे दिया है जो मेरे जीवन में प्रदर्शित हो रहा है।

शुद्ध और पवित्र बलिदान का जीवन

जो मुझ पर विश्वास करेगा...उसके हृदय में से जीवन की नदियाँ बह निकलेंगी।
यूहन्ना 7:38।

यीशु ने यह नहीं कहा कि "जो मुझ पर विश्वास करेगा, उसे परमेश्वर की सारी आशीषें और सारी भरपूरी मिलेगी," बल्कि कुछ ऐसा कहा कि, "जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह जो कुछ पाएगा, वह उसके अन्दर से बाहर निकल जाएगा।" हमारे प्रभु की शिक्षा हमेशा आत्म-अनुभूति के विरुद्ध थी। परमेश्वर का उद्देश्य एक व्यक्ति का विकास नहीं ; उसका उद्देश्य यह है कि एक व्यक्ति को बिलकुल अपने समान बनाए, और परमेश्वर के पुत्र की विशेषता अपने आप को खर्च करने में दिखाई देती है। यदि हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तो वह महत्त्वपूर्ण नहीं होता जो हम पाते हैं, बल्कि वह जिसे परमेश्वर हमारे अन्दर से बहाता है। परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं कि हमें सुन्दर और मोटे-मोटे अंगूर बनाए, बल्कि यह कि वह हमें ऐसे अंगूर बनाए ताकि वह हमारे अन्दर से मिठास को निचोड़कर निकाल सके। आत्मिक रूप से, हमारे जीवन को वैसे नहीं नापा जा सकता है जैसे संसार नापता है, बल्कि केवल उसके द्वारा नापा जा सकता है जो परमेश्वर हमारे द्वारा बहाता है - और इसे नहीं नापा जा सकता।

जब बैतनिय्याह की मरियम " बहुमूल्य शुद्ध इत्र लाई और पात्र को तोड़कर (यीशु के) सिर पर उण्डेला," तो लोगों को ऐसे काम के लिए यह उचित मौका नहीं लगा; बल्कि "कोई कोई ...कहने लगे कि, इस इत्र को क्यों सत्यनाश किया गया ?" (मरकुस 14:3-4)। लेकिन यीशु ने मरियम की इस ऊँचे दामवाली भक्ति की सराहना की और कहा, "...जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।" (मरकुस 14:9)। जब हमारा प्रभु हमें ऐसा काम करते देखता है जैसे मरियम ने किया - यानि कुछ ठहराए गए नियमों से बन्धते हुए नहीं, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित होते हुए, तो उसके आनन्द का ठिकाना नहीं रहता। परमेश्वर ने अपने पुत्र के जीवन को बहा दिया "ताकि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए" (यूहन्ना 3:17)। क्या हम उसके लिए अपना जीवन बहा देने के लिए तैयार हैं ?

"जो मुझ पर विश्वास करेगा...उसके हृदय में से जीवन की नदियाँ बह निकलेंगी " और सैंकड़ों जीवनों को लगातार ताज़गी मिलती रहेगी। अभी वह समय है कि हम अपने जीवन के"पात्र" को तोड़ दें, अपनी सन्तुष्टि की खोज करना बन्द कर दें, और अपने जीवन को परमेश्वर के सामने बहा दें। हमारा प्रभु पूछ रहा है कि हम में से कौन उसके लिए ऐसा करने को तैयार हैं ?

सितम्बर 3

सन्तोष के जल को उण्डेलना

...उसने पीने से इनकार किया, और यहोवा के सामने अर्घ करके उण्डेला।
2 शमूएल 23:16।

हाल में, कौन सी चीज़ आपके लिए "बेतलेहेम के कुएँ का पानी" बनी है - प्रेम, मित्रता, या शायद कोई आत्मिक आशीष (23:16) ? क्या आपने अपने प्राण को हानि पहुँचाने का जोखिम उठाते हुए भी उसे ले लिया है, सिर्फ़ अपने सन्तोष के लिए ? यदि हाँ, तो फिर आप उसे "यहोवा के सामने" नहीं उण्डेल सकते। अपने सन्तोष के लिए आप जिस चीज़ की अभिलाषा करते हैं, उसे परमेश्वर के लिए अलग नहीं कर सकते। यदि आप परमेश्वर की आशीष से अपने आप को सन्तुष्ट करने की कोशिश करेंगे, तो वह आपको भ्रष्ट कर देगी। आपको उसे परमेश्वर के सामने उण्डेलते हुए उसका बलिदान करना होगा - यह ऐसा काम है जिसे आपकी व्यावहारिक बुद्धि फ़िज़ूलखर्ची मानेगी।

मैं प्राकृतिक प्रेम और आत्मिक आशीषों को "यहोवा के सामने" कैसे उण्डेल सकता हूँ ? ऐसा करने का एक ही तरीका है - मुझे अपने मन में ऐसा करने का दृढ़ संकल्प करना होगा। लोगों के द्वारा किए जानेवाले कुछ ऐसे काम होते हैं जिन्हें ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर को नहीं जानता, कभी ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि मनुष्य के लिए उस काम का बदला चुकाना असम्भव है। जैसे ही मुझे एहसास होता है कि कोई चीज़ इतनी अद्भुत है कि मैं उसे ग्रहण करने योग्य नहीं हूँ, तो मुझे उसे "यहोवा के सामने" उण्डेल देना चाहिए। फिर यही चीज़ें जो मुझे मिली थीं, मेरे चारों ओर "जीवन के जल की नदियाँ" बनकर बहेंगी (यूहन्ना 7:38)। और जब तक मैं इन चीज़ों को परमेश्वर के सामने नहीं उण्डेलता, ये उनके लिए जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, और मेरे अपने लिए भी एक ख़तरा बन जाएँगी, क्योंकि वे लालसा में बदल जाएँगी। हाँ, यह सच है कि हम उन चीज़ों की लालसा भी कर सकते हैं जो घिनौनी और घृणित नहीं होतीं। यहाँ तक कि प्रेम को भी "यहोवा के सामने"उण्डेलने के द्वारा रूपान्तरित किए जाने की ज़रूरत है।

यदि आपके मन में कड़वाहट या खटास आ गई है, तो यह इसलिए है क्योंकि जब परमेश्वर ने आपको कोई आशीष दी, तो आपने उसकी जमाखोरी की। यदि आपने उसे परमेश्वर के सामने उण्डेल दिया होता, तो आप संसार के सबसे मधुर जन होते। यदि आप अपनी आशीषों को हमेशा अपने लिए रख लेते हैं, और किसी चीज़ को "यहोवा के सामने" उण्डेलना कभी नहीं सीखते, तो दूसरे लोगों का परमेश्वर के बारे में दर्शन आपके द्वारा कभी विस्तृत नहीं होगा।

सितम्बर 4

उसके !

वे तेरे थे, और तूने उन्हें मुझे दिया।
यूहन्ना 17:6।

एक मिश्नरी वह व्यक्ति होता है जिसके अन्दर पवित्र आत्मा ने यह एहसास जगाया है कि "तुम अपने नहीं हो " (1 कुरिन्थियों 6:19)। यह कहना कि "मैं अपना नहीं हूँ," आत्मिक क़द में बहुत ऊँचे पर पहुँच जाने के बराबर है। जीवन की गड़बड़ी में उस जीवन के वास्तविक स्वभाव का सबूत इससे मिलता है कि वह समझ-बूझकर एक संकल्प के द्वारा अपने आप को एक और व्यक्ति को सौंप देता है, और वह व्यक्ति है यीशु मसीह। पवित्र आत्मा मुझे यीशु के स्वभाव के बारे में समझाता है ताकि मुझे अपने प्रभु के साथ एक बना दे, इसलिए नहीं कि मैं उसके लिए सजावट की वस्तु बनूँ। हमारे प्रभु ने अपने चेलों के लिए जो कुछ किया था, उसके आधार पर उन्हें कभी नहीं भेजा। पुनरुत्थान के बाद ही, जब चेलों ने पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा जाना कि यीशु वास्तव में कौन है, तब यीशु ने कहा कि "जाओ।" (मत्ती 28:19; लूका 24:49 और प्रेरितों के काम 1:8 भी देखें)।

"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता ओर माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहनों, वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता" (लूका 14:26)। उसने यह नहीं कहा कि यह व्यक्ति अच्छा और खरा नहीं हो सकता, बल्कि यह कि वह ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जिस पर यीशु 'मेरा' लिख सकता है। इस पद में यीशु ने जिन सम्बन्धों का ज़िक्र किया है, वे सब परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध के साथ मुक़ाबला कर सकते हैं। मैं अपनी माता का, या अपनी पत्नी का, या अपने आप का होना ज़्यादा पसन्द कर सकता हूँ लेकिन यदि ऐसा होता है, तो यीशु कहता है कि "तुम मेरे चेले नहीं हो सकते।" इसका अर्थ यह नहीं कि मेरा उद्धार नहीं होगा, बल्कि यह कि मैं पूरी तरह से 'उसका' नहीं हो सकता।

हमारा प्रभु अपने चेले को अपनी निजी सम्पत्ति बना लेता है, और उसके लिए ज़िम्मेदार हो जाता है। "...तुम मेरे गवाह होगे ..." (प्रेरितों के काम 1:8)। एक चेले के मन में जो अभिलाषा जागृत होती है, वह यीशु के लिए कुछ *करने* की नहीं, बल्कि उसके लिए एक सम्पूर्ण आनन्द *होने* की अभिलाषा होती है। एक मिश्नरी का रहस्य यह होता है कि वह सचमुच कह पाता है कि, "मैं उसका हूँ, और वह मेरे द्वारा अपना कार्य और अपने उद्देश्य पूरे कर रहा है।"

पूरी तरह से उसके रहें !

सितम्बर 5

यीशु के साथ जागते रहना

तुम यहाँ ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।
मत्ती 26:38।

"मेरे साथ जागते रहो।" एक तरह से यीशु यह कह रहा था कि, "अपने किसी निजी दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सिर्फ़ और पूरी तरह से मेरे साथ जागते रहो।" हमारे मसीही जीवन के शुरुआती चरणों में, हम यीशु के *साथ* नहीं जागते, बल्कि उत्सुकता से उसकी *प्रतीक्षा* करते हैं। हम बाइबल में प्रकट सत्यों के द्वारा अपने जीवन की परिस्थितियों में भी उसके साथ जागते नहीं रहते। हमारा प्रभु हमें हमारे अपने विशेष "गतसमनी" के अनुभव में से ले जाकर हमें अपने साथ एक होने का परिचय दिलाना चाह रहा है। लेकिन हम यह कहते हुए जाने से इनकार कर देते हैं कि, "नहीं, प्रभु, इसका अर्थ मेरी समझ में नहीं आ रहा है, और इसके अलावा, यह बहुत कड़ुवा भी है।" और हम ऐसे व्यक्ति के साथ कैसे जागते रह सकते हैं जो हमारी समझ से परे है? जब हम यह ही नहीं जानते कि यीशु दुःख क्यों सह रहा है, तो हम उसे इतनी अच्छी तरह से कैसे समझ सकते हैं कि उसके गतसमनी में उसके साथ जागते रहें? हम नहीं जानते कि हमें उसके साथ कैसे जागते रहना है - हम तो सिर्फ़ इस विचार के आदी हैं कि यीशु हमारे साथ जागता रहता है।

चेले अपनी प्राकृतिक क्षमता की पूरी सीमा तक यीशु मसीह से प्रेम करते थे, लेकिन वे उसके उद्देश्य को पूरी तरह से नहीं समझते थे। गतसमनी की वाटिका में, वे अपने दुःख के फलस्वरूप सो गए, और अपने जीवन के तीन वर्ष के सबसे घनिष्ठ और क़रीबी सम्बन्ध के अन्त में वे "सब...उसे छोड़कर भाग गए" (26:56)।

"वे सब पवित्र आत्मा से भर गए ..." (प्रेरितों के काम 2:4)। "वे" शब्द उन्ही लोगों की ओर इशारा कर रहा है, लेकिन इन दोनों घटनाओं के बीच में कुछ हुआ है - हमारे प्रभु की मृत्यु, उसका पुनरुत्थान, और उसका स्वर्गारोहण - और अब चेले "पवित्र आत्मा से भर गए" हैं और पवित्र आत्मा उनमें बस गया है। हमारे प्रभु ने कहा था, "जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे..." (प्रेरितों के काम 1:8), और इसका अर्थ यह था कि वे अपने बाकी जीवन के लिए उसके *साथ* जागते रहना सीख गए।

सितम्बर 6

दूर-दूर तक पहुँचनेवाली जीवन की नदियाँ

जो मुझ पर विश्वास करेगा...उस के हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।
यूहन्ना 7:38।

एक नदी ऐसी जगहों तक पहुँचती है जिनका उसके स्रोत को कुछ पता नहीं होता। और यीशु ने कहा कि, यदि हमें उसकी भरपूरी मिली है, तो हमारे अन्दर से "जीवन के जल की नदियाँ" बह निकलेंगी, जो अपनी आशीषों के साथ पृथ्वी के छोर तक पहुँचेंगी" (प्रेरितों के काम 1:8) चाहे हमारे जीवन के प्रभाव देखने में कितने भी छोटे क्यों न लगते हों। बह कर निकलनेवाली चीज़ से हमें कुछ लेना-देना नहीं। "परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर ...*विश्वास* करो" (यूहन्ना 6:29)। परमेश्वर किसी व्यक्ति को यह देखने का मौका कम ही देता है कि वह दूसरों के लिए कितनी महान आशीष है।

एक नदी विजयी होते हुए आगे बढ़ती रहती है और हर रुकावट पर जयवन्त होती है। वह कुछ समय के लिए अपने निर्धारित मार्ग पर बहती है, लेकिन फिर उसके मार्ग में कोई बाधा आ खड़ी होती है। कुछ समय के लिए उसका मार्ग रुक जाता है, लेकिन वह जल्दी ही उस बाधा के किनारे से एक नया मार्ग बना लेती है। या एक नदी कई मीलों तक आँखों से ओझल हो जाती है, लेकिन जब फिर से बाहर निकलती है तो पहले से कहीं ज़्यादा चौड़ी और बड़ी होती है। क्या आप परमेश्वर को दूसरों को इस्तेमाल करते देख रहे हैं, लेकिन आपके अपने जीवन में कोई बाधा आ गई है और लगता है कि आप परमेश्वर के लिए बेकार हैं? यदि ऐसा है, तो स्रोत की ओर ध्यान देते रहें, और परमेश्वर या तो आपको बाधा के किनारे से निकाल लेगा या बाधा को ही दूर कर देगा। परमेश्वर के आत्मा की नदी सारी बाधाओं पर विजयी होती है। अपनी आँखों को कभी बाधा या कठिनाई पर न टिकाए रखें। यदि आप अपने ध्यान को सिर्फ़ महान स्रोत पर लगाए रखेंगे, तो आपके अन्दर से बहनेवाली नदी को कोई बाधा प्रभावित नहीं कर सकेगी। कभी किसी चीज़ को अपने और यीशु मसीह के बीच न आने दें। कोई भावना या अनुभव आपको उस महान परम स्रोत से दूर न करने पाए।

चंगाई देनेवाली और दूर-दूर तक पहुँचनेवाली इन नदियों के बारे में ज़रा सोचें, जो हमारे हृदय में विकसित और पोषित हो रही हैं! परमेश्वर हमारे मन के लिए अद्‌भुत सत्य प्रकट करता रहा है, और हर विषय जो उसने खोला है, वह उस नदी के और अधिक फैले हुए सामर्थ्य का एक और संकेत है, जो वह हमारे अन्दर से बहाएगा। यदि आप यीशु पर विश्वास करते हैं, तो आप देखेंगे कि परमेश्वर ने दूसरों की आशीष के लिए आपके अन्दर महान और तेज़ी से बहनेवाली नदियों को विकसित और पोषित किया है।

सितम्बर 7

आशीषों के सोते

जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक पियासा न होगा; वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।
यूहन्ना 4:14।

हमारा प्रभु यहाँ जिस चित्र का वर्णन कर रहा है, वह पानी की एक साधारण धारा का चित्र नहीं, बल्कि एक उमड़ते हुए सोते का है। "परिपूर्ण होते जाओ" (इफिसियों 5:18) और यीशु के साथ आपके सम्बन्ध की मधुरता आपके अन्दर से उतनी ही उदारता से बहती रहेगी जितनी उदारता से वह आपको दी गई है। यदि आप देखते हैं कि आपका जीवन वैसे नहीं उमड़ रहा है जैसे उसे उमड़ना चाहिए, तो दोष आप ही का है - कोई बात है जो बहाव को रोक रही है। आपको स्रोत पर ध्यान लगाए रहना है ताकि आपके अन्दर से "जीवन के जल की नदियाँ बह निकलें" यानि ऐसा जीवन जिसे दबाया या रोका न जा सके (यूहन्ना 7:38)।

हमें ऐसे सोते बनना है जिनके द्वारा यीशु हर एक के लिए आशीष देते हुए "जीवन के जल की नदियों" के रूप में बह सके। हम में से कुछ लोग 'मृत सागर' के समान हैं, और हमेशा पाते ही रहते हैं परन्तु कभी देते नहीं, क्योंकि प्रभु यीशु के साथ हमारा सम्बन्ध सही नहीं। जिस निश्चितता से हम परमेश्वर से आशीष पाते हैं, उसी निश्चितता से वह हमारे द्वारा आशीषें उण्डेलेगा। लेकिन जब भी ये आशीषें उसी नाप से नहीं बहाई जातीं जिस नाप से मिलती हैं, तो इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में कोई खोट है। क्या आपके और यीशु मसीह के बीच में कुछ है ? क्या कोई बात है जो उसपर आपके विश्वास में रुकावट बन रही है ? यदि नहीं, तो यीशु कहता है कि आपके अन्दर से "जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।" यह ऐसी आशीष नहीं जिसे आप किसी दूसरे को पकड़ाते हैं, न ही यह कोई ऐसा अनुभव है जिसे आप दूसरों के साथ बाँटते हैं, बल्कि एक नदी है जो लगातार आपमें से होकर बहती रहती है। यीशु मसीह में अपने विश्वास की और यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्ध की सुरक्षा करते हुए, स्रोत के साथ रहें, और दूसरों के जीवन में एक लगातार प्रवाह बना रहेगा जिसमें कोई सूखापन या निर्जीवता नहीं होगी।

क्या यह कहना ज़्यादती है कि एक ही व्यक्तिगत विश्वासी के अन्दर से नदियाँ बह निकलेंगी ? क्या आप अपने आप को देखकर कहते हैं, "लेकिन मुझे तो नदियाँ नहीं दिखाई दे रही हैं" ? अपने आप को कभी इस दृष्टिकोण से न देखें कि, "आखिर मैं हूँ ही क्या ?" परमेश्वर के कार्यों के इतिहास के द्वारा आप ज़्यादातर यह देखेंगे कि उसने हमेशा ऐसे लोगों से शुरुआत की है जो अनदेखे, अनजाने, नज़रअन्दाज़ किए गए होते हैं लेकिन जो यीशु मसीह के प्रति लगातार विश्वासयोग्य रहे हैं।

सितम्बर 8

अपने आप करें

...हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है,
खण्डन करते हैं।
2 कुरिन्थियों 10:5।

दृढ़ निश्चय करते हुए कुछ चीज़ों को ढा दें। पाप से छुटकारा और मनुष्य के स्वभाव से छुटकारा एक ही बात नहीं हैं। मनुष्य के स्वभाव में कुछ बातें होती हैं, जैसे कि पूर्वधारणाएँ, जिनका नाश एक पवित्र जन केवल उनकी अवहेलना करने के द्वारा ही कर सकता है। और कुछ बातें ऐसी है जिन्हें बलपूर्वक, यानि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दी गई ईश्वरीय शक्ति के द्वारा नष्ट करने की ज़रूरत होती है। कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिनके ऊपर हमें लड़ना नहीं है, बल्कि "खड़े खड़े (यहोवा के) उद्धार का काम" देखना है..." (निर्गमन 14:13)। लेकिन हर सिद्धान्त या विचार जो "परमेश्वर की पहचान के विरोध" एक गढ़ की तरह रुकावट बनकर खड़ा होता है, उसे मनुष्य के प्रयास या समझौते के द्वारा नहीं, बल्कि परमेश्वर की शक्ति का इस्तेमाल करते हुए दृढ़ता से ढा देने की ज़रूरत होती है (2 कुरिन्थियों 10:4)।

जब परमेश्वर हमारे स्वभाव को बदल देता है और हम पवित्रीकरण के अनुभव में प्रवेश कर लेते हैं, केवल तब ही युद्ध शुरू होता है। यह युद्ध पाप के विरुद्ध नहीं होता; हम पाप के विरुद्ध कभी नहीं लड़ सकते - यीशु मसीह छुटकारे के काम में पाप से निपटता है। लड़ाई हमारे शारीरिक जीवन को आत्मिक जीवन में बदलने के ऊपर होती है। यह कभी आसान नहीं होता, न ही यह परमेश्वर का इरादा है कि यह आसान हो। यह सिर्फ़ नैतिक चुनावों के सिलसिले से पूरा हो सकता है। परमेश्वर हमें पवित्र करता है, इसका अर्थ यह नहीं कि वह हमारे चरित्र को पवित्र कर देता है। वह हमें इस अर्थ में पवित्र करता है कि उसने अपने सामने हमें निर्दोष बना दिया है। और फिर हमें नैतिक चुनाव करने के द्वारा उस निर्दोषता को पवित्र चरित्र बनाना होता है। ये चुनाव लगातार हमारे शारीरिक जीवन की उन बातों का विरोध करते हैं जो हमारे अन्दर जमी हुई हैं - वही बातें जो गढ़ों की तरह "परमेश्वर की पहचान के विरोध" में उठ खड़ी होती हैं। या तो हम अपने आप को परमेश्वर के राज्य के लिए बेकार करते हुए वापस जा सकते हैं, या हम दृढ़ निश्चय करते हुए इन चीज़ों को ढा सकते हैं, और यीशु को एक और पुत्र को महिमा में ले आने का मौका दे सकते हैं (इब्रानियों 2:10 देखें)।

सितम्बर 9

अपने आप करें

...हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।
2 कुरिन्थियों 10:5।

दृढ़ निश्चय करते हुए दूसरी बातों को अनुशासित करें। यह पवित्र जन के जीवन के कठोर परिश्रम का एक और कठिन पहलू है। एक अनुवाद के अनुसार, पौलुस ने कहा "मैं हर योजना को कैद करता हूँ कि वह मसीह की आज्ञा मानें..." आजकल मसीही कार्य के नाम से इतना कुछ हो रहा है जिसे कभी अनुशासन में नहीं लाया गया है, जो केवल आवेगशील निर्णय से अस्तित्व में आ गया है ! हमारे प्रभु के जीवन में, हर योजना उसके पिता की इच्छा के अनुशासन में थी। उसमें कभी भी यह प्रवृत्ति नहीं थी कि वह परमेश्वर की इच्छा से हटकर अपनी आवेगशील इच्छा के अनुसार चले - "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता ..." (यूहन्ना 5:19)। फिर इसकी तुलना उसके साथ करें जो हम करते हैं - हम अपने धार्मिक अनुभव या आवेग के द्वारा आनेवाली "हर एक भावना को" या योजना को लेकर तुरन्त कार्यवाही में कूद पड़ते हैं, बजाय इसके कि हम अपने आप को मसीह की आज्ञा का पालन करने के लिए कैद और अनुशासित करें।

आजकल मसीहियों के लिए व्यावहारिक काम पर कुछ ज़्यादा ही ज़ोर दिया जा रहा है, और जो पवित्र लोग " हर एक भावना (और योजना) को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं" उनकी आलोचना की जाती है और उनपर आरोप लगाया जाता है कि वे न तो परमेश्वर के प्रति ईमानदार हैं और न ही आत्माओं के प्रति। लेकिन सच्ची ईमानदारी परमेश्वर की आज्ञा मानने में पाई जाती है; परमेश्वर की सेवा करने के हमारे अपने अनानुशासित मानवीय स्वभाव से उठनेवाली प्रवृत्ति से नहीं। यह बात अविश्वसनीय परन्तु सच्ची है कि पवित्र लोग "हर एक भावना (या योजना) को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी" नहीं बनाते हैं, बल्कि परमेश्वर के लिए सिर्फ़ वह काम कर रहे हैं जिसकी उसकाहट उनके अपने मानवीय स्वभाव से आई है, और जो दृढ़ निश्चय से किए गए अनुशासन से आत्मिक नहीं बनाई गई है।

हमारी प्रवृत्ति यह भूल जाने की है कि एक व्यक्ति सिर्फ़ उद्धार के लिए ही यीशु मसीह के प्रति समर्पित नहीं होता, बल्कि परमेश्वर के, जगत के, पाप के और शैतान के बारे में यीशु मसीह के दृष्टिकोण के प्रति समर्पित होता है। इसका अर्थ यह है कि हर व्यक्ति को अपनी "बुद्धि के नए हो जाने से अपने चाल चलन के भी बदलते जाने" की ज़िम्मेदारी को पहचानने की ज़रूरत है (रोमियों 12:2)।

मिश्नरी के हथियार

जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैं ने तुझे देखा था।
यूहन्ना 1:48।

प्रतिदिन की घटनाओं में आराधना करना। हम यह मान लेते हैं कि यदि हमारा सामना किसी महान संकट से होगा, तो हम युद्ध के लिए तैयार पाए जाएँगे, लेकिन वह संकट तो सिर्फ़ उस चीज़ को प्रकट करता है जिसके हम पहले से ही बने हुए हैं, वह हमारे अन्दर कुछ डालेगा नहीं। क्या आप अपने आप को यह कहते हुए पाते हैं कि "यदि परमेश्वर मुझे बुलाएगा, तो मैं ज़रूर स्थिति से निपट पाऊँगा" ? लेकिन आप स्थिति से नहीं निपट पाएँगे यदि आपने परमेश्वर ने प्रशिक्षण स्थल पर ऐसा नहीं किया है। यदि आप वह काम नहीं कर रहे हैं जो आपके सबसे क़रीब है, जो परमेश्वर आपके जीवन में लाया है, तो जब संकट आएगा, तब युद्ध के लिए तैयार पाए जाने के बजाय, आप अयोग्य साबित होंगे। संकट हमेशा एक व्यक्ति के असली चरित्र को प्रकट कर देते हैं।

आत्मिक क्षमता का सबसे बड़ा ज़रूरी तत्त्व होता है परमेश्वर की आराधना करने का निजी सम्बन्ध। एक ऐसा समय आता है, जैसे नतनएल ने भी इस अनुच्छेद में अनुभव किया, कि एक निजी "अंजीर के पेड़" का जीवन अब और समय के लिए सम्भव नहीं होगा। सब कुछ खुले में आ जाएगा, और आप पाएँगे कि यदि आप अपने घर में प्रतिदिन की घटनाओं में आराधना नहीं करते रहें हैं, तो आप बेकार होंगे। यदि परमेश्वर के साथ आपके निजी सम्बन्ध में आपकी आराधना सही है, तो जब वह आपको स्वतन्त्र करेगा, आप तैयार पाए जाएँगे। अपने अनदेखे जीवन में, जिसे सिर्फ़ परमेश्वर ने देखा, आप सम्पूर्ण रूप से योग्य बन गए हैं और जब संकट का तनाव आएगा, तो परमेश्वर आपके ऊपर भरोसा कर सकेगा।

क्या आप यह कह रहे हैं कि, "मुझसे यह प्रत्याशा नहीं की जानी चाहिए कि मैं अपनी वर्तमान परिस्थितियों में एक पवित्र जीवन जीऊँ; इस समय मेरे पास प्रार्थना करने और बाइबल का अध्ययन करने के लिए समय नहीं; इसके अलावा, मेरे लिए युद्ध करने का समय अभी तक नहीं आया है, लेकिन जब वह आएगा, तो मैं ज़रूर तैयार पाया जाऊँगा" ? नहीं, आप तैयार नहीं पाए जाएँगे। यदि आप प्रतिदिन की घटनाओं में आराधना नहीं करते रहे हैं, तो जब आप परमेश्वर के कार्य में शामिल होंगे, तब आप न सिर्फ़ खुद बेकार होंगे, बल्कि अपने चारों ओर लोगों के लिए एक रुकावट भी बन जाएँगे।

मिश्नरी के हथियारों को ढालने का कारखाना एक पवित्र जन का छिपा हुआ व्यक्तिगत आराधना का जीवन होता है।

मिश्नरी के हथियार

यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। यूहन्ना 13:14।

प्रतिदिन मिलनेवाले मौकों में सेवकाई करना । प्रतिदिन हमारे चारों ओर मिलनेवाले मौकों में सेवकाई करने का अर्थ यह नहीं कि हम अपने पास-पड़ोस को खुद चुनें - इसका अर्थ है परमेश्वर के द्वारा ठहराई गई परिस्थितियों में परमेश्वर के द्वारा उसके काम के लिए चुने जाना। अपनी वर्तमान परिस्थितियों में हम जो चरित्र प्रदर्शित करते हैं, वह इस बात का संकेत देता है कि हम दूसरी परिस्थितियों में कैसे पेश आएँगे।

यीशु ने जो काम किए, वे प्रतिदिन के कार्यों में से सबसे तुच्छ थे, और यह इसका संकेत देता है कि सबसे मामूली कार्यों को परमेश्वर के ढंग से करने के लिए मुझमें परमेश्वर की सारी शक्ति होनी चाहिए। क्या मैं उसकी तरह अंगोछे का इस्तेमाल कर सकता हूँ ? अंगोछे, बर्तन, जूते, और जीवन की बाकी साधारण चीज़ें, और बातों से ज़्यादा जल्दी दिखा देती हैं कि हम किस धातु के बने हैं। सब से तुच्छ काम को जैसे किया जाना चाहिए, वैसा करने के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर को हमारे अन्दर होने की ज़रूरत होती है।

यीशु ने कहा, "मैंने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो" (13:15)। उन लोगों की ओर ध्यान से देखें जिन्हें परमेश्वर आपके सम्पर्क में लाता है, और जब आपको यह एहसास होगा कि यह परमेश्वर का आपको यह सच्चाई दिखाने का तरीका है कि आप उसके प्रति किस प्रकार के व्यक्ति थे, तो आपको बड़ी शर्मिन्दगी महसूस होगी। अब वह हमसे कहता है कि हमें अपने पास-पड़ोस में वह प्रदर्शित करना चाहिए जो उसने हमपर प्रदर्शित किया है।

क्या आप यह कहते हैं, कि "जब मैं मिशन के क्षेत्र जाने के लिए निकल पड़ूँगा, तो ये सब कर लूँगा" ? इस तरह की बातें करना, लड़ाई के मैदान में खाइयों में बैठकर हथियार बनाने की कोशिश करने के बराबर होता है। ऐसा करते समय आप मार डाले जाएँगे।

हमें परमेश्वर के साथ "दूसरा कोस" चलने की ज़रूरत होती है (मत्ती 5:41)। फिर भी हम में से कुछ लोग पहले दस कदमों में ही थक कर चूर हो जाते हैं। फिर हम कहते हैं "कोई बात नहीं, मैं अपने जीवन के अगले संकट के करीब पहुँचने का इन्तज़ार करूँगा।" लेकिन यदि हम प्रतिदिन के मौकों में लगातार सेवकाई नहीं करेंगे, तो जब संकट आएगा, तब हम कुछ भी नहीं करेंगे।

आत्मिक उलझन से गुज़रना

यीशु ने उत्तर दिया, तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो।
मत्ती 20:22।

आपके आत्मिक जीवन में ऐसे मौके आते हैं जब आप उलझन में पड़ जाते हैं, और यह कहना कि आपको उलझन में नहीं पड़ना चाहिए, इससे बाहर निकलने का तरीका नहीं है। यह सही और ग़लत का मामला नहीं, बल्कि परमेश्वर के द्वारा आपको ऐसे मार्ग से होकर ले जाने का मामला है, जो इस समय आपकी समझ से बाहर है। और इस आत्मिक उलझन से गुज़रने के द्वारा ही आप यह समझ सकेंगे कि परमेश्वर आपके लिए क्या चाहता है।

उसकी मित्रता का अन्धेरे में छिप जाना (लूका 11:5-8 देखें)।

यहाँ यीशु एक ऐसे आदमी का चित्र प्रस्तुत करता है जिसे देखकर लगता है कि उसे अपने मित्र की चिन्ता नहीं। यीशु यह कहना चाह रहा है कि कभी-कभी आपको स्वर्गीय पिता भी ऐसा ही लगेगा। आप ऐसा समझेंगे कि वह एक निर्दयी मित्र है - लेकिन याद रखें कि यह विचार ग़लत है। एक समय आएगा जब सब बातें समझा दी जाएँगी। हृदय की मित्रता पर एक बादल छाया हुआ जान पड़ता है, और कभी-कभी प्रेम को भी और गहरी संगति और एकता की आशीष के लिए दर्द और आँसुओं में प्रतीक्षा करनी पड़ती है। जब परमेश्वर अन्धेरे से घिरा हुआ जान पड़ेगा, तब क्या आप उसपर भरोसा रखते हुए दृढ़ रहेंगे ?

उसके पितृत्व पर पड़ने वाली छाया (लूका 11:11-13 देखें)।

यीशु ने कहा कि ऐसे मौके भी आते हैं जब आपका स्वर्गीय पिता ऐसा लगेगा जैसे कि वह एक अस्वाभाविक पिता हो - जैसे कि वह कठोरहृदय और उदासीन हो - लेकिन याद रखें कि यह विचार ग़लत है। "जो माँगता है, वह पाता है ..." (लूका 11:10)। यदि इस समय आपको स्वर्गीय पिता के चेहरे पर सिर्फ़ एक छाया दिखाई दे रही है, तो इस सत्य पर दृढ़ रहें कि अन्त में वह आपको स्पष्ट समझ देगा और जो कुछ भी उसने आपके जीवन में आने दिया है, उसे पूरी तरह से उचित सिद्ध कर देगा।

उसकी विश्वासयोग्यता की विचित्रता (लूका 18:1-8 देखें)।

"मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा ?" (लूका 18:8)। क्या वह उस तरह का विश्वास पाएगा जो उलझन के बावजूद भी उसपर भरोसा रखता है ? विश्वास में दृढ़ रहें, मानते रहें कि यीशु ने जो कहा है वह सच है, हालाँकि इस समय आप नहीं समझ पा रहे हैं कि परमेश्वर क्या कर रहा है। आप इस समय उससे जो माँग रहे हैं, उससे कहीं बड़े मुद्दे उसने दाँव पर लगा रखे हैं।

सितम्बर 13

समर्पण के बाद क्या ?

जो काम तूने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।
यूहन्ना 17:4।

सच्चा समर्पण केवल हमारे बाहरी जीवन का नहीं, बल्कि हमारी इच्छा का भी होता है - और इसके बाद समर्पण सम्पूर्ण हो जाता है। सबसे बड़ा संकट जिसका हम कभी भी सामना करते हैं, हमारी इच्छा का समर्पण होता है। फिर भी, परमेश्वर कभी ज़बरदस्ती किसी व्यक्ति से इच्छा का समर्पण नहीं करवाता, न ही वह विनती करता है। वह धीरज धर कर ठहरा रहता है जब तक कि वह व्यक्ति अपनी इच्छा को उसके सुपुर्द नहीं कर देता। और एक बार जब यह लड़ाई लड़ ली जाती है, तो उसे दोबारा लड़ने की ज़रूरत नहीं होती।

छुटकारे के लिए समर्पण। "...मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" (मत्ती 11:28)। जब हम यह अनुभव करना शुरू कर देते हैं कि वास्तव में उद्धार का अर्थ क्या है, तब ही हम विश्राम के लिए अपनी इच्छा को यीशु को समर्पित करते हैं। जो भी बात हमारे लिए अनिश्चितता का कारण बन रही है, वास्तव में वह हमारी इच्छा की पुकार है - "मेरे पास आओ।" और यह आना अपनी इच्छा से होता है।

भक्ति के लिए समर्पण। "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपका इनकार करे ..." (मत्ती 16:24) यहाँ अपने आप को यीशु के प्रति समर्पित करने की बात हो रही है, और उसका विश्राम मेरे अस्तित्व के केन्द्र में है। वह कहता है, "यदि तुम मेरे चेले बनना चाहते हो, तो तुम्हें अपने आप के ऊपर अपने अधिकार को मुझे दे देना होगा।" और जब ऐसा हो जाता है, तो आपका जीवन इस समर्पण के सबूत को छोड़ और किसी चीज़ को प्रदर्शित नहीं करेगा, और आपको कभी इस बात की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं होगी कि भविष्य में क्या होगा। आपकी परिस्थितियाँ चाहें जो भी हों, यीशु पूरी तरह से काफ़ी है (2 कुरिन्थियों 12:9 और फिलिप्पियों 4:19 देखें)।

मृत्यु के लिए समर्पण। "...दूसरा तेरी कमर बाँधेगा..." (यूहन्ना 21:18; पद 19 भी देखें)। क्या आपने यह सीख लिया है कि मृत्यु के लिए कमर बाँधने का अर्थ क्या है ? ऐसे समर्पण से सावधान रहें जो आप अपने जीवन के किसी भावविभोर पल में कर बैठते हैं, क्योंकि इसे वापस ले लेने की सम्भावना बनी रहती है। सच्चा समर्पण "मृत्यु की समानता में (यीशु के साथ) जुट जाने"का मामला होता है (रोमियों 6:5) जब तक कि आपको सिर्फ़ वे बातें ही पसन्द आती हैं जो उसे पसन्द आती थीं।

और आपके समर्पण करने के बाद - फिर क्या होगा ? आपके सम्पूर्ण जीवन का लक्षण होगा परमेश्वर के साथ अटूट संगति और एकता बनाए रखने की उत्सुकता।

सितम्बर 14

वाद-विवाद या आज्ञाकारिता ?

सीधाई ...जो मसीह के साथ होनी चाहिए।
2 कुरिन्थियों 11:3।

सीधाई बातों को स्पष्टता से देखने का रहस्य है। एक पवित्र जन काफ़ी समय बीत जाने के बाद ही स्पष्टता से *सोच* पाता है, लेकिन एक पवित्र जन को बिना किसी कठिनाई के स्पष्टता से *देख* पाना चाहिए। आप आत्मिक गड़बड़ी में सोच-विचार के द्वारा बातों को स्पष्ट नहीं कर सकते; बातों को स्पष्ट करने के लिए, आपको आज्ञा मानने की ज़रूरत है। बौद्धिक मामलों में आप बातों पर सोच-विचार कर सकते हैं, लेकिन आत्मिक मामलों में, सोच-विचार करने से आपके विचार और भटक जाएँगे और और अधिक उलझन में पड़ जाएँगे। यदि आपके जीवन में कुछ ऐसा है जिसपर परमेश्वर ने दबाव डाला है, तो उस मामले में उसकी आज्ञा मानें और अपनी सारी "ऊँची बातों...और भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना दें" (2 कुरिन्थियों 10:5), और हर बात आपके सामने स्पष्ट हो जाएगी। आपकी तर्क करने की योग्यता बाद में आएगी, लेकिन हम तर्क के अनुसार कभी नहीं देखते। हम बालकों के समान देखते हैं, और जब हम बुद्धिमान बनने की कोशिश करते हैं, तो कुछ नहीं देख पाते (मत्ती 11:25 देखें)।

वह छोटी से छोटी चीज़ जिसे हम अपने जीवन में आने देते हैं, और जो पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में नहीं है, आत्मिक उलझन का कारण बनने के लिए काफ़ी है, और इसके बारे में सारे समय सोचने से भी यह कभी स्पष्ट नहीं होगी। आत्मिक उलझन पर केवल आज्ञाकारिता के द्वारा विजय पाई जा सकती है। जैसे ही हम आज्ञा मानते हैं, हमें अन्तर्दृष्टि मिल जाती है। यह बड़ी विनम्र करनेवाली बात है, क्योंकि जब हम उलझन में होते हैं, तो हम जानते हैं कि इसका कारण हमारे मन की हालत में है। लेकिन जब हमारी दृष्टि का प्राकृतिक सामर्थ्य आज्ञाकारिता में पवित्र आत्मा को समर्पित होता है, तो यह वही सामर्थ्य बन जाता है जिसके द्वारा हम परमेश्वर की इच्छा को देखते हैं, और हमारा सारा जीवन सीधाई में रहता है।

सितम्बर 15

किन बातों को त्याग देना है ?

हमने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया ...।
2 कुरिन्थियों 4:2।

क्या आपने अपने जीवन में "लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया है" - यानि उन बातों को जिन्हें आपका सम्मान या घमण्ड प्रकाश में नहीं आने देगा ? आप उन्हें आसानी से छिपा सकते हैं। क्या आपके मन में किसी के बारे में कोई ऐसा विचार है जिसे आप प्रकाश में नहीं आने देना चाहेंगे ? तो जैसे ही वह विचार मन में आता है, उसे तुरन्त त्याग दें - हर बात को उसकी सम्पूर्णता में त्याग दें जब तक कि आपमें कोई छिपी हुई बेईमानी या चतुराई न रह जाए। ज़रूरी नहीं कि डाह, और जलन, और झगड़े आपके पाप के पुराने स्वभाव से ही आएँ; वे उस शरीर से आते हैं जिसका इस्तेमाल उद्धार से पहले इन कामों के लिए किया जाता था (रोमियों 6:19 और 1 पतरस 4:1-3 देखें)। आपको सदैव सावधान रहना चाहिए कि आपके जीवन में कुछ ऐसा न आए जिससे आपको लज्जा हो।

"...और न चतुराई से चलते ..." (2 कुरिन्थियों 4:2)। इसका अर्थ है सिर्फ़ अपना मतलब पूरा करने के लिए कोई उपाय अपनाना। यह एक भयंकर फन्दा होता है। आप जानते हैं कि परमेश्वर आपको एक ही तरह से काम करने देगा - सत्य के तरीके से। तो सावधान रहें कि आप लोगों को किसी और तरीके से - यानि, धोखे के तरीके से - कभी न पकड़ें। यदि आप धोखे से काम करेंगे, तो परमेश्वर का अभिशाप और सर्वनाश आपके ऊपर होगा। जो आपके लिए चतुराई हो सकती है, हो सकता है कि वह दूसरों के लिए चतुराई न हो - परमेश्वर ने आपको एक दूसरा दृष्टिकोण दिया है। परमेश्वर के सर्वोच्च के लिए अपना सर्वोत्तम होने की - उसकी महिमा के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ होने की भावना को कभी मन्द न होने दें। कुछ प्रकार के काम करने का अर्थ आपके लिए यह हो सकता है कि सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ को छोड़ किसी और उद्देश्य से चतुराई आपके जीवन में आ गई है, और यह उस प्रेरणा को मन्द कर देगी जो परमेश्वर ने आपको दी है। बहुत से लोग इसलिए पीछे हट गए हैं क्योंकि वे बातों को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखने से डरते हैं। सब से बड़ा आत्मिक संकट तब आता है जब एक व्यक्ति को अपने विश्वास में उन धारणाओं से, जिन्हें वह स्वीकार कर चुका है, थोड़ा और आगे बढ़ना होता है।

सितम्बर 16

गुप्त में परमेश्वर से प्रार्थना करना

जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द करके
अपने पिता से जो गुप्त में है, प्रार्थना कर ...।
मत्ती 6:6।

धर्म के क्षेत्र में प्रमुख विचार यह है कि अपनी आँखों को परमेश्वर पर लगाए रखें, मनुष्य पर नहीं। आपकी प्रेरणा यह अभिलाषा नहीं होनी चाहिए कि लोग आपको एक प्रार्थना करनेवाले व्यक्ति के रूप में जानें। प्रार्थना करने के लिए एक गुप्त कमरा ढूँढें, जहाँ किसी को पता भी न लगे कि आप प्रार्थना कर रहे हैं, द्वार बन्द कर लें, और गुप्त में परमेश्वर से बातचीत करें। अपने स्वर्गीय पिता को जानने के सिवा किसी और कारण से प्रेरित न हों। गुप्त प्रार्थना के निर्धारित मौकों के बिना एक चेले का जीवन जीना आपके लिए असम्भव होगा।

"जब तुम प्रार्थना करो, तो... बकबक न करो..." (6:7)। परमेश्वर हमारी इसलिए नहीं सुनता क्योंकि हम सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं - वह सिर्फ़ छुटकारे के आधार पर हमारी सुनता है। परमेश्वर हमारे मन की सच्चाई से कभी प्रभावित नहीं होता। प्रार्थना परमेश्वर से सिर्फ़ चीज़ें पाना नहीं - यह तो बहुत ही प्रारम्भिक प्रकार की प्रार्थना होती है। यदि नया बनाए जाने के द्वारा हम में परमेश्वर के पुत्र का रूप बन गया है (गलातियों 4:19 देखें), तो वह हमारी व्यावहारिक बुद्धि से आगे बढ़ता जाएगा, और जिन बातों के लिए हम प्रार्थना करते हैं, उनके विषय में हमारी मनोवृत्ति को बदल देगा।

"जो कोई *माँगता* है, उसे मिलता है..." (मत्ती 7:8)। हम अपनी इच्छा को शामिल किए बिना, प्रार्थना के नाम से धार्मिक बकवास करते हैं, और फिर कहते हैं कि परमेश्वर उत्तर नहीं देता - लेकिन वास्तव में हमने कभी कुछ *माँगा* नहीं। यीशु ने कहा, "तुम ...जो *चाहो* माँगो ..." (यूहन्ना 15:7)। माँगने का अर्थ यह है कि हमारी इच्छा को शामिल होना चाहिए। यीशु ने जब भी प्रार्थना के बारे में बात की, वह एक बालक की अद्‌भुत सरलता से बोला। हम यह कहते हुए अपनी आलोचनात्मक मनोवृत्ति के साथ प्रत्युत्तर देते हैं कि, "हाँ, लेकिन यीशु ने भी तो यह कहा कि हमें *माँगना* है।" लेकिन याद रखें कि हमें परमेश्वर से ऐसी चीज़ें माँगनी हैं जो ऐसे परमेश्वर के अनुकूल हों जिसे यीशु मसीह ने प्रकट किया।

सितम्बर 17

क्या परीक्षा में कोई अच्छाई है ?

तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है ... ।
1 कुरिन्थियों 10:13 ।

'परीक्षा' शब्द का अर्थ कुछ ऐसा बन गया है जो आजकल के समय में बुरा समझा जाता है, लेकिन हम इस शब्द का ग़लत इस्तेमाल करते हैं । परीक्षा पाप नहीं है; यह तो ऐसी चीज़ है जिसका सामना, मनुष्य होने के नाते, हमें करना ही पड़ेगा । परीक्षा में न पड़ने का अर्थ यह होगा कि हम घृणित से भी बदतर होंगे । फिर भी, हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं जो ऐसी परीक्षाओं का सामना करते हैं, जिनका सामना करने की उन्हें कभी ज़रूरत नहीं होनी चाहिए, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि हमने परमेश्वर को हमें एक ज़्यादा ऊँचे स्तर पर नहीं उठाने दिया है, जहाँ हमें एक और ही प्रकार की परीक्षाओं का सामना करना पड़ता ।

एक व्यक्ति का भीतरी स्वभाव, यानि, उसके अस्तित्व के भीतरी, आत्मिक अंग में उसके पास जो है, वह फ़ैसला करता है कि बाहर उसकी परीक्षा किन बातों से होगी । जिस व्यक्ति की परीक्षा हो रही है, परीक्षा उसके असली स्वभाव के अनुसार उपयुक्त होती है और उसके स्वभाव की सम्भावनाओं को प्रकट कर देती है । वास्तव में, हर व्यक्ति अपनी ही परीक्षा को तय करता या उसके स्तर को निर्धारित करता है, और परीक्षा उसके पास उसके नियन्त्रण रखनेवाले भीतरी स्वभाव के स्तर के अनुसार आएगी ।

परीक्षा मुझे मेरे सबसे ऊँचे लक्ष्य तक पहुँचाने के एक सरल उपाय का सुझाव लेकर मेरे पास आती है, वह मुझे उस चीज़ की ओर नहीं ले जाती जिसे मैं बुरा समझता हूँ, बल्कि उस चीज़ की ओर जिसे मैं अच्छा समझता हूँ । परीक्षा ऐसी चीज़ है जो मुझे कुछ समय के लिए उलझन में डाल देती है, और मैं नहीं जानता कि कोई बात सही है या ग़लत । जब मैं उसके सामने झुक जाता हूँ, तो लालसा को एक ईश्वर बना देता हूँ, और परीक्षा इस बात का सबूत बन जाती है कि इससे पहले इस पाप में गिरने से मुझे मेरे अपने भय ने रोका था ।

परीक्षा ऐसी चीज़ है जिससे हम बच नहीं सकते; बल्कि यह एक व्यक्ति के सम्पूर्णात्मक जीवन के लिए भी ज़रूरी होती है । यह सोचने से सावधान रहें कि आपकी तरह किसी और की परीक्षा नहीं हो रही है - आप जिसका सामना कर रहे हैं, वह सारी मानव जाति की साँझी विरासत है, ऐसी चीज़ नहीं जो दूसरों ने कभी नहीं झेली है । परमेश्वर हमें परीक्षा से कभी नहीं बचाता - वह परीक्षाओं के बीच में हमें सम्भालता है (इब्रानियों 2:18 और 4:15-16 देखें) ।

उसकी परीक्षा और हमारी परीक्षा

हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।
इब्रानियों 4:15।

जब तक हमारा नया जन्म नहीं होता, हम एक ही प्रकार की परीक्षा को समझते हैं, यानि, वह परीक्षा जिसका ज़िक्र याकूब 1:14 में किया गया है, "हर एक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फँसकर परीक्षा में पड़ता है।" लेकिन नए बनाए जाने के द्वारा हम एक और क्षेत्र में उठा लिए जाते हैं जहाँ सामना करने के लिए और प्रकार की परीक्षाएँ होती हैं, यानि, उस तरह की परीक्षाएँ जिनका सामना हमारे प्रभु ने किया। अविश्वासी होने के नाते, यीशु की परीक्षाओं का हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि वे हमारे मानुषिक स्वभाव के अनुकूल नहीं थीं। हमारे प्रभु की परीक्षाएँ और हमारी परीक्षाएँ तब तक फ़र्क-फ़र्क क्षेत्रों में होती हैं जब तब हमारा नया जन्म नहीं होता और हम प्रभु के भाई नहीं बन जाते। यीशु की परीक्षाएँ एक मामूली मनुष्य की नहीं, बल्कि मनुष्य के रूप में परमेश्वर की परीक्षाएँ हैं। नया बनाए जाने के द्वारा, परमेश्वर का पुत्र हमारे अन्दर बन जाता है (गलातियों 4:19), और हमारे शारीरिक जीवन में वह उन्हीं परिस्थितियों में होता है जिनमें वह तब था जब वह पृथ्वी पर था। शैतान हमारी परीक्षा इसलिए नहीं लेता कि हमसे सिर्फ़ ग़लत काम करवाए - वह हमारी परीक्षा इसलिए लेता है ताकि हम वह खो दें जो हमें नया बनाने के द्वारा परमेश्वर ने हमारे अन्दर रखा है, यानि परमेश्वर के लिए मूल्यवान होने की सम्भावना। वह हमारे पास इस आधार पर नहीं आता कि हमें पाप करने की परीक्षा में डाले, बल्कि इस आधार पर कि हमारे दृष्टिकोण को बदल दे, और सिर्फ़ परमेश्वर का आत्मा ही इसे शैतान की एक परीक्षा के रूप में पहचान सकता है।

परीक्षा का अर्थ है हमसे बाहर और एक अनजान शक्ति के द्वारा उन चीज़ों की परख जो हमारे भीतरी, आत्मिक अंग में पकड़ कर रखी जाती हैं। यह हमारे प्रभु की परीक्षा का स्पष्टीकरण करता है। यीशु के बपतिस्मे के बाद, "जगत का पाप उठा ले जानेवाले" (यूहन्ना 1:29) का अपना कार्यभार स्वीकार करने के बाद उसे "आत्मा के द्वारा जंगल में" (मत्ती 4:1) और शैतान के परीक्षा लेने की युक्ति में ले जाया गया। लेकिन फिर भी, वह थकित और निढाल नहीं हुआ। वह निष्पाप रहते हुए परीक्षा में से गुज़रा, और उसने अपने आत्मिक स्वभाव के सारे तत्वों को सही सलामत रखा।

सितम्बर 19

क्या आप यीशु के साथ जाना जारी रख रहे हैं ?

तुम वह हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे साथ रहे।
लूका 22:28।

यह तो सच है कि यीशु मसीह हमारी परीक्षाओं में हमारे साथ रहता है, लेकिन क्या हम उसकी परीक्षाओं में उसके साथ जा रहे हैं ? जिस पल हमें यह अनुभव होता है कि यीशु क्या कर सकता है, उसी पल हम में से बहुत से लोग यीशु के साथ आगे जाने से इनकार कर देते हैं। ध्यान से देखें कि परमेश्वर आपकी परिस्थितियों को कब बदल रहा है, यह देखने के लिए कि आप यीशु के साथ आगे जाते हैं या संसार, शरीर, और शैतान का साथ देते हैं। हम उसके कहलाते हैं, लेकिन क्या हम उसके साथ जा रहे हैं ? "इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले" (यूहन्ना 6:66)। यीशु की परिक्षाएँ पृथ्वी पर उसके पूरे जीवन के दौरान जारी रहीं, और वे हमारे अन्दर परमेश्वर के पुत्र के जीवन के दौरान भी जारी रहेंगी। जो जीवन हम अभी जी रहे हैं, क्या उसमें यीशु के साथ जा रहे हैं ?

हम समझते हैं कि परमेश्वर जिन चीज़ों को हमारे चारों ओर लाता है, हमें उनमें से कुछ चीज़ों से अपने आप को बचाकर रखने की ज़रूरत है। ऐसा कभी न हो ! परमेश्वर हमारी परिस्थितियों को नियन्त्रण में रखता है, और वे जो भी हों, हमें ध्यान रखना है कि हम उसकी परीक्षाओं में उसके साथ लगातार रहते हुए उनका सामना करते रहें। वे *उसकी* परीक्षाएँ हैं, हमारे लिए परीक्षाएँ नहीं, बल्कि हमारे अन्दर परमेश्वर के पुत्र के जीवन के लिए परीक्षाएँ। यीशु मसीह का सम्मान हमारे शारीरिक जीवन में दाँव पर लगा है। क्या हम उन सब चीज़ों में विश्वासयोग्य रह रहे हैं जो हमारे अन्दर परमेश्वर के पुत्र के जीवन पर हमला करती हैं ?

क्या आप यीशु के साथ जाना जारी रख रहे हैं ? रास्ता गतसमनी से होकर, शहर के फाटक से होकर, और "छावनी के बाहर" जाता है (इब्रानियों 13:13)। रास्ता अकेलेपन का है और तब तक जाता रहता है जब तक कोई पदचिह्न भी नहीं दिखाई देता जिसके पीछे चला जा सके - केवल एक आवाज़ सुनाई देती है जो कहती है, "मेरे पीछे चले आओ" (मत्ती 4:19)।

जीवन की ईश्वरीय आज्ञा

...तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।
मत्ती 5:48।

पद 38-48 में हमारा प्रभु हमसे यह आग्रह करता है कि हम दूसरों के प्रति अपने व्यवहार में उदारता दिखाएँ। अपने आत्मिक जीवन में अपनी स्वाभाविक पसन्द के अनुसार जीने से सावधान रहें। हम सब की स्वाभाविक पसन्दें होती हैं - हम कुछ लोगों को पसन्द करते हैं, और कुछ लोगों को पसन्द नहीं करते। लेकिन हमें इन पसन्दों या नापसन्दों को अपने मसीही जीवन पर शासन नहीं करने देना चाहिए। "जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं" (1 यूहन्ना 1:7) उन लोगों के साथ भी संगति देगा जिन्हें हम पसन्द नहीं करते।

हमारा प्रभु यहाँ जो उदाहरण देता है, वह एक अच्छे व्यक्ति का नहीं, एक अच्छे मसीही का भी नहीं, बल्कि खुद परमेश्वर का है। "...तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" दूसरे शब्दों में, दूसरे व्यक्ति को सिर्फ़ वह दिखाएँ जो परमेश्वर ने आपको दिखाया है। और यह साबित करने के लिए कि जैसे आप का स्वर्गीय पिता सिद्ध है, वैसे आप सिद्ध हैं या नहीं, परमेश्वर आपको जीवन में बहुत से मौके देगा। एक चेला बनने का अर्थ यह होता है कि हम समझ-बूझकर दूसरे लोगों में परमेश्वर की रुचियों के साथ एक हो जाते हैं। यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:24-35)।

मसीही चरित्र का सच्चा प्रदर्शन अच्छे काम करने में नहीं, बल्कि परमेश्वर की समानता में व्यक्त होता है। यदि परमेश्वर के आत्मा ने आपको आपके अन्दर बदल दिया है, तो आप अपने जीवन में सिर्फ़ अच्छी मानवीय विशेषताएँ ही नहीं, बल्कि ईश्वरीय विशेषताएँ प्रदर्शित करेंगे। हमारे अन्दर परमेश्वर का जीवन अपने आप को *परमेश्वर* के जीवन के रूप में व्यक्त करता है, एक ऐसे मानवीय जीवन के रूप में नहीं जो धार्मिक बनने की कोशिश कर रहा है। एक मसीही के जीवन का रहस्य यह है कि परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, उसके अन्दर अलौकिक स्वाभाविक बन जाता है, और इस बात का अनुभव परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति के समय के दौरान नहीं, बल्कि जीवन की व्यावहारिक, प्रतिदिन की बातों में साबित होता है। जब हम ऐसी चीज़ों के सम्पर्क में आते हैं जो उलझन या गतिविधियों के एक झोंके को पैदा करती हैं, तो हमें खुद आश्चर्य होता है कि हमारे पास इन सब के बीच भी अद्‌भुत रीति से संतुलित रहने का सामर्थ्य है।

सितम्बर 21

एक मिश्नरी का पूर्वनिर्धारित उद्देश्य

अब यहोवा जिस ने मुझे जन्म ही से इसलिए रचा कि मैं उसका दास होकर ...।
यशायाह 49:5।

जब हम परमेश्वर के द्वारा मसीह यीशु में अपने चुनाव को समझ जाते हैं, तो सबसे पहली बात यह होती है कि हमारे पहले से ठहराए गए विचारों का, हमारी संकीर्ण-हृदयता, और बाकी सारी चीज़ों के लिए हमारी वफ़ादारी का नाश हो जाता है। हम परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करनेवाले सेवक बन जाते हैं। सारी मानव जाति की सृष्टि इसलिए की गई थी कि वह हमेशा परमेश्वर की महिमा करे और उसका आनन्द ले। पाप ने मानव जाति के निर्धारित मार्ग को बदल दिया, लेकिन इससे परमेश्वर का उद्देश्य ज़रा भी नहीं बदला। और जब हम नए सिरे से जन्म लेते हैं, तो हम मानव जाति के लिए परमेश्वर के महान उद्देश्य की पहचान में लाए जाते हैं, यानि यह कि उसने हमारी सृष्टि अपने लिए की। परमेश्वर के द्वारा चुन लिए जाने का एहसास पृथ्वी का सबसे महान आनन्द होता है, और हमें सृष्टि के लिए परमेश्वर के महान उद्देश्य पर भरोसा रखना सीखना है। सबसे पहला काम जो परमेश्वर करेगा, वह यह होगा कि वह सारे जगत की रुचियों को हमारे हृदय में से गुज़रने के लिए बाध्य करेगा। परमेश्वर का प्रेम, यहाँ तक कि उसका स्वभाव भी, हमारे अन्दर डाल दिया जाता है और हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वभाव को केवल यूहन्ना 3:16 में केन्द्रित होता देखते हैं - *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा ..."*

हमें अपने मन को लगातार परमेश्वर के सृष्टि के उद्देश्य के प्रति खुला रखना चाहिए, और उसे हमारे अपने इरादों से उलझाना या धुँधला नहीं करना चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारे इरादों को कुचल देने पर बाध्य हो जाएगा, चाहे इससे हमें कितना भी दुःख क्यों न पहुँचे। एक मिश्नरी परमेश्वर का सेवक होने के उद्देश्य से बनाया जाता है, यानि, ऐसा व्यक्ति जिसमें परमेश्वर को महिमा मिलती है। जब हमें इस बात का एहसास हो जाएगा कि यीशु मसीह के उद्धार के द्वारा ही हम परमेश्वर के लिए बिलकुल उपयुक्त बनाए गए हैं, तब हम समझ जाएँगे कि यीशु मसीह अपनी माँगों में इतना कठोर और निर्दयी क्यों है। वह अपने सेवकों से सम्पूर्ण धार्मिकता की माँग करता है क्योंकि उसने उनके अन्दर स्वयं परमेश्वर के स्वभाव को डाल दिया है।

सावधान रहें, कहीं आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को भूल न जाएँ।

मिश्नरी का स्वामी और गुरु

तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ ...दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं।
यूहन्ना 13:13, 16।

मेरे पास स्वामी और गुरु के होने का अर्थ यह नहीं कि मैं किसी के स्वामित्व के अधीन हूँ और मुझे शिक्षा दी जा रही है। मेरे पास स्वामी और गुरु के होने का अर्थ यह है कि एक ऐसा व्यक्ति है जो मुझे उससे भी बेहतर जानता है जितना मैं अपने आप को जानता हूँ , जो एक मित्र से भी ज़्यादा क़रीब है, और जो मेरे हृदय की गहराइयों को समझता है और उन्हें पूरी तरह से तृप्त कर सकता है। इसका अर्थ यह है कि मेरे पास एक ऐसा व्यक्ति है जिसने मुझे इस जानकारी में सुरक्षा दी है कि उसने मेरे मन के सारे सन्देहों, अनिश्चितताओं, और समस्याओं का हल कर दिया है। एक स्वामी और गुरु का होना यही है और इससे कम नहीं - "तुम्हारा एक ही गुरु है, ...अर्थात् मसीह" मत्ती 23:8,10)।

हमारा प्रभु मुझसे कभी ज़बरदस्ती वह नहीं करवाता जो वह चाहता है। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि काश! परमेश्वर मुझपर अपना स्वामित्व जताकर और मुझे अपने नियन्त्रण में रखकर मुझसे वह करवाता जो वह चाहता है, लेकिन वह ऐसा नहीं करेगा। कभी-कभी मैं चाहता हूँ कि वह मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे, लेकिन वह ऐसा भी नहीं करता।

"तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो..." - लेकिन क्या वह *सचमुच* है। हमारी शब्दावली में *गुरु, स्वामी,* और *प्रभु* का महत्त्व बहुत कम है। हम *उद्धारकर्ता, पवित्र करनेवाला, चंगाई देनेवाला* जैसे शब्दों को ज़्यादा पसन्द करते हैं। जो एकमात्र शब्द सचमुच स्वामित्व के अधीन होने के अनुभव का वर्णन करता है, वह है *प्रेम,* और हम उस प्रेम के बारे में बहुत कम जानते हैं जिसे परमेश्वर ने अपने वचन में प्रकट किया है। इसका सबूत है वह ढंग जिससे हम *आज्ञा मानना* शब्द का प्रयोग करते हैं। बाइबल में, आज्ञा मानना बराबर के लोगों के बीच सम्बन्ध पर आधारित है; उदाहरण के लिए, एक पुत्र का पिता के साथ सम्बन्ध। हमारा प्रभु परमेश्वर का केवल सेवक ही नहीं था - वह उसका पुत्र भी था। "पुत्र होने पर भी, उसने...आज्ञा माननी सीखी..." (इब्रानियों 5:8)। यदि हमें इस बात की जागरूकता है कि हम स्वामित्व के अधीन हैं, तो यह विचार ही सबूत है कि हमारा कोई स्वामी नहीं। यदि यीशु के प्रति हमारा यही रवैया है, तो हम उस सम्बन्ध से कोसों दूर हैं जो वह हमारे साथ चाहता है। वह हमें ऐसे सम्बन्ध में चाहता है जिसमें वह इतनी आसानी से हमारा स्वामी और गुरु हो कि हमें इसका कोई बोध ही न हो - यानि, एक ऐसा सम्बन्ध जिसमें हम सिर्फ़ यह जानते हों कि हम आज्ञा मानने के लिए उसके हैं।

सितम्बर 23

एक मिश्नरी का लक्ष्य

उस ने ...उन से कहा; देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं ..."
लूका 18:31।

अपने शारीरिक जीवन में, हम जैसे-जैसे बढ़ते जाते हैं, हमारी आकांक्षाएँ बदलती जाती हैं, लेकिन मसीही जीवन में लक्ष्य शुरू में ही दे दिया जाता है, और शुरू और आखिर बिलकुल एक होते हैं, यानि, स्वयं हमारा प्रभु। हम शुरुआत भी मसीह के साथ करते हैं, और अन्त भी - "जब तक कि हम सब के सब...मसीह के डील डौल तक न बढ़ जाएँ" (इफिसियों 4:13), मसीही जीवन के बारे में हमारे अपने विचार के अनुसार नहीं। एक मिश्नरी का लक्ष्य यह नहीं होता कि वह उपयोगी हो या खोए हुओं को ढूँढे, बल्कि यह होता है कि वह परमेश्वर की इच्छा करें। एक मिश्नरी उपयोगी तो *होता* है, और वह खोए हुओं को *ढूँढता* भी है, लेकिन यह उसका लक्ष्य नहीं होता। उसका लक्ष्य होता है अपने प्रभु की इच्छा पूरी करना।

हमारे प्रभु के जीवन में, यरूशलेम वह जगह थी जहाँ वह क्रूस पर अपने पिता की इच्छा की बुलन्दी पर पहुँचा, और यदि हम यीशु के साथ वहाँ नहीं जाते, तो हम उसके साथ मित्रता या संगति नहीं रख सकते। यीशु को यरूशलेम के मार्ग से कोई हटा नहीं सका। वह उन गाँवों में से जल्दी से नहीं गुज़र गया जहाँ उसे सताया गया था; न ही वह उन जगहों पर ठहरा रहा जहाँ उसका स्वागत हुआ था। "यरूशलेम को जाने" के उद्देश्य से न तो कृतज्ञता उसे रोक पाई और न अकृतज्ञता।

"चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, और न दास अपने स्वामी से" (मत्ती 10:24)। दूसरे शब्दों में, जो बातें हमारे प्रभु के साथ हुईं, वे हमारे "यरूशलेम" के मार्ग पर हमारे साथ भी होंगी। परमेश्वर के कार्य हमारे द्वारा प्रदर्शित होंगे, लोगों को आशीषें मिलेंगी, एक-आध लोग कृतज्ञता दिखाएँगे जब कि बाकी लोग पूरी तरह से अकृतज्ञता दिखाएँगे, लेकिन किसी चीज़ को हमें "(अपने) यरूशलेम को जाने" के मार्ग से हटाना नहीं चाहिए।

"...उन्होंने वहाँ उसे...क्रूस पर चढ़ाया" (लूका 23:33)। जब हमारा प्रभु यरूशलेम पहुँचा, तो उसके साथ यह हुआ, और यह घटना हमारे उद्धार का प्रवेशद्वार है। लेकिन पवित्र लोगों का अन्त क्रूस पर चढ़ाए जाने से नहीं होता; प्रभु के अनुग्रह से, उनका अन्त महिमा में होता है। तब तक के लिए, हम में से हर एक के नारे का सार भी यही होना चाहिए कि, "मैं (भी) यरूशलेम को जाता हूँ।"

सितम्बर 24

तैयारी का "जा"

यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी और से कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।
मत्ती 5:23-24।

हमारे लिए यह कल्पना करना बहुत आसान है कि हम अपने जीवन में अचानक ऐसे स्थान पर पहुँच जाएँगे जहाँ हम सम्पूर्ण और तैयार दशा में होंगे, लेकिन तैयारी अचानक पूरी नहीं हो जाती, बल्कि एक प्रक्रिया होती है जिसे लगातार बरकरार रखना होता है। अपने अनुभव के मौजूदा स्तर पर निश्चिन्त और सन्तुष्ट होना ख़तरनाक़ होता है। मसीही जीवन को तैयारी की और *और* अधिक तैयारी की ज़रूरत होती है।

एक नए मसीही के लिए मसीही जीवन में बलिदान की भावना बहुत आकर्षक होती है। मनुष्य के दृष्टिकोण से, जो एक बात हमें यीशु मसीह की ओर आकर्षित करती है, वह हमारी बहादुरी की भावना होती है, और हमारे प्रभु के शब्दों के द्वारा हमारा सूक्ष्म परीक्षण अचानक हमारे जोश की लहर को परखता है। "...*जाकर* पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर ...।" तैयारी के "जा" का अर्थ है परमेश्वर के वचन को आपका सूक्ष्म परीक्षण करने देना। आपकी बहादुरी के बलिदान की भावना काफ़ी नहीं है। पवित्र आत्मा आप में जिस चीज़ का पता लगा रहा है, वह आपका वह स्वभाव है जो उसकी सेवा में कभी काम नहीं कर सकता। परमेश्वर को छोड़, और कोई आपमें उस स्वभाव का पता नहीं चला सकता। क्या आपके पास कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर से छिपाने की ज़रूरत है ? यदि है, तो परमेश्वर को अनुमति दें कि वह अपनी ज्योति से आपको जाँचे। यदि आपके जीवन में पाप है, तो उसे सिर्फ़ *मानें* ही नहीं - उसका *अंगीकार* करें। क्या आप अपने प्रभु और स्वामी की आज्ञा मानने के लिए तैयार हैं, चाहे इससे अपने आप पर आपके अधिकार का कितना भी अपमान क्यों न हो ?

जब पवित्र आत्मा आपको किसी बात के लिए क़ायल करता है, तो उसे कभी अनदेखा न करें। यदि यह इतना महत्त्वपूर्ण है कि पवित्र आत्मा इसे आपके मन में ला रहा है, तो यही वह बात है जो उसे आपके जीवन में दिखाई दी है। आप त्याग करने के लिए किसी बड़ी चीज़ की खोज में थे, जब कि परमेश्वर आपको किसी छोटी सी बात के बारे में बता रहा है जिसका जाना ज़रूरी है। लेकिन उस छोटी सी चीज़ के पीछे ज़िद का गढ़ है, और आप कहते हैं कि, "मैं अपने आप पर अपने अधिकार को नहीं त्यागूँगा" - यानि, उसी चीज़ को जिसे परमेश्वर चाहता है कि आप त्याग दें यदि आपको यीशु मसीह का चेला बनना है।

सम्बन्ध का "जा"

जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा।
मत्ती 5:41।

हमारे प्रभु की शिक्षा का संक्षेप यह है : जिस सम्बन्ध की माँग वह हमसे करता है, वह असम्भव है यदि उसने हमारे अन्दर एक अलौकिक काम नहीं किया है। यीशु मसीह की माँग यह है कि जब उसका चेला अत्याचार और अन्याय का सामना करता है, तो वह अपने हृदय में ज़रा सी भी नाराज़गी न आने दे, दबी हुई नाराज़गी भी नहीं। यीशु मसीह अपने सेवक पर जो तनाव डालेगा, सेवक का सारा जोश उसका मुकाबला नहीं कर पाएगा। केवल एक चीज़ इस तनाव का सामना करेगी, और वह है खुद यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध - ऐसा सम्बन्ध जिसका परीक्षण किया गया है, जिसे पवित्र किया गया है, और जिसे तब तक परखा गया है जब तक एक ही उद्देश्य न बचा रहे कि, "मैं यहाँ इसलिए हूँ ताकि परमेश्वर जहाँ चाहे, मुझे वहाँ भेज दे।" बाकी सब चीज़ें धुँधली पड़ सकती हैं, लेकिन यीशु मसीह के साथ इस सम्बन्ध को कभी धुँधला नहीं पड़ना चाहिए।

पहाड़ी उपदेश कोई आदर्श नहीं है; यह वह बात है जो मुझमें तब होगी जब यीशु मसीह अपने स्वभाव को मेरे अन्दर रखते हुए मेरे स्वभाव को बदल देगा। यीशु मसीह वह एकमात्र व्यक्ति है जो पहाड़ी उपदेश को पूरा कर सकता है।

यदि हमें यीशु के चेले बनना है, तो हमें अलौकिक ढंग से चेले बनाए जाने की ज़रूरत है। जब तक हम उसके चेले होने के पक्के इरादे को जानबूझकर बनाए रखेंगे, हम निश्चित रूप से जान सकते हैं कि हम चेले नहीं हैं। यीशु ने कहा, "तुमने मुझे नहीं चुना है परन्तु *मैंने तुम्हें चुना है* ..." (यूहन्ना 15:16)। परमेश्वर के अनुग्रह का मार्ग ऐसे ही शुरू होता है। यह एक ऐसी ज़बरदस्ती है जिससे हम कभी बच नहीं सकते; हम उसका उल्लंघन कर सकते हैं, लेकिन हम न तो उसे अपने आप शुरू कर सकते हैं, और न ही उसे पैदा कर सकते हैं। हम परमेश्वर के अलौकिक अनुग्रह के कार्य के द्वारा परमेश्वर की ओर खिंचते हैं, और हम कभी यह पता नहीं चला सकते कि यह काम कहाँ शुरू हुआ था। हमारे प्रभु का चेले बनाने का ढंग अलौकिक है। वह हमारी किसी प्राकृतिक योग्यता पर कभी निर्माण नहीं करता। परमेश्वर हमसे ऐसा काम नहीं करवाता जो स्वाभाविक रूप से हमारे लिए आसान हो - वह हमसे सिर्फ़ ऐसे काम करने को कहता है जिन्हें करने के लिए हम उसके अनुग्रह के द्वारा बिलकुल योग्य हैं, और यहीं पर वह क्रूस जिसे हमें उठाना है, हमेशा आएगा।

सितम्बर 26

मेल मिलाप का "जा"

यदि तू...स्मरण करे कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है...।
मत्ती 5:23।

यह पद कहता है कि, "यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है। पद यह नहीं कहता कि "यदि तू जाँच करे और अपनी असन्तुलित संवेदनशीलता के कारण कुछ पाए," बल्कि यह कि, "यदि तू...स्मरण करे...।" दूसरे शब्दों में, यदि आपके सचेत मन में परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कोई बात लाई जाती है, तो "पहले ...मेल मिलाप कर।" जब परमेश्वर का आत्मा आपको छोटी से छोटी बात के बारे में कुछ सिखाता है, तो उसकी संवेदनशीलता पर आपत्ति न करें।

"पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर ..." हमारे प्रभु का आदेश सरल है - "पहले मेल मिलाप कर।" एक तरह से वह यह कह रहा है कि "जिस रास्ते तू आया था, उसी रास्ते वापस जा - यानि उस रास्ते जो तुझे वेदी पर तब दिखाया गया जब तुझे क़ायल किया गया; जिस व्यक्ति के मन में तेरी ओर से विरोध है, उसके प्रति अपने मन में ऐसी मनोवृत्ति रख जो मेल मिलाप को इतना आसान बना देगी जितना आसान साँस लेना होता है।" यीशु दूसरे व्यक्ति का ज़िक्र नहीं करता - वह कहता है *तू जा*। यहाँ आपके अधिकारों का सवाल नहीं उठता। एक पवित्र जन का असली चिह्न यह होता है कि वह अपने अधिकारों को अपनी इच्छा से छोड़ सकता है और प्रभु यीशु की आज्ञा मान सकता है।

"तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।" मेल मिलाप की प्रक्रिया स्पष्टता से बताई गई है। पहले तो आत्मबलिदान की बहादुरी है, फिर पवित्र आत्मा की संवेदनशीलता की रोक है, और तब हम अपने क़ायल होने की घड़ी पर रोक दिए जाते हैं। इसके बाद परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता आती है, जो एक ऐसा रवैया बनाती है जो उसपर कोई दोष नहीं लगाता जिसके साथ आप ग़लत थे। और अन्त में आता है परमेश्वर को आपका आनन्दमय, सरल, और बिना रुकावट के भेंट चढ़ाना।

सितम्बर 27

परित्याग का "जा"

किसी ने उससे कहा, जहाँ जहाँ तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूँगा।
लूका 9:57।

इस व्यक्ति के प्रति हमारे प्रभु का रवैया कठोरता से निरुत्साहित करने का था, क्योंकि "वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है" (यूहन्ना 2:25)। हम होते तो कहते कि, "देखो, उसने उस व्यक्ति को जीतने के मौके को कैसे गँवा दिया ! यीशु ने उसके साथ कितना रूखा व्यवहार किया और उसे कितना निराश करके वापस भेज दिया !" अपने प्रभु की ओर से कभी क्षमा न माँगें। प्रभु के वचन इतना दुःख और ठेस पहुँचाते हैं कि दुःख और ठेस पहुँचाने के लिए और कुछ बचता ही नहीं। यीशु मसीह के हृदय में ऐसी किसी चीज़ के लिए कोमलता नही है जो अन्त में एक व्यक्ति को परमेश्वर की सेवा के लिए नष्ट करने जा रही है। हमारे प्रभु के उत्तर किसी सनक या मनमौजीपन पर नहीं, बल्कि इस जानकारी पर आधारित थे कि "मनुष्य के मन में क्या है।" यदि परमेश्वर का आत्मा आपके मन में प्रभु का ऐसा वचन लाता है जिससे आपको ठेस पहुँचती है, तो आप निश्चय जान सकते हैं कि आप के अन्दर कुछ ऐसा है जिसे वह तब तक ठेस पहुँचाना चाहता है जब तक वह चीज़ मर न जाए।

लूका 9:58। ये शब्द इस तर्क को नष्ट कर देते हैं कि यीशु मसीह की सेवा इसलिए करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करना सुखदायक होता है। और जिस तिरस्कार की वह माँग करता है, उसकी कठोरता मेरे जीवन में मेरे प्रभु, मुझे और एक अत्यन्त उत्तेजित आशा की भावना को छोड़ और किसी चीज़ की अनुमती नहीं देती। वह कहता है कि "दूसरे आएँ या जाएँ, तुझे सिर्फ़ मेरे प्रति अपने सम्बन्ध से मार्गदर्शन लेना है, और मेरे पास सिर धरने की भी जगह नहीं।"

लूका 9:59। यह व्यक्ति यीशु को निराश नहीं करना चाहता था, न ही वह अपने पिता के लिए आदर की कमी दिखाना चाहता था। हम अपने सम्बन्धियों के प्रति अपनी वफ़ादारी को यीशु मसीह के प्रति वफ़ादारी से आगे रखते हैं, और उसे आखिरी स्थान लेने पर मजबूर कर देते हैं। जब आपकी वफ़ादारियों में टकराव होता है, तो चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े, हमेशा यीशु मसीह की आज्ञा मानें।

लूका 9:61। जो व्यक्ति कहता है कि, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूँगा, पर ..." वह ऐसा व्यक्ति है जो जाने के लिए गम्भीरता से तैयार है, लेकिन कभी जाता नहीं। इस व्यक्ति के मन में जाने के लिए कुछ शर्तें थीं। यीशु की कठिन बुलाहट में अलविदा कहने का स्थान नहीं। जिन तरीकों से हम अलविदा कहते हैं, वे अकसर विधर्मी होते हैं, मसीही नहीं, क्योंकि वे हमारा ध्यान बुलाहट से दूर कर देते हैं। जब परमेश्वर की बुलाहट आपके पास आती है, तो तुरन्त चल पड़ें, और कभी रुकें नहीं।

सितम्बर 28

बिना शर्त एकात्मीकरण का "जा"

यीशु ने...उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेचकर कंगालों को दे ...और आकर मेरे पीछे हो ले।
मरकुस 10:21।

इस धनवान युवा अगुवे को वश में रखनेवाली एक उमंग थी, कि वह सिद्ध बने। जब उसने यीशु मसीह को देखा, तो उसकी तरह बनना चाहा। जब हमारा प्रभु एक चेले को बुलाता है, तो उसकी व्यक्तिगत पवित्रता को बाकी सब बातों से ज़्यादा महत्त्व नहीं देता। यीशु के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह होती है अपने आप के ऊपर मेरे अधिकार का सम्पूर्ण विनाश और प्रभु के साथ मेरा एक होना, जिसका अर्थ है उसके साथ ऐसा सम्बन्ध रखना जिसमें और कोई सम्बन्ध न हों। लूका 14:26 का अर्थ उद्धार या पवित्रीकरण से नहीं, बल्कि यीशु मसीह के साथ बिना शर्त एक होने से है। हम में से कम ही लोग हैं जो सचमुच जानते हैं कि यीशु के प्रति त्याग और समर्पण का और उसके साथ बिना शर्त एक होने के "जा" का अर्थ क्या है।

"यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया..." (मरकुस 10:21)। यीशु की इस दृष्टि का अर्थ यह होगा कि आप अपने हृदय से किसी और व्यक्ति या वस्तु के प्रति वफ़ादारी को हमेशा के लिए तोड़ देंगे। क्या यीशु ने आप पर कभी ऐसी दृष्टि की है ? यीशु की यह दृष्टि परिवर्तित और मोहित करती है। जहाँ-जहाँ आप परमेश्वर के साथ नरम और लचीले हैं, ये वे स्थान हैं जहाँ प्रभु ने आप पर दृष्टि की है। यदि आप कठोर और बदले की भावना रखनेवाले व्यक्ति हैं, मनमानी करना चाहते हैं, और हमेशा यह समझते हैं कि दूसरा व्यक्ति आपसे ज़्यादा ग़लत है, तो आपके स्वभाव के ऐसे पूरे-पूरे क्षेत्र हैं जो प्रभु की दृष्टि से कभी नहीं बदले हैं।

"तुझ में एक बात की घटी है..." यीशु मसीह के दृष्टिकोण से, उसके साथ एकता, जिसके बीच में कोई तीसरा न हो, एकमात्र अच्छी चीज़ है।

"जो कुछ तेरा है, उसे बेच..." मुझे अपने आप को इतना नम्र करना है जब तक कि मैं केवल एक जीवित व्यक्ति के रूप में न रह जाऊँ। मुझे हर प्रकार की सम्पत्ति को त्याग देना है, उद्धार के लिए नहीं (क्योंकि एक व्यक्ति को एक ही चीज़ उद्धार देती है और वह है यीशु मसीह पर विश्वास करके पूरा भरोसा करना), बल्कि इसलिए कि मैं यीशु के पीछे चल सकूँ। "...और आकर मेरे पीछे हो ले।" और मार्ग वह ही है जिसपर वह खुद चला था।

सितम्बर 29

बुलाहट का बोध

यह तो मेरे लिए अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय।
1 कुरिन्थियों 9:16।

हमारी प्रवृत्ति ऐसी है कि हम परमेश्वर के गहरे आत्मिक और अलौकिक स्पर्श को भूल जाते हैं। यदि आप यह बता सकते हैं कि आप ठीक कहाँ थे जब आपको परमेश्वर की बुलाहट मिली, और उसके बारे में सब कुछ समझा सकते हैं, तो मुझे शक है कि आप सचमुच बुलाए गए हैं या नहीं। परमेश्वर की बुलाहट ऐसे नहीं आती: वह इससे ज़्यादा अलौकिक ढंग से आती है। एक व्यक्ति के जीवन में बुलाहट का एहसास बिजली की कड़क की तरह भी आ सकता है और धीरे-धीरे भी: लेकिन यह एहसास चाहे अचानक आए चाहे धीरे-धीरे, अलौकिक की एक अन्तर्भावना हमेशा इसके साथ-साथ आती है - एक ऐसी चीज़ जो अवर्णनीय होती है और एक उल्लास लाती है। जिस महान, अलौकिक, आश्चर्यजनक बुलाहट ने आपके जीवन को पकड़ लिया है, उसका आकस्मिक बोध किसी भी घड़ी आपके सामने आ सकता है, "मैंने तुम्हें चुना।" परमेश्वर की बुलाहट का उद्धार और पवित्रीकरण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। आपको सुसमाचार प्रचार के लिए इसलिए नहीं बुलाया जाता क्योंकि आपका पवित्रीकरण हुआ है। सुसमाचार प्रचार करने की बुलाहट बिलकुल फ़र्क होती है। पौलुस इसका वर्णन करते हुए कहता है कि यह एक विवशता थी जो उसके ऊपर रखी गई थी।

यदि आपने अपने जीवन में परमेश्वर की महान अलौकिक बुलाहट को अनदेखा किया है और इसके फलस्वरूप उसे हटा दिया है, तो अपनी परिस्थितियों की ओर फिर से ध्यान दें कि आपने कहाँ-कहाँ सेवा के बारे में अपने विचारों को या अपनी विशेष योग्यताओं को परमेश्वर से पहले रखा है। पौलुस ने कहा, "यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय !" उसे परमेश्वर की बुलाहट का बोध हो गया था, और "सुसमाचार प्रचार" करने की उसकी विवशता इतनी प्रबल थी कि उसकी शक्ति के साथ मुक़ाबला करनेवाला कुछ नहीं बचा था।

यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के द्वारा बुलाया जाता है, तो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि परिस्थितियाँ कितनी कठित हैं। अन्त में, परमेश्वर अपने उद्देश्य के लिए कार्य करनेवाली हर शक्ति पर नियन्त्रण रखता है। यदि आप परमेश्वर के उद्देश्य के साथ सहमत होंगे, तो वह न केवल आपके सचेत स्तर को, बल्कि आपके जीवन के सारे गहरे स्तरों को भी, जिन तक आप खुद नहीं पहुँच सकते, सम्पूर्ण तालमेल में ले आएगा।

सितम्बर 30

बुलाहट का कार्यभार

मैं उन दु:खों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिए उठाता हूँ, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिए, अर्थात् कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ। कुलुस्सियों 1:24।

हम अपने ही आत्मिक अभिषेक को लेकर उसे परमेश्वर की बुलाहट बनाने की कोशिश करते हैं, लेकिन जब परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सही हो जाता है, तो वह उसे परे कर देता है। फिर वह हमें एक ज़बरदस्त, जकड़ने वाला दर्द देता है ताकि हमारे ध्यान को एक ऐसी चीज़ पर गड़ा दे जिसके बारे में हमने अपनी कल्पना में भी नहीं सोचा था कि यह हमारे लिए उसकी बुलाहट हो सकती है। और फिर एक प्रफुल्ल, चमकदार क्षण के लिए हम उसके उद्देश्य को देखते हैं, और हम कहते हैं, "मैं यहाँ हूँ, मुझे भेज!" (यशायाह 6:8)।

इस बुलाहट का व्यक्तिगत पवित्रीकरण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, बल्कि इसका सम्बन्ध तोड़ी गई रोटी और बहाए गए दाखरस बनाए जाने के साथ है। लेकिन परमेश्वर हमें दाखरस कभी नहीं बना सकता यदि हमें उन अंगुलियों से आपत्ति हो जिनका इस्तेमाल वह हमें निचोड़ने के लिए करता है। हम कहते हैं कि, "यदि परमेश्वर अपनी ही अंगुलियों का इस्तेमाल करके एक विशेष रीति से मुझे तोड़ी गई रोटी और बहाया गया दाखरस बनाए, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी!" लेकिन जब वह हमें कुचलने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति का इस्तेमाल करता है जो हमें पसन्द नहीं, या कुछ ऐसी परिस्थितियों का जिनके लिए हम कह चुके हैं कि हम कभी इनके अधीन नहीं होंगे, तो हमें आपत्ति होती है। हमें अपने ही आत्मबलिदान का स्थान चुनने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए। यदि हमें दाखरस बनाया जाना है, तो हमारा कुचला जाना ज़रूरी है - अंगूरों को पीया नहीं जा सकता। अंगूर दाखरस तब ही बनते हैं जब उन्हें निचोड़ा जा चुका हो।

परमेश्वर आपको निचोड़ने के लिए कौन सी अंगुली या अंगूठे का इस्तेमाल करता रहा है? क्या आप पत्थर की तरह सख़्त होकर बच निकले हैं? यदि आप अभी तक पके नहीं और फिर भी परमेश्वर ने आपको निचोड़ा है, तो आपसे निकला दाखरस काफ़ी कड़वा रहा होगा। एक पवित्र व्यक्ति होने का अर्थ यह है कि जैसे-जैसे हमारे शारीरिक जीवन के तत्त्व परमेश्वर की सेवा में तोड़े जाते हैं, वे उसकी उपस्थिति का अनुभव करते हैं। इससे पहले कि हम परमेश्वर के हाथों में तोड़ी गई रोटी बन सकें, हमें परमेश्वर में रखा जाना और उसके साथ सहमति में लाया जाना ज़रूरी है। परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में रहें और उसे वह करने दें जो वह चाहता है, और आप पाएँगे कि वह ऐसी रोटी और ऐसा दाखरस बना रहा है जिससे उसके दूसरे बच्चों का लाभ होगा।

अक्तूबर 1

ऊँचे पर उठाए जाने का स्थान

यीशु ...एकान्त में (उन्हें) किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया...।
मरकुस 9:2।

हम सब ने पहाड़ पर होने के मौकों का अनुभव किया है, जहाँ हमने बातों को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखा है, और वहीं पर रहना चाहा है। लेकिन परमेश्वर हमें कभी वहाँ रहने नहीं देगा। हमारे आत्मिक जीवन की असली परख पहाड़ से नीचे उतरने के सामर्थ्य का प्रदर्शन करने में होती है। यदि हम में सिर्फ़ पहाड़ पर चढ़ने का सामर्थ्य है, तो कहीं न कहीं कुछ ग़लत है। परमेश्वर के साथ पहाड़ पर होना तो बड़ी अद्भुत बात है, लेकिन एक व्यक्ति वहाँ इसलिए पहुँचता है ताकि इसके बाद वह नीचे उतरे और घाटी में दुष्टात्माओं से जकड़े हुए लोगों को उठाए (9:14-18 देखें)। हमें पहाड़ों, सूर्योदयों, या जीवन की दूसरी सुन्दर और आकर्षक चीज़ों के लिए नहीं बनाया गया - ये तो केवल प्रेरणा के पल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से दिए जाते हैं। हमें घाटी के लिए और जीवन की साधारण चीज़ों के लिए बनाया गया है, और यह वह जगह है जहाँ हमें अपने दम और बल को साबित करना है। लेकिन हमारा आत्मिक स्वार्थ पहाड़ पर होने के पलों को बार-बार चाहता है। हम समझते हैं कि यदि हम हमेशा पहाड़ पर रह सकें, तो स्वर्गदूतों के गुणों वाला जीवन जी सकते हैं। ऊँचे पर उठाए जाने के वे मौके कभी-कभार ही आते हैं और परमेश्वर के साथ हमारे जीवन में उनका महत्त्व भी होता है, लेकिन हमें सावधान रहना चाहिए और सिर्फ़ ऐसे मौकों की अभिलाषा करने से अपने आत्मिक स्वार्थ को रोकना चाहिए।

हमारी प्रवृत्ति ऐसी है कि हम सोचते हैं कि जो कुछ भी होता है उसे एक उपयोगी सीख में बदल जाना चाहिए। वास्तव में तो उसे शिक्षा से भी बेहतर चीज़ में बदल जाना चाहिए, यानि, चरित्र में। पहाड़ की चोटी के अनुभाव का उद्देश्य हमें कुछ *सिखाना* नहीं, बल्कि हमें कुछ *बनाना* है। हमेशा यह प्रश्न पूछने में कि, "इस अनुभव का उपयोग क्या है ?" एक बहुत बड़ा फन्दा होता है। हम आत्मिक मामलों को ऐसे कभी नहीं नाप सकते। पहाड़ की चोटी पर के पल कभी-कभार होनेवाले पल होते हैं, और वे परमेश्वर के उद्देश्य में किसी विशेष मकसद के लिए होते हैं।

अपमान का स्थान

यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर।
मरकुस 9:22।

हर बार ऊँचे उठाए जाने के बाद, हम अचानक वास्तविक चीज़ों में नीचे लाए जाते हैं, जहाँ न तो कुछ सुन्दर होता है, और न ही काव्यात्मक, या रोमांचक। पहाड़ की चोटी की ऊँचाई घाटी की निराशाजनक नीरसता से नापी जाती है, लेकिन हमें परमेश्वर की महिमा के लिए घाटी में रहना ज़रूरी है। हम पहाड़ पर उसकी महिमा देखते हैं, लेकिन हम उसकी महिमा के लिए वहाँ *रहते* नहीं। परमेश्वर के लिए हमारे असली मूल्य का पता हमें अपनाम के स्थान पर पता चलता है - यही वह स्थान है जहाँ हमारी विश्वासयोग्यता प्रकट होती है। हममें से अधिकतर लोग अपने मन के स्वाभाविक स्वार्थ के कारण, तब ही काम कर सकते हैं जब हम बहादुरी के स्तर पर होते हैं। लेकिन परमेश्वर चाहता है कि हम प्रतिदिन के नीरस स्तर पर रहें, जहॉ हम उसके साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध के अनुसार घाटी में रहते हैं। पतरस ने सोचा कि पहाड़ पर टिके रहना उनके लिए बड़ी अद्‌भुत बात होगी, लेकिन यीशु मसीह चेलों को पहाड़ से नीचे घाटी में लाया, जहाँ दर्शन का असली अर्थ समझाया गया (9:5-6, 14-23 देखें)।

“यदि तू कुछ कर सके...” हमसे अविश्वास को दूर करने के लिए अपमान की घाटी की ज़रूरत होती है। ज़रा मुड़कर अपने ही अनुभव की ओर देखें और आप पाएँगे कि जब तक आपने यह नहीं जाना कि वास्तव में यीशु कौन है, तब तक आप उसके सामर्थ्य के बारे में एक निपुण अविश्वासी थे। जब आप पहाड़ की चोटी पर थे, तब तो आप किसी बात पर भी विश्वास कर सकते थे, लेकिन तब क्या हुआ जब आपको घाटी के तथ्यों का सामना करना पड़ा ? आप अपने पवित्रीकरण के बारे में गवाही दे सकते हैं, लेकिन उस बात का क्या जो इस समय आपके लिए अपमानजनक है ? पिछली बार जब आप परमेश्वर के साथ पहाड़ पर थे, तो आपने देखा कि स्वर्ग में और पृथ्वी पर का सारा सामर्थ्य यीशु का है - क्या आप अभी अविश्वास करेंगे, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि आप अपमान की घाटी में हैं ?

अक्तूबर 3

सेवकाई का स्थान

उस ने उन से कहा, कि यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती।
मरकुस 9:29।

उसके चेलों ने उससे एकान्त में पूछा कि, "हम उसे क्यों न निकाल सके ?" (9:28)। इसका उत्तर यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध में है। यह जाति...किसी और उपाय से निकल नहीं सकती, यानि यीशु पर ध्यान केन्द्रित करने से और फिर इस ध्यान को दुगना और उसका भी दुगना करने से। परमेश्वर के सामर्थ्य पर ध्यान लगाए बिना और इसके बजाय अपने ही स्वभाव से लिए गए विचारों के अनुसार चलते हुए, उसका काम करने की कोशिश करने के द्वारा हम हमेशा असमर्थ रह सकते हैं, जैसे इस परिस्थिति में चेले भी असमर्थ थे। हम परमेश्वर को जाने बिना उसकी सेवा करने की उत्सुकता के द्वारा वास्तव में परमेश्वर की निन्दा और उसका अपमान करते हैं।

जब आपका सामना किसी कठिन परिस्थिति से होता है और बाहरी रूप से कुछ नहीं होता, आप तब भी जान सकते हैं कि यीशु मसीह पर लगातार ध्यान लगाए रखने के कारण आपको मुक्ति और छुटकारा मिलेगा। सेवकाई में आपका कर्तव्य यह है कि आप ध्यान रखें कि आपके और यीशु के बीच कुछ न आए। क्या अभी भी आपके और यीशु के बीच कुछ है ? यदि है, तो आपको उसे दूर करना होगा, उसे अनदेखा करने के द्वारा नहीं, न ही उससे ऊँचे जाकर उसे लाँघने के द्वारा, बल्कि उसका सामना करने के द्वारा और उस में से होकर यीशु मसीह की उपस्थिति में आने के द्वारा। ऐसा करने पर, वह समस्या, और उसके सम्बन्ध में आप जिन सारी बातों में से होकर गुज़रे हैं, ऐसे ढंग से यीशु मसीह की महिमा करेंगी जिसकी जानकारी आपको तब तक नहीं होगी जब तक आप यीशु को आमने-सामने नहीं देखेंगे।

हमें "उकाबों की नाईं उड़" पाना चाहिए (यशायाह 40:31), लेकिन हमें नीचे उतरना भी आना चाहिए। एक पवित्र जन का सामर्थ्य नीचे उतरने में और घाटी में का जीवन जीने में होता है। पौलुस ने कहा, "जो मुझे सामर्थ्य देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूँ" (फिलिप्पियों 4:13) और जिन चीज़ों की वह यहाँ बात कर रहा था, वे ज़्यादातर अपमानजनक चीज़ें थीं। और फिर भी यह हमारे सामर्थ्य में है कि हम अपमानित होने से इनकार कर दें और कहें कि, "नहीं, क्षमा करना, लेकिन मैं परमेश्वर के साथ पहाड़ की चोटी पर रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।" क्या मैं यीशु मसीह की वास्तविकता के प्रकाश में बातों का, जैसी वे सचमुच हैं, सामना कर सकता हूँ ? या क्या ये बातें यीशु मसीह पर मेरे विश्वास को नष्ट कर देती हैं और मुझे घबरा देती हैं ?

अक्तूबर 4

दर्शन और वास्तविकता

जो...पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं ...।"
1 कुरिन्थियों 1:2

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम वह सब देख सकते हैं जो हम अभी तक बने नहीं हैं। आपको दर्शन मिला है, लेकिन आप अभी तक वहाँ पहुँचे नहीं हैं। जब हम घाटी में होते हैं, जहाँ हम यह साबित करते हैं कि हम चुनिन्दा हैं या नहीं, तो यही वह जगह होती है जहाँ हम में से ज़्यादातर लोग वापस लौट जाते हैं। यदि हमें दर्शन के आकार में बदला जाना है, तो इसके लिए जिन झटकों और चोटों का आना ज़रूरी है, उनके लिए हम पूरी तरह से तैयार नहीं है। हमने देख लिया है कि हम क्या नहीं हैं, और परमेश्वर क्या चाहता है कि हम बनें, लेकिन क्या हम परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किए जानेवाले दर्शन के आकार में पीटकर लाए जाने के लिए तैयार हैं ? यह पिटाइयाँ हमेशा साधारण, प्रतिदिन तरीकों में और साधारण, प्रतिदिन के लोगों के द्वारा आएँगी।

कुछ ऐसे समय भी होते हैं जब हम यह नहीं जानते कि परमेश्वर का उद्देश्य क्या है; हम दर्शन को सचमुच चरित्र में बदल जाने देंगे या नहीं, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है, परमेश्वर के ऊपर नहीं। यदि हम पहाड़ की चोटी पर आराम करना और दर्शन की याद में रहना ज़्यादा पसन्द करते हैं, तो हम उन साधारण चीज़ों में किसी काम के नहीं होंगे जिनसे मनुष्य का जीवन बनता है। हमें सिर्फ़ एक भावविभोर आनन्द और परमेश्वर पर सजग चिन्तन करते हुए ही नहीं, बल्कि उन बातों पर भरोसा करते हुए जीना होगा जो हमने दर्शन में देखी थीं। इसका अर्थ है अपने जीवन की वास्तविकताओं को दर्शन के प्रकाश में जीना, जब तक कि दर्शन का सत्य हममें पूरा नहीं होता। हमारे प्रशिक्षण का हर हिस्सा इसी दिशा में होता है। इस बात के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना सीखें कि वह हमें अपनी माँगों की जानकारी देता है।

जब परमेश्वर हमसे कहता है कि *करो*, तो हमारा छोटा-सा "मैं हूँ" हमेशा रूठ जाता और मुँह फुलाता है। अपने छोटे-से "मैं हूँ" को परमेश्वर के क्रोध और नाराज़गी में सिकुड़ जाने दें, जब वह कहता है कि, "मैं जो हूँ सो हूँ ...ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है" (निर्गमन 3:14)। परमेश्वर को प्रभुत्व के स्थान पर होना है। क्या यह जानना प्रचण्ड नहीं कि परमेश्वर न केवल यह जानता है कि हम कहाँ रहते हैं, बल्कि उन गन्दे नालों को भी जानता है जिनमें हम रेंगते हैं ! वह हमें पलक झपकते ही ढूँढ निकालेगा। मनुष्य को कोई मनुष्य उतनी अच्छी तरह नहीं जानता जितना परमेश्वर जानता है।

अक्तूबर 5

पतन का स्वभाव

इसलिए जैसा एक मनुस्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई,
और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया।
रोमियों 5:12।

बाइबल यह नहीं कहती कि परमेश्वर ने एक मनुष्य के पाप के लिए मानव जाति को दण्ड दिया, बल्कि यह कहती है कि पाप के स्वभाव, यानि, अपने ऊपर मेरे अधिकार के दावे ने, एक मनुष्य के द्वारा मानव जाति में प्रवेश किया। लेकिन बाइबल यह भी कहती है कि एक और मनुष्य ने मानव जाति के पाप को अपने ऊपर ले लिया और उसे दूर कर दिया - जो कि और भी गहरा प्रकटण है (इब्रानियों 9:26 देखें)। पाप का स्वभाव अनैतिकता और अनुचित काम नहीं, बल्कि आत्म-अनुभूति की प्रकृति होती है जो हमसे यह कहलवाती है कि, "मैं अपना ही ईश्वर हूँ।" यह स्वभाव अपने आपको उचित नैतिकता में या अनुचित अनैतिकता में प्रकट कर सकता है, लेकिन उसका एक ही साँझा आधार होता है - अपने आप पर मेरे अधिकार का दावा। जब हमारे प्रभु ने चाहे ऐसे लोगों का सामना किया जिनमें बुराई की सारी शक्तियाँ मौजूद थीं, या ऐसे लोगों का जो शुद्ध, नैतिक, और ईमानदार जीवन जी रहे थे, तो उसने न तो एक की नैतिक भ्रष्टता की और ध्यान दिया, और न ही दूसरे की नैतिक सफलताओं की ओर। उसने ऐसी चीज़ को देखा जो हम नहीं देखते, यानि, मनुष्य का स्वभाव (यूहन्ना 2:25 देखें)।

पाप ऐसी चीज़ है जिसके साथ मैं पैदा हुआ और जिसे मैं छू नहीं सकता - केवल परमेश्वर पाप को छुटकारे के द्वारा छू सकता है। मसीह के क्रूस के द्वारा ही परमेश्वर ने मानव जाति को पाप की आनुवंशिकता के द्वारा आनेवाले दण्ड की आज्ञा की सम्भावना से छुटकारा दिया। परमेश्वर किसी भी व्यक्ति को पाप की आनुवंशिकता के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहराता, न ही वह इसके कारण किसी को दोषी ठहराता है । मैं दोषी तब ठहरता हूँ जब मुझे यह एहसास होता है कि यीशु मसीह मुझे पाप की इस आनुवंशिकता से छुड़ाने आया, और फिर भी उसे ऐसा नहीं करने देता। उसी घड़ी से मुझ पर दोषी ठहरने की छाप लग जाती है। "और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना ..." (यूहन्ना 3:19)।

नया बनाए जाने का स्वभाव

परमेश्वर की ...जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे ...।
गलातियों 1:15-16।

यदि यीशु मसीह को मुझे नया बनाना है, तो उसे कौन सी समस्या का सामना करना पड़ता है ? केवल यह - कि मुझ में एक आनुवंशिकता है जिसमें मेरा हाथ या फ़ैसला नहीं था; कि मैं पवित्र नहीं हूॅ, और न ही मेरे पवित्र होने की कोई सम्भावना है; और यह कि यदि यीशु मसीह मुझे सिर्फ़ बता ही सकता है कि मुझे पवित्र होने की ज़रूरत है, तो उसकी शिक्षा मुझे निराश ही कर सकती है। लेकिन यदि यीशु मसीह सचमुच नया बनानेवाला है, यानि एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी पवित्रता की आनुवंशिकता मुझ में डाल सकता है, तो मैं यह देखना शुरू कर सकता हूँ कि जब वह यह कहता है कि मुझे पवित्र होना चाहिए, तो उसके कहने का अर्थ क्या है। छुटकारे का अर्थ यह है कि यीशु मसीह किसी के अन्दर भी वह आनुवंशिक स्वभाव डाल सकता है जो खुद उसके अन्दर था, और वे सारे मापदण्ड जो वह हमें देता है उसी स्वभाव पर आधारित हैं - उसकी शिक्षा उस जीवन पर लागू किए जाने के लिए है जो वह हमारे अन्दर डालता है। मेरे लिए सही कार्यवाही सिर्फ़ यह होगी कि मैं मसीह के क्रूस पर परमेश्वर के द्वारा पाप पर किए गए फ़ैसले के साथ सहमत होऊँ।

नया किए जाने के बारे में नए नियम की शिक्षा यह है कि जब एक व्यक्ति को अपनी ज़रूरत की भावना का एहसास होगा, तो परमेश्वर उसकी आत्मा में अपना पवित्र आत्मा डाल देगा, और उसकी व्यक्तिगत आत्मा को परमेश्वर के पुत्र के आत्मा के द्वारा शक्ति मिलेगी - "...जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए" (गलातियों 4:19)। छुटकारे का नैतिक आश्चर्यकर्म यह है कि परमेश्वर मेरे अन्दर एक नया स्वभाव डाल सकता है जिसके द्वारा मैं एक बिलकुल नया जीवन जी सकता हूँ। अन्त में जब मैं अपनी ज़रूरत के कगार पर पहुँच जाता हूँ, और अपनी कमियों को जान जाता हूँ, तब यीशु कहता है, "धन्य हो तुम ..." (मत्ती 5:11)। लेकिन मुझे उस स्थिति तक पहुँचना होगा। मैं जिस प्रकार का ज़िम्मेदार नैतिक व्यक्ति हूँ, परमेश्वर मुझमें वह डील डौल नहीं डाल सकता जो यीशु मसीह में था, जब तक कि मैं उसके लिए अपनी ज़रूरत को पहचान न लूँ।

ठीक जैसे पाप के स्वभाव ने एक मनुष्य के द्वारा मानव जाति में प्रवेश किया, उसी तरह एक और मनुष्य के द्वारा पवित्र आत्मा ने मानव जाति में प्रवेश किया (रोमियों 5:12-19 देखें)। और छुटकारे का अर्थ यह है कि मैं पाप की आनुवंशिकता से छुड़ाया जा सकता हूँ, और यह कि यीशु मसीह के द्वारा मुझे एक शुद्ध और निष्कलंक आनुवंशिकता मिल सकती है, यानि, पवित्र आत्मा।

अक्तूबर 7

मेल मिलाप का स्वभाव

जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया,
कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।
1 कुरिन्थियों 5:21।

बुनियादी रूप से पाप एक सम्बन्ध होता है - यह ग़लत *करना* नहीं, बल्कि ग़लत *होना* है - यह जान बूझकर और पूरे इरादे के साथ परमेश्वर से ली गई स्वतन्त्रता है। मसीही विश्वास सब बातों को पाप के अत्यधिक आत्म-विश्वास से परिपूर्ण स्वभाव पर आधारित करता है। और धर्म *पापों* से सम्बन्ध रखते हैं - केवल बाइबल ही *पाप* से सम्बन्ध रखती है। यीशु मसीह ने लोगों में जिस पहली चीज़ का सामना किया, वह पाप की आनुवंशिकता थी, और क्योंकि हमने सुसमाचार को प्रस्तुत करते समय इस तथ्य की ओर ध्यान नहीं दिया है, इसीलिए सुसमाचार के सन्देश ने अपने डंक को और अपनी विस्फोटक शक्ति को खो दिया है।

बाइबल में जो सत्य प्रकट किया गया है, वह यह नहीं कि यीशु मसीह ने हमारे शारीरिक पापों को अपने ऊपर उठा लिया, बल्कि यह कि उसने पाप की उस आनुवंशिकता को अपने ऊपर ले लिया, जिसे मनुष्य छू भी नहीं सकता। परमेश्वर ने अपने ही पुत्र को "पाप ठहराया" ताकि वह एक पापी को एक पवित्र जन बना दे। बाइबल में शुरू से आखिर तक यही प्रकट किया गया है कि हमारे प्रभु ने जगत के पाप को *हमारे साथ एक हो जाने के द्वारा* ले लिया, हमारे साथ *हमदर्दी* के द्वारा नहीं। उसने मानव जाति के सम्पूर्ण, संचित पाप को समझ बूझकर अपने कन्धों पर उठा लिया, और अपने शरीर में सहा। "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने *हमारे लिए पाप ठहराया...*" और ऐसा करने के द्वारा उसने सारी मानव जाति के लिए उद्धार को सिर्फ़ छुटकारे के आधार पर उपलब्ध किया। यीशु मसीह ने मानव जाति का मेल मिलाप कराया, और उसे वापस वहाँ पहुँचाया जहाँ उसे परमेश्वर के इरादे के अनुसार होना चाहिए था। और अब, उसके आधार पर जो हमारा प्रभु क्रूस पर कर चुका है, हर कोई उस मेल मिलाप का अनुभव कर सकता है, और परमेश्वर के साथ एकता में लाया जा सकता है।

एक व्यक्ति अपने आप को छुटकारा नहीं दिला सकता - छुटकारा दिलाना परमेश्वर का काम है, और वह सम्पूर्ण रूप से पूरा कर दिया गया है। व्यक्तिगत रूप से लोगों के लिए इसका लागूकरण उनकी अपनी व्यक्तिगत कार्यवाही या प्रत्युत्तर का मामला है। छुटकारे के बारे में जो सत्य प्रकट किया गया है, और एक व्यक्ति के जीवन में इसका जो अनुभव होता है, ज़रूरी है कि इन दोनों बातों में हमेशा फ़र्क किया जाए।

अक्तूबर 8

यीशु के पास आना

मेरे पास आओ ... ।
मत्ती 11:28 ।

क्या हम से यह कहा जाना कि हमें यीशु के पास आना है, हमारे लिए अपमानजनक नहीं ! उन बातों के बारे में सोचें जिनके लिए हम यीशु मसीह के पास नहीं आएँगे । यदि आप जानना चाहते हैं कि आप कितने वास्तविक हैं, तो अपनी परख इन शब्दों से करें - "मेरे पास आओ..." उन सब पहलुओं में जिनमें आप वास्तविक नहीं, आप आने के बजाय वाद-विवाद करेंगे या मुद्दे से कतराकर निकल जाएँगे; आप आने के बजाय दु:ख में से होकर गुज़र जाएँगे; आप कुछ भी करने को तैयार हो जाएँगे, लेकिन उस दौड़ का, जो निरी मूर्खता लगती है, आखिरी भाग तय करके यह कहने को तैयार नहीं होंगे कि "मैं जैसा हूँ, वैसे ही आता हूँ ।" जब तक आपमें थोड़ा सा भी आत्मिक निरादर होगा, यह हमेशा इस सत्य के द्वारा प्रकट होगा कि आप परमेश्वर से प्रत्याशा कर रहे हैं कि वह आपसे कोई महान काम करने के लिए कहे, और फिर भी वह आपसे सिर्फ़ यह कह रहा है कि "...आओ ।"

"मेरे पास आओ ..." जब आप ये शब्द सुनेंगे, तो आप जानेंगे कि इससे पहले कि आप आ सकें, आपके अन्दर कुछ होना ज़रूरी है । पवित्र आत्मा आपको दिखाएगा कि आपको क्या करना है, और इसमें वह सब शामिल होगा जो उन चीज़ों को उखाड़ फेंकेगा जो आपको यीशु के पास आने से रोक रही हैं । और जब तक आप यही काम करने को तैयार नहीं हो जाएँगे, आप आगे नहीं बढ़ पाएँगे । पवित्र आत्मा आपके अन्दर उस एक अटल गढ़ को खोज निकालेगा, लेकिन वह तब तक उसे हिला नहीं पाएगा जब तक आप उसे ऐसा करने की अनुमति देने के लिए तैयार नहीं होंगे ।

आप कितनी बार परमेश्वर के पास अपनी विनतियाँ लेकर आए हैं और यह कहते हुए वापस गए हैं कि, "इस बार मुझे सचमुच वह मिल गया जो मैं चाहता था ।" और फिर भी आप बिना कुछ लिए वापस लौटे हैं, जब कि पूरे समय परमेश्वर अपने हाथों को फैलाकर खड़ा रहा है, न केवल आपको लेने के लिए, बल्कि इसलिए भी कि आप उसे ले लें । यीशु के उस अजेय, अथक धीरज के बारे में ज़रा सोचें, जो प्रेम से कहता है, "मेरे पास आओ ...।"

अक्तूबर 9

प्रायश्चित पर निर्माण करना

अपने अंगों को...धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौपो।
रोमियों 6:13।

मैं अपना उद्धार और पवित्रीकरण खुद नहीं कर सकता; मैं पाप का प्रायश्चित नहीं कर सकता; मैं जगत को छुटकारा नहीं दिला सकता; मैं ग़लत को सही, अशुद्ध को शुद्ध, या अपवित्र को पवित्र नहीं कर सकता। यह सब परमेश्वर की प्रभुता का काम है। क्या मेरा विश्वास उस पर है जो यीशु मसीह ने कर दिया है ? उसने पाप का सम्पूर्ण प्रायश्चित कर दिया है । क्या मैंनें इस बात को लगातार मानने की आदत डाल ली है ? हमारी सब से बड़ी ज़रूरत यह नहीं कि हम काम करें, बल्कि यह कि हम विश्वास करें। मसीह का छुटकारा एक अनुभव नहीं; यह परमेश्वर का एक महान कार्य है जो उसने मसीह के द्वारा किया, और मुझे अपने विश्वास को इसपर खड़ा करना है। यदि मैं अपने विश्वास का निर्माण अपने अनुभव पर करूँगा, तो मैं ऐसा जीवन पैदा करूँगा जो परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं - एक अलग-थलग जीवन, जिसमें मेरी आँखें सिर्फ़ मेरी पवित्रता पर लगी हों। मनुष्य की उस पवित्रता से सावधान रहें, जो प्रभु के प्रायश्चित पर आधारित नहीं। ऐसे जीवन का अलग-थलग रहने को छोड़ कोई और महत्त्व नहीं - यह परमेश्वर के लिए बेकार है और मनुष्य के लिए एक मुसीबत। आपको जो भी अनुभव होता है, उसे खुद हमारे प्रभु के साथ नापें। हम परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला कोई भी काम नहीं कर सकते यदि हम मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित की बुनियाद पर जान बूझकर निर्माण न करें।

यीशु के प्रायश्चित को मेरे जीवन में व्यावहारिक निरहंकार तरीकों से प्रदर्शित किया जाना चाहिए । हर बार जब मैं आज्ञा मानता हूँ, परमेश्वर का सम्पूर्ण ईश्वरत्व मेरी ओर हो जाता है, जिससे परमेश्वर का अनुग्रह और मेरी स्वाभाविक आज्ञाकारिता सिद्ध सहमति में आ जाते हैं। आज्ञाकारिता का अर्थ यह है कि मैंने अपना भरोसा पूरी तरह से प्रायश्चित पर रख दिया है और मेरी आज्ञाकारिता का मिलन तुरन्त परमेश्वर के अलौकिक अनुग्रह के आनन्द के साथ हो जाता है।

उस मानवीय पवित्रता से सावधान रहें जो प्राकृतिक जीवन की वास्तविकता का इनकार करती है - वह एक धोखा है। अपने आप को लगातार प्रायश्चित की परख पर लाएँ और पूछें कि, "इसमें या उसमें प्रायश्चित की पहचान कहाँ है ?"

मैं कैसे जानूँगा ?

यीशु ने कहा, हे पिता...मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तू ने इन बातों को
ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।
मत्ती 11:25।

हम एक आत्मिक सम्बन्ध में कदम ब कदम नहीं आते - या तो हमारा सम्बन्ध होता है या नहीं होता। परमेश्वर हमें पाप से और ज़्यादा शुद्ध नहीं करता जाता - "पर यदि...हम...ज्योति में चलें," तो "सब पापों से" शुद्ध हो जाते हैं (1 यूहन्ना 1:7)। यह आज्ञाकारिता का मामला है, और जिस पल हम आज्ञा मान लेते हैं, उसी पल सम्बन्ध सिद्ध हो जाता है। लेकिन यदि हम एक क्षण के लिए भी आज्ञा मानने से इनकार कर देते हैं, तो अन्धकार और मृत्यु तुरन्त फिर से काम करना शुरू कर देते हैं।

परमेश्वर के प्रकट किए गए सारे सत्य तब तक मुहरबन्द हैं जब तक ये आज्ञाकारिता के द्वारा हमारे लिए नहीं खुलते। आप उन्हें दार्शनिक विचारों के द्वारा या सोच-विचार के द्वारा नहीं खोल सकेंगे। लेकिन एक बार जब आप आज्ञा मान लेते हैं, तो तुरन्त प्रकाश की एक कौंध आती है। परमेश्वर के सत्य को अपने अन्दर काम करने दें, चिन्ता के द्वारा नहीं, बल्कि अपने आप को उसमें डुबा देने के द्वारा। परमेश्वर के सत्य को जान लेने का एक ही तरीका यह है कि आप पता चलाने की कोशिश बन्द कर दें और नए सिरे से जन्म लें। यदि आप परमेश्वर की आज्ञा उस पहली बात में मानेंगे जो वह आपको दिखाता है, तो वह तुरन्त आपके लिए अगले सत्य का खुलासा कर देगा। आप पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में असंख्य पुस्तकें पढ़ सकते हैं, जब कि सम्पूर्ण, अटल आज्ञाकारिता के पाँच मिनट सब बातों को बिलकुल स्पष्ट कर सकते हैं। यह न कहें कि, "शायद एक दिन मैं ये बातें समझ पाऊँगा !" आप उन्हें अभी समझ सकते हैं। और इनकी समझ आपके पास अध्ययन करने से नहीं, बल्कि आज्ञाकारिता से आती है। ज़रा सी भी आज्ञाकारिता स्वर्ग को खोल देती है, और परमेश्वर के सबसे गहरे सत्य तुरन्त आपके हो जाते हैं। फिर भी परमेश्वर आपको अपने बारे में और सत्य तब तक नहीं बताएगा जब तक आप उन बातों की आज्ञा नहीं मानते जो आप जान चुके हैं। "ज्ञानियों और समझदारों" में से एक होने से सावधान रहें। "यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो...वह जान जाएगा" (यूहन्ना 7:17)।

अक्तूबर 11

परमेश्वर की खामोशी - उसके बाद क्या ?

जब उस ने सुना, कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया।
यूहन्ना 11:6।

क्या परमेश्वर ने अपनी खामोशी के साथ आपके ऊपर भरोसा किया है - एक ऐसी खामोशी जिसका महत्त्व महान है ? परमेश्वर की खामोशियाँ वास्तव में उसके उत्तर होती हैं। बैतनिय्याह के घर में पूरी खामोशी के उन दिनों के बारे में सोचें। क्या आपके जीवन में ऐसे दिन आए हैं जिनकी तुलना उन दिनों के साथ की जा सकती है ? क्या परमेश्वर आपके ऊपर उस तरह से भरोसा कर सकता है, या आप अभी भी उससे एक दिखाई देनेवाला उत्तर माँग रहे हैं ? परमेश्वर आपको वही आशीषें दे देगा जो आप उससे माँगते हैं, यदि आप उनके बिना परमेश्वर के साथ और आगे बढ़ने से मना कर देंगे। लेकिन उसकी खामोशी इस बात का चिह्न है कि वह आपको अपनी एक और भी अद्भुत समझ में ला रहा है। क्या आप परमेश्वर के सामने शोक कर रहे हैं क्योंकि आपको एक सुनाई देनेवाला उत्तर नहीं मिला है ? जब आप परमेश्वर की आवाज़ नहीं सुन सकते, तो आप पाएँगे कि परमेश्वर ने आपके ऊपर सबसे ज़्यादा सम्भव घनिष्ठता के तरीके से भरोसा किया है - पूरी खामोशी के साथ, जो एक निराशापूर्ण खामोशी नहीं, बल्कि सुखदायक खामोशी है, क्योंकि उसने देखा कि आप और भी बड़े प्रकटीकरण को झेलने के योग्य हैं। यदि परमेश्वर ने आपको खामोशी दी है, तो उसकी स्तुति करें - वह आपको अपने उद्देश्यों की मुख्य धारा में ला रहा है। समय में उत्तर का असली सबूत परमेश्वर की प्रभुता का मामला है। परमेश्वर के लिए समय कोई महत्त्व नहीं रखता। हो सकता है कि कुछ समय के लिए आपने यह कहा हो कि, "मैंने परमेश्वर से रोटी माँगी थी, लेकिन उसने उसके बदले में मुझे पत्थर दिया" (मत्ती 7:9 देखें)। उसने आपको पत्थर नहीं दिया, और आज आप देख सकते हैं कि उसने आपको "जीवन की रोटी" दी है (यूहन्ना 6:35)।

परमेश्वर की खामोशी के बारे में एक अद्भुत बात यह है कि उसका मौन संक्रामक होता है - वह आपके अन्दर घुस जाता है, और आपको बिलकुल आश्वस्त बना देता है और आप ईमानदारी से कह सकते हैं कि, "मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने मेरी सुन ली है।" उसकी खामोशी ही इस बात का सबूत है कि उसने आपकी सुन ली है। जब तक आपके मन में यह विचार रहेगा कि आपकी प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर हमेशा आपको आशीष देगा, तो वह ऐसा ही करेगा, लेकिन वह आपको अपनी ख़ामोशी का अनुग्रह कभी नहीं देगा। यदि यीशु मसीह आपको यह समझा रहा है कि प्रार्थना उसके पिता की महिमा करने के लिए होती है, तो वह आपको अपनी घनिष्ठता का पहला चिह्न देगा- यानि, खामोशी।

अक्तूबर 12

परमेश्वर के कदम से कदम मिलाना

हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था।
उत्पत्ति 5:24।

एक व्यक्ति के आत्मिक जीवन और चरित्र की असली परख यह नहीं कि वह अपने जीवन की असाधारण घड़ियों में क्या करता है, बल्कि यह है कि वह साधारण समयों में क्या करता है जब कोई ज़बरदस्त या उत्तेजनापूर्ण बात नहीं होती। एक व्यक्ति की गुणवत्ता जीवन की साधारण चीज़ों के प्रति उसके रवैये से प्रकट होती है जब वह लोकप्रसिद्धि के दायरे में नहीं होता (यूहन्ना 1:35-37 और 3:30 देखें)। परमेश्वर के कदम से कदम मिलाना और उसकी रफ़तार से चलना बड़ा कष्ट देनेवाला काम होता है - इसका अर्थ होता है आत्मिक रूप से ताज़ी शक्ति पाना। परमेश्वर के साथ चलना सीखने में, उसके कदम से कदम मिलाने की कठिनाई तो हमेशा होती है, लेकिन एक बार जब हम ऐसा कर लेते हैं, तो जो एकमात्र विशेषता अपने आप को प्रदर्शित करती है, वह होती है खुद परमेश्वर का जीवन। वह व्यक्ति परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत एकता में मिल जाता है, और सिर्फ़ परमेश्वर का कदम और उसका सामर्थ्य ही प्रदर्शित होते हैं।

परमेश्वर के साथ कदम से कदम मिलाना इसलिए कठित होता है क्योंकि जैसे ही हम उसके साथ चलना शुरू करते हैं, हम पाते हैं कि इससे पहले कि हम तीन कदम भी ले सकें, उसकी चाल उसे हमसे कहीं आगे ले जा चुकी है। उसके कार्य करने के तरीके अलग-अलग होते हैं, और हमें उसके तरीकों में प्रशिक्षित और अनुशासित होने की ज़रूरत है। यीशु के लिए कहा गया था कि, "वह न थकेगा और न हियाव छोड़ेगा ..." (यशायाह 42:4) क्योंकि उसने कभी अपने दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि हमेशा अपने पिता के दृष्टिकोण से काम किया। और हमें भी ऐसा करना सीखने की ज़रूरत है। आत्मिक सत्य उस वातावरण से सीखा जाता है जो हमें घेरे रहता है, बौद्धिक तर्क-वितर्क से नहीं। बातों को देखने के हमारे तरीके के वातावरण को बदलनेवाला परमेश्वर का आत्मा होता है, और फिर जो बातें पहले असम्भव थीं, वे सम्भव होने लगती हैं। परमेश्वर के कदम से कदम मिलाने का अर्थ सिर्फ़ उसके साथ एकता है। वहाँ तक पहुँचने में बहुत समय लग जाता है, लेकिन लगे रहें। इसलिए हार न मान लें क्योंकि अभी दर्द बहुत तेज़ है - आगे बढ़ते जाएँ, और आप बहुत जल्द यह पाएँगे कि आपके पास एक नया दर्शन और उद्देश्य है।

अक्तूबर 13

व्यक्तिगत निराशा और निजी वृद्धि

जब मूसा जवान हुआ और बाहर अपने भाई बन्धुओं के पास जाकर उनके
दु:खों पर दृष्टि करने लगा ...।
निर्गमन 2:11।

मूसा ने अपने लोगों पर किए जानेवाले अत्याचार को देखा और उसे पक्का विश्वास हो गया कि वही उनका छुड़ानेवाला है, और उसने अपने ही मन के न्यायप्रिय क्रोध में उनके विरुद्ध अपराधों का न्याय करना शुरू कर दिया। जब उसने परमेश्वर के लिए और सही बात के लिए पहला वार किया, तो परमेश्वर ने मूसा को भेड़ों की रखवाली करने चालीस वर्ष के लिए जंगल में भेजने के द्वारा, उसे एक खोखली निराशा में जाने दिया। इस समय के अन्त में, परमेश्वर मूसा के पास आया और उससे बोला कि, "मेरी प्रजा को मिस्र से निकाल ले आ।" परन्तु मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कौन हूँ जो... जाऊँ ...?" (निर्गमन 3:10-11)। शुरू में मूसा को एहसास हुआ था कि वही उन लोगों का छुड़ानेवाला है, लेकिन इससे पहले उसका परमेश्वर के द्वारा प्रशिक्षित और अनुशासित किया जाना ज़रूरी था। अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण में वह सही था, लेकिन जब तक उसने परमेश्वर के साथ सच्ची संगति और एकता नहीं सीख ली, तब तक वह इस काम के लिए उचित व्यक्ति नहीं था।

हो सकता है कि हमें परमेश्वर का दर्शन मिला हो, और हमें इसकी स्पष्ट समझ हो कि परमेश्वर क्या चाहता है, लेकिन फिर भी, जब हम काम शुरू करते हैं, तो हमारे जीवन में भी ऐसा अनुभव आता है जो मूसा के जंगल में चालीस वर्ष रहने के बराबर होता है। ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने सारे मामले को अन्देखा कर दिया है, और जब हम पूरी तरह निराश हो जाते हैं, तो परमेश्वर वापस आता है और अपनी बुलाहट को दोहराता है। और फिर हम काँपने लगते हैं और कहते हैं, "मैं कौन हूँ जो जाऊँ... ?" हमें यह सीखना है कि परमेश्वर के महान कदम का संक्षेप इन शब्दों में है - "मैं हूँ सो हूँ...ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है" (निर्गमन 3:14)। हमें यह भी सीखना है कि परमेश्वर के लिए हमारा व्यक्तिगत प्रयास उसके प्रति केवल निरादर ही दिखाता है - हमारी व्यक्तिकता केवल परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध के द्वारा ही कान्तिमय होती है, ताकि वह "अत्यन्त प्रसन्न" हो (मत्ती 3:17)। हम बातों के सही पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित रखते हैं; हमारे पास दर्शन है और हम कह सकते हैं कि, "मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मुझसे यही करवाना चाहता है।" लेकिन परमेश्वर के कदम से कदम मिलाना हमने अभी तक नहीं सीखा है। यदि आप घोर निराशा के समय से गुज़र रहे हैं, तो आनेवाले दिनों में आपके लिए व्यक्तिगत रूप से महान वृद्धि का समय आनेवाला है।

अक्तूबर 14

मिश्नरी के कार्य की कुंजी

यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ ...। मत्ती 28:18-19।

मिश्नरी के काम की कुंजी यीशु मसीह का अधिकार है, खोए हुओं की ज़रूरतें नहीं। हमारा झुकाव इस ओर होता है कि हम अपने प्रभु को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो परमेश्वर के लिए हमारे प्रयासों में हमारी मदद करता है। लेकिन हमारा प्रभु अपने आप को अपने चेलों के ऊपर सम्पूर्ण प्रभुता की पदवी पर रखता है। वह यह नहीं कहता कि यदि हम नहीं जाएँगे तो खोए हुए लोगों का कभी उद्धार नहीं होगा - वह सिर्फ़ यह कहता है कि, "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ...।" वह कहता है, "मेरी प्रभुता के प्रकट किए गए सत्य के आधार पर जाओ, और मेरे बारे में अपने जीवन्त अनुभव से शिक्षा दो और प्रचार करो।"

"और ग्यारह चेले...उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था" (मत्ती 28:16)। यदि मैं मसीह की सार्वभौमिक प्रभुता को जानना चाहता हूँ, तो मुझे खुद उसे जानने की ज़रूरत है। मुझे उसकी आराधना करने के लिए समय निकालने की ज़रूरत है जिसके नाम से मैं कहलाता हूँ। यीशु ने कहा, "मेरे पास आओ ..." - यीशु से मुलाकात करने का स्थान यही है - "हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगों..." (मत्ती 11:28) - और कितने सारे मिश्नरी ऐसी स्थिति में ही हैं ! हम जगत के सार्वभौमिक प्रभु के इन अद्‌भुत शब्दों पर बिलकुल ध्यान नहीं देते, लेकिन ये अपने चेलों से कहे यीशु के शब्द हैं, जो अभी और यहीं के लिए हैं।

"इसलिए तुम जाकर...।" "जाने" का अर्थ है "जीना।" प्रेरितों के काम 1:8 इसका वर्णन है कि *कैसे* जाना है। यीशु ने इस पद में यह नहीं कहा कि, "यरूशलेम, यहूदिया, और सामरिया को जाओ," बल्कि यह कि "तुम (इन सब जगहों में) मेरे *गवाह होगे*।" वह हमें भेजने का कार्य अपने ऊपर लेता है।

"यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें ..." (यूहन्ना 15:7) - यही *जाते* रहने का तरीका है। फिर हम जिस स्थान पर रखे जाते हैं, वह हमारे लिए महत्त्वहीनता का मामला हो जाता है, क्योंकि परमेश्वर अपनी प्रभुता में हमारे *जाने* पर नियन्त्रण रखता है।

"मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता, कि उसे प्रिय जानूँ वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरी करूँ, जो मैं ने ...प्रभु यीशु से पाई है" (प्रेरितों के काम 20:24)। जब तक हम इस जीवन से चले नहीं जाते, तब तक 'जाते रहने' का तरीका यही है।

अक्तूबर 15

मिश्नरी के सन्देश की कुंजी

वही हमारे पापों का प्रायश्चित है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन् सारे जगत के पापों का भी।
1 यूहन्ना 2:2।

एक मिश्नरी के सन्देश की कुंजी है मसीह यीशु का प्रायश्चित - हमारे लिए उसका वह बलिदान जिसने परमेश्वर के क्रोध को पूरी तरह से सन्तुष्ट कर दिया। मसीह के कार्य के किसी भी और पहलू को देखें, चाहे वह चंगाई, उद्धार, या पवित्रीकरण हो, और आप देखेंगे कि इनमें कुछ भी ऐसा नहीं जो असीमित हो। लेकिन - "परमेश्वर का मेम्ना...जो जगत का पाप उठा ले जाता है !" यह सीमित नहीं (यूहन्ना 1:29)। मिश्नरी का सन्देश हमारे पाप के प्रायश्चित के रूप में यीशु मसीह का असीमित महत्त्व है और एक मिश्नरी वह व्यक्ति होता है जो इस प्रकटीकरण के सत्य में डूबा रहता है।

एक मिश्नरी के सन्देश की असली कुंजी मसीह के जीवन का "पापों की क्षमा देनेवाला" पहलू है, उसकी दया और उसकी अच्छाई नहीं, और उसका परमेश्वर के पितृत्व को हमपर प्रकट करना भी नहीं। "सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार किया जाएगा ..." (लूका 24:47)। असीमित महत्त्व का सबसे महान सन्देश यह है कि "वही हमारे पापों का प्रायश्चित है...।" एक मिश्नरी का सन्देश कुछ राष्ट्रों या व्यक्तियों का पक्षपात करनेवाला, राष्ट्रीयवादी सन्देश नहीं; यह "सारे जगत के लिए" है। जब पवित्र आत्मा मुझ में आ जाता है, तो वह मेरी तरफ़दारी या पसन्दों की ओर ध्यान नहीं देता; वह मुझे सिर्फ़ प्रभु यीशु के साथ एकता में लाता है।

एक मिश्नरी वह व्यक्ति होता है जो अपने प्रभु और स्वामी के द्वारा निश्चित किए गए लक्ष्य और उद्देश्य के साथ विवाह के बन्धन में बँधा होता है। वह अपने दृष्टिकोण को नहीं घोषित कर सकता, बल्कि उसे सिर्फ़ "परमेश्वर के मेम्ने" की घोषणा करनी है। एक ऐसे गुट का भाग होना जो सिर्फ़ यह बताता है कि यीशु मसीह ने मेरे लिए क्या किया है, और ईश्वरीय चंगाई का, या किसी विशेष प्रकार के पवित्रीकरण का या पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का भक्त बन जाना ज़्यादा आसान होता है। लेकिन पौलुस ने यह नहीं कहा कि, "यदि मैं यह प्रचार न करूँ कि मसीह ने मेरे लिए क्या किया है, तो मुझ पर हाय !" बल्कि उसने यह कहा कि "यदि मैं सुसमाचार को प्रचार न करूँ, तो मुझ पर हाय !" (1 कुरिन्थियों 9:16)। और सुसमाचार यह है - "परमेश्वर का मेम्ना, जो जगत का पाप उठा ले जाता है !"

अक्तूबर 16

स्वामी के आदेशों की कुंजी

खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे।
मत्ती 9:38।

एक मिश्नरी के कठिन कार्य की कुंजी परमेश्वर के हाथ में है, और वह कुंजी प्रार्थना है, काम नहीं - यानि, वह काम नहीं जो हम आज इस शब्द से समझते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हमारा ध्यान अकसर परमेश्वर से हट जाता है। मिश्नरी के कठिन कार्य की कुंजी व्यावहारिक बुद्धि की कुंजी भी नहीं, वह दवा, सभ्यता, शिक्षा, यहाँ तक कि प्रचार की कुंजी भी नहीं। कुंजी है प्रार्थना। "खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे।" शारीरिक क्षेत्र में, प्रार्थना व्यावहारिक नहीं बल्कि बेतुकी होती है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि व्यावहारिक बुद्धि के दृष्टिकोण से प्रार्थना एक मूर्खता होती है।

यीशु मसीह के दृष्टिकोण से, सिर्फ़ *जगत* है, राष्ट्र नहीं। हम में से कितने लोग हैं जो लोगों का लिहाज़ नहीं, बल्कि सिर्फ़ एक व्यक्ति, यानि, यीशु मसीह का लिहाज़ करते हुए प्रार्थना करते हैं ? पाप से क़ायल होने के द्वारा और कष्ट के द्वारा पैदा होनेवाली फ़सल का मालिक यीशु मसीह है। यह वह फ़सल है जिसके लिए हमें प्रार्थना करनी है कि इसे काटने के लिए मजदूर भेजे जाएँ; हम काम में व्यस्त रहते हैं, जब कि पके हुए और फ़सल की तरह काटे जाने के लिए लोग हमारे चारों ओर हैं; हम उनमें से एक को भी नहीं काटते, बल्कि ज़रूरत से ज़्यादा व्यस्थता भरे कामों और कार्यक्रमों में अपने प्रभु का समय नष्ट कर देते हैं। यदि आपके पिता या भाई के जीवन में कोई संकट आ जाए, तो क्या आप एक मजदूर के रूप में यीशु मसीह के लिए फ़सल काटने के लिए वहाँ मौजूद होंगे ? क्या आपका प्रत्युत्तर यह होगा कि, "नहीं, मुझे एक ख़ास काम करना है !" किसी मसीही के पास करने के लिए ख़ास काम नहीं होता। एक मसीही को यीशु मसीह का अपना होने के लिए बुलाया गया है, "एक दास (जो) अपने स्वामी से बड़ा नहीं" (यूहन्ना 13:16), और जो यीशु मसीह को आदेश नहीं देता कि वह क्या करना चाहता है। हमारा प्रभु हमें किसी विशेष काम के लिए नहीं बुलाता - वह हमें अपने पास बुलाता है। "खेत के स्वामी से विनती करो"और वह आपकी परिस्थितियों को ऐसे नियन्त्रित करेगा ताकि आपको अपने मजदूर के रूप में भेज सके।

अक्तूबर 17

और भी बड़े काम की कुंजी

मैं तुम से...कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास करता है...वह...इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।
यूहन्ना 14:12।

प्रार्थना हमें और बड़े कामों के लिए तैयार नहीं करती - और बड़ा काम प्रार्थनी *ही* है। फिर भी हम प्रार्थना के बारे में यह सोचते हैं मानो वह हमारी और ऊँची शक्तियों का कोई व्यावहारिक बुद्धि का अभ्यास हो जो हमें सिर्फ़ परमेश्वर के काम के लिए तैयार करता है। यीशु मसीह की शिक्षाओं में, प्रार्थना मेरे अन्दर छुटकारे का आश्चर्यकर्म है, जो परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा, दूसरों में छुटकारे का आश्चर्यकर्म करती है। फल के स्थिर रहने का मार्ग प्रार्थना के द्वारा होता है, लेकिन याद रखें कि यह प्रार्थना मेरी वेदना पर नहीं, बल्कि छुटकारे में मसीह की वेदना पर आधारित होती है। हमें परमेश्वर के पास उसके बालक के रूप में जाना है, क्योंकि सिर्फ़ एक बालक को उसकी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलते हैं; एक "समझदार" व्यक्ति को नहीं (मत्ती 11:25 देखें)।

प्रार्थना ही युद्ध है, और इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ हैं। परमेश्वर आपकी परिस्थितियों को चाहे जिस ओर भी मोड़े, आपका कर्तव्य प्रार्थना करना है। अपने आप को कभी यह न सोचने दें कि, "मैं जहाँ हूँ, वहाँ किसी काम का नहीं," क्योंकि आप वहाँ किसी काम के नहीं हो सकते जहाँ आप अभी तक रखे नहीं गए हैं। परमेश्वर ने आपको जहाँ कहीं भी रखा है, और आपकी परिस्थितियाँ चाहें जो भी हों, आपको लगातार प्रार्थना करते रहना चाहिए। और उसने प्रतिज्ञा की है कि, "जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा ..." (14:13)। फिर भी हम प्रार्थना करने से इनकार करते हैं जब तक कि प्रार्थना हमें रोमांचित या उत्तेजित नहीं करती, और यह आत्मिक स्वार्थ का सबसे ज़बरदस्त रूप होता है। हमें परमेश्वर के निर्देश के अनुसार काम करना सीखना चाहिए, और वह कहता है कि हम *प्रार्थना करें*। "खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे" (मत्ती 9:38)।

एक परिश्रम करनेवाले व्यक्ति के बारे में रोमांचित करनेवाला कुछ नहीं होता, लेकिन एक परिश्रम करनेवाला व्यक्ति ही एक प्रतिभाशाली व्यक्ति के विचार को सम्भव करता है। और परिश्रम करनेवाला पवित्र जन ही अपने स्वामी के विचारों को सम्भव कर सकता है। जब आप प्रार्थना में परिश्रम करते हैं, तो परमेश्वर के दृष्टिकोण से परिणाम हमेशा आते हैं। जब अन्त में पर्दा हट जाएगा, तो उन आत्माओं को देखकर कितना आश्चर्य होगा जो आपके द्वारा सिर्फ़ इसलिए "काटी गईं" क्योंकि आप को यीशु मसीह से आदेश लेने की आदत थी।

अक्तूबर 18

एक मिश्नरी की भक्ति की कुंजी

...वे उसके नाम के लिए निकले हैं... ।
3 यूहन्ना 7 ।

जब हमारे प्रभु ने पूछा कि, "क्या तू मुझसे प्रीति रखता है ?" (यूहन्ना 21:17), तो उसने हमें यह बताया कि उसके प्रति हमारे प्रेम को अपने आप को कैसे प्रदर्शित करना है । फिर उसने कहा, "मेरी भेड़ों को चरा ।" एक तरह से वह यह कह रहा था कि "दूसरे लोगों में मेरी रुचियों में मेरे साथ एक हो जाओ, " यह नहीं कि, "दूसरों में *अपनी* रुचियों में *मुझे* अपने साथ एक कर लो ।" पहला कुरिन्थियों 13:4-8 हमें इस प्रेम की विशेषताओं को दिखलाता है - वास्तव में यह *परमेश्वर का* प्रेम है जो अपने आप को व्यक्त कर रहा है । यीशु के लिए मेरे प्रेम की असली परख बहुत व्यावहारिक होती है, बाकी सब कुछ भावुकता की बातें हैं ।

यीशु मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता छुटकारे का वह अलौकिक कार्य है जो पवित्र आत्मा के द्वारा मेरे अन्दर किया गया है - "पवित्र आत्मा ...के द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है" (रोमियों 5:5) । और मेरे अन्दर का यही प्रेम मेरे द्वारा प्रभावशीलता से काम करता है और उन सब लोगों के सम्पर्क में आता है जिनसे मेरी मुलाकात होती है । मैं उसके नाम के प्रति विश्वासयोग्य रहता हूँ, चाहे मेरी व्यावहारिक बुद्धि इसका इनकार करती हुई जान पड़े, और चाहे यह घोषित करती हुई लगे कि परमेश्वर का सामर्थ्य सवेरे की धुँध के बराबर है ।

एक मिश्नरी की भक्ति की कुंजी यह है कि प्रभु को छोड़ उसका किसी चीज़ या व्यक्ति के साथ कोई लगाव नहीं । इसका अर्थ सिर्फ़ यह नहीं कि हम अपने चारों ओर की बाहरी चीज़ों से अलग रहें । हमारा प्रभु बड़ी आश्चर्यजनक रीति से जीवन की साधारण चीज़ों के सम्पर्क में रहा, लेकिन अपने भीतर वह परमेश्वर को छोड़ और सब चीज़ों से अलग था । अकसर बाहरी अलगाव वास्तव में उन छिपी हुई चीज़ों से एक गुप्त, बढ़ते हुए भीतरी लगाव का सूचक होता है जिनसे हम बाहरी रूप से दूर रहते हैं ।

एक विश्वायोग्य मिश्नरी का कर्तव्य यह है कि वह अपनी आत्मा को प्रभु यीशु मसीह के स्वभाव के प्रति पूरी तरह से और लगातार खुला रखे । हमारा प्रभु जिन लोगों को अपने प्रयासों पर भेजता है, वे साधारण मनुष्य होते हैं, लेकिन ऐसे भी होते हैं जो प्रभु के प्रति अपनी भक्ति के नियनत्रण में रहते हैं, जो पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा आती है ।

अक्तूबर 19

वह रहस्य जिसकी ओर ध्यान नहीं दिया गया है

यीशु ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं।
यूहन्ना 18:36।

आज यीशु मसीह का एक बड़ा शत्रु वह व्यवहार्य काम है जिसका आधार नए नियम में नहीं पाया जाता, और जो जगत की प्रणालियों से आता है। यह काम अनन्त शक्ति ओर गतिविधियों की माँग करता है, लेकिन परमेश्वर के साथ निजी जीवन को महत्त्व नहीं देता। ज़ोर ग़लत बात पर दिया जाता है। यीशु ने कहा कि, "परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता...क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है" (लूका 17:20-21)। यह एक छिपी हुई, अदृश्य चीज़ है। एक सक्रिय मसीही अकसर दूसरों के द्वारा देखे जाने के लिए जीता है, जब कि एक व्यक्ति के जीवन का सामर्थ्य सबसे भीतरी, व्यक्तिगत क्षेत्र के द्वारा प्रकट होता है।

हम जिस आत्मिक युग में रहते हैं, हमें उसकी आत्मा की महामारी से छुटकारा पाने की ज़रूरत है। हमारे प्रभु के जीवन में उस ज़बरदस्त दबाव और भागदौड़ को कोई नाम या निशान नहीं था जिसे हम आज इतना महत्त्व देते हैं, और एक चेले को अपने स्वामी की तरह होना चाहिए। यीशु मसीह के राज्य का केन्द्रबिन्दु उसके साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध है, दूसरों के लिए सार्वजनिक उपयोगिता नहीं।

इस बाइबल प्रशिक्षण कॉलेज की प्रायौगिक क्रियाएँ इसका बल नहीं - इसका पूरा बल इस तथ्य में है कि यहाँ आपको परमेश्वर के सत्यों में डुबाया जाता है ताकि आप परमेश्वर के सामने उनमें तर हो जाएँ। आपको इसका कोई अन्दाज़ा नहीं कि परमेश्वर भविष्य में आनेवाली आपकी परिस्थितियों को कौन सा मोड़ देगा, न ही आपको यह पता है कि देश या विदेश में आपको कौन-कौन से तनाव और दबाव दिए जाएँगे। और यदि आप परमेश्वर के छुटकारे के महान, बुनियादी सत्यों में डूबे रहने के बजाय, ज़रूरत से ज़्यादा सक्रियता में अपना समय नष्ट करेंगे, तो जब तनाव और दबाव सचमुच आएँगे, तब आप टूट जाएँगे। लेकिन यदि परमेश्वर के सामने तर होने का यह समय परमेश्वर में जड़ फैलाने और स्थिर होने में लगाया जा रहा है, हालाँकि इस समय वह अव्यावहारिक लग सकता है, तो भविष्य में चाहे कुछ भी हो जाए, आप परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे।

अक्तूबर 20

क्या परमेश्वर की इच्छा मेरी इच्छा है ?

परमेश्वर की यह इच्छा है कि तुम पवित्र बनो ...।
1 थिस्सलुनीकियों 4:3।

पवित्रीकरण इसका मामला नहीं कि क्या परमेश्वर मुझे पवित्र करने के लिए तैयार है - बल्कि इसका कि क्या यह *मेरी* इच्छा है ? क्या मैं इसके लिए तैयार हूँ कि अपने अन्दर परमेश्वर को वह करने दूँ जो मसीह के क्रूस के प्रायश्चित के द्वारा सम्भव कर दिया गया है ? क्या मैं तैयार हूँ कि यीशु को अपना पवित्रीकरण ठहरने दूँ, और उसके जीवन को अपने शरीर में प्रदर्शित होने दूँ ? (1 कुरिन्थियों 1:30 देखें) । यह कहने से सावधान रहें कि, "मैं तो पवित्र किए जाने के लिए तरस रहा हूँ ।" नहीं, आप तरस नहीं रहे हैं । अपनी ज़रूरत को पहचानें, लेकिन तरसना बन्द करें और इसे कार्यवाही का मामला बनाएँ । सम्पूर्ण, आपत्ति न करनेवाले विश्वास से यीशु मसीह को अपना पवित्रीकरण बनने के लिए ग्रहण करें, और यीशु के प्रायश्चित का महान आश्चर्यकर्म आपमें वास्तविक बन जाएगा ।

यीशु ने क्रूस पर जो पूरा किया, उसके आधार पर परमेश्वर के मुफ़्त और प्रेममय वरदान के द्वारा, यीशु ने जो कुछ सम्भव किया, वह मेरा हो जाता है । और एक उद्धार पाई और पवित्र की गई आत्मा होने के नाते, मेरा रवैया एक गहरी, नम्र पवित्रता का होता है (एक घमण्डी पवित्रता नाम की कोई चीज़ नहीं) । यह ऐसी पवित्रता होती है जो एक संघर्षपूर्ण पश्चात्ताप पर, और अवर्णनीय शर्मिन्दगी और भ्रष्ट होने की भावना पर आधारित होती है, और इस आश्चर्यजनक एहसास पर भी कि परमेश्वर के प्रेम ने अपने आप को मुझ पर प्रदर्शित किया जब कि मैंने उसकी कोई परवाह न की (रोमियों 5:8 देखें) । उसने मेरे उद्धार और पवित्रीकरण के लिए सब कुछ पूरा कर दिया । इसीलिए, यह कोई हैरानी की बात नहीं कि पौलुस ने कहा कि कोई भी चीज़ "हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग (न) कर सकेगी" (रोमियों 8:39) ।

पवित्रीकरण मुझे यीशु मसीह के साथ एक कर देता है, और उसमें होकर मुझे परमेश्वर के साथ एक कर देता है, और यह केवल मसीह के महान प्रायश्चित के द्वारा पूरा होता है । परिणाम को कभी कारण के साथ नहीं उलझाएँ । परिणाम मुझ में आज्ञाकारिता, सेवा, और प्रार्थना है, और यह मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित के कारण मुझ में लाए गए आश्चर्यजनक पवित्रीकरण के लिए अवर्णनीय धन्यवाद और आराधना का फल होता है ।

अक्तूबर 21

आवेगशीलता या शिष्यता ?

पर हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए ...।
यहूदा 20।

हमारे प्रभु के बारे में आवेगशीलता या विचारहीनता की कार्यवाही बिलकुल नहीं थी, बल्कि उसमें एक शान्त शक्ति थी जो कभी घबराई नहीं। हम में से ज़्यादातर लोग अपनी मसीहियत का विकास अपने निजी स्वभाव के अनुसार करते हैं, परमेश्वर के स्वभाव के अनुसार नहीं। आवेगशीलता से काम करना शारीरिक जीवन की विशेषता होती है, और हमारा प्रभु इसे हमेशा अनदेखा करता है, क्योंकि यह एक चेले के जीवन के विकास में बाधा डालती है। ध्यान से देखें कि परमेश्वर का आत्मा अचानक एक संकोचभरी मूर्खता के एहसास के द्वारा, आवेगशीलता के प्रति रोक की भावना कैसे लाता है, जो हमें अपनी सफ़ाई देने की इच्छा करने पर मजबूर करती है। एक बच्चे में आवेगशीलता का होना ठीक है, लेकिन एक वयस्क के लिए यह विनाशकारी होता है - एक आवेगशील वयस्क हमेशा एक बिगड़ा हुआ व्यक्ति होता है। आवेगशीलता को अनुशासन के द्वारा अन्तर्ज्ञान में बदल दिया जाना चाहिए।

शिष्यता का निर्माण पूरी तरह से परमेश्वर के अलौकिक अनुग्रह पर होता है। एक आवेगशील, साहसवाले व्यक्ति के लिए पानी पर चलना आसान होता है, लेकिन यीशु मसीह का चेला होते हुए सूखी भूमि पर चलना बिलकुल अलग बात होती है। पतरस यीशु के पास जाने के लिए पानी पर चला, लेकिन सूखी भूमि पर वह "दूर ही दूर से उसके पीछे चला" (मरकुस 14:54)। हमें संकटों का सामना करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की ज़रूरत नहीं होती - तनावों और दबावों का भव्य रूप से सामना करने के लिए मनुष्य का स्वभाव और घमण्ड ही काफ़ी होते हैं। लेकिन नीरसता में से गुज़रते हुए, यीशु के एक साधारण, अनदेखे, और नज़रअन्दाज़ किए गए पवित्र जन के रूप में हर दिन चौबीस घण्टे जीने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की ज़रूरत ज़रूर होती है। हमारे अन्दर कूट-कूटकर यह भरा हुआ है कि हमें परमेश्वर के लिए असाधारण काम करने हैं - लेकिन हम उन्हें करते नहीं। हमें जीवन की साधारण बातों में असाधारण होना है, और साधारण सड़कों पर, साधारण लोगों के बीच पवित्र होना है - और यह पाँच मिनट में नहीं सीखा जा सकता।

अक्तूबर 22

आत्मा की गवाही

आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है ...।
रोमियों 8:15।

जब हम परमेश्वर के पास आते हैं, तो हम परमेश्वर के साथ सौदा करने की भावना के ख़तरे में पड़ जाते हैं - परमेश्वर हमसे जो करने को कहता है, उसे करने से पहले हम आत्मा की गवाही चाहते हैं।

परमेश्वर अपने आप को आप पर प्रकट क्यों नहीं करता ? वह कर ही नहीं सकता। ऐसा नहीं कि वह नहीं करेगा, लेकिन वह कर नहीं सकता क्योंकि जब तक आप सम्पूर्ण समर्पण में अपने आप को उसे सौंप नहीं देते, तब तक आप उसका रास्ता रोक रहे हैं। लेकिन जैसे ही आप ऐसा करते हैं, परमेश्वर तुरन्त अपने बारे में गवाही देता है - वह आपकी गवाही तो नहीं दे सकता, लेकिन वह तुरन्त आपके अन्दर अपने ही स्वभाव की गवाही देता है। यदि आप आज्ञाकारिता से आनेवाली वास्तविकता और सत्य से पहले आत्मा की गवाही को पा लें, तो इसका फल सिर्फ़ भावुकता होगा। लेकिन जब आप छुटकारे के आधार पर कार्यवाही करते हैं, और परमेश्वर के साथ बहस करने के अपमान को बन्द कर देते हैं, वह तुरन्त अपनी गवाही देता है। जैसे ही आप अपने तर्क-वितर्क और वाद-विवाद को बन्द कर देते है, परमेश्वर उसकी गवाही देता है जो उसने कर दिया है, और आपको अपने ही अपमान पर आश्चर्य होता है कि आपने परमेश्वर को इतने समय तक ठहरा कर रखा। यदि आप बहस कर रहे हैं कि परमेश्वर पाप से छुटकारा दे सकता है या नहीं, तो या तो उसे ऐसा करने दें, या उससे कह दें कि वह यह नहीं कर सकता। उसे दूसरों का उदाहरण न दें। सिर्फ़ मत्ती 11:28 की आज्ञा मानें कि, "हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ...।" यदि आप थके हुए हैं, तो आएँ, और यदि आप जानते हैं कि आप बुरे हैं, तो माँगें (लूका 11:9-13 देखें)।

हम अपनी स्वाभाविक व्यावहारिक बुद्धि के फ़ैसलों से आनेवाली सरलता को पवित्र आत्मा की गवाही समझ बैठने की भूल कर सकते हैं, लेकिन आत्मा सिर्फ़ अपने ही स्वभाव की और छुटकारे के कार्य की गवाही देता है, हमारी तर्क शक्ति की नहीं। यदि हम उससे अपनी तर्क शक्ति की गवाही दिलवाने की कोशिश कर रहे हैं, तो यह आश्चर्य की बात नहीं कि हम अन्धकार और अनिश्चितता में हैं। इन सब को उठा फेंकें, परमेश्वर पर भरोसा रखें, और वह आपको पवित्र आत्मा की गवाही देगा।

अक्तूबर 23

पुराने जीवन का कुछ नहीं !

यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो, वे सब नई हो गई हैं।
2 कुरिन्थियों 5:17।

हमारा प्रभु हमारी पूर्वधारणाओं को कभी सहन नहीं करता - वह उनके बिलकुल विरुद्ध है और उन्हें मार डालता है। शायद हम यह सोचते हैं कि परमेश्वर को हमारी कुछ पूर्वधारणाओं में विशेष रुचि है, और हमें इस बात का निश्चय है कि वह हमारे साथ ऐसा व्यवहार कभी नहीं करेगा जैसे उसे दूसरों के साथ करना पड़ता है। हम अपने आप से यह तक कहते हैं कि, "परमेश्वर को दूसरे लोगों के साथ सख्ती से पेश आना पड़ता है, लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह जानता है कि मेरी पूर्वधारणाएँ सही हैं।" लेकिन हमें यह सीखना है कि परमेश्वर पुराने जीवन की किसी बात को स्वीकार नहीं करता ! हमारी पूर्वधारणाओं के पक्ष में होने के बजाय, वह जान बूझकर उन्हें हमसे दूर कर रहा है। यह हमारी नैतिक शिक्षा के पाठ का एक हिस्सा है कि हम उसकी कृपा के द्वारा अपनी पूर्वधारणाओं को मारे जाते हुए देखें, और यह भी देखें कि परमेश्वर यह काम कैसे करता है। हम परमेश्वर के पास जो भी लाते हैं, वह उसका कोई आदर नहीं करता। परमेश्वर हमसे एक ही चीज़ चाहता है, और वह है बिना शर्त हमारा समर्पण।

जब हमारा नया जन्म होता है, तो पवित्र आत्मा हम में अपनी नई सृष्टि का काम करने लगता है, और कभी न कभी ऐसा समय आएगा जब पुराने जीवन का कुछ भी नहीं बचा रहेगा। हमारा पुराना निराशाजनक दृष्टिकोण और बातों के प्रति हमारा पुराना रवैया, दोनों ग़ायब हो जाते हैं और "सब बातें परमेश्वर की ओर से हो जाती हैं" (5:18)। हम ऐसा जीवन कैसे पाएँगे जिसमें कोई लालसा नहीं, कोई आत्म-रुचि नहीं, और जो दूसरों के द्वारा हँसी उड़ाने का भी बुरा नहीं मानता ? हम उस प्रकार का प्रेम कैसे पाएँगे जो "कृपाल है ...झुँझलाता नहीं, (और) बुरा नहीं मानता" ? (1 कुरिन्थियों 13:4-5)। इसका एकमात्र तरीका यह है कि पुराने जीवन की किसी भी बात को रहने न दिया जाए, और परमेश्वर पर सिर्फ़ सरल, सिद्ध भरोसा रखा जाए - ऐसा भरोसा कि अब हम परमेश्वर की आशीषें नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर को चाहते हैं। क्या हम इस स्थिति पर पहुँच गए हैं कि चाहे परमेश्वर अपनी आशीषों को हमसे वापस भी ले ले, फिर भी परमेश्वर पर हमारे भरोसे पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा ? जब हम सचमुच परमेश्वर को कार्य करते हुए देख लेंगे, तो हमें उन घटनाओं की कोई परवाह नहीं होगी जो घटती हैं, क्योंकि हम स्वर्ग में अपने उस पिता पर भरोसा कर रहे हैं जिसे जगत नहीं देख सकता।

अक्तूबर 24

सही दृष्टिकोण

परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है ...।
2 कुरिन्थियों 2:14।

परमेश्वर के एक दास का सही दृष्टिकोण सबसे ऊँचे के उतने पास ही नहीं होना चाहिए जितने पास वह पहुँच सकता है, बल्कि उसे *सबसे* ऊँचा होना चाहिए। परमेश्वर के दृष्टिकोण को ज़ोरदार ढंग से बनाए रखने की ओर ध्यान दें, और याद रखें कि यह थोड़ा-थोड़ा करके, हर दिन किया जाना चाहिए। एक सीमित स्तर पर न सोचें। कोई बाहरी शक्ति सही दृष्टिकोण को नहीं छू सकती।

जिस दृष्टिकोण को बनाए रखना है, वह यह है कि हम एक ही उद्देश्य से यहाँ हैं - मसीह के जय के उत्सवों की शोभायात्रा में चलनेवाले बन्दी होने के लिए। हम परमेश्वर के सजावट के ताक में प्रदर्शित नहीं है, हम यहाँ एक ही चीज़ को प्रदर्शित करने के लिए हैं, यानि, "(अपने जीवन को) कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देने के लिए" (2 कुरिन्थियों 10:5)। और सारे दृष्टिकोण कितने छोटे हैं ! उदाहरण के लिए, वे लोग जो यह कहते हैं कि, "मैं अकेला खड़े होकर यीशु के लिए युद्ध कर रहा हूँ," या, "मुझे यीशु के उद्देश्य को बनाए रखना है और उसके लिए इस गढ़ को सम्भालकर रखना है।" लेकिन पौलुस ने कुछ ऐसा कहा कि, "मैं एक जयवन्त की शोभायात्रा में हूँ, और मुझे कठिनाइयों की परवाह नहीं, क्योंकि मैं हमेशा जय के उत्सव में आगे ले जाया जाता हूँ।" क्या यह विचार हमारे जीवन में व्यवहार में लाया जा रहा है ? पौलुस का छिपा हुआ आनन्द यह था कि परमेश्वर ने उसे यीशु मसीह के विरुद्ध एक निर्लज्ज विद्रोही के रूप में लिया, और उसे एक बन्दी बना दिया - और यह उसका उद्देश्य बन गया। प्रभु का बन्दी होना पौलुस का आनन्द था, और इसे छोड़ उसके लिए स्वर्ग या पृथ्वी पर कोई और रुचि नहीं थी। एक मसीही के लिए विजय पाने की बात करना एक शर्म की बात है। हमें इतनी सम्पूर्णता से महान विजयी का हो जाना चाहिए कि विजय हमेशा उसी की हो, और "हम उसके द्वारा...जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:37)।

"हम परमेश्वर के निकट...मसीह के सुगन्ध हैं" (2 कुरिन्थियों 2:15)। हम यीशु की मधुर सुगन्ध से घिरे हुए हैं, और जहाँ-जहाँ भी हम जाते हैं, वहाँ हम परमेश्वर के लिए एक अद्‌भुत ताज़गी होते हैं।

अक्तूबर 25

परमेश्वर के उद्देश्य के अधीन होना

मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूँ, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।
1 कुरिन्थियों 9:22।

एक मसीही कार्यकर्ता को यह सीखना है कि एक नीच और महत्त्वहीन चीज़ों के ढेर में वह परमेश्वर का महान और मूल्यवान जन कैसे बन सकता है। कभी यह कहते हुए विरोध न करें कि, "काश मैं किसी और जगह होता !" परमेश्वर के सारे लोग साधारण लोग हैं जिन्हें असाधारण बना दिया गया है, उस उद्देश्य के द्वारा जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है। यदि सही उद्देश्य हमारे मनों में बौद्धिक रूप से, और हमारे हृदयों में प्रेममय ढंग से न हो, तो हम परमेश्वर के लिए उपयोगी होने के मार्ग से बड़ी जल्दी हटाए जा सकते हैं। हम अपने चुनाव के द्वारा परमेश्वर के कार्यकर्ता नहीं हैं। बहुत से लोग जान बूझकर कार्यकर्ता होने का चुनाव करते हैं, लेकिन उनके पास न तो परमेश्वर के शक्तिमान अनुग्रह का उद्देश्य होता है और न ही उनमें उसका सामर्थी वचन। पौलुस का पूरा हृदय, मन, और प्राण उस महान उद्देश्य में तल्लीन हो गया था जो यीशु मसीह पूरा करने आया था, और उसने इस एक चीज़ को आँखों से कभी ओझल नहीं होने दिया। हमें लगातार अपने आप का सामना इस एक प्रमुख तथ्य से कराना चाहिए - "... यीशु मसीह, वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह" (1 कुरिन्थियों 2:2)।

"मैंने तुम्हें चुना है..." (यूहन्ना 15:16)। इन शब्दों को एक अद्भुत याद दिलानेवाली चीज़ के रूप में अपने धर्मविज्ञान में रखें। आपने परमेश्वर को नहीं पाया है, बल्कि उसने आपको पा लिया है। परमेश्वर मोड़ते हुए, तोड़ते हुए, आकार देते हुए, और अपनी इच्छा के अनुसार करते हुए, कार्य में लगा हुआ है। और वह ऐसा क्यों कर रहा है ? वह ऐसा सिर्फ़ एक उद्देश्य से कर रहा है - कि वह यह कह सके कि, "यह मेरा पुरुष है, और यह मेरी स्त्री है।" हमें परमेश्वर के हाथ में होना है ताकि वह दूसरों को चट्टान, यानि यीशु मसीह, पर रख सके, बिलकुल वैसे जैसे उसने हमें रखा है।

एक कार्यकर्ता होने का चुनाव कभी न करें, लेकिन एक बार जब परमेश्वर आपको अपनी बुलाहट देता है, तो यदि आप "दाहिने या बाएँ मुड़ें" तो आप पर हाय ! (व्यवस्थाविवरण 28:14)। परमेश्वर आपके साथ वह करेगा जो उसने आपको बुलाने से पहले कभी नहीं किया, और वह आपके साथ वह करेगा जो वह दूसरे लोगों के साथ नहीं कर रहा है। उसे अपनी इच्छा पूरी करने दें।

अक्तूबर 26

एक मिश्नरी क्या होता है ?

यीशु ने ...उन से कहा ...जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।
यूहन्ना 20:21।

एक मिश्नरी वह व्यक्ति होता है जो यीशु मसीह के द्वारा भेजा जाता है, जैसे वह परमेश्वर के द्वारा भेजा गया था। इसको नियन्त्रित करने वाली बात लोगों की ज़रूरतें नहीं, बल्कि यीशु की आज्ञा होती है। परमेश्वर के लिए हमारी सेवकाई की प्रेरणा का स्रोत हमारे पीछे होता है, हमारे आगे नहीं। आजकल का झुकाव होता है प्रेरणा को आगे रखना - सब चीज़ों को इकट्ठा करके अपने सामने रखना और फिर उसे सफलता की अपनी परिभाषा के अनुकूल बनाना। लेकिन नए नियम में प्रेरणा को हमारे पीछे रखा जाता है, और यह प्रेरणा खुद प्रभु यीशु मसीह है। लक्ष्य होता है उसके प्रति वफ़ादार होना - *उसकी* योजनाओं को पूरा करना।

प्रभु यीशु और उसके दृष्टिकोण के प्रति व्यक्तिगत लगाव वह एकमात्र चीज़ है जिसे अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। मिश्नरी कार्य में, एक बड़ा ख़तरा यह होता है कि परमेश्वर की बुलाहट की जगह लोगों की ज़रूरते ले लेती हैं, इस हद तक कि इन ज़रूरतों के लिए मानवीय हमदर्दी यीशु के द्वारा भेजे जाने के अर्थ को पूरी तरह ढक देती है। ज़रूरतें इतनी बड़ी होती हैं, और परिस्थितियाँ इतनी कठिन कि मन की हर शक्ति डगमगा जाती और असफल हो जाती है। हम यह भूल जाते हैं कि सब मिश्नरी कार्यों के पीछे जो एकमात्र महान कारण होता है, वह मुख्य रूप से लोगों का उत्थान, उनकी शिक्षा, या उनकी ज़रूरतें नहीं, बल्कि सबसे बढ़कर यीशु मसीह की यह आज्ञा है कि "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ..." (मत्ती 28:19)।

जब हम पीछे मुड़कर परमेश्वर के पुरुषों और स्त्रियों के जीवन की ओर ध्यान देते हैं, तो हमारी प्रवृत्ति यह कहती है कि, "उनकी बुद्धि कितने अद्भुत रूप से तेज़ और समझदार थी, और उन्होंने कितनी सम्पूर्णता से उन सब बातों को समझ लिया जो परमेश्वर चाहता था!" लेकिन उनके पीछे जो तेज़ और समझदार दिमाग़ था, वह परमेश्वर का दिमाग़ था, मानवीय बुद्धि नहीं। हम मानवीय बुद्धि को श्रेय देते हैं जब कि हमें परमेश्वर के उस ईश्वरीय मार्गदर्शन को श्रेय देना चाहिए जो बच्चों समान उन लोगों के द्वारा प्रदर्शित हुआ जो इतने "मूर्ख" थे कि उन्होंने परमेश्वर की बुद्धि और उसके अलौकिक हथियारों पर भरोसा किया।

मिशन की कार्यविधि

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ...।
मत्ती 28:19।

यीशु मसीह ने यह नहीं कहा कि ''जाकर आत्माओं को बचाओ'' (आत्माओं का उद्धार परमेश्वर का अलौकिक काम है), बल्कि उसने यह कहा कि ''जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ...।'' लेकिन आप तब तक चेला नहीं बना सकते हैं जब तक आप खुद एक चेला न हों। जब चेले अपने पहले मिशन से वापस लौटे, तो वे आनन्द से भरे हुए थे क्योंकि दुष्टात्माएँ भी उनके वश में थीं। लेकिन यीशु ने उनसे मानो यह कहा कि, ''तुम सफल सेवकाई में आनन्दित न हो - आनन्द का सबसे महान रहस्य यह है कि मेरे साथ तुम्हारा सम्बन्ध सही है'' (लूका 10:17-20 देखें)। एक मिश्नरी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह परमेश्वर की बुलाहट के प्रति सच्चा रहे, और यह जाने कि उसका एकमात्र लक्ष्य यह है कि वह लोगों को यीशु के लिए चेला बनाए। याद रखें, कि आत्माओं के लिए एक ऐसी तीव्र इच्छा भी होती है जो परमेश्वर की ओर से नहीं आती, बल्कि हमारी इस अभिलाषा से आती है कि हम अपने दृष्टिकोण के प्रति लोगों का परिवर्तन करें।

एक मिश्नरी को इससे चुनौती नहीं मिलती कि लोगों को उद्धार तक लाना कठिन होता है, दोबारा पाप में पड़नेवाले लोगों को फिर से मार्ग पर लाना कठिन होता है, या यह कि उन्हें एक कठोर उदासीनता के अवरोध का सामना करना पड़ता है। नहीं, चुनौती यीशु मसीह के साथ मिश्नरी के निजी व्यक्तिगत सम्बन्ध के दृष्टिकोण से आती है - ''क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूँ ?'' (मत्ती 9:28)। हमारा प्रभु बिना विचलित हुए हमसे यह प्रश्न पूछता है, और यह प्रश्न हमारे सामने आनेवाली हर परिस्थिति में हमारा सामना करता है। हमारे सामने जो एकमात्र चुनौती है, वह यह है कि क्या मैं अपने जी उठे प्रभु को जानता हूँ ? क्या मैं अपने अन्दर रहनेवाले उसके आत्मा के सामर्थ्य को जानता हूँ ? क्या मैं परमेश्वर की दृष्टि में बुद्धिमान, और संसार की बुद्धि के अनुसार इतना मूर्ख हूँ कि उसपर भरोसा कर सकूँ जो यीशु ने कहा है ? या क्या मैं मसीह यीशु में असीम भरोसे की महान अलौकिक स्थिति को त्याग रहा हूँ, जो वास्तव में एक मिश्नरी के लिए परमेश्वर की एकमात्र बुलाहट होती है ? यदि मैं किसी और कार्यविधि का इस्तेमाल कर रहा हूँ, तो हमारे प्रभु के द्वारा ठहराई गई विधियों से दूर चला जा रहा हूँ - ''सारा अधिकार मुझे दिया गया है...*इसलिए तुम जाकर*...'' (मत्ती 28:18-19)।

अक्तूबर 28

विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरना

क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ
फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे ?
रोमियों 5:10।

मेरा उद्धार विश्वास करने के द्वारा नहीं होता - विश्वास करने के द्वारा मुझे इसका बोध होता है कि मेरा उद्धार हो गया है। और वह पश्चात्ताप नहीं जो मुझे बचाता है - पश्चात्ताप सिर्फ़ इस बात का चिह्न है कि मैं यह समझता हूँ कि मसीह यीशु के द्वारा परमेश्वर ने क्या किया है। यहाँ ख़तरा कारण के बजाय परिणाम पर ज़ोर देने का होता है। क्या मेरी आज्ञाकारिता, मेरा अभिषेक, और समर्पण परमेश्वर के साथ मेरा मेल मिलाप करते हैं ? नहीं, ऐसा कभी नहीं होता ! परमेश्वर के साथ मेरा मेल मिलाप इसलिए होता है क्योंकि इन सब बातों से पहले, मसीह मरा। जब मैं परमेश्वर की ओर फिरता हूँ, और विश्वास के द्वारा उसे ग्रहण करता हूँ जो परमेश्वर प्रकट करता है, तो मसीह के क्रूस के द्वारा आश्चर्यजनक प्रायश्चित मुझे उसी समय परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में रख देता है। और परमेश्वर के अनुग्रह के अलौकिक आश्चर्यकर्म के परिणामस्वरूप मैं धर्मी ठहराया जाता हूँ, इसलिए नहीं कि मुझे अपने पाप का पछतावा है, या क्योंकि मैंने पश्चात्ताप किया है, बल्कि उसके कारण जो यीशु ने किया है। परमेश्वर का आत्मा एक प्रफुल्ल प्रकाश के साथ धर्मी ठहराता है, और मैं जान जाता हूँ कि मेरा उद्धार हो गया, चाहे मैं यह न भी जानूँ कि यह कैसे पूरा किया गया।

परमेश्वर से आनेवाला उद्धार मनुष्य के तर्क-वितर्क पर नहीं, बल्कि यीशु की बलिदानात्मक मृत्यु पर आधारित होता है। हम केवल अपने प्रभु के प्रायश्चित के कारण नए सिरे से जन्म ले सकते हैं। पापमय लोग नई सृष्टि में बदल सकते हैं, अपने पश्चात्ताप या विश्वास के द्वारा नहीं, बल्कि मसीह यीशु में परमेश्वर के अद्भुत कार्य के द्वारा, जो हमारे सारे अनुभवों से पहले हुआ था (2 कुरिन्थियों 5:17-19)। धर्मी ठहराए जाने की और पवित्रीकरण की अजेय सुरक्षा परमेश्वर खुद है। हमें इन बातों को खुद पूरा करने की ज़रूरत नहीं - ये मसीह के क्रूस के प्रायश्चित के द्वारा पूरी की जा चुकी हैं। परमेश्वर के आश्चर्यकर्म के द्वारा, अलौकिक लौकिक बन जाता है, और उसका बोध होता है जो यीशु मसीह कर चुका है - "पूरा हुआ !" (यूहन्ना 19:30)।

प्रतिस्थापन

जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया,
कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।
2 कुरिन्थियों 5:21 ।

यीशु की मृत्यु के बारे में आधुनिक विचारधारा यह है कि वह हमारे प्रति हमदर्दी के कारण हमारे पापों के लिए मरा। लेकिन नए नियम का दृष्टिकोण यह है कि उसने हमारे पापों को अपने ऊपर हमदर्दी के कारण नहीं, बल्कि हमारे साथ एक होने के कारण लिया। उसे "पाप ठहराया गया...।" हमारे पाप यीशु की मृत्यु के कारण दूर होते हैं, और उसकी मृत्यु का एकमात्र कारण हमारे लिए उसकी हमदर्दी नहीं, बल्कि अपने पिता के प्रति उसकी आज्ञाकारिता है। हम परमेश्वर के लिए इसलिए ग्रहणयोग्य नहीं क्योंकि हमने आज्ञा मानी है, न ही इसलिए कि हमने कुछ चीज़ों को त्याग देने का वचन दिया है, बल्कि मसीह की मृत्यु के कारण, और किसी भी और बात के कारण नहीं। हम कहते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पितृत्व और उसकी करुणा प्रकट करने आया, लेकिन नया नियम कहता है कि वह "जगत का पाप उठा ले जाने" के लिए आया (यूहन्ना 1:29)। और परमेश्वर के पितृत्व का प्रकटीकरण सिर्फ़ उनके लिए है जिनसे उद्धारकर्ता के रूप में यीशु का परिचय कराया गया है। जगत से बात करते समय, यीशु मसीह ने अपने आप को कभी वह व्यक्ति नहीं कहा जो परमेश्वर को प्रकट करता है, बल्कि उसने अपने आप को ठोकर का कारण बताया (यूहन्ना 15:22-24 देखें)। यूहन्ना 14:9, जहाँ यीशु ने कहा कि,"जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है" उसके चेलों से कहा गया था।

नए नियम में यह कभी नहीं सिखाया गया है कि मसीह मेरे लिए मरा ओर इसलिए मैं दण्ड से पूरी तरह मुक्त हूँ। नए नियम में जो सिखाया गया है वह यह है कि "वह सब के लिए मरा" (2 कुरिन्थियों 5:15) - यह नहीं, कि वह मेरी मृत्यु मरा" - और उसकी मृत्यु में उसके साथ एक हो जाने के द्वारा मैं पाप से छुटकारा पा सकता हूँ, और एक वरदान के रूप में उसकी धार्मिकता को पा सकता हूँ। नए नियम में जिस प्रतिस्थापन (यानि एक व्यक्ति के बदले में दूसरे व्यक्ति से काम लेने) के बारे में सिखाया गया है, उसके दो पहलू हैं - "क्योंकि जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, *कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।"* जब तक मैं अपने *में* मसीह का रूप बनाने का संकल्प नहीं कर लेता, तब तक मसीह *मेरे लिए* की शिक्षा लागू नहीं होती (गलातियों 4:19)।

अक्तूबर 30

विश्वास

और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है...
इब्रानियों 11:6 ।

जब विश्वास व्यावहारिक बुद्धि के विपरीत काम करता है, तो उसे जोशीलापन या संकीर्ण-हृदयता माना जाता है, और जब व्यावहारिक बुद्धि विश्वास के विपरीत काम करती है, तो यह मान लिया जाता है कि सत्य के आधार के लिए वह तर्क का सहारा लेती है । विश्वास का जीवन इन दोनों को सही सम्बन्ध में ले आता है । व्यावहारिक बुद्धि और विश्वास में उतना ही फ़र्क है जितना शारीरिक जीवन और आत्मिक जीवन में, और आवेगशीलता और प्रेरणा में होता है । यीशु मसीह ने जो कुछ कहा, उसमें व्यावहारिक बुद्धि नहीं, बल्कि प्रकटीकरण था, और वह सम्पूर्ण है, जब कि व्यावहारिक बुद्धि कम पड़ जाती है । फिर भी, इससे पहले कि आपके जीवन में विश्वास वास्तविक बन जाए, उसका परखा जाना ज़रूरी होता है । "हम जानते हैं कि...सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं..." (रोमियों 8:28), और इस तरह, चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध का रूपान्तरित करनेवाला सामर्थ्य सिद्ध विश्वास को वास्तविकता में बदल देता है । विश्वास हमेशा व्यक्तिगत रूप से काम करता है, क्योंकि परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि उसके बालकों में सिद्ध विश्वास वास्तविक बन जाए ।

जीवन में व्यावहारिक बुद्धि की छोटी से छोटी बात के लिए, एक सत्य होता है जिसे परमेश्वर ने प्रकट किया है, जिसके द्वारा हम अपने व्यावहारिक अनुभव में साबित कर सकते हैं कि हम परमेश्वर के बारे में क्या विश्वास करते हैं । विश्वास एक बहुत ही सक्रिय सिद्धान्त होता है जो यीशु मसीह को हमेशा पहला स्थान देता है । एक विश्वास का जीवन कहता है, "प्रभु, तू ने ऐसा कहा है, यह बड़ा बेतुका लगता है, लेकिन फिर भी मैं तेरे वचन पर भरोसा करते हुए साहस के साथ आगे कदम बढ़ाऊँगा" (उदाहरण के लिए मत्ती 6:33 देखें) । बौद्धिक विश्वास को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति बनाना सिर्फ़ कभी-कभी नहीं, बल्कि *हमेशा* एक युद्ध होता है । परमेश्वर हमारे विश्वास को सिखाने के लिए हमें किसी विशेष परिस्थिति में ले आता है, क्योंकि विश्वास की प्रकृति ही ऐसी होती है कि वह हमारे विश्वास के पात्र को हमारे लिए अति वास्तविक बना देता है । जब तक हम यीशु को नहीं जानते, परमेश्वर केवल एक विचार होता है, और हम उस पर विश्वास नहीं रख सकते । लेकिन एक बार जब हम यीशु को यह कहते सुन लेते हैं कि, "जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है" (यूहन्ना 14:9) तो हमें तुरन्त एक ऐसी चीज़ मिल जाती है जो वास्तविक है और हमारा विश्वास असीमित हो जाता है । यीशु मसीह के आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध रखनेवाला सम्पूर्ण व्यक्ति ही विश्वास है ।

अक्तूबर 31

विश्वास की परीक्षा

यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो...तो कोई बात तुम्हारे लिए अनहोनी न होगी। मत्ती 17:20।

हम ऐसा समझते हैं कि परमेश्वर हमें हमारे विश्वास के लिए इनाम देता है, और शुरू-शरू में ऐसा हो भी सकता है। लेकिन हम विश्वास के द्वारा कुछ कमाते नहीं - विश्वास हमें परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में ले आता है और उसे काम करने का मौका देता है। फिर भी अपने पवित्र जन होने के नाते, आपको अपने साथ सीधे सम्पर्क में लाने में सफल होने के लिए परमेश्वर को बहुत बार आपके अनुभव को कमज़ोर करना पड़ता है। परमेश्वर चाहता है कि आप समझें कि यह *विश्वास* का जीवन है, भावात्मक रूप से उसकी आशीषों का आनन्द उठाने का जीवन नहीं। आपके विश्वास के जीवन की शुरुआत बहुत संकीर्ण और प्रबल थी, जो थोड़े से अनुभव पर केन्द्रित था और जिसमें उतनी ही भावनाएँ थीं जितना विश्वास था, और वह प्रकाश और मधुरता से भरपूर था। फिर आपको "विश्वास से चलना" सिखाने के लिए परमेश्वर ने अपनी सजग आशीषों को पीछे हटा लिया (2 कुरिन्थियों 5:7)। और अब उसके लिए आपका मूल्य उससे कहीं ज़्यादा है जितना आपकी रोमांचक गवाही के साथ आपके सजग आनन्द के दिनों में था।

विश्वास की प्रकृति ही ऐसी है कि उसका परखा जाना ज़रूरी है। और विश्वास की असली परख यह नहीं कि हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना कठिन लगता है, बल्कि यह कि हमारे अपने मनों में साबित होना ज़रूरी है कि परमेश्वर का चरित्र भरोसेमन्द है। जब विश्वास को वास्तविकता बनाने का कार्य होता है, तो उसे लगातार अकेलेपन का अनुभव करना पड़ता है। विश्वास की परख जीवन के साधारण अनुशासन से फ़र्क होती है, क्योंकि जिसे हम अकसर विश्वास की परख कहते हैं, उसमें से बहुत कुछ जीवित होने का परिणाम होता है। विश्वास, जैसे बाइबल उसके बारे में सिखाती है, परमेश्वर पर वह विश्वास है जो उन सब बातों के विरुद्ध खड़ा होता है जो उसका खण्डन करती हैं - एक ऐसा विश्वास जो कहता है कि, "परमेश्वर चाहे कुछ भी करे, मैं उसके चरित्र के प्रति वफ़ादार रहूँगा।" सारी बाइबल में विश्वास की सबसे ऊँची और महान अभिव्यक्ति यह है कि, "यदि वह मुझे घात करेगा, तौभी मैं ..." (अय्यूब 13:15)।

नवम्बर 1

तुम अपने नहीं हो

क्या तुम नहीं जानते कि ...तुम अपने नहीं हो ?
1 कुरिन्थियों 6:19 ।

एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो यीशु मसीह के दुःखों को क़रीबी से जानता है और उनमें सहभागी होता है, निजी जीवन नाम की कोई चीज़ नहीं, न ही उसके लिए इस संसार में छिपने के लिए जगह है । परमेश्वर अपने पवित्र लोगों के निजी जीवन को दो भागों में बाँटता है और एक भाग को जगत के लिए एक जनपथ बनाता है, और दूसरे भाग को अपने लिए रखता है । कोई मनुष्य इसे सहन नहीं कर सकता जब तक कि वह यीशु मसीह के साथ एक न हो गया हो । हम अपने लिए पवित्र नहीं किए जाते । हम सुसमाचार के साथ घनिष्ठ होने के लिए बुलाए जाते हैं, और ऐसा लगता है कि जो घटनाएँ घट रही हैं, उनके साथ हमारा कोई समबन्ध नहीं । लेकिन परमेश्वर हमें अपने साथ संगति में ला रहा है । उसे अपनी इच्छा पूरी करने दें । यदि आप मना कर देते हैं, तो जगत में परमेश्वर के छुटकारे के काम में परमेश्वर के लिए उपयोगी होने के बजाय आप एक बाधा और ठोकर का कारण बन जाएँगे ।

पहला काम जो परमेश्वर करता है, वह है हमें मज़बूत वास्तविकता और सत्य में स्थापित करना । वह ऐसा तब तक करता है जब तक कि छुटकारे के उद्‌देश्य से हमारी चिन्ताएँ एक-एक करके परमेश्वर के अधीन नहीं लाई जातीं । हम हृदय टूटने का अनुभव क्यों न करें ? उन द्वारों से परमेश्वर अपने पुत्र के साथ संगति के मार्ग खोल रहा है । हम में से अधिकतर लोग दर्द की पहली मरोड़ पर हिम्मत हार जाते हैं । हम परमेश्वर के उद्‌देश्य के द्वार पर बैठ जाते हैं, और आत्मदया के द्वारा एक धीमी गति से मृत्यु में प्रवेश कर लेते हैं । और जिसे हम दूसरों के लिए मसीही हमदर्दी समझते हैं, वह हमें हमारी मृत्युशैया की ओर ले जाती है । लेकिन परमेश्वर ऐसा नहीं करता । वह अपने पुत्र के छिदे हुए हाथ की पकड़ लेकर आता है, मानो वह कह रहा हो कि."मेरे साथ संगति में प्रवेश कर; उठ, प्रकाशमान हो ।" यदि परमेश्वर एक टूटे हुए हृदय के द्वारा इस जगत में अपने उद्‌देश्यों को पूरा कर सकता है, तो आप अपने हृदय के तोड़े जाने के लिए उसका धन्यवाद क्यों नहीं करते ?

आज्ञाकारिता या स्वतन्त्रता ?

यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
यूहन्ना 14:15।

हमारा प्रभु हमसे ज़बरदस्ती हमारी आज्ञाकारिता की माँग नहीं करता। वह निश्चित रूप से इसपर ज़ोर देता है कि हमारे लिए क्या करना *उचित* है, लेकिन उसे करने की *ज़बरदस्ती* कभी नहीं करता। हमें उसके साथ आत्मा की एकता के कारण उसकी आज्ञा माननी पड़ती है। इसीलिए जब भी उसने शिष्यता की बात की, उसने शुरू में "यदि" शब्द का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ यह था कि "तुम्हारे लिए यह करना ज़रूरी नहीं यदि तुम यह करने की इच्छा नहीं रखते।" "*यदि* कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इनकार करे ..." (लूका 9:23)। दूसरे शब्दों मे, "मेरे चेले होने के लिए, वह अपने ऊपर अपने अधिकार को मुझे सौंप दे।" हमारा प्रभु हमारी अनन्त स्थिति के बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि अभी और यहीं उसके लिए मूल्यवान होने के बारे में। इसीलिए वह इतना कठोर जान पड़ता है (लूका 14:26 देखें)। इन शब्दों को उनके कहनेवाले से अलग करके उन्हें समझने की कोशिश कभी न करें।

परमेश्वर मुझे नियम नहीं देता, बल्कि वह अपने मापदण्डों को बहुत स्पष्ट कर देता है। यदि उसके साथ मेरा सम्बन्ध प्रेम का है, तो मैं बिना हिचकिचाए वह करूँगा जो वह कहता है। यदि मैं हिचकिचाता हूँ, तो इसका अर्थ यह है कि मैं किसी और से प्रेम करता हूँ जिसे मैंने प्रभु के मुक़ाबले में रख दिया है, यानि, अपने आप को। यीशु मसीह मुझसे यह ज़बरदस्ती नहीं करेगा कि मैं उसकी आज्ञा मानूँ, लेकिन मुझे ऐसा करना है। जैसे ही मैं उसकी आज्ञा मानता हूँ, मैं अपने आत्मिक पूर्वनिर्धारित उद्देश्य को पूरा करता हूँ। मेरा व्यक्तिगत जीवन बिल्कुल महत्त्वहीन, छोटी-छोटी घटनाओं से भरा हो सकता हैं। लेकिन यदि मैं जीवन की साधारण परिस्थितियों में यीशु मसीह की आज्ञा मानता हूँ, तो वे छोटे-छोटे छेद बन जाते हैं जिन में से मैं परमेश्वर के चेहरे को देख सकता हूँ। फिर जब मैं परमेश्वर के आमने-सामने खड़ा होऊँगा, तो मैं पाऊँगा कि मेरी आज्ञाकारिता के द्वारा हज़ारों लोगों को आशीष मिली है। जब परमेश्वर का छुटकारा एक मनुष्य की आत्मा को आज्ञाकारिता की स्थिति पर ले आता है, तो यह हमेशा फल लाता है। यदि मैं यीशु मसीह की आज्ञा मानूँगा, तो परमेश्वर का छुटकारा मुझ में से होकर दूसरों के जीवनों में बहेगा, क्योंकि आज्ञाकारिता के कर्म के पीछे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की वास्तविकता होती है।

यीशु का दास

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है...। गलातियों 2:20।

इन शब्दों का अर्थ है मेरे अपने हाथों के द्वारा लाई गई मेरी स्वतन्त्रता का टूट जाना और ध्वस्त हो जाना, और मेरे जीवन का प्रभु यीशु की प्रभुता को समर्पण कर दिया जाना। यह काम मेरे लिए कोई नहीं कर सकता, इसे मुझे खुद ही करना है। परमेश्वर मुझे इस स्थिति पर वर्ष में तीन सौ पैंसठ बार ला सकता है, लेकिन वह मुझे धक्का मार कर इस में से नहीं ले जा सकता। इसका अर्थ है परमेश्वर से मेरी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की बाहरी परत को तोड़ना, और मेरे स्वयं और मेरी प्रकृति को परमेश्वर के साथ एकता में स्वतन्त्र करना; मेरे अपने विचारों के पीछे नहीं चलना, लेकिन यीशु के प्रति सम्पूर्ण वफ़ादारी का चुनाव करना। एक बार जब मैं इस स्थिति पर पहुँच जाता हूँ, तो ग़लतफ़हमी की कोई सम्भावना नहीं रहती। हम में से बहुत कम लोग हैं जो मसीह के प्रति वफ़ादारी के बारे में कुछ भी जानते हों, या यह समझते हों कि उसका अर्थ क्या था जब उसने कहा कि, "...मेरे कारण" (मत्ती 5:11)। एक शक्तिशाली पवित्र जन को यही बनाता है।

क्या मेरी स्वतन्त्रता का यह टूटना हो गया है ? बाकी सब धार्मिक ढोंग है। जिस एक बात का फ़ैसला करना है, वह यह है कि क्या मैं हार मान लूँगा ? क्या मैं यीशु मसीह के सामने समर्पण करूँगा, बिना कोई शर्त रखे कि टूटापन कैसे आएगा ? मुझे अपने बारे में अपनी समझ से टूटना होगा। जैसे ही मैं इस स्थिति पर पहुँचता हूँ, उसी समय यीशु मसीह के साथ एक अलौकिक एकता की वास्तविकता आ जाती है। और परमेश्वर के आत्मा की गवाही सुस्पष्ट हो जाती है - "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया...।"

मसीहियत का जोश मेरे समझबूझकर अपने अधिकारों को अपनी इच्छा से त्याग देने से और यीशु मसीह का दास बन जाने से आता है। जब तक मैं ऐसा नहीं करूँगा, मैं एक पवित्र जन बनना शुरू नहीं करूँगा।

यदि एक वर्ष में एक विद्यार्थी भी परमेश्वर की बुलाहट को सुने, तो वह परमेश्वर के लिए इस बाइबल प्रशिक्षण कॉलेज को अस्तित्व में लाने के लिए काफ़ी होगा। इस कॉलेज का एक संस्था के रूप में, यहाँ तक कि शिक्षा-सम्बन्धी संस्था के रूप में भी, कोई महत्त्व नहीं। इसके अस्तित्व का एकमात्र महत्त्व यह है कि परमेश्वर अपने लिए जीवनों को चुन सके। क्या हम उसे अनुमति देंगे कि वह हमें चुन सके, या क्या हमें अपने ही विचारों की ज़्यादा चिन्ता है कि हम क्या बनना चाहते है ?

सत्य का अधिकार

परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।
याकूब 4:8।

यह अनिवार्य यह कि आप लोगों को परमेश्वर के सत्य पर कार्यवाही करने का मौका दें। यह ज़िम्मेदारी उस व्यक्ति पर छोड़ी जानी चाहिए - उसके बदले में आप कार्यवाही नहीं कर सकते। इसे उसकी अपनी समझबूझ के साथ किया गया कार्य होना चाहिए, लेकिन सुसमाचार के सन्देश को उसे हमेशा कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। कार्यवाही करने से इनकार करना एक व्यक्ति को गतिहीन कर देता है, और उसे वहीं खड़ा रखता है जहाँ वह पहले था। लेकिन एक बार जब वह कार्यवाही कर लेता है, वह पहले के समान नहीं रहता। जो सत्य की मूर्खता जान पड़ती है, वह सैंकड़ों ऐसे लोगों के लिए बाधा बन जाती है जिन्हें परमेश्वर का आत्मा क़ायल करता है। जब मैं अपने आप को सक्रियता के मार्ग में ले आता हूँ, तो मैं तुरन्त जीना शुरू कर देता हूँ। इससे कम का अर्थ है सिर्फ़ अस्तित्व में होना। जिन पलों को मैं सचमुच जीता हूँ, वे ऐसे पल हैं जिनमें मैं अपनी पूरी इच्छा से कार्यवाही करता हूँ।

जब आप परमेश्वर के किसी सत्य को अच्छी तरह समझ जाते हैं, तो उसे तब तक न जाने दें जब तक आप भीतरी रूप से अपनी इच्छा में उसपर कार्यवाही न कर लें, चाहे आप बाहरी रूप से अपने शारीरिक जीवन में उस पर कार्यवाही न भी करें। उसे स्याही से और अपने रक्त से लिख लें - उसे अपने जीवन में उतार लें। सबसे कमज़ोर पवित्र जन भी, जब यीशु मसीह के साथ लेनदेन करता है, वह उसी समय मुक्त हो जाता है जब वह कार्यवाही करता है और परमेश्वर का सर्वशक्तिमान सामर्थ्य उसके हित में उपलब्ध हो जाता है। हम परमेश्वर के सत्य तक आ जाते हैं, मान लेते हैं कि हम ग़लत हैं, लेकिन फिर वापस लौट जाते हैं। इसके बाद हम फिर उसके पास आते हैं और एक बार फिर वापस लौट जाते हैं, जब तक कि अन्त में हम यह नहीं सीख लेते कि हमें वापस जाने का कोई अधिकार नहीं। जब अपने छुटकारा देनेवाले प्रभु से सत्य के ऐसे वचन से हमारा सामना कराया जाता है, तो हमें तुरन्त उसके साथ लेनदेन शुरू कर देना चाहिए।"मेरे पास आओ ..." (मत्ती 11:28)। जब वह "आओ" कहता है, तो उसका अर्थ है "कार्यवाही करना।" फिर भी जो आखिरी काम हम करना चाहते हैं, वह है "आना।" लेकिन हर कोई जो आता है, वह जानता है कि उसी घड़ी परमेश्वर के जीवन का अलौकिक सामर्थ्य उसके अन्दर फैल जाता है। जगत का प्रभुत्व, शरीर, और शैतान अब अशक्त हो गए हैं; आपकी कार्यवाही से नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि आपकी कार्यवाही ने आपको परमेश्वर के साथ एक कर दिया है और उसके छुटकारे के सामर्थ्य के साथ जोड़ दिया है।

उसके दुखों मे सहभागी

जैसे जैसे मसीह के दुखों मे सहभागी होते हो, आनन्द करो ...।
1 पतरस 4:13 ।

यदि आप परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किए जाएँगे, तो वह आपको ऐसे कई अनुभवों में से ले जाएगा जो व्यक्तिगत रूप से आपके लिए बिलकुल नहीं होंगे । उनका उद्देश्य यह है कि वे आपको परमेश्वर के हाथों में उपयोगी बनाएँ, और आपको यह समझने के योग्य बनाएँ कि दूसरों के जीवन में क्या होता है । इस प्रक्रिया के कारण, आपके मार्ग में जो कुछ आता है, उससे आपको कभी आश्चर्य नहीं होगा । आप कहते हैं, "अरे, मैं उस व्यक्ति से नहीं निपट सकता ।" लेकिन क्यों नहीं ? परमेश्वर ने उस समस्या के बारे में उससे सीखने के बहुत से मौके दिए; लेकिन आप ने मुँह मोड़ लिया और उस सीख की ओर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि आपको लगा कि अपना समय ऐसे बिताना मूर्खता है ।

मसीह के दुःख साधारण लोगों के दुःख नहीं थे । उसने दुःख उठाने के प्रति हमारे दृष्टिकोण से फ़र्क दृष्टिकोण रखते हुए "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार" दुःख उठाया (1 पतरस 4:19) । हम सिर्फ़ यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्ध के द्वारा यह समझ सकते हैं कि हमारे साथ अपने व्यवहारों से परमेश्वर क्या हासिल करना चाहता है । जब दुःख उठाने का सवाल आता है, तो यह हमारी मसीही संस्कृति का एक हिस्सा है कि हम परमेश्वर के उद्देश्य को पहले से जानना चाहते हैं । मसीही कलीसिया के इतिहास में, लोगों का झुकाव यह रहा है कि वे यीशु मसीह के दुःखों में उसके साथ एक होने से दूर रहें । लोगों ने अपने ही छोटे रास्ते के द्वारा परमेश्वर के आदेशों का पालन करने की कोशिश की है । परमेश्वर का मार्ग हमेशा दुःखों का मार्ग होता है - "घर पहुँचने का लम्बा मार्ग" ।

क्या हम मसीह के दुःखों में सहभागी हैं ? क्या हम तैयार हैं कि परमेश्वर हमारी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को मिटा दे ? क्या हम तैयार हैं कि परमेश्वर हमारे व्यक्तिगत फ़ैसलों को अलौकिक ढंग से बदल देने के द्वारा उन्हें नष्ट कर दे ? इसका अर्थ यह होगा कि हम नहीं जानेंगे कि परमेश्वर हमें उस मार्ग से क्यों ले जा रहा है, क्योंकि जानना हमें आत्मिक रूप से घमण्डी बना देगा । उस समय हम कभी नहीं समझते कि परमेश्वर हमें किस परिस्थिति में से ले जा रहा है - हम प्रायः बिना समझते हुए ही उसमें से होकर गुज़र जाते हैं । फिर अचानक हम अज्ञान दूर होने के स्थान पर पहुँच जाते हैं, और हमें यह एहसास होता है कि "परमेश्वर ने मुझे शक्तिशाली बनाया और मुझे पता भी नहीं चला !"

नवम्बर 6

घनिष्ठ धर्मविज्ञान

क्या तू इस बात पर विश्वास करती है ?
यूहन्ना 11:26।

मरथा को यीशु मसीह को उपलब्ध सामर्थ्य पर विश्वास था ; उसे विश्वास था कि यदि वह वहाँ होता, तो मरथा के भाई को चंगा कर सकता; उसे यह विश्वास भी था कि यीशु की परमेश्वर के साथ एक विशेष घनिष्ठता थी, और जो कुछ वह परमेश्वर के माँगता, परमेश्वर वह करता। लेकिन - उसे यीशु के साथ एक और करीबी व्यक्तिगत घनिष्ठता की ज़रूरत थी। मरथा के धर्मविज्ञान की पूर्णता भविष्य में होनी थी। लेकिन यीशु ने उसे आकर्षित करना और खींचना जारी रखा जब तक कि उसका विश्वास एक घनिष्ठ सम्पत्ति नहीं बन गया। फिर यह धीरे-धीरे एक व्यक्तिगत मीरास के रूप में बाहर आया - "हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूँ कि ...मसीह...तू ही है" (11:27)।

क्या प्रभु आपके साथ भी ऐसा ही व्यवहार कर रहा है ? क्या यीशु आपको अपने साथ एक व्यक्तिगत घनिष्ठता रखना सिखा रहा है ? उसे आपको अपना यह प्रश्न समझाने दें - "क्या तू इस बात पर विश्वास करता है ?" क्या आप अपने जीवन में सन्देह के क्षेत्र का सामना कर रहे हैं ? क्या आप मरथा की तरह आपको डुबा देनेवाली परिस्थितियों के चौराहे पर आ पहुँचे हैं, जहाँ आपका धर्मविज्ञान एक बहुत ही व्यक्तिगत विश्वास बनने वाला है। यह सिर्फ़ तब ही होता है जब एक व्यक्तिगत समस्या हमारी व्यक्तिगत आवश्यकता का एहसास लाती है।

विश्वास करना प्रतिबद्ध होना है। बौद्धिक शिक्षा के क्षेत्र में मैं मानसिक रूप से प्रतिबद्ध होता हूँ, और हर ऐसी बात का तिरस्कार करता हूँ जो उस विश्वास से सम्बन्ध नहीं रखती। व्यक्तिगत विश्वास के क्षेत्र में मैं नैतिक रूप से अपने विश्वासों के प्रतिबद्ध होता हूँ, और समझौता करने से साफ़ मना कर देता हूँ। लेकिन घनिष्ठ व्यक्तिगत विश्वास के मामले में, मैं अपने आप को आत्मिक रूप से यीशु को समर्पित कर देता हूँ और संकल्प करता हूँ कि मैं केवल उसके अधीन रहूँगा।

फिर, जब मैं यीशु मसीह के आमने-सामने खड़ा होता हूँ और वह मुझसे कहता है कि, "क्या तू उस बात पर विश्वास करता है," तो मैं पाता हूँ कि विश्वास साँस लेने के बराबर स्वाभाविक होता है। और मैं चौक जाता हूँ जब मैं यह सोचता हूँ कि इससे पहले उसपर भरोसा न रखकर मैंने कितनी मूर्खता की है।

नवम्बर 7

परिस्थितियों की अनजानी धार्मिकता

हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए
सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं ...।
रोमियों 8:28।

एक पवित्र जन की परिस्थितियाँ परमेश्वर के द्वारा ठहराई होती हैं। एक पवित्र जन के जीवन में भाग्य जैसी कोई चीज़ नहीं होती। अपने प्रभुत्व के द्वारा परमेश्वर आपको ऐसी परिस्थितियों में लाता है जिन्हें आप बिलकुल नहीं समझ सकते, लेकिन परमेश्वर का आत्मा समझ सकता है। परमेश्वर आपको जगहों पर, लोगों के बीच, और कुछ स्थितियों में इसलिए लाता है ताकि आपके अन्दर पवित्र आत्मा की विनती के द्वारा एक निर्धारित उद्देश्य को पूरा कर सके। यह कहते हुए कि, "यहाँ मैं खुद अपनी प्रभुता बनूँगा; मैं इसे ध्यान से देखूँगा, या अपने आप को उससे सुरक्षित रखूँगा," अपने आप को कभी अपनी परिस्थितियों से आगे न रखें। आपकी सारी परिस्थितियाँ परमेश्वर के हाथ में हैं, और इसलिए आपको कभी यह सोचने की ज़रूरत नहीं कि वे अस्वाभाविक या अनोखी हैं। मध्यस्थता की प्रार्थना में आपका हिस्सा यह नहीं कि आप इस बात पर परेशान हों कि मध्यस्थता की विनती कैसे की जानी चाहिए, बल्कि यह है कि आप प्रतिदिन की परिस्थितियों को और जिन लोगों को परमेश्वर अपने सिंहासन के सामने लाने के लिए अपनी प्रभुता में आपके आसपास रखता है, उनका इस्तेमाल करें, और अपने अन्दर पवित्र आत्मा को उनके लिए विनती करने का मौका दें। इस तरह से परमेश्वर अपने पवित्र लोगों के द्वारा सारे जगत को छूने जा रहा है।

क्या मैं अस्पष्ट और अनिश्चित होने के द्वारा, या पवित्र आत्मा के काम को उसके लिए करने की कोशिश करने के द्वारा उसके काम को कठिन कर रहा हूँ ? मुझे विनती के मानवीय पहलू को करना है, उन परिस्थितियों का इस्तेमाल करते हुए जिनमें मैं अपने आप को पाता हूँ, और उन लोगों का इस्तेमाल करते हुए जो मेरे चारों ओर हैं। मुझे अपने सजग जीवन को पवित्र आत्मा के लिए एक पवित्र स्थान के रूप में रखना है। फिर जब मैं प्रार्थना के द्वारा विभिन्न लोगों को परमेश्वर के सामने उठाता हूँ, तो पवित्र आत्मा उनके लिए विनती करता है।

आपकी विनती कभी मेरी नहीं हो सकती, और मेरी विनती कभी आपकी नहीं हो सकती, लेकिन हम में से हर एक के जीवन में "...आत्मा आप ही ...हमारे लिए विनती करता है" (रोमियों 8:26)। और विनती के बिना, दूसरों के जीवन ग़रीबी और विनाश में रह जाएँगे।

नवम्बर 8

प्रार्थना का बेजोड़ सामर्थ्य

...हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही
ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है।
रोमियों 8:26।

हम समझते हैं कि हमें प्रार्थना के लिए पवित्र आत्मा से सामर्थ्य मिलता है; और हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा के अनुसार प्रार्थना करने का अर्थ क्या होता है; लेकिन हम अकसर यह नहीं समझते कि पवित्र आत्मा आप ही हमारे अन्दर ऐसी प्रार्थनाएँ करता है जिनका हम उच्चारण नहीं कर सकते। जब हमारा परमेश्वर से नया जन्म होता है, और परमेश्वर का आत्मा हमारे अन्दर वास करता है, तो वह हमारी ओर से उन बातों को व्यक्त करता है जिनका हम खुद उच्चारण नहीं कर सकते।

"वह," हमारे अन्दर पवित्र आत्मा, "पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है" (8:27)। और परमेश्वर आपके मन को जाँचता है, यह जानने के लिए नहीं कि आपकी सजग प्रार्थनाएँ क्या हैं, बल्कि इसलिए ताकि वह पता कर सके कि पवित्र आत्मा की प्रार्थना क्या है।

परमेश्वर का आत्मा अपनी मध्यस्थता की प्रार्थनाएँ करने के लिए एक मन्दिर के रूप में विश्वासी के स्वभाव का इस्तेमाल करता है। "...तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है..." (1 कुरिन्थियों 6:19)। जब यीशु मसीह ने मन्दिर को शुद्ध किया, तब उसने "मन्दिर में से होकर किसी को बरतन लेकर आने जाने न दिया" (मरकुस 11:16)। परमेश्वर का आत्मा आपको अपनी देह आपकी अपनी सुविधा के लिए इस्तेमाल नहीं करने देगा। यीशु ने मन्दिर में लेन-देन करनेवालों को निर्दयता से बाहर निकाल दिया, और कहा कि, "मेरा घर सब जातियों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा। पर तुम ने इसे डाकुओं की खोह बना दी है" (मरकुस 11:17)।

क्या हमने इस बात को जाना है कि हमारी "देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है"? यदि हाँ, तो हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम उसे पवित्र आत्मा के लिए पवित्र रख रहे हैं। हमें याद रखना चाहिए कि हमें अपने सचेत जीवन को, हालाँकि वह हमारे सम्पूर्ण व्यक्तत्व का एक छोटा सा अंग ही है, "पवित्र आत्मा का मन्दिर" समझना चाहिए। उस अचेत भाग के लिए, जिसे हम नहीं जानते, पवित्र आत्मा ज़िम्मेदार रहेगा, लेकिन उस सचेत भाग पर, जिसके लिए हम ज़िम्मेदार हैं, हमें ध्यान देना चाहिए।

नवम्बर 9

पवित्र सेवा

अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिए उठाता हूँ,
और मसीह के क्लेशों की घटी ...अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ।
कुलुस्सियों 1:24।

एक मसीही कार्यकर्ता को एक पवित्र "मध्यस्थ" होना है। उसे अपने प्रभु और उसके छुटकारे की वास्तविकता के साथ इतनी क़रीबी से एक होना है, कि मसीह उसके द्वारा अपने सृजनात्माक जीवन को लगातार ला सके। मेरा इशारा इस ओर नहीं है कि एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को दूसरे के ऊपर अध्यारोपण किया जाए, बल्कि यह कि कार्यकर्ता के जीवन के हर पहलू से मसीह की वास्तविक उपस्थिति सामने आए। जब हम अपने प्रभु के जीवन और उसकी मृत्यु के ऐतिहासिक सत्यों का प्रचार करते हैं, जैसे वे बाइबल में बताए गए हैं, तो हमारे शब्दों को पवित्र बना दिया जाता है। अपने छुटकारे के आधार पर, परमेश्वर सुननेवालों में कुछ पैदा करने के लिए इन शब्दों का इस्तेमाल करता है, जो अन्यथा कभी पैदा नहीं होता। यदि हम यीशु से बारे में प्रकट किए गए ईश्वरीय सत्य के बजाय सिर्फ़ मनुष्य के जीवन में छुटकारे के परिणामों का प्रचार करें, तो सुननेवालों में इसका परिणाम नया जन्म नहीं होता। परिणाम होता है एक सभ्य, धार्मिक जीवनशैली, और परमेश्वर का आत्मा इसकी गवाही नहीं दे सकता क्योंकि ऐसा प्रचार उसके क्षेत्र को छोड़ किसी और क्षेत्र में होता है। हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि हम परमेश्वर के साथ ऐसे तालमेल में रह रहे हैं, कि जैसे-जैसे हम उसके सत्य की घोषणा करते हैं, वह दूसरों में उन चीज़ों को बनाता है जो केवल वह ही कर सकता है।

जब हम कहते हैं, "कितना बढ़िया व्यक्तित्व, कितना मुग्ध करनेवाला व्यक्ति, और कितनी अद्भुत अन्तर्दृष्टि !" तो इन सब बातों में परमेश्वर के सुसमाचार को कौन सा मौका मिल रहा है ? वह अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकता, क्योंकि आकर्षण सन्देश के प्रति नहीं बल्कि सन्देश लानेवाले के प्रति है। यदि एक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के द्वारा आकर्षित करता है, तो यही उसका खींचाव बन जाता है। लेकिन यदि वह खुद प्रभु के साथ एक हो गया है, तो खींचाव वह हो जाता है जो यीशु मसीह कर सकता है। ख़तरा है मनुष्य को महिमा देना, जब कि यीशु कहता है कि हमें सिर्फ़ *उसे* ऊँचे पर उठाना चाहिए (यूहन्ना 12:32)।

सुसमाचार में संगति

...मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई ...
1 थिस्सलुनीकियों 3:2 ।

पवित्रीकरण के बाद, यह कहना कठिन होता है कि जीवन में आपका उद्देश्य क्या है, क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर आपको अपने उद्देश्य में ले आया है । अब वह आपको सारे जगत में अपने उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल कर रहा है जैसे उसने अपने पुत्र को हमारे उद्धार के उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया था । यदि आप यह सोचते हुए कि, "परमश्वर ने मुझे इस काम या उस काम के लिए बुलाया है," अपने लिए बड़ी-बड़ी चीज़ों की खोज करते हैं, तो आप परमेश्वर के लिए बाधा पैदा करते हैं कि वह आपको इस्तेमाल कर सके । जब तक आप अपनी व्यक्तिगत रुचियों और आकांक्षाओं को बनाए रखेंगे, तब तक आप परमेश्वर की रुचियों के अनुकूल नहीं बन सकेंगे, और न ही उनके साथ एक हो सकेंगे । यह सिर्फ़ अपनी सारी व्यक्तिगत योजनाओं को हमेशा हमेशा के लिए त्याग देने के द्वारा और परमेश्वर को यह अनुमति देने के द्वारा पूरा हो सकता है कि वह आपको जगत के लिए अपने उद्देश्य में सीधा ले जाए । आपके तरीकों के बारे में आपकी समझ को भी समर्पित होने की ज़रूरत है, क्योंकि अब वे परमेश्वर के तरीके बन गए हैं ।

मुझे यह सीखना है कि मेरे जीवन का उद्देश्य परमेश्वर का है, मेरा नहीं । परमेश्वर मुझे अपने महान व्यक्तिगत दृष्टिकोण से इस्तेमाल कर रहा है, और वह मुझसे सिर्फ़ यह माँग करता है कि मैं उसपर भरोसा रखूँ । मुझे यह कभी नहीं कहना चाहिए कि, "प्रभु, इससे मेरे मन को बहुत दुःख होता है ।" इस तरह से बात करना मुझे ठोकर का कारण बनाता है । जब मैं परमेश्वर को यह बताना बन्द कर देता हूँ कि मुझे क्या चाहिए, तो वह बिना किसी बाधा के और स्वतन्त्रता से मुझमें अपनी इच्छा पूरी कर सकता है । वह मुझे कुचल सकता है, मुझे ऊँचा उठा सकता है, या जो चाहे कर सकता है । वह मुझसे सिर्फ़ यह चाहता है कि मैं उसपर और उसकी भलाई पर पूरा भरोसा रखूँ । आत्मदया शैतान से आती है, और यदि मैं इसमें लोटता रहूँगा, तो मैं जगत में परमेश्वर के उद्देश्य के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकूँगा । ऐसा करने से, मैं अपना ही आरामदेह "संसार" बना लेता हूँ, और मेरी असुविधा के भय के कारण परमेश्वर को यह अनुमति नहीं होगी कि वह मुझे इससे हिला सके ।

सबसे ऊँचे पहाड़ पर चढ़ना

उस ने कहा, अपने पुत्र को...ले...।
उत्पत्ति 22:2।

परमेश्वर की आज्ञा है कि, "(अभी) ले," बाद में नहीं। यह कितना आश्चर्यजनक है न, कि हम कैसे बहस करते हैं। हम जानते हैं कि कोई बात सही है, लेकिन उसे तुरन्त न करने के लिए बहाने ढूँढते हैं। यदि हमें उस पहाड़ पर चढ़ना है जो परमेश्वर हमें दिखाता है, तो यह बाद में कभी नहीं किया जा सकता - उसे अभी करना ज़रूरी है। और इससे पहले कि हम वास्तव में बलिदान करें, हमें उसे अपनी इच्छा के द्वारा करना ज़रूरी है।

"सो इब्राहीम बिहान तड़के उठा...और उस स्थान की ओर चला जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उस से की थी" (22:3)। इब्राहीम की सरलता कितनी अद्‌भुत थी ! जब परमेश्वर ने बात की, तो उसने "माँस और लोहू से सलाह न ली" (गलातियों 1:16)। जब आप "माँस और लोहू से," यानि, अपने ही विचारों से, या समझ से, या किसी भी ऐसी चीज़ से जो परमेश्वर के साथ आपके व्यक्तिगत सम्बन्ध पर आधारित न हो, सलाह लेना चाहते हैं, तो सावधान रहें। ये सब वे बातें हैं जो परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का मुक़ाबला करती हैं और उसमें बाधा डालती हैं।

इब्राहीम ने यह नहीं चुना कि बलिदान क्या होगा। परमेश्वर के लिए खुद सेवा चुनने से हमेशा सावधान रहें। आत्म-बलिदान आपकी सेवा को बिगाड़ने वाली एक बीमारी बन सकता है। यदि परमेश्वर ने आपका प्याला मीठा बनाया है, तो उसे शालीनता से पी लें; यदि उसने उसे कड़वा बनाया है, तो उसे उसकी संगति में पी लें। यदि परमेश्वर की प्रभुतासम्पन्न इच्छा का अर्थ आपके लिए एक कठिन समय है, तो उसमें से होकर गुज़र जाएँ। लेकिन अपने आत्म-बलिदान का स्थान खुद कभी न चुनें। परमेश्वर ने इब्राहीम के लिए परीक्षा चुनी, और इब्राहीम ने न तो देर की और न ही विरोध किया, लेकिन दृढ़ता से आज्ञा का पालन किया। यदि आप परमेश्वर के सम्पर्क में नहीं रह रहे हैं, तो परमेश्वर पर दोष लगाना या उसपर अपना फ़ैसला सुनाना आसान होता है। इससे पहले कि आपको फ़ैसला सुनाने का अधिकार मिल सके, आपको परीक्षा से गुज़रना होगा, क्योंकि इसी से आप परमेश्वर को बेहतर जान सकते हैं। परमेश्वर अपने सबसे ऊँचे लक्ष्यों तक पहुँने के लिए हमारे अन्दर काम कर रहा है, जब तक कि उसका उद्‌देश्य और हमारा उद्‌देश्य एक न हो जाएँ।

बदला हुआ जीवन

यदि कोई मसीह में हो तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो वे सब नई हो गई।
2 कुरिन्थियों 5:17।

आपको अपने प्राण के उद्धार के बारे में क्या समझ है ? उद्धार के कार्य का अर्थ यह है कि आपके वास्तविक जीवन में बातें नाटकीय ढंग से बदल गई हैं। अब आप बातों को उस ढंग से नहीं देखते जैसे पहले देखते थे। आपकी अभिलाषाएँ नई हो गई हैं और पुरानी चीज़ों ने आपको आकर्षित करने की शक्ति खो दी है। यह तय करने के लिए कि आपके जीवन में उद्धार का कार्य सच्चा है या नहीं, एक परीक्षा यह है कि क्या परमेश्वर ने उन चीज़ों को बदल दिया है जो आपके लिए सचमुच महत्त्व रखती हैं ? यदि आप अभी भी पुरानी चीज़ों के लिए तरसते हैं, तो ऊपर से जन्म लेने की बात बिलकुल बेतुकी है - आप अपने आप को धोखा दे रहे हैं। यदि आपका नए सिरे से जन्म हुआ है, तो परमेश्वर का आत्मा बदलाव को आपके वास्तविक जीवन और विचार में प्रकट होने देगा। और जब संकट आएगा, तो आप अपने अन्दर इस बदलाव को देखकर संसार के सबसे आश्चर्यचकित व्यक्ति होंगे। यह कल्पना करने की कोई सम्भावना नहीं होगी कि यह काम *आपने* किया। यह सम्पूर्ण और आश्चर्यजनक बदलाव ही इस बात का सबूत है कि आपका उद्धार हो गया है।

मेरा उद्धार और पवित्रीकरण कौन सा बदलाव लाया है ? उदाहरण के लिए, क्या मैं 1 कुरिन्थियों 13 के प्रकाश में खड़ा हो सकता हूँ, या क्या मैं छटपटाने लगता हूँ और इस विषय से कतराता हूँ ? सच्चा उद्धार, जिसका काम मेरे अन्दर पवित्र आत्मा के द्वारा पूरा होता है, मुझे पूरी तरह से मुक्त करता है। और जब तक "जैसा वह ज्योति में है, वैसे" मैं भी ज्योति में चलता हूँ, (1 यूहन्ना 1:7), तब तक परमेश्वर को डाँट लगाने के लिए कुछ नहीं दिखाई देता क्योंकि उसका जीवन मेरे अस्तित्व के हर अंश में फैलता जा रहा है, सचेत स्तर पर नहीं, बल्कि मेरी चेतना से भी गहरे स्तर पर।

नवम्बर 13

विश्वास या अनुभव ?

परमेश्वर का पुत्र...जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।
गलातियों 2:20।

हमें अपने मिज़ाजों, संवेदनाओं, और भावनाओं से लड़ते हुए प्रभु यीशु के प्रति सम्पूर्ण भक्ति में आ जाना चाहिए। हमें अनुभव के अपने छोटे से संसार को तोड़कर बाहर निकलकर प्रभु के प्रति त्यागपूर्ण भक्ति में आ जाना चाहिए। विचार करें, कि नया नियम यीशु मसीह को कौन बताता है, और फिर उस तुच्छ विश्वास की दयनीय अपर्याप्तता के बारे में सोचें जो हम यह कहते हुए प्रदर्शित करते हैं कि, "मुझे यह अनुभव या वह अनुभव नहीं हुआ है" ! ज़रा सोचें कि यीशु मसीह पर विश्वास किन-किन बातों का दावा करता है और क्या-क्या उपलब्ध कराता है - वह हमें परमेश्वर के सिंहासन के सामने निर्दोष खड़ा कर सकता है, अवर्णनीय रूप से शुद्ध, पूरी तरह से धर्मी, और गहरे रूप से निर्दोष ठहराया हुआ। "यीशु मसीह में, जो हमारे लिए ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा," सम्पूर्ण रूप से आराधना करनेवाले विश्वास में खड़े हों (1 कुरिन्थियों 1:30)। हमारी क्या हिम्मत कि हम परमेश्वर के पुत्र के लिए बलिदान करने की बात करें ! हम नरक और पूरी तरह विनाश होने से बचाए गए हैं, और फिर हम बलिदान करने की बात करते हैं !

हमें अपना ध्यान लगातार यीशु मसीह पर बनाए रखना चाहिए और अपना विश्वास उसी पर रखना चाहिए - एक "प्रार्थना-सभा के" यीशु मसीह पर नहीं , न ही एक "पुस्तक के" यीशु मसीह पर, बल्कि नए नियम के यीशु मसीह पर, जो देहधारी परमेश्वर है, और जिसे चाहिए कि वह हमें मारकर अपने चरणों पर गिरा दे। हमारा विश्वास उस पर होना चाहिए जो हमारे उद्धार का स्रोत है। यीशु मसीह अपने लिए हमारी सम्पूर्ण, असंयमित भक्ति चाहता है। हम यीशु मसीह का अनुभव कभी नहीं कर सकते, न ही स्वार्थी ढंग से उसे अपने हृदयों की सीमाओं में कैद करके रख सकते हैं। हमारे विश्वास को मसीह पर एक मज़बूत, दृढ़निश्चय भरोसा बना होना चाहिए।

अपने अनुभव पर भरोसे के कारण ही हम अविश्वास के विरुद्ध पवित्र आत्मा की स्थिर अधीरता को देखते हैं। हमारे सारे भय पापमय होते हैं, और हम विश्वास में अपना पोषण करने से इनकार करने के द्वारा अपने निजी भय पैदा करते हैं। जो यीशु मसीह के साथ एक हो चुका है, उसे सन्देह या भय कैसे हो सकता है ! हमारे जीवनों को सिद्ध, असंयमित, विजयी, विश्वास के परिणामस्वरूप होनेवाला स्तुति का भजन होना चाहिए।

नवम्बर 14

परमेश्वर की योजना का पता चलाना

यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चलाकर...।
उत्पत्ति 24:27।

हमें परमेश्वर के साथ इतनी एकता में होना चाहिए कि हमें हर समय उससे मार्गदर्शन की विनती करने की ज़रूरत न हो। पवित्रीकरण का अर्थ यह है कि हम परमेश्वर की सन्तान बन गए हैं। साधारण रूप से, एक बच्चे का जीवन आज्ञाकारिता का होता है, जब तक कि वह अनाज्ञाकारिता का चुनाव नहीं करता। लेकिन जैसे ही वह आज्ञा न मानने का चुनाव करता है, एक स्वाभाविक, भीतरी संघर्ष पैदा हो जाता है। आत्मिक स्तर पर, भीतरी संघर्ष परमेश्वर के आत्मा की चेतावनी होती है। जब वह इस तरह से हमें चेतावनी देता है, तो हमें तुरन्त रुक जाना चाहिए और अपनी बुद्धि कों नया करना चाहिए जिससे हम परमेश्वर की इच्छा जान सकें (रोमियों 12:2 देखें)। यदि हमने परमेश्वर के आत्मा के द्वारा नए सिरे से जन्म लिया है, तो हर समय परमेश्वर से मार्गदर्शन माँगने के द्वारा, परमेश्वर के प्रति हमारी भक्ति में बाधा आ जाती है, यहाँ तक कि वह बिलकुल ख़त्म भी हो सकती है। "... यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चलाया ..." और पीछे मुड़कर देखने पर हमें एक आश्चर्यजनक योजना की उपस्थिति दिखाई देती है। यदि हमारा परमेश्वर से जन्म हुआ है, तो हम उसके मार्गदर्शन करनेवाले हाथ को देखते हैं और परमेश्वर को श्रेय देते हैं।

हम सब असाधारण बातों में परमेश्वर को देख सकते हैं, लेकिन हर छोटी से छोटी चीज़ में परमेश्वर को देखने के लिए आत्मिक अनुशासन के विकास की ज़रूरत होती है। कभी यह विश्वास न करें कि जीवन की निरुद्देश्य लगनेवाली घटनाएँ परमेश्वर की निर्धारित व्यवस्था से कुछ कम हैं। हर जगह और किसी भी जगह उसकी ईश्वरीय योजनाओं का पता चलाने के लिए तैयार रहें।

परमेश्वर के प्रति भक्तिपूर्ण होने के बजाय अपने निजी विश्वासों के प्रति स्थिरता की धुन में रहने से सावधान रहें। यदि आप एक पवित्र जन हैं और यह कहते हैं कि, "मैं यह काम या वह काम कभी नहीं करूँगा," तो सम्भावना है कि परमेश्वर आपसे इसी काम को करने की माँग करेगा। हमारे प्रभु से ज़्यादा अस्थिरता वाला व्यक्ति इस जगत में कभी नहीं रहा, लेकिन वह अपने पिता के साथ कभी अस्थिर नहीं था। एक पवित्र जन में महत्त्वपूर्ण स्थिरता एक सिद्धान्त के प्रति नहीं बल्कि ईश्वरीय जीवन के प्रति होती है। ईश्वरीय जीवन ही ईश्वरीय मन के बारे में लगातार और अधिक खोजें करता रहता है। एक अत्यधिक दीवाना आदमी होना स्थिरता से विश्वासयोग्य होने से कहीं ज़्यादा आसान होता है, क्योंकि जब हम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होते हैं, तो वह हमारे धार्मिक घमण्ड को आश्चर्यजनक ढंग से विनम्र कर देता है।

नवम्बर 15

“तुझे क्या ?”

...पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, इस का क्या हाल होगा ?
यीशु ने उससे कहा... तुझे क्या ? तू मेरे पीछे हो ले ।
यूहन्ना 21:21-22 ।

सबसे अधिक कठिन पाठ जो हमें सीखने पड़ते हैं, उनमें से एक पाठ दूसरों के जीवम में दखल देने से अपने आप पर रोक लगाने से हठपूर्वक इनकार करने से आता है । एक अनाड़ी ईश्वर होने के, यानि दूसरों के लिए परमेश्वर की योजनाओं में दखल देने के ख़तरे को पहचानने में, बहुत समय लग जाता है । आप किसी को दुःख उठाते हुए देखते हैं और कहते हैं कि, “वह दुःख नहीं उठाएगा, और यह मैं निश्चित करूँगा कि वह दुःख नहीं उठाएगा ।” आप परमेश्वर की स्वीकृति देनेवाली इच्छा को रोकने के लिए अपने दाहिने हाथ को उसके सामने उठाते हैं, और फिर परमेश्वर आपसे कहता है कि, “तुझे क्या ?” क्या आपके आत्मिक जीवन में गतिहीनता है ? उसे जारी न रहने दें, बल्कि परमेश्वर की उपस्थिति में आएँ और इसका कारण जानने की कोशिश करें । सम्भावना है कि आप पाएँगे कि इसका कारण यह है कि आप किसी और के जीवन में दखलअन्दाज़ी करते रहे हैं - ऐसी बातों का प्रस्ताव रखते हुए जिनका प्रस्ताव रखने का हमें कोई अधिकार नहीं था, या सलाह देते हुए जब हमें सलाह देने का कोई अधिकार नहीं था । जब आपको किसी दूसरे व्यक्ति को सलाह देनी भी पड़ती है, तो परमेश्वर अपने आत्मा की सीधी समझ के द्वारा आपके द्वारा सलाह देगा । आपका कर्तव्य यह है कि आप परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध बनाए रखें ताकि दूसरों को आशीष देने के उद्देश्य से उसकी बुद्धिशीलता लगातार आपके द्वारा आती रहे ।

हम में से अधिकतर लोग सचेत होते हुए परमेश्वर की सेवा करने के द्वारा और सचेत होते हुए उसके प्रति भक्तिपूर्ण होते हुए, सिर्फ़ चेतना के स्तर की सीमा में रहते हैं । यह अपरिपक्वता और यह सच्चाई दिखाते हैं कि हम अभी तक असली मसीही जीवन नहीं जी रहे हैं । परमेश्वर के एक बालक के जीवन में परिपक्वता अचेत स्तर पर पैदा होती है, जब तक कि हम परमेश्वर को इतने समर्पित हो जाते हैं कि हमें इसका बोध ही नहीं होता कि हम उसके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे हैं । जब हमें इस बात का बोध होता है कि हम तोड़ी गई रोटी और बहाए गए दाखरस के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे हैं, तो हमारे लिए अभी एक और स्तर पर पहुँचना बाकी होता है - वह स्तर जहाँ अपने बारे में जागरूकता और इसका बोध कि परमेश्वर हमारे द्वारा क्या कर रहा है, पूरी तरह से दूर हो जाता है । एक पवित्र जन कभी सचेत रूप से पवित्र जन नहीं होता - एक पवित्र जन सचेत रूप से परमेश्वर पर निर्भर होता है ।

अभी भी मानव !

...चाहे जो कुछ भी करो, परमेश्वर की महिमा के लिए करो।
1 कुरिन्थियों 10:31।

पवित्रशास्त्र में, देहधारण का महान आश्चर्यकर्म एक बच्चे के साधारण जीवन में फिसल जाता है; रूपान्तरण का महान आश्चर्यकर्म नीचे दुष्टात्माओं से जकड़ी हुई घाटी में मन्द पड़ जाता है; पुनरुत्थान की महिमा समुद्र के किनारे सुबह के भोजन में उतर जाती है। यह एक अपकर्ष नहीं बल्कि परमेश्वर का महान प्रकटण है।

हमारा यह झुकाव होता है कि हम अपने अनुभव में अचम्भों की खोज करते हैं, और हम बहादुरी के कामों को असली बहादुर समझ बैठते हैं। किसी संकट से शान से गुज़र जाना एक बात होती है, लेकिन जहाँ कोई गवाह नहीं होता, कोई लोक प्रसिद्धि की सम्भावना नहीं होती, कोई हमारी ओर ध्यान नहीं देता, वहाँ परमेश्वर की महिमा करते हुए हर दिन गुज़ारना एक और ही बात होती है। हो सकता है कि हम प्रकाश चक्रों की तलाश में न हों, लेकिन कम से कम हम वह तो चाहते ही हैं जिससे लोग यह कहें कि, ''वह कितना अद्‌भुत प्रार्थना करनेवाला पुरुष है !'' और, ''वह कितनी भक्तिपूर्ण स्त्री है !'' यदि आप उचित रूप से प्रभु यीशु के भक्त है, तो आप उस ऊँचाई तक पहुँच गए हैं जहाँ व्यक्तिगत रूप से कोई आपकी ओर ध्यान नहीं देगा। जिस बात की ओर ध्यान जाता है, वह परमेश्वर का वह सामर्थ्य है जो हर समय आप में से निकलता रहता है।

हम चाहते हैं कि हम यह कह सकें कि, ''मुझे परमेश्वर से एक अद्‌भुत बुलाहट मिली है !'' लेकिन परमेश्वर की महिमा के लिए सबसे ज़्यादा विनम्र काम करने के लिए भी इसकी ज़रूरत होती है कि देहधारी सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारे अन्दर काम करे। सम्पूर्ण रूप से अनदेखे होने के लिए इसकी ज़रूरत होती है कि परमेश्वर का आत्मा हमें पूरी तरह मानवीय रूप से अपना बना ले। एक पवित्र जन के जीवन की असली परख सफ़लता नहीं बल्कि जीवन के मानवीय स्तर पर विश्वासयोग्यता होती है। हमारा झुकाव मसीही कार्य में सफलता को अपना उद्‌देश्य मानने की ओर होता है, लेकिन हमारा उद्‌देश्य यह होना चाहिए कि हम मानव जीवन में परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करें, अपने प्रतिदिन की मानवीय परिस्थितियों में ऐसा जीवन जीएँ जो ''मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है'' (कुलुस्सियों 3:3)। हमारे मानवीय सम्बन्ध ही वे परिस्थितियाँ हैं जिनमें परमेश्वर के आदर्श जीवन को प्रदर्शित होना चाहिए।

नवम्बर 17

अनन्त लक्ष्य

यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ
कि तू ने जो यह काम किया है...इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा ...।
उत्पत्ति 22:16-17।

इस समय, इब्राहीम उस स्थिति पर पहुँच गया है जहाँ वह परमेश्वर के स्वभाव के सम्पर्क में है। अब वह परमेश्वर की वास्तविकता को समझता है।

मेरा लक्ष्य स्वयं परमेश्वर है ...
किसी भी कीमत पर, प्रिय प्रभु, किसी भी मार्ग के द्वारा।

"किसी भी कीमत पर... किसी भी मार्ग के द्वारा" का अर्थ है लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए परमेश्वर के मार्ग के अधीन होना।

यदि परमेश्वर मुझ में अपने ही स्वभाव से बात करता है, तो जब वह बोलता है, तब शंका प्रकट करने की सम्भावना नहीं होती। इसका एकमात्र परिणाम होता है तुरन्त उसकी आज्ञा मानना। जब यीशु कहता है कि, "आओ," तो मैं आ जाता हूँ; जब वह कहता है, "छोड़ दो" तो मैं छोड़ देता हूँ; जब वह कहता है "इस मामले में परमेश्वर पर भरोसा रखो," तो मैं भरोसा रखता हूँ। आज्ञाकारिता का यह कार्य इस बात का सबूत है कि मुझ में परमेश्वर का स्वभाव है।

परमेश्वर का अपने आप को मुझ पर प्रकट करना मेरे चरित्र से तय होता है, परमेश्वर के चरित्र से नहीं।

क्योंकि मैं साधारण हूँ,
तेरे ढंग मुझे कितनी बार साधारण लगते हैं।

आज्ञाकारिता के अनुशासन ही के द्वारा मैं उस स्थान पर पहुँच सकता हूँ जहाँ इब्राहीम था और मैं देखता हूँ कि परमेश्वर कौन है। परमेश्वर मेरे लिए तब तक वास्तविक नहीं होगा, जब तक मैं यीशु मसीह में उसके आमने-सामने नहीं आ जाऊँगा। तब मैं जान जाऊँगा और साहस से घोषणा कर सकूँगा कि, "सारे जगत में, मेरे परमेश्वर, तुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं है।"

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का हमारे लिए कोई मूल्य नहीं होता जब तक कि, आज्ञाकारिता के द्वारा, हम परमेश्वर के स्वभाव को नहीं समझ लेते। हम बाइबल से पूरे वर्ष हर दिन कुछ बातें पढ़ सकते हैं फिर भी हो सकता है कि हमारे लिए उनका कोई अर्थ न हो। फिर, क्योंकि किसी छोटी सी बात में हमने परमेश्वर की आज्ञा मानी है, हम अचानक देखते हैं कि परमेश्वर का अर्थ क्या है, और उसका स्वभाव हमारे सामने खुल जाता है। "परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएँ हैं, वे सब उसी में हाँ के साथ हैं: इसलिए उसके द्वारा आमीन भी हुईं..." (2 कुरिन्थियों 1:20)। हमारा "हाँ" आज्ञाकारिता से आना चाहिए; जब हम आज्ञाकारिता के द्वारा "आमीन" कहते हुए परमेश्वर की प्रतिज्ञा की पुष्टि करते हैं, तो वह प्रतिज्ञा हमारी हो जाती है।

नवम्बर 18

जीतकर स्वतन्त्रता में आना

यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतन्त्र हो जाओगे।
यूहन्ना 8:36।

यदि हमारे अन्दर व्यक्तिगत आत्म-सन्तोष का थोड़ा सा भी अंश बचा है, तो वह हमेशा कहता है कि, "मैं समर्पण नहीं कर सकता," या "मैं स्वतन्त्र नहीं हो सकता।" लेकिन हमारे अस्तित्व का आत्मिक भाग कभी यह नहीं कहता कि, "मैं नहीं कर सकता"; वह सिर्फ़ अपने चारों ओर सारी चीज़ों को सोख लेता है। हमारी आत्मा और ज़्यादा की लालसा करती है। हम इसी तरह से बने हुए हैं। हमें परमेश्वर के लिए एक बहुत बड़ी क्षमता के साथ बनाया गया है, लेकिन पाप, हमारी अपनी व्यक्तिकता, और ग़लत सोच हमें उस तक पहुँचने से रोकती हैं। परमेश्वर हमें पाप से छुटकारा देता है - हमें अपने आप को अपनी व्यक्तिकता से छुटकारा देना होगा। इसका अर्थ है अपने शारीरिक जीवन को परमेश्वर को भेंट चढ़ाना और बलिदान करना, ताकी वह हमारी आज्ञाकारिता के द्वारा उसे आत्मिक जीवन में बदल दे।

हमारे आत्मिक जीवन के विकास में परमेश्वर हमारी स्वाभाविक व्यक्तिकता की ओर कोई ध्यान नहीं देता। उसकी योजना हमारे शारीरिक जीवन में शुरू से आखिर तक चलती है। हमें परमेश्वर की सहायता करने का ध्यान रखना चाहिए, और यह कहते हुए कि, "मैं यह नहीं कर सकता," उसके विरुद्ध नहीं खड़ा होना चाहिए। परमेश्वर हमें अनुशासित नहीं करेगा ; हमें अपने आप को अनुशासित करना है। परमेश्वर "हर ऊँची बात को जो परमेश्वर के विरोध में उठती है...और हर भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी" नहीं बनाता है (2 कुरिन्थियों 10:5) - हमें यह खुद करना है। यह न कहें कि, "हे प्रभु, मुझे भटकते हुए विचार तंग करते हैं।" भटकते हुए विचारों से तंग *न* हों। अपने व्यक्तिक शारीरिक जीवन केअत्याचार की सुनना बन्द करें और आत्मिक जीवन में पहुँचने की स्वतन्त्रता को जीत लें।

"यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करेगा...।" इस अनुच्छेद में, *पुत्र* शब्द के स्थान पर *उद्धारकर्ता* शब्द न रखें। *उद्धारकर्ता* ने हमें पाप से स्वतन्त्र किया है, लेकिन यह वह स्वतन्त्रता है जो *पुत्र* के द्वारा अपने आप से छुड़ाए जाने से मिलती है। पौलुस का अर्थ यही था जब उसने गलातियों 2:20 में कहा कि, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया...।" उसकी व्यक्तिकता तोड़ी जा चुकी थी, और उसकी आत्मा उसके प्रभु के साथ एक कर दी गई थी; उसमें लीन नहीं की गई थी, बल्कि उसके साथ एक कर दी गई थी। "... सचमुच तुम स्वतन्त्र हो जाओगे" - अपने अस्तित्व के बिलकुल मध्य भाग तक स्वतन्त्र;

अन्दर से लेकर बाहर तक स्वतन्त्र। हमारा झुकाव यह होता है कि, यीशु के साथ एक होने से आनेवाले सामर्थ्य से सशक्त होने के बजाय हम अपनी ही शक्ति पर भरोसा करते हैं।

"वह आकर"

और वह आकर संसार को पाप...के विषय में निरुत्तर करेगा।
यूहन्ना 16:8।

हम में से बहुत कम लोग ऐसे हैं जो पाप के विषय में क़ायल होने के बारे में कुछ भी जानते हों। हम ग़लत काम करने के कारण अशान्त होने के अनुभव को जानते हैं। लेकिन पवित्र आत्मा के द्वारा पाप के प्रति क़ायल होना पृथ्वी के हर सम्बन्ध को मिटा देता है और हमें एक ही सम्बन्ध के प्रति जागरूक करता है - "मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया..." (भजन संहिता 51:4)। जब एक व्यक्ति इस तरह से पाप के प्रति क़ायल किया जाता है, तो वह अपने विवेक के हर अंश से जानता है कि परमेश्वर उसे क्षमा करने की हिम्मत नहीं करेगा। यदि परमेश्वर उसे क्षमा कर दे, तो इस व्यक्ति की न्याय की भावना परमेश्वर से बढ़कर होगी। परमेश्वर क्षमा तो करता है, लेकिन ऐसा करने के लिए उसने मसीह की मृत्यु के शोक में अपने हृदय के टूट जाने का मूल्य चुकाया। परमेश्वर के अनुग्रह का महान आश्चर्यकर्म यह है कि वह पाप क्षमा करता है, और यीशु मसीह की मृत्यु ही ईश्वरीय स्वभाव को इस योग्य बनाती है कि वह क्षमा करे और ऐसा करते हुए अपने प्रति विश्वासयोग्य भी रहे। यह कहना कि परमेश्वर हमें इसलिए क्षमा करता है क्योंकि वह प्रेम है, छिछला बकवास है। एक बार जब हम पाप के प्रति क़ायल हो जाएँगे, तो फिर कभी ऐसा नहीं कहेंगे। परमेश्वर के प्रेम का अर्थ कलवरी है - उससे कम कुछ नहीं! परमेश्वर का प्रेम सिर्फ़ क्रूस पर व्यक्त होता है, और कहीं नहीं। जिस एकमात्र आधार पर परमेश्वर मुझे क्षमा कर सकता है, वह है मसीह का क्रूस। केवल यहीं पर उसके विवेक को सन्तोष मिलता है।

क्षमा का अर्थ केवल यह नहीं कि मैं नरक से बच गया हूँ और स्वर्ग के लिए तैयार कर दिया गया हूँ (इस स्तर पर कोई भी क्षमा स्वीकार नहीं करेगा)। क्षमा का अर्थ यह है कि मुझे एक नए रूप से पैदा किए गए सम्बन्ध में क्षमा मिली है, ऐसा सम्बन्ध जो मुझे मसीह में परमेश्वर के साथ एक कर देता है। छुटकारे का चमत्कार यह है कि परमेश्वर मुझे, यानि अपवित्र जन को, अपने यानि पवित्र परमेश्वर के मापदण्ड में बदल देता है। वह मुझ में एक नया स्वभाव, यानि, यीशु मसीह का स्वभाव, डालने के द्वारा ऐसा करता है।

नवम्बर 20

परमेश्वर की क्षमा

हम को उस में ...अपराधों की क्षमा ...मिली है।
इफिसियों 1:7।

परमेश्वर के पितृत्व के सुखदायी दृश्य से सावधान रहें, कि परमेश्वर इतना दयालु और प्रेममय है कि वह निश्चय हमें क्षमा करेगा। यह विचार, जो सिर्फ़ हमारी भावनाओं पर आधारित है, नए नियम में कहीं नहीं पाया जाता। जिस एकमात्र आधार पर परमेश्वर हमें क्षमा कर सकता है, वह है मसीह के क्रूस की ज़बरदस्त दु:खान्त घटना। अपनी क्षमा को किसी और आधार पर खड़ा करना अनजाने में परमेश्वर की निन्दा करने के बराबर है। जिस एकमात्र आधार पर परमेश्वर हमारे पाप को क्षमा कर सकता है और हमें अपनी करुणादृष्टि में वापस ला सकता है, वह मसीह के क्रूस के द्वारा है। इसका कोई और मार्ग नहीं! जिस क्षमा को ग्रहण करना हमारे लिए इतना आसान है, उसका मूल्य कलवरी की वेदना थी। हमें पाप की क्षमा, पवित्र आत्मा का वरदान, और अपने पवित्रीकरण को सरल विश्वास से लेने के बाद परमेश्वर के द्वारा चुकाई गई उस ज़बरदस्त कीमत को कभी भूलना नहीं चाहिए जिससे ये सब हमारे हो सके हैं।

क्षमा अनुग्रह का ईश्वरीय आश्चर्यकर्म है। परमेश्वर को इसका जो मूल्य चुकाना पड़ा, वह था मसीह का क्रूस। पाप क्षमा करने के लिए, एक पवित्र परमेश्वर रहते हुए, इसके मूल्य का चुकाया जाना ज़रूरी था। परमेश्वर के पितृत्व के ऐसे दृष्टिकोण को कभी स्वीकार न करें जो प्रायश्चित को मिटा देता है। परमेश्वर का प्रकट किया गया सत्य यह है कि प्रायश्चित के बिना वह क्षमा नहीं कर सकता - यदि वह ऐसा करता है, तो अपने ही स्वभाव का खण्डन करता है। जिस एकमात्र तरीके से हम क्षमा किए जा सकते हैं, वह यह है कि हम क्रूस के प्रायश्चित के द्वारा परमेश्वर के पास वापस लाए जाएँ। परमेश्वर की क्षमा सिर्फ़ अलौकिक क्षेत्र में सम्भव है।

पाप की क्षमा के आश्चर्यकर्म की तुलना में, पवित्रीकरण का अनुभव छोटा है। पवित्रीकरण एक मानव जीवन में पाप की क्षमा की सिर्फ़ एक अद्‌भुत अभिव्यक्ति या सबूत है। लेकिन जो चीज़ एक मनुष्य में धन्यवाद के सबसे गहरे सोते को जगा देती है, वह यह है कि परमेश्वर ने उसके पाप को क्षमा कर दिया। पौलुस इससे कभी दूर नहीं गया। एक बार जब आप समझ जाएँगे कि आपको क्षमा करने के लिए परमेश्वर ने क्या कीमत चुकाई, तो आप परमेश्वर के प्रेम से विवश होकर, एक शिकंजे की जकड़ में आ जाएँगे।

"पूरा हुआ !"

जो काम तूने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके...
यूहन्ना 17:4।

यीशु मसीह की मृत्यु परमेश्वर के इरादे का इतिहास में पूरा होना है। यीशु मसीह को एक शहीद के रूप में देखना उचित नहीं। उसकी मृत्यु ऐसी घटना नहीं थी जो उसके साथ हुई - ऐसी घटना जिसे रोका जा सकता था। उसके आने का कारण ही उसकी मृत्यु थी।

क्षमा के लिए अपने तर्क को इस विचार पर कभी खड़ा न करें कि परमेश्वर हमारा पिता है और वह हमें क्षमा करेगा क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है। यह विचार यीशु मसीह में प्रकट किए गए परमेश्वर के सत्य का खण्डन करता है। यह क्रूस को ग़ैर-ज़रूरी और छुटकारे को "बिना बात का बतंगड़" ठहराता है। परमेश्वर पाप को सिर्फ़ मसीह की मृत्यु के कारण क्षमा करता है। परमेश्वर अपने पुत्र की मृत्यु को छोड़ लोगों को किसी और तरीके से क्षमा नहीं कर सकता था, और यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में उसकी मृत्यु के कारण ऊँचा किया गया है। "हम यीशु को...मृत्यु का दुःख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं..." (इब्रानियों 2:9)। विजय का सबसे महान शब्द जो एक चौंके हुए ब्रह्माण्ड ने कभी भी सुना है, वह मसीह के क्रूस पर से पुकारा हुआ शब्द, "पूरा हुआ !" था (यूहन्ना 19:30)। मानव जाति के छुटकारे का यह अन्तिम शब्द था।

कोई भी चीज़ जो परमेश्वर के प्रेम के ग़लत विचार के द्वारा परमेश्वर की पवित्रता को कम कर देती है या पूरी तरह से मिटा देती है, वह यीशु मसीह के द्वारा प्रकट किए गए परमेश्वर के सत्य का खण्डन करती है। अपने आप को कभी यह न सोचने दें कि यीशु मसीह अपनी दया और अपने तरस के कारण हमारे साथ और परमेश्वर के विरुद्ध खड़ा है, या यह कि वह हमारे प्रति अपनी हमदर्दी के कारण हमारे लिए श्राप बना। यीशु मसीह एक ईश्वरीय आदेश के कारण हमारे लिए श्राप बना। उसके श्रापित होने के महान अर्थ को समझने में हमारा भाग है पाप के प्रति क़ायल होना। क़ायल होना हमें शर्मिन्दगी और पश्चात्ताप के वरदान के रूप में दिया जाता है; यह परमेश्वर की महान दया है। यीशु मसीह लोगों में पाप से नफ़रत करता है, और कलवरी उसकी नफ़रत का नाप है।

नवम्बर 22

छिछला और गहरा

तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ भी करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।
1 कुरिन्थियों 10:31।

अपने आप को यह सोचने देने से सावधान रहें कि जीवन के छिछले पहलू परमेश्वर के ठहराए हुए नहीं होते : ये परमेश्वर के द्वारा उतने ही ठहराए गए होते हैं जितने गहरे पहलू। कभी-कभी हम छिछले होने से इनकार कर देते हैं, परमेश्वर के प्रति अपनी गहरी भक्ति के कारण नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि हम दूसरों को इस तथ्य से प्रभावित करना चाहते हैं कि हम छिछले नहीं। यह आत्मिक घमण्ड का एक पक्का चिह्न होता है। हमें सावधान रहना चाहिए क्योंकि इसी से हमारे जीवन में दूसरों के लिए अपमान पैदा होता है। और यह हमें दूसरों के लिए एक चलती-फिरती फटकार बना देता है क्योंकि वे हम से ज़्यादा छिछले हैं। अपने आपको एक गहरे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करने से सावधान रहें - परमेश्वर एक शिशु बना।

छिछला होना पापमय होने का चिह्न नहीं, न ही छिछलापन इस बात का संकेत है कि आपके जीवन में कोई भी गहराई नहीं - सागर का भी किनारा होता है। जीवन की छिछली बातें, जैसे खाना और पीना, चलना और बात करना, परमेश्वर के द्वारा ठहराई जाती हैं। ये सब ऐसी बातें हैं जो हमारे प्रभु ने भी की थीं। उसने इन्हें परमेश्वर का पुत्र होने के नाते किया, और उसने कहा, "चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं ..." (मत्ती 10:24)।

हम जीवन की छिछली चीज़ों के द्वारा सुरक्षित रहते हैं। हमें व्यावहारिक बुद्धि के ढंग से सतह पर व्यावहारिक बुद्धि का जीवन जीना है। फिर जब परमेश्वर हमें और गहरी चीज़ें देता है, तो वे प्रकट रूप से छिछले मामलों से अलग कर दी जाती हैं। अपने जीवन की गहराइयों को कभी परमेश्वर के सिवा किसी और को न दिखाएँ। हम अपने ही चरित्र और नेकनामी में इतनी ज़्यादा रुचि लेते हैं, इतने ज़्यादा गम्भीर हो जाते हैं, कि जीवन के छिछले मामलों में मसीहियों की तरह व्यवहार करने से इनकार कर देते हैं।

यह संकल्प कर लें कि आप परमेश्वर को छोड़ और किसी के प्रति गम्भीर नहीं होंगे। हो सकता है कि आप यह पाएँ कि सबसे बड़ा धोखेबाज़ होने के नाते जिसके साथ आपका कभी पाला पड़ा है, जिस पहले व्यक्ति के साथ आपको सबसे ज़्यादा आलोचनात्मक होना पड़ेगा, वह आप खुद हैं।

नवम्बर 23

अपमान के कारण ध्यान भंग होना।

हम पर अनुग्रह कर, हे यहोवा, हम पर अनुग्रह कर, क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गए हैं।
भजन संहिता 123:2।

जिस चीज़ से हमें सावधान रहना चाहिए, वह परमेश्वर पर हमारे विश्वास की हानि नहीं, बल्कि हमारी मसीही प्रवृत्ति या मनोदशा की हानि है। "तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो और विश्वासघात मत करो" (मलाकी 2:16)। हमारी मनोदशा अपने प्रभावों में सामर्थी होती है। यह वह शत्रु बन सकती है जो सीधे हमारे प्राण में घुसकर हमारे ध्यान को परमेश्वर से हटा देता है। कुछ ऐसी मनोवृत्तियाँ होती हैं जिन्हें सन्तुष्ट करने की हिम्मत हमें कभी नहीं करनी चाहिए। यदि हम ऐसा करेंगे, तो पाएँगे कि उन्होंने हमारे ध्यान को परमेश्वर में विश्वास से हटा दिया है। जब तक हम परमेश्वर के सामने एक शान्त मनोदशा में वापस नहीं आ जाते, हमारे विश्वास का कोई मूल्य नहीं होता, और मनुष्य पर और उसकी कुशलता पर हमारा भरोसा ही हमारे जीवन पर शासन करता है।

"संसार की चिन्ता..." (मरकुस 4:19) से सावधान रहें। यही वे चीज़ें हैं जो हमारे प्राण में ग़लत मनोवृत्तियाँ पैदा करती हैं। यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है कि परमेश्वर से हमारे ध्यान को हटाने के लिए मामूली चीज़ों में कितना सामर्थ्य है। "संसार की चिन्ताओं" से दबने से इनकार कर दें।

एक और चीज़ जो हमारे ध्यान को भंग करती है, वह है अपने आप को निर्दोष साबित करने का हमारा जोश। सन्त अगस्टीन ने प्रार्थना की कि, "हे प्रभु, मुझे अपने आप को हमेशा निर्दोष साबित करने की इस लालसा से छुटकारा दे।" अपने आप को निर्दोष साबित करने की ऐसी ज़रूरत परमेश्वर में हमारी आत्मा के विश्वास को नष्ट कर देती है। यह न कहें कि, "मुझे अपनी सफ़ाई देनी है," या, "मुझे लोगों को समझाना है।" हमारे प्रभु ने कभी किसी बात की सफ़ाई नहीं दी - उसने दूसरों की ग़लतफ़हमियों ओर ग़लत धारणाओं को अपने आप सुधर जाने के लिए छोड़ दिया।

जब हम पहचानते हैं कि दूसरे लोग आत्मिक रूप से नहीं बढ़ रहे हैं, और इस पहचान को आलोचना में बदल जाने देते हैं, तो हम परमेश्वर के साथ लोगों की संगति में रुकावट डाल देते हैं। परमेश्वर हमें पहचानने की योग्यता इसलिए नहीं देता कि हम आलोचना करें, बल्कि इसलिए ताकि हम उनके लिए विनती करें।

नवम्बर 24

ध्यान की दिशा

जैसे दासों की आँखें अपने स्वामियों की ओर...होती हैं,
वैसे ही हमारी आँखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर ...लगी रहेंगी ।
भजन संहिता 123:2 ।

यह पद परमेश्वर पर पूरे भरोसे का वर्णन है । जिस तरह एक दास की आँखें अपने स्वामी पर टिकी रहती हैं, वैसे ही हमारी आँखों को परमेश्वर पर टिका रहना चाहिए । यही वह तरीका है जिससे परमेश्वर के मुख का ज्ञान प्राप्त होता है और जिससे परमेश्वर अपने आप को हम पर प्रकट करता है (यशायाह 53:1 देखें) । जब हम अपनी आँखो को उसकी ओर उठाना बन्द कर देते हैं तो हमारी आत्मिक शक्ति खाली हो जाती है । हमारा दम धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है, हमारे चारों ओर के कष्टों के द्वारा इतना नहीं जितना हमारे सोचने के ढंग की समस्याओं के कारण । हम ग़लत सोचते हैं कि, "शायद मैं कुछ ज़्यादा ही प्रयत्न कर रहा था, कुछ ज़्यादा ही साहस दिखा रहा था, और एक साधारण, नम्र व्यक्ति होने के बजाय, परमेश्वर की तरह लगने की कोशिश कर रहा था ।" हमें यह पहचानना है कि कोई भी प्रयास ज़रूरत से ज़्यादा ऊँचा नहीं हो सकता ।

उदाहरण के लिए, आप अपने जीवन में किसी संकट में पड़े, आप परमेश्वर के लिए डटे रहे, और इसकी पुष्टि करने के लिए कि आप जो कर रहे थे वह सही था, आपको पवित्र आत्मा की गवाही भी मिली । लेकिन शायद अब कई हफ़्ते या वर्ष बीत चुके हैं, और आप धीरे-धीरे इस निष्कर्ष पर आ रहे हैं कि, "हो सकता है मैंने जो किया, उससे कुछ ज़्यादा ही घमण्ड प्रदर्शित हुआ या वह बाहरी था । जिस बात का मैं समर्थन कर रहा था, वह मेरे लिए कुछ ज़्यादा ही ऊँची थी ? आपके "तर्कशील" मित्र आकर कहते हैं, "बेवकूफ़ी की बात मत करो । जब तुमने पहले-पहले इस आत्मिक जागृति की बात की थी, हमें तभी पता था कि यह कुछ करने की अचानक इच्छा है जो गुज़र जाएगी, कि तुम इस तनाव का सामना नहीं कर पाओगे । और वैसे भी, परमेश्वर तुमसे यह प्रत्याशा नहीं करता कि तुम इसे झेल लोगे ।" आप प्रत्युत्तर देते हुए कहते हैं, "हाँ, शायद मैं कुछ ज़्यादा ही आशा कर रहा था ।" यह सुनने में तो बहुत विनम्र लगता है, लेकिन इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर पर आपका भरोसा खत्म हो गया है, और अब आप सांसारिक राय पर भरोसा कर रहे हैं । ख़तरा तब आता है जब आप परमेश्वर पर भरोसा करना बन्द कर देते हैं, और अपनी आँखों को उसपर लगाना छोड़ देते हैं । सिर्फ़ जब परमेश्वर आपको अचानक रोक देगा, तब आप पहचानेंगे कि हारनेवाले आप ही रहे हैं । जब भी आपके जीवन में आत्मिक रूप से धीरे-धीरे बरबादी आने लगे, उसे तुरन्त सही कर लें । समझ लें कि आपके और परमेश्वर के बीच कुछ आता रहा है, और उसे बदल दें या तुरन्त दूर कर दें ।

नवम्बर 25

आत्मिक अपरिवर्तनशीलता का रहस्य

ऐसा न हो कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूँ...केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का...।
गलातियों 6:14।

जब एक व्यक्ति का शुरू-शुरू में नया जन्म होता है, तो अपनी असम्बद्ध भावनाओं और बाहरी बातों की स्थिति या उसके जीवन की परिस्थितियों के कारण वह परिवर्तनशील लग सकता है। पौलुस प्रेरित के जीवन में एक शक्तिशाली और स्थिर बुनियादी अपरिवर्तनशीलता थी। इसलिए वह बिना किसी भीतरी परेशानी के अपने बाहरी जीवन को बदलने दे सकता था क्योंकि उसकी जड़ें परमेश्वर में जमी हुई और स्थिर थीं। हम में से ज़्यादातर लोग आत्मिक रूप से सदैव एक से नहीं होते क्योंकि हमें बाहरी रूप से एक से होने की ज़्यादा चिन्ता होती है। बातों की बाहरी अभिव्यक्ति के मामले में, पौलुस मानों तहख़ाने में रहता था, जबकि उसके आलोचक ऊपरी मंज़िल में रहते थे। और ये दो स्तर एक दूसरे को छूना शुरू भी नहीं करते। लेकिन पौलुस की अपरिवर्तनशीलता बुनियादों की गहराई में थी। जगत के छुटकारे में परमेश्वर की वेदना, यानि मसीह का क्रूस, उसकी अपरिवर्तनशीलता का महान आधार था।

अपने विश्वासों को एक बार फिर अपने आप से दोहराएँ। कोई भी विश्वास जो मसीह के क्रूस पर आधारित न हो, उसे दूर करते हुए मसीह के क्रूस की बुनियाद पर वापस आएँ। संसार के इतिहास में क्रूस एक बहुत ही छोटी चीज़ है, लेकिन बाइबल के दृष्टिकोण से इसका महत्त्व सारे जगत के सारे राज्यों से बढ़कर है। यदि हम अपने प्रचार में क्रूस पर परमेश्वर की दुःखान्त घटना पर देर तक न बोलेंगे, तो हमारा प्रचार फल नहीं लाएगा। वह परमेश्वर की स्फूर्ति को मनुष्य तक नहीं पहुँचाएगा; वह रुचिकर हो सकता है, लेकिन उसमें कोई सामर्थ्य नहीं होगा। लेकिन जब हम क्रूस का प्रचार करते हैं, तो परमेश्वर की शक्ति मुक्त हो जाती है। "...परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे ... हम क्रूस पर चढ़ाए मसीह का प्रचार करते हैं ...। (1 कुरिन्थियों 1:21, 23)।

नवम्बर 26

आत्मिक सामर्थ्य का केन्द्रबिन्दु

...केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का...।
गलातियों 6:14।

यदि आप परमेश्‍वर के सामर्थ्य (यानि, यीशु के पुनरुत्थान के जीवन) को अपने शरीर में जानना चाहते हैं, तो आपको परमेश्‍वर की दुःखान्त घटना पर विचार करने में समय बिताना होगा। अपनी निजी आत्मिक दशा पर अपनी व्यक्तिगत चिन्ता से अलग हो जाएँ, और सम्पूर्ण रूप से खुली आत्मा के साथ परमेश्‍वर की दुःखान्त घटना पर ध्यान करें। परमेश्‍वर का सामर्थ्य तुरन्त आपके अन्दर आ जाएगा । "...मेरी ओर फिरो ..." (यशायाह 45:22)। बाहरी स्रोत की ओर ध्यान दें और आपको भीतरी सामर्थ्य मिल जाएगा। हम सामर्थ्य को खो देते हैं क्योंकि हम सही बात पर ध्यान केन्द्रित नहीं करते। क्रूस का परिणाम उद्धार, पवित्रीकरण, चंगाई, आदि, है, लेकिन हमें इन चीज़ों का प्रचार नहीं करना है। हमें "यीशु मसीह, वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह " का प्रचार करना है (1 कुरिन्थियों 2:2)। यीशु की घोषणा अपना काम खुद करेगी। अपने प्रचार में परमेश्‍वर के केन्द्रबिन्दु पर ध्यान दें, और यदि ऐसा भी लगे कि आपके सुननेवाले इसकी ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं, फिर भी वे कभी पहले जैसे नहीं रहेंगे। यदि मैं अपने निजी शब्द बाँटता हूँ, तो उनका महत्त्व उतना ही है जितना आपके शब्दों का महत्त्व मेरे लिए है। लेकिन यदि हम परमेश्‍वर के सत्य को एक दूसरे के साथ बाँटेंगे, तो हम उसका सामना बार-बार करेंगे। हमें आत्मिक सामर्थ्य के महान विषय, यानि, क्रूस पर, ध्यान केन्द्रित करना होगा। यदि हम सामर्थ्य के उस केन्द्रबिन्दु के सम्पर्क में रहते हैं, तो उसकी शक्ति हमारे जीवन में छोड़ दी जाती है। पवित्रता के आन्दोलनों में और आत्मिक अनुभव की सभाओं में ध्यान अकसर मसीह के क्रूस पर नहीं, बल्कि क्रूस के परिणामों पर दिया जाता है।

आज कलीसिया की दुर्बलता की आलोचना की जा रही है, और यह आलोचना उचित भी है। इस दुर्बलता का एक कारण यह है कि यह केन्द्रीकरण आत्मिक सामर्थ्य के सच्चे केन्द्रबिन्दु पर नहीं रहा है। हमने कलवरी की दुःखान्त घटना पर या छुटकारे के अर्थ पर विचार करने में पर्याप्त समय नहीं बिताया है।

नवम्बर 27

आत्मिक सामर्थ्य का अभिषेक

जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ।
गलातियों 6:14।

यदि मैं मसीह के क्रूस पर ध्यान केन्द्रित करता हूँ, तो मैं न केवल भीतरी रूप से श्रद्धालु बन जाता हूँ, और न ही केवल अपनी पवित्रता में रुचि रखनेवाला - मेरा ध्यान प्रबल रूप से यीशु मसीह की रुचियों पर केन्द्रित हो जाता है। हमारा प्रभु सन्यासी या अपनी इच्छाओं को मारनेवाला कोई धर्मात्मा नहीं था। उसने अपने आप को समाज से अलग नहीं कर दिया था, लेकिन भीतरी रूप से वह हमेशा अलग रहा। वह अलहदा रहनेवाला नहीं था, लेकिन वह एक दूसरे ही जगत में रहता था। बल्कि वह प्रतिदिन के साधारण जीवन से इतना जुड़ा हुआ था, कि उसके समय के धार्मिक लोगों ने उसपर यह आरोप लगाया कि वह खाऊ और पियक्कड़ है। लेकिन हमारे प्रभु ने अपने आत्मिक सामर्थ्य के अभिषेक में किसी बात को दखल नहीं देने दिया।

यह सोचना असली अभिषेक नहीं है कि हम परमेश्वर के द्वारा अभी इस्तेमाल किए जाने से इनकार कर सकते हैं, ताकि अपने आत्मिक सामर्थ्य को आगे के लिए बचा कर रख सकें। यह एक निराशापूर्ण ग़लती होती है। परमेश्वर के आत्मा ने बहुत से लोगों को उनके पाप से छुड़ाया है, लेकिन फिर भी वे अपने जीवन में भरपूरी का कोई अनुभव नहीं कर रहे - उनके जीवन में स्वतन्त्रता की सच्ची भावना नहीं। जिस प्रकार का धार्मिक जीवन हम अपने चारों ओर देख रहे हैं, वह यीशु मसीह के जीवन की ज़ोरदार पवित्रता से बिलकुल फ़र्क है। "मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रखे" (यूहन्ना 17:15)। हमें संसार *में* होते हुए भी संसार *का* नहीं होना है - हमें बाहरी रूप से नहीं, बल्कि भीतरी रूप से अलग होना है (यूहन्ना 17:16 देखें)।

हमें किसी भी चीज़ को अपने आत्मिक सामर्थ्य के अभिषेक में अड़ंगा मारने नहीं देना चाहिए। अभिषेक (परमेश्वर की सेवकाई के लिए समर्पित होना) हमारा काम है; पवित्रीकरण (पाप से दूर करके पवित्र किया जाना) परमेश्वर का काम है। हमें यह दृढ़ निश्चय करने की ज़रूरत है कि हम सिर्फ़ उन्हीं बातों में रुचि रखेंगे जिनमें परमेश्वर रुचि रखता है। जब हम किसी परेशान करनेवाली समस्या का सामना करते हैं, तो इस प्रकार का संकल्प करने का तरीका है अपने आप से यह प्रश्न पूछना कि "क्या यह उस तरह की बात है जिसमें यीशु मसीह की रुचि है, या क्या यह ऐसी बात है जिसमें मेरी आत्मा उसके बिलकुल विरुद्ध है जिसमें यीशु की रुचि है ?"

नवम्बर 28

कंगालों का धन

उसके अनुग्रह से...सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।
रोमियों 3:24।

परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार मनुष्य के मन में तेज़ लालसा जगाता है और उतनी ही तेज़ नाराज़गी भी, क्योंकि जिस सत्य को वह प्रकट करता है, वह न तो स्वादिष्ट होता है, और न ही निगलने में आसान। लोगों में एक विशेष गर्व होता है जो उन्हें देते रहने पर बाध्य करता है, लेकिन आकर एक दान को ग्रहण करना और ही बात होती है। मैं शहीद होने के लिए अपना प्राण दे दूँगा; मैं अपने जीवन को सेवा के लिए समर्पित कर दूँगा - मैं कुछ भी कर दूँगा। लेकिन मुझे सबसे नरक-योग्य पापी के स्तर पर लाकर अपमानित न करें और मुझसे यह न कहें कि मुझे केवल यीशु मसीह के द्वारा उद्धार के दान को ग्रहण करना है।

हमें इस बात को समझना है कि हम अपने ही प्रयासों से परमेश्वर से कुछ कमा या जीत नहीं सकते। हमें या तो उसे वरदान के रूप में ग्रहण करना है या उसके बिना काम चलाना है। सबसे महान आत्मिक आशीष जो हम पाते हैं वह है इस बोध तक पहुँचना कि हम कंगाल हैं। जब तक हम वहाँ नहीं पहुँचते, हमारा प्रभु असमर्थ होता है। जब तक हम यह सोचते हैं कि हम अपने आप में और अपने आप के लिए काफ़ी हैं, तब तक वह हमारे लिए कुछ नहीं कर सकता। जब तक हम "धनी" होते हैं, विशेषकर अपने घमण्ड और अपनी स्वतन्त्रता के क्षेत्र में, तब तक परमेश्वर हमारे लिए कुछ नहीं कर सकता। हम पवित्र आत्मा को केवल तब ही पाते हैं जब हम आत्मिक रूप से भूखे होते हैं। परमेश्वर के स्वभाव का वरदान हमारे भीतर पवित्र आत्मा के द्वारा रखा जाता और प्रभावशाली बनाया जाता है। वह हमें यीशु का जिलानेवाला जीवन प्रदान करता है और हमें सचमुच जीवन्त बनाता है। वह उसे लेता है जो हम से "परे" है और उसे हमारे "भीतर" रख देता है। और जैसे ही "जो परे है" वह "भीतर" आ जाता है, वह तुरन्त उठकर "ऊपर" पहुँच जाता है, और हम उस राज्य में उठा लिए जाते हैं जहाँ यीशु रहता और राज्य करता है (यूहन्ना 3:5 देखें)।

यीशु मसीह की सर्वोच्चता

वह मेरी महिमा करेगा ...।
यूहन्ना 16:14।

आजकल के पवित्रता आनदोलनों में नए नियम की कठोर वास्तविकता जैसा कुछ नहीं पाया जाता। उनमें ऐसा कुछ नहीं है जिसे यीशु मसीह की मृत्यु की ज़रूरत हो। जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है, वे हैं एक धार्मिक दिखावे का वातावरण, प्रार्थना, और भक्ति। इस प्रकार का अनुभव न तो अलौकिक होता है और न ही आश्चर्यजनक। इसकी कीमत परमेश्वर की वेदना नहीं थी, न ही इसमें "मेम्ने के लोहू" के दाग़ लगे हैं (प्रकाशितवाक्य 12:11)। इसमे पवित्र आत्मा के द्वारा असली होने की छाप या मुहर नहीं लगी है, और न ही इसमें कोई दिखाई देनेवाला चिह्न है जो लोगों को आश्चर्य से यह कह उठने पर बाध्य करता है कि, "सचमुच यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का कार्य है !" लेकिन नया नियम परमेश्वर के कार्य को छोड़ और किसी बात के बारे में नहीं है।

मसीही अनुभव का नए नियम का आदर्श यीशु मसीह के व्यक्तित्व के प्रति एक व्यक्तिगत, जोशीली भक्ति का है। बाकी सब प्रकार के कथित मसीही अनुभव यीशु के व्यक्तित्व से अलग हैं। उनमें कोई नया बनाया जाना - ऐसे राज्य में, जिसमें मसीह रहता और राज्य करता है, नया जन्म लेना नहीं पाया जाता। उसमें सिर्फ़ यह विचार पाया जाता है कि मसीह हमारा आदर्श है। नए नियम में, यीशु मसीह हमारा आदर्श होने से कहीं पहले हमारा उद्धारकर्ता है। आजकल उसका वर्णन एक धर्म के नाममात्र शासक के रूप में किया जा रहा है - केवल एक आदर्श के रूप में। वह आदर्श तो ज़रूर है, लेकिन उससे कहीं बढ़कर भी है। वह *स्वयं* उद्धार है; वह *स्वयं* परमेश्वर का सुसमचार है !

यीशु ने कहा, "...जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो...मेरी महिमा करेगा..." (यूहन्ना 16:13-14)। जब मैं नए नियम में प्रकट सत्य के प्रति अपने आप को समर्पित कर देता हूँ, तो मैं परमेश्वर से पवित्र आत्मा का वरदान पाता हूँ, जो मुझे वह सब समझाना शुरू कर देता है जो यीशु ने किया। परमेश्वर का आत्मा मेरे अन्दर भीतरी रूप से वह सब करता है जो यीशु मसीह ने बाहरी रूप से मेरे लिए किया।

नवम्बर 30

मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ

मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ; और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ,
वह व्यर्थ नहीं हुआ...।
1 कुरिन्थियों 15:10।

जिस तरह से हम हर समय अपनी अयोग्यताओं के बारे में बात करते हैं, वह हमारे सृष्टिकर्ता के लिए अपमानजनक होता है। अपनी अक्षमता के बारे में बुड़बुड़ाने का अर्थ है परमेश्वर पर झूठा आरोप लगाना कि उसने हमें अनदेखा किया है। उन चीज़ों की जाँच-पड़ताल परमेश्वर के दृष्टिकोण से करने की आदत डालें, जो मनुष्य को इतनी साधारण लगती हैं। आपको यह देख कर हैरानी होगी कि वे परमेश्वर के प्रति कितनी अनुपयुक्त और निरादरपूर्ण हैं। हम इस प्रकार की बातें करते हैं कि, "मुझे यह दावा नहीं करना चाहिए कि मैं पवित्र कर दिया गया हूँ; मैं एक पवित्र जन नहीं हूँ।" लेकिन परमेश्वर के सामने ऐसा कहने का अर्थ है, "नहीं, प्रभु, मेरा उद्धार करना और मुझे पवित्र करना तेरे लिए असम्भव है; ऐसे कई मौके हैं जो मुझे नहीं मिले हैं, और मेरे तन और मन में इतने ज़्यादा विकार हैं; नहीं, प्रभु, यह सम्भव नहीं हो सकता।" सुनने में तो यह दूसरों को बड़ा विनम्र लगेगा, लेकिन परमेश्वर के सामने यह विद्रोह की प्रवृत्ति है।

इसके विपरीत, जो बातें परमेश्वर के सामने विनम्र लगती हैं, वे लोगों के सामने बिलकुल उल्टी लग सकती हैं। यह कहना कि, "परमेश्वर का धन्यवाद हो, मैं जानता हूँ कि मेरा उद्धार भी हुआ है और पवित्रीकरण भी," परमेश्वर के सामने नम्रता की सबसे शुद्ध अभिव्यक्ति है। इसका अर्थ यह है कि आपने अपने आप को परमेश्वर को इतनी सम्पूर्णता से समर्पित कर दिया है कि आप यह जानते हैं कि वह सच्चा है। कभी इसकी चिन्ता न करें कि जो आप बोलते हैं, वह लोगों के सामने नम्र लगता है या नहीं। लेकिन परमेश्वर के सामने हमेशा नम्र रहें, और उसे अपना सब कुछ होने दें।

एक ही सम्बन्ध है जो सचमुच महत्त्व रखता है, और वह है आपके व्यक्तिगत छुड़ानेवाले और प्रभु के साथ आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध। यदि आप इसे हर कीमत पर बनाए रखेंगे, और बाकी सारी चीज़ों को छोड़ देंगे, तो परमेश्वर आपके जीवन के द्वारा अपने उद्देश्य को पूरा करेगा। परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए एक व्यक्तिगत जीवन भी बहुमूल्य हो सकता है, और यह जीवन आपका जीवन हो सकता है।

दिसम्बर 1

व्यवस्था और सुसमाचार

जो सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह
सबस बातों में दोषी ठहरा।
याकूब 2:10।

नैतिक व्यवस्था मनुष्य होने के नाते हमारी कमियों का लिहाज़ नहीं करती; बल्कि वह हमारी आनुवंशिकता या कमज़ोरियों पर भी ध्यान नहीं देती। वह केवल यह एकमात्र माँग करती है कि हम पूरी तरह से नैतिक हों। नैतिक व्यवस्था कभी नहीं बदलती, न समाज के सबसे ऊँचे लोगों के लिए, और न ही संसार के सबसे कमज़ोर व्यक्ति के लिए। यह स्थिर रहती है और अनन्तकाल तक एक समान। परमेश्वर के द्वारा ठहराई गई नैतिक व्यवस्था हमारी निर्बलताओं को क्षमा करने के द्वारा अपने आप को निर्बल नहीं बनाती। यह हर समय के लिए अपरिवर्तनशील रहती है। यदि हमें इसका एहसास नहीं, तो यह इसलिए है क्योंकि हम पूरी तरह जीवित नहीं। जैसे ही हम इसे समझ जाते हैं, हमारा जीवन तुरन्त एक जानलेवा दुःखान्तिकी बन जाता है। "मैं तो व्यवस्था बिना पहिले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया और मैं मर गया" (रोमियों 7:9)। जैसे ही हमें इस बात का एहसास हो जाता है, परमेश्वर का आत्मा हमें पाप के प्रति क़ायल करता है। जब तक एक व्यक्ति वहाँ नहीं पहुँचता और यह नहीं देखता कि कोई आशा नहीं है, तब तक मसीह का क्रूस उसके लिए निरर्थक होता है। पाप के कारण दोषी ठहरने का एहसास हमेशा व्यवस्था की एक भयंकर, कैद करके रखे जाने की भावना लाता है। वह एक व्यक्ति को निराश कर देता है - जैसे वह "...पाप के हाथ बिका हुआ" हो (रोमियों 7:14)। मैं, एक दोषी पापी, परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने के लिए कभी कुछ नहीं कर सकता - ऐसा कर पाना असम्भव है। एक ही तरीका है जिसके द्वारा मैं परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर सकता हूँ, और वह है यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा। मुझे इस बुनियादी विचार को दूर करना होगा कि मैं अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा परमेश्वर के साथ कभी मेल मिलाप कर सकता हूँ। हम में से ऐसा कौन है जो सम्पूर्ण सिद्धता से परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सकता है!

हम नैतिक व्यवस्था के सामर्थ्य को जानना सिर्फ़ तब ही शुरु करते हैं जब हम देख लेते हैं कि वह एक शर्त के साथ आती है। लेकिन परमेश्वर हमारे साथ कभी ज़बरदस्ती नहीं करता। कभी-कभी हम यह कामना करते हैं कि परमेश्वर हमें ज़बरदस्ती आज्ञाकारी बना दे, और कभी-कभी हम चाहते हैं कि वह हमें हमारे हाल पर छोड़ दे। परमेश्वर की इच्छा जब भी पूरे नियन्त्रण में होती है, वह सब दबाव को हटा देता है। और जब हम जान बूझकर उसकी आज्ञा मानने का चुनाव करेंगे, तो वह अपने सर्वशक्तिमान सामर्थ्य से हमारी सहायता करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा।

दिसम्बर 2

मसीही सिद्धता

यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ...।
फिलिप्पियों 3:12।

यह मान लेना एक फंदा है कि परमेश्वर हमें इसके सिद्ध नमूने बनाना चाहता है कि वह क्या कर सकता है - परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि वह हमें अपने साथ एक करे। पवित्रता के आन्दोलन इस बात पर बल दे रहे हैं कि परमेश्वर पवित्रता के नमूनों को अपने संग्रहालय में रखने के लिए पैदा कर रहा है। यदि आप व्यक्तिगत पवित्रता की इस विचारधारा को स्वीकार करते हैं, तो आपके जीवन का दृढ़निश्चयी उद्देश्य परमेश्वर के लिए नहीं, बल्कि उसके लिए होगा जिसे आप अपने जीवन में परमेश्वर का सबूत कहते हैं। हम यह कैसे कह सकते हैं कि, "मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा यह कभी नहीं हो सकती कि मैं बीमार पड़ूँ" ? यदि यह परमेश्वर कि इच्छा थी कि वह अपने ही पुत्र को कुचले (यशायाह 53:10), तो वह आपको क्यों नहीं कुचल सकता ? आपके जीवन में जो प्रकाशमान होता है और परमेश्वर को प्रकट करता है, वह इस विचार के बारे में आपकी अपरवर्तनशीलता नहीं कि एक पवित्र जन को कैसा होना चाहिए, बल्कि यीशु मसीह के साथ आपका असली और जीवित सम्बन्ध, और आपकी असंयमित भक्ति होती है, चाहे आप स्वस्थ हों या बीमार।

मसीही सिद्धता मानवीय सिद्धता न तो होती है और न हो सकती है। मसीही सिद्धता परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की सिद्धता होती है जो मनुष्य के जीवन के महत्त्वहीन लगनेवाले पहलुओं में भी अपने आप को सच्चा साबित करती है। जब आप यीशु मसीह की बुलाहट को सुनते हैं, तो पहली चीज़ जो आपको प्रभावित करती है वह उन बातों की निरर्थकता होती है जो आपको करनी पड़ती हैं। अगला विचार जो आपको प्रभावित करता है, वह यह होता है कि दूसरे लोग ऐसा जीवन जी रहे हैं जो हर समय अपरिवर्तनशील है। ऐसे जीवन आपके मन में यह विचार ला सकते हैं कि परमेश्वर अनावश्यक है - आप अपने मानवीय प्रयासों और भक्ति के द्वारा जीवन के लिए परमेश्वर के मापदण्डों तक पहुँच सकते हैं। एक गिरे हुए संसार में ऐसा कर पाना असम्भव है। मैं परमेश्वर के साथ एक ऐसे सिद्ध सम्बन्ध में रहने के लिए बुलाया गया हूँ, कि मेरा जीवन अपने लिए प्रशंसा नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में परमेश्वर के लिए एक लालसा उत्पन्न करे। अपने बारे में विचार परमेश्वर के लिए मेरी उपयोगिता में बाधा डालते हैं। परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं कि मुझे अपने सजावट के ताक पर रखने के लिए सिद्ध बनाए; वह मुझे ऐसे स्थान पर ला रहा है जहाँ वह मेरा इस्तेमाल कर सके। परमेश्वर जो चाहता है, उसे वही करने दें।

दिसम्बर 3

न तो बल से, और न शक्ति से

मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था। 1 कुरिन्थियों 2:4।

यदि सुसमचार प्रचार करते समय आप सुसमाचार के सामर्थ्य में भरोसे के स्थान पर उद्धार के मार्ग के अपने ज्ञान को रख देंगे, तो आप लोगों के सच्चाई तक पहुँचने में बाधा डाल देंगे। ध्यान रखें कि जब आप उद्धार के मार्ग की अपनी जानकारी को घोषित करते हैं, तो आप खुद विश्वास के द्वारा परमेश्वर में दृढ़ता से जड़ फैलाए हुए हों। अपनी प्रस्तुति की स्पष्टता पर कभी भरोसा न रखें, बल्कि जब आप अपना स्पष्टीकरण देते हैं तो सुनिश्चित कर लें कि आप पवित्र आत्मा पर भरोसा रखे हुए हैं। परमेश्वर के उद्धार देने के सामर्थ्य की निश्चितता पर भरोसा रखें, और वह लोगों में अपने ही जीवन की सृष्टि करेगा।

एक बार जब आप वास्तविकता में दृढ़ हो जाते हैं, तो कोई चीज़ आपको हिला नहीं सकती। यदि आपका विश्वास अनुभवों पर है, तो आपके साथ जो भी होता है, वह उस विश्वास को उलट-पलट कर सकता है। लेकिन परमेश्वर को या छुटकारे की वास्तविकता को कुछ भी नहीं बदल सकता। इसे अपने विश्वास का आधार बनाएँ, और आप हमेशा के लिए उतने ही सुरक्षित रहेंगे जितना परमेश्वर खुद है। जब यीशु मसीह के साथ आपका सम्बन्ध एक बार बन जाता है, तो आप फिर कभी हिलाए नहीं जा सकते। पवित्रीकरण का अर्थ यही है। यह भूलते हुए कि हमारे पवित्रीकरण का पवित्रीकरण भी ज़रूरी है, इस विचारधारा से चिपके रहने के हमारे मानवीय प्रयासों को परमेश्वर पसन्द नहीं करता कि पवित्रीकरण केवल एक अनुभव है (यूहन्ना 17:19 देखें)। मुझे समझ-बूझकर अपना पवित्रीकृत जीवन परमेश्वर को उसकी सेवा के लिए दे देना है, ताकि वह मुझे अपने हाथों और पाँवों के रूप में इस्तेमाल कर सके।

दिसम्बर 4

विरोध का नियम

जो जय पाए... ।
प्रकाशितवाक्य 2:7 ।

प्राकृतिक और अलौकिक दोनों क्षेत्रों में युद्ध के बिना जीवन असम्भव होता है । यह एक तथ्य है कि जीवन के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, और आत्मिक क्षेत्रों में लगातार युद्ध चलता रहता है ।

मेरे शरीर के अंगों और मेरे चारों और पाई जानेवाली चीज़ों और शक्तियों के बीच सन्तुलन करनेवाला स्वास्थ्य होता है । अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए, बाहर की चीज़ों से लड़ने के लिए मेरे अन्दर पर्याप्त भीतरी शक्ति होनी चाहिए । मेरे शारीरिक जीवन के बाहर सारी चीज़ें मेरी मृत्यु का कारण बनने के लिए हैं । जो तत्त्व मेरे जीवित होने के दौरान मेरा पोषण करते हैं, वे ही मेरे शरीर के मर जाने पर उसे सड़ाने और विघटित करने का काम करते हैं । यदि मेरे पास लड़ाई करने की पर्याप्त भीतरी शक्ति है, तो मैं स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी सन्तुलन के उत्पादन में मदद कर सकता हूँ । यह मानसिक जीवन के लिए भी सच है । यदि मैं एक शक्तिशाली और सक्रिय मानसिक जीवन बनाए रखना चाहता हूँ, तो मुझे लड़ने की ज़रूरत है । यह संघर्ष उस मानसिक सन्तुलन को पैदा करता है जिसे विचार कहते हैं ।

नैतिक रूप से भी ऐसा ही होता है । कोई भी चीज़ जो नैतिक रूप से मुझे सशक्त नहीं करती, वह मेरे भीतर सद्‌गुण का शत्रु है । मैं जय पाता हूँ या नहीं, और इसके द्वारा सद्‌गुण पैदा करता हूँ या नहीं, मेरे जीवन की नैतिक श्रेष्ठता के स्तर पर निर्भर करता है । नैतिकता संयोग से नहीं आ जाती; नैतिक सद्‌गुण को प्राप्त करना पड़ता है ।

और आत्मिक रूप से भी ऐसा ही होता है । यीशु ने कहा, "संसार में तुम्हें क्लेश होता है..." (यूहन्ना 16:33) । इसका अर्थ यह है कि कोई भी चीज़ जो आत्मिक नहीं होती, वह मुझे पतन की ओर ले जाती है । यीशु ने आगे कहा, "...परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है ।" जो भी चीज़ें मेरे विरुद्ध आती हैं, मुझे उनसे लड़ना और उनपर जय पाना सीखना होगा, और इस तरह से पवित्रता का सन्तुलन पैदा करना होगा । इसके बाद विरोध से मुलाकात एक आनन्द बन जाता है ।

मेरे स्वभाव और यीशु मसीह में व्यक्त परमेश्वर की व्यवस्था के बीच सन्तुलन ही पवित्रता होती है ।

दिसम्बर 5

“पवित्र आत्मा का मन्दिर”

...केवल राजगद्दी के विषय मैं तुझ से बड़ा ठहरूँगा।
उत्पत्ति 41:40।

मैं परमेश्वर के अधिकार के अधीन अपने शरीर को जिस ढंग से नियन्त्रित रखता हूँ, उसके लिए परमेश्वर को जवाबदेह हूँ। पौलुस ने कहा कि उसने “परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराया” यानि, उसे असमर्थ नहीं बनाया (गलातियों 2:21)। परमेश्वर का अनुग्रह सम्पूर्ण और असीम है, और उद्धार का कार्य यीशु के द्वारा हमेशा के लिए सम्पूर्ण और पूरा हो गया है। मेरा उद्धार हो नहीं रहा है - मेरा उद्धार हो चुका है। उद्धार उतना ही अनन्त है जितना परमेश्वर का सिंहासन है, लेकिन परमेश्वर ने जो मेरे अन्दर रखा है, मुझे उसे कार्य पर लगाना है या उसका इस्तेमाल करना है। “(मेरे) अपने उद्धार का कार्य पूरा करते रहने” (फिलिप्पियों 2:12) का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने मुझे जो दिया है, उसका इस्तेमाल करने के लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ। इसका अर्थ यह भी है कि मुझे अपने शरीर में प्रभु यीशु के जीवन को प्रदर्शित करना है, रहस्यमय या गुप्त ढंग से नहीं, बल्कि खुल्लम-खुल्ला और साहस के साथ। “मैं अपने जीवन को मारता कूटता, और वश में लाता हूँ...” (1 कुरिन्थियों 9:27)। हर एक मसीही अपने शरीर को परमेश्वर के लिए पूरी तरह नियन्त्रण में रख सकता है। परमेश्वर ने हमें यह ज़िम्मेदारी दी है कि हम अपने विचारों और अपनी अभिलाषाओं समेत, “पवित्र आत्मा के (पूरे) मन्दिर” पर शासन करें (1 कुरिन्थियों 6:19)। हम इनके लिए ज़िम्मेदार हैं, और हमें अनुचित विचारों और अभिलाषाओं के सामने कभी झुकना नहीं चाहिए। लेकिन हम में से ज़्यादातर लोग अपने आप पर न्याय करने की तुलना में दूसरों का न्याय करने में ज़्यादा सख्त होते हैं। हम अपने लिए तो बहाने बनाते हैं, जब कि हम दूसरों के जीवन में बातों पर दोष लगाते हैं सिर्फ़ इसलिए क्योंकि हमारा अपना स्वाभाविक झुकाव ऐसे काम करने की ओर नहीं होता।

पौलुस ने कहा, “मैं...तुम से विनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित ...बलिदान करके चढ़ाओ...” (रोमियों 12:1)। मुझे यह फ़ैसला करना है कि मैं अपने प्रभु और स्वामी के साथ इस बात पर सहमत होऊँगा या नहीं कि मेरा शरीर सचमुच उसका मन्दिर है। एक बार जब मैं सहमत हो जाता हूँ, तो शरीर से सम्बन्धित सारे नियमों, सिद्धान्तों, और व्यवस्था की माँगों का सार इस प्रकाशित सच्चाई में पाया जाता है - मेरी देह “ पवित्र आत्मा का मन्दिर है।”

दिसम्बर 6

“बादल में मेरा धनुष”

मैंने बादल में अपना धनुष रखा है वह मेरे और पृथ्वी के बीच वाचा का चिन्ह होगा।
उत्पत्ति 9:13।

यह परमेश्वर की इच्छा है कि मनुष्य उसके साथ एक उचित सम्बन्ध में बन्ध जाएँ, और उसकी वाचाएँ इसी उद्देश्य से ठहराई गई हैं। परमेश्वर मेरा उद्धार क्यों नहीं करता ? उसने मेरे लिए उद्धार कर दिया है लेकिन मैं अभी तक उसके साथ सम्बन्ध में नहीं आया हूँ। परमेश्वर वह सब क्यों नहीं करता जो हम माँगते हैं ? वह कर चुका है। सवाल यह है कि क्या मैं वाचा के उस सम्बन्ध में कदम रखूँगा ? परमेश्वर की सारी महान आशीषें समाप्त और सम्पूर्ण हो चुकी हैं, लेकिन वे तब तक मेरी नहीं हैं जब तक मैं उसकी वाचा के आधार पर उसके साथ एक सम्बन्ध में प्रवेश नहीं करता।

परमेश्वर के कार्यवाही करने के लिए प्रतीक्षा करना शारीरिक अविश्वास है। इसका अर्थ यह है कि मुझे उसपर विश्वास नहीं। मैं प्रतीक्षा करता हूँ कि वह मेरे अन्दर कुछ करे ताकि मैं उस कार्य पर भरोसा कर सकूँ। लेकिन परमेश्वर ऐसा नहीं करेगा क्योंकि यह परमेश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध का आधार नहीं है। परमेश्वर के साथ अपनी वाचा में मनुष्य को अपनी शारीरिक देह और भावनाओं से परे जाने की ज़रूरत है, ठीक जैसे परमेश्वर अपनी वाचा के साथ मनुष्य के पास आने में अपने आप के परे जाता है। यह परमेश्वर में विश्वास का सवाल है - एक ऐसी चीज़ जो आसानी से नहीं मिलती। हमें सिर्फ़ अपनी भावनाओं पर विश्वास होता है। मैं परमेश्वर पर तब तक विश्वास नहीं करता जब तक वह मेरे हाथ में कोई ऐसी चीज़ नहीं रखता जिसे मैं छू सकूँ और जान सकूँ कि वह मेरे पास है। इसके बाद मैं कहता हूँ, “अब मैं विश्वास करता हूँ।” इसमें विश्वास का कोई प्रदर्शन नहीं होता। परमेश्वर कहता है, “*मेरी ओर फिरो*, और उद्धार पाओ...” (यशायाह 45:22)।

जब मैं और सारी चीज़ों को छोड़ते हुए, परमेश्वर की वाचा के आधार पर उसके साथ लेनदेन कर लेता हूँ, तो व्यक्तिगत सफलता का कोई एहसास नहीं होता - बल्कि इसमें कोई मानवीय तत्त्व नहीं होता। इसके बदले में, परमेश्वर के साथ एकता में लाए जाने का पूरी तरह से डुबा देनेवाला एहसास होता है, और मेरा जीवन बदल जाता है और उससे शान्ति और आनन्द फैलता है।

दिसम्बर 7

पश्चात्ताप

परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है ...।
2 कुरिन्थियों 7:10।

पाप के कारण दोषी ठहराए जाने का एहसास एक व्यक्ति के साथ होनेवाली सबसे अधिक असाधारण बातों में से एक है। यह परमेश्वर को समझने की शुरुआत होती है। यीशु मसीह ने कहा कि जब पवित्र आत्मा आ जाएगा, तो वह लोगों को पाप ...के विषय में निरुत्तर (क़ायल) करेगा (यूहन्ना 16:8)। और जब पवित्र आत्मा एक व्यक्ति के विवेक को झकझोरता है, और उसे परमेश्वर की उपस्थिति में ले आता है, तो उसे दूसरों के साथ अपना सम्बन्ध नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध परेशान करता है - "मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है..." (भजन संहिता 51:4)। पाप के विषय में क़ायल होने, क्षमा, और पवित्रता के आश्चर्य आपस में ऐसे बुने हुए हैं, कि जिस व्यक्ति को क्षमा मिली है, केवल वह ही सचमुच पवित्र है। जैसा वह पहले था, परमेश्वर के अनुग्रह से उसका बिलकुल विपरीत होने के द्वारा वह साबित करता है कि उसे क्षमा मिली है। पश्चात्ताप एक व्यक्ति को हमेशा उस स्थान पर ले आता है जहाँ वह कहता है कि, "मैंने पाप किया है।" इस बात का पक्का चिह्न कि परमेश्वर उसके जीवन में कार्य कर रहा है, वह होता है जब वह सच्चे मन से ऐसा कहता है। जो इससे कुछ भी कम होता है, वह केवल मूर्खता भरी ग़लतियाँ करने के लिए दु:ख होता है - स्वयं से घृणा के कारण एक प्रतिक्रिया।

परमेश्वर के राज्य का प्रवेशद्वार मनुष्य की प्रतिष्ठित "अच्छाई" और पश्चात्ताप के चुभनेवाले, आकस्मिक दर्द के आपसी टकराव में से होता है। फिर पवित्र आत्मा जो इन संघर्षों को पैदा करता है, परमेश्वर के पुत्र को उस व्यक्ति के जीवन में बनाने लगता है (गलातियों 4:19 देखें)। यह नया जीवन अपने आप को सचेत पश्चात्ताप में प्रकट करेगा, और इसके बाद अचेत पवित्रता आएगी - यह क्रम कभी उलटा नहीं हो सकता। मसीहियत की बुनियाद पश्चात्ताप है। सच तो यह है कि, एक व्यक्ति जब चाहे तब पश्चात्ताप नहीं कर सकता - पश्चात्ताप परमेश्वर का वरदान है। पुराने समय में प्यूरिटन लोग "आँसुओं के वरदान" के लिए प्रार्थना करते थे। यदि आप कभी पश्चात्ताप के मूल्य को समझना बन्द कर देंगे, तो आप अपने आप को पाप में रहने देंगे। यह देखने के लिए अपने आप की जाँच करें कि कहीं आप भूल तो नहीं गए हैं कि वास्तव में पश्चात्ताप कैसे किया जाता है।

दिसम्बर 8

परमेश्वर का निष्पक्ष सामर्थ्य

उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध किया है ।
इब्रानियों 10:14 ।

यदि हम यह समझते हैं कि हमें क्षमा इसलिए मिली है क्योंकि हमें अपने पापों का पछतावा हुआ है, तो हम परमेश्वर के पुत्र के लोहू को पैरों तले रौंदते हैं । परमेश्वर के द्वारा हमारे पापों की क्षमा का कारण, और उन्हें भूल जाने की प्रतिज्ञा की अथाह गहराई का कारण यीशु मसीह की मृत्यु है । हमारा पश्चात्ताप मसीह के क्रूस के द्वारा उस प्रायश्चित के विषय में हमारे व्यक्तिगत एहसास का सिर्फ़ परिणाम होता है, जो उसने हमारे लिए उपलब्ध कराया है । "...मसीह यीशु...जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा - और धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा..." (1 कुरिन्थियों 1:30) । एक बार जब हमें यह एहसास हो जाता है कि मसीह हमारे लिए ये सब हुआ, परमेश्वर का असीम आनन्द हमारे अन्दर शुरू हो जाता है । और जहाँ भी परमेश्वर का आनन्द उपस्थित नहीं, वहाँ मृत्युदण्ड अभी भी लागू है ।

हम चाहे जो भी हों, परमेश्वर हमें सिर्फ़ यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा अपने आप के साथ सही स्थिति में वापस लाता है । परमेश्वर यह इसलिए नहीं करता क्योंकि यीशु उससे ऐसा करने के लिए निवेदन करता है, बल्कि इसलिए क्योंकि यीशु मरा । इसे कमाया नहीं जा सकता, सिर्फ़ ग्रहण किया जा सकता है । उद्धार के लिए वे सारे निवेदन जो मसीह के क्रूस को जान बूझकर अनदेखा करते हैं, बेकार हैं । यह उस द्वार को छोड़ जो यीशु खोल चुका है, किसी और द्वार पर खटखटाने के बराबर है । हम विरोध करते हुए कहते हैं , "लेकिन मैं उस मार्ग से नहीं आना चाहता । एक पापी के रूप में ग्रहण किया जाना बहुत ज़्यादा अपमानजनक है ।" पतरस के द्वारा परमेश्वर का प्रत्युत्तर यह है कि, "...कोई दूसरा नाम नहीं ...जिसके द्वारा हम उद्धार पर सकें" (प्रेरितों के काम 4:12) । जो शुरू में परमेश्वर की क्रूरता लगती है, वह वास्तव में उसके हृदय की सच्ची अभिव्यक्ति है । उसके तरीके से असीमित प्रवेश है । "हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा ...मिला है" (इफिसियों 1:7) । यीशु मसीह की मृत्यु में उसके साथ एक होने का अर्थ यह है कि हमें उन सब चीज़ों के लिए मरना है जो कभी उसका अंश नहीं थीं ।

परमेश्वर सिर्फ़ बुरे लोगों का उद्धार करने में न्यायशील है क्योंकि वह उन्हें अच्छा बना देता है । हमारा प्रभु यह दिखावा नहीं करता कि हम बिलकुल ठीक हैं जब कि हम बिलकुल ग़लत हैं । मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित वह प्रायश्चित है जो परमेश्वर अपवित्र लोगों को पवित्र करने के लिए इस्तेमाल करता है ।

दिसम्बर 9

प्राकृतिक का विरोध

जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत
क्रूस पर चढ़ा दिया है।
गलातियों 5:24।

प्राकृतिक जीवन अपने आप में पापमय नहीं है। लेकिन हमें पाप को छोड़ना है और उससे किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना है। पाप नरक का और शैतान का है। परमेश्वर का बालक होने के नाते, मैं स्वर्ग का और परमेश्वर का हूँ। यह पाप को त्यागने का नहीं, बल्कि अपने ऊपर अपने अधिकार को, अपनी प्राकृतिक स्वतन्त्रता को, और अपनी इच्छा को त्यागने का सवाल है। लड़ाई यहीं पर लड़ी जानी है। जो बातें प्राकृतिक दृष्टिकोण से सही और अच्छी जान पड़ती हैं, वही वे बातें हैं जो हमें परमेश्वर का सर्वोत्तम होने से रोकती हैं। एक बार जब हम समझ जाते हैं कि प्राकृतिक नैतिक श्रेष्ठता परमेश्वर के प्रति समर्पण का विरोध करती है, तो हम अपनी आत्मा को सबसे महान युद्ध के बीचोबीच ला खड़ा कर देते हैं। हम में से कम ही लोग हैं जो इसपर बहस करेंगे कि कौन सी बातें भ्रष्ट, बुरी, और ग़लत हैं, लेकिन हम इसपर ज़रूर बहस करते हैं कि कौन सी बातें अच्छी हैं। एक व्यक्ति नैतिक श्रेष्ठता के मापक्रम में जितना ऊँचा चढ़ता है, यीशु मसीह के प्रति विरोध उतना ही ज़्यादा तेज़ हो जाता है। "जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।" आपके प्राकृतिक जीवन को जो दाम चुकाना पड़ता है, वह एक या दो चीज़ें नहीं, बल्कि सब कुछ है। यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो वह अपने आप का इनकार करे ..." (मत्ती 16:24)। इसका अर्थ यह है कि उसे अपने आप के ऊपर अपने अधिकार को छोड़ना है, और ऐसी स्थिति में आने से पहले, उसे यह जानना है कि यीशु मसीह कौन है। अपनी स्वतन्त्रता के दफ़न में जाने से इनकार न करें।

प्राकृतिक जीवन आत्मिक नहीं होता, और इसे केवल बलिदान के द्वारा आत्मिक बनाया जा सकता है। यदि हम जानबूझकर प्राकृतिक की बलि नहीं चढ़ाएँगे, तो अलौकिक हमारे लिए कभी प्राकृतिक नहीं बन सकेगा। कोई ऊँचा या आसान मार्ग नहीं है। हर एक के अपने हाथों में इस तक पहुँचने का साधन है। सवाल प्रार्थना करने का नहीं, बल्कि बलिदान करने का, और उसके द्वारा परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का है।

दिसम्बर 10

प्राकृतिक को भेंट चढ़ाना

यह लिखा है, कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए; एक दासी से, और एक स्वतन्त्र स्त्री से।
गलातियों 4:22।

गलातियों के इस अध्याय में, पौलुस पाप के विषय से नहीं, बल्कि प्राकृतिक के साथ आत्मिक के सम्बन्ध से निपट रहा है। केवल बलिदान के द्वारा ही प्राकृतिक को आत्मिक में बदला जा सकता है। इसके बिना एक व्यक्ति एक बँटा हुआ जीवन जीएगा। परमेश्वर ने यह माँग क्यों की कि प्राकृतिक का बलिदान चढ़ाया जाए ? परमेश्वर ने इसकी माँग नहीं की। यह परमेश्वर की सिद्ध इच्छा नहीं, बल्कि स्वीकृति देनेवाली इच्छा है। परमेश्वर की सिद्ध इच्छा यह थी कि आज्ञाकारिता के द्वारा, प्राकृतिक आत्मिक में बदल दिया जाए। वह तो पाप है जो यह ज़रूरी कर देता है कि प्राकृतिक को बलि चढ़ाया जाए।

इससे पहले कि इब्राहीम इसहाक को बलि चढ़ाता, उसे इश्माएल को बलि चढ़ाना पड़ा (उत्पत्ति 21:8-14 देखें)। हम में से कुछ लोग हैं जो प्राकृतिक की बलि चढ़ाने से पहले परमेश्वर के सामने आत्मिक बलिदान चढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। परमेश्वर के सामने एक आत्मिक बलिदान चढ़ाने का एकमात्र तरीका यह है कि हम "अपने शरीरों को जीवित...बलिदान करके..." चढ़ाएँ (रोमियों 121)। पवित्रीकरण का अर्थ पाप से मुक्ति पाने से बढ़कर है। इसका अर्थ यह है कि मैं जान बूझकर अपने आपको अपने उद्धार के परमेश्वर को समर्पित करूँ, और इसके लिए किसी भी दाम को चुकाने के लिए तैयार रहूँ।

यदि हम आत्मिक के लिए प्राकृतिक को बलि नहीं चढ़ाते, तो प्राकृतिक जीवन हमारे अन्दर परमेश्वर के पुत्र के जीवन का विरोध करेगा और उसकी आज्ञा मानने से इनकार करेगा और लगातार उपद्रव पैदा करता रहेगा। एक अनअनुशासित आत्मिक स्वभाव का परिणाम हमेशा यही होता है। हम इसलिए ग़लती करते हैं क्योंकि हम हठपूर्वक अपने आपको शारीरिक, नैतिक, या मानसिक रूप से अनुशासित करने से इनकार करते हैं। हम यह कहकर अपने आप को क्षमा कर देते हैं कि, "जब मैं बच्चा था, तो मुझे अनुशासित होना नहीं सिखाया गया था।" तो अपने आप को अब अनुशासित करें ! यदि नहीं करेंगे, तो आप परमेश्वर के लिए अपने सारे जीवन को नष्ट कर देंगे।

जब तक हम इसे दुलारना और सन्तुष्ट करना जारी रखते हैं, तब तक परमेश्वर हमारे प्राकृतिक जीवन में सक्रियता से शामिल नहीं होता। परन्तु एक बार जब हम उसे नियन्त्रण में रखने का संकल्प कर लेंगे, तो परमेश्वर उसमें शामिल होगा। तब वह कुएँ, और मरुद्वीप भी उपलब्ध कराएगा, और प्राकृतिक के लिए अपनी सारी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा (उत्पत्ति 21:15-19 देखें)।

दिसम्बर 11

व्यक्तिकता

यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे...।
मत्ती 16:24।

व्यक्तिकता भीतरी आत्मिक जीवन को घेरे हुए एक सख़्त बाहरी परत होती है। व्यक्तिकता दूसरों को अलग करते हुए उन्हें किनारे धकेल देती है। हम इसे एक बच्चे की प्रमुख विशेषता के रूप में देखते हैं, और यह उचित भी है। लेकिन यदि हम व्यक्तिकता को व्यक्तिगत जीवन समझेंगे, तो हम अलग-थलग होकर रह जाएँगे। व्यक्तिकता का यह कवच व्यक्तिगत जीवन को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से परमेश्वर के द्वारा बनाया गया एक प्राकृतिक आवरण है। लेकिन हमारी व्यक्तिकता को जाना होगा ताकि हमारा आत्मिक जीवन परमेश्वर के साथ संगति में लाया जा सके। व्यक्तिकता व्यक्तित्व की नकल करती है, ठीक जैसे लालसा प्रेम की नकल करती है। परमेश्वर ने मानव स्वभाव की रचना अपने लिए की, लेकिन व्यक्तिकता उस मानव स्वभाव को अपने ही उद्देश्यों के लिए बिगाड़ देती है।

व्यक्तिकता की विशेषताएँ हैं स्वच्छन्दता और हठ। हम अपनी व्यक्तिकता को हर समय बलपूर्वक व्यक्त करने के द्वारा अपने आत्मिक जीवन में जितनी रुकावट डालते हैं, उतनी किसी और तरीके से नहीं डालते। यदि आप कहते हैं, "मैं विश्वास नहीं कर सकता," तो यह इसलिए होता है क्योकि व्यक्तिकता कभी विश्वास नहीं कर सकती। लेकिन हमारा व्यक्तित्व विश्वास किए बिना रह नहीं सकती। जब परमेश्वर का आत्मा आपके अन्दर काम करता है, तो अपने आप को ध्यान से देखें। वह आपको आपकी व्यक्तिकता की अन्तिम सीमा तक धकेलता है जहाँ आपको या तो यह कहना पड़ता है कि, "मैं समर्पण नहीं करूँगा," या आप व्यक्तिकता के सख़्त कवच को तोड़ते हुए समर्पण कर देंगे, जो व्यक्तिगत जीवन को बाहर निकलने देगा। पवित्र आत्मा उसे हर बार एक बात पर सीमित कर देगा (मत्ती 5:23-24 देखें)। वह आपकी व्यक्तिकता ही है जो "अपने भाई से मेल मिलाप" करने से इनकार करती है (5:24)। परमेश्वर आपको अपने साथ एकता में लाना चाहता है, लेकिन जब तक आप अपने ऊपर अपने अधिकार को छोड़ देने के लिए तैयार न हो जाएँ, वह ऐसा नहीं कर सकता। "...वह अपने आप को इनकार करे..." - अपने आप के प्रति अपने स्वतन्त्र अधिकार को इनकार करे। इसके बाद ही सच्चे जीवन, यानि, आत्मिक जीवन को बढ़ने का मौका मिलता है।

दिसम्बर 12

व्यक्तित्व

...कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं... ।
यूहन्ना 17:22 ।

व्यक्तित्व हमारे जीवन का वह बेजोड़, सीमारहित अंग है जो हमें और सभी से अलग बनाता है । यह इतना विस्तृत होता है कि हम इसे अच्छी तरह समझ भी नहीं सकते । समुद्र में एक द्वीप एक महान पहाड़ की सिर्फ़ चोटी हो सकता है, और हमारा व्यक्तित्व उस द्वीप की तरह है । हम अपने अस्तित्व की महान गहराइयों को नहीं जानते, इसलिए हम अपने आप को नाप नहीं सकते । हम यह समझते हुए अपने आप को नापना शुरू करते हैं कि ऐसा करना सम्भव है, लेकिन हमें जल्दी ही यह एहसास हो जाता है कि वास्तव में एक ही जन है जो हमें पूरी तरह समझता है, और वह है हमारा सृष्टिकर्ता ।

व्यक्तित्व हमारे भीतरी आत्मिक मनुष्यत्व की विशेषता का चिह्न है, जैसे व्यक्तिकता बाहरी, प्राकृतिक मनुष्यत्व का चिह्न है । हमारे प्रभु का वर्णन व्यक्तिकता और स्वतन्त्रता के सन्दर्भ में कभी नहीं किया जा सकता, उसका वर्णन केवल उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सन्दर्भ में किया जा सकता है - "मैं और पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30) । व्यक्तित्व विलीन हो जाता है, और आप अपनी सच्ची पहचान तक तब ही पहुँचते हैं जब आप किसी दूसरे व्यक्ति में विलीन हो जाते हैं । जब एक व्यक्ति पर प्रेम या परमेश्वर का आत्मा आता है, तो वह बदल जाता है । तब वह अपनी व्यक्तिकता को बनाए रखने की हठ नहीं करेगा । हमारे प्रभु ने कभी किसी व्यक्ति की व्यक्तिकता या उसकी अलग-थलग स्थिति की ओर इशारा नहीं किया, बल्कि सम्पूर्ण व्यक्ति के सन्दर्भ में बात की - "...कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं... ।" एक बार जब आप अपने आप के ऊपर अपने अधिकार को परमेश्वर को समर्पित कर देते हैं, तो आपका सच्चा व्यक्तिगत स्वभाव तुरन्त परमेश्वर को प्रत्युत्तर देना शुरू कर देता है । यीशु मसीह आपके पास सम्पूर्ण व्यक्ति के रूप में छुटकारा लाता है, और आपकी व्यक्तिकता भी बदल जाती है । यह बदलाव प्रेम के द्वारा आता है - यीशु के प्रति व्यक्तिगत भक्ति के द्वारा । एक व्यक्ति के साथ एक और व्यक्ति के सच्ची संगति में होने का उमड़नेवाला परिणाम ही प्रेम होता है ।

दिसम्बर 13

मध्यस्थता की प्रार्थना

...नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए...।
लूका 18:1।

यदि आप छुटकारे की वास्तविकता में विश्वास नहीं करते, तो आप प्रार्थना के द्वारा सचमुच मध्यस्थता की विनती नहीं कर सकते। इसके बदले में, आप विनती को दूसरों के लिए बेकार की हमदर्दी में बदल देंगे, जो सिर्फ़ उस सन्तुष्टि को बढ़ाने का काम करेगी जो उन्हें परमेश्वर के साथ सम्पर्क से दूर रहने से मिलती है। मध्यस्थता की सच्ची विनती में शामिल होता है उस व्यक्ति या परिस्थिति को परमेश्वर के पास लाना, जो आपके ऊपर टूटती हुई जान पड़ती है, जब तक कि आप उस व्यक्ति या परिस्थिति के प्रति परमेश्वर के रुख के द्वारा बदल न जाएँ। मध्यस्थता की विनती का अर्थ है, "...मसीह के क्लेशों की घटी...पूरी" करना (कुलुस्सियों 1:24), और यह ही कारण है कि मध्यस्थता की विनती करने के लिए इतने कम लोग पाए जाते हैं। लोग मध्यस्थता की विनती का वर्णन करते हुए कहते हैं कि, "यह अपने आप को दूसरों के स्थान पर रखना" होता है। यह सच नहीं है! मध्यस्थता की विनती करने का अर्थ है अपने आप को परमेश्वर के स्थान पर रखना; इसका अर्थ है परमेश्वर का मन और उसका दृष्टिकोण रखना।

मध्यस्थता की विनती करनेवाले व्यक्ति होने के नाते, सावधान रहें कि आप जिस परिस्थिति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, उसके बारे में परमेश्वर से बहुत ज़्यादा जानकारी न माँगें, क्योंकि यह आपको दबा सकती है। यदि आप बहुत ज़्यादा जानते हों, उससे कहीं ज़्यादा जितना परमेश्वर ने आपके जानने के लिए ठहराया है, तो आप प्रार्थना नहीं कर सकते; लोगों की परिस्थितियाँ इतनी असह्य हो जाती हैं कि आप वास्तविकता तक पहुँचने के योग्य नहीं रहते।

हमारा काम यह है कि हम परमेश्वर के साथ इतने क़रीबी सम्पर्क में रहें कि हर बात के लिए हमारे पास परमेश्वर का मन हो, लेकिन हम हैं कि मध्यस्थता की विनती करने के बदले में कुछ काम करने के द्वारा उस ज़िम्मेदारी से जी चुराते हैं। और फिर भी, मध्यस्थता की विनती वह एकमात्र चीज़ है जिसमें कोई असुविधाएँ नहीं होतीं, क्योंकि यह परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को पूरी तरह खुला रखती है।

मध्यस्थता की विनती में हमें जिस बात से बचने की ज़रूरत है, वह है किसी के लिए यह प्रार्थना करना कि वह बस "ठीक-ठाक" हो जाए। हमें तब तक प्रार्थना करनी चाहिए जब तक वह व्यक्ति परमेश्वर के जीवन के सम्पर्क में न आ जाए। उन असंख्य लोगों के बारे में सोचें जिन्हें परमेश्वर हमारे मार्ग में लाया, और कुछ ही समय में हमने उन्हें छोड़ दिया! जब हम छुटकारे के आधार पर प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर ऐसी चीज़ की रचना करता है जिसकी रचना वह मध्यस्थता की प्रार्थना को छोड़ और किसी तरीके से नहीं कर सकता।

दिसम्बर 14

महान जीवन

मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है,
मैं तुम्हें नहीं देता; तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।
यूहन्ना 14:27।

जब भी हम अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी कठिन बात का अनुभव करते हैं, तो हमारा झुकाव होता है कि हम परमेश्वर को दोष दें। दोषी हम होते हैं, परमेश्वर नहीं। परमेश्वर को दोष देना इस बात का सबूत है कि हम अपने जीवन में कहीं न कहीं किसी अनाज्ञाकारिता को छोड़ने से इनकार कर रहे हैं। लेकिन जैसे ही हम उसे छोड़ देते हैं, हमारे लिए सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। जब तक हम दो स्वामियों की सेवा करने की कोशिश करेंगे, यानि अपने आप की और परमेश्वर की, तब तक सन्देह और उलझन के साथ-साथ कठिनाइयाँ भीं होंगी। हमारी मनोवृत्ति सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाली होनी चाहिए। एक बार जब हम इस स्थिति में आ जाते हैं, तो और कोई चीज़ इतनी आसान नहीं हो सकती जितना आसान पवित्र जन का जीवन जीना होता है। हम कठिनाइयों का सामना तब करते हैं जब हम अपने ही उद्देश्यों से पवित्र आत्मा के अधिकार को छीनने की कोशिश करते हैं।

जब जब आप परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, तब तब उसकी स्वीकृति का लक्षण होता है शान्ति। वह एक अपार, गहरी शान्ति देता है; एक प्राकृतिक शान्ति नहीं, "जैसे संसार देता है," बल्कि यीशु की शान्ति। जब भी शान्ति नहीं आती, उसके आने की प्रतीक्षा करें, या पता चलाने की कोशिश करें कि वह क्यों नहीं आ रही है। यदि आप आवेग के अनुसार कार्य कर रहे हैं या बहादुरी दिखा रहे हैं, तो यीशु की शान्ति अपने आप को प्रदर्शित नहीं करेगी। सादगी, स्पष्टता, और एकता की आत्मा पवित्र आत्मा के द्वारा उत्पन्न होती है, आपके फ़ैसलों के द्वारा नहीं। हर फ़ैसला सादगी की प्रतिक्रिया लाता है।

जब जब मैं आज्ञा मानना बन्द कर देता हूँ, तब तब मेरे प्रश्न उठते हैं। जब मैं परमेश्वर की आज्ञा मान लेता हूँ, तो समस्याएँ आती हैं, मेरे और परमेश्वर के बीच में नहीं, बल्कि एक साधन के रूप में ताकि मेरा मन परमेश्वर के प्रकाशित सत्य का आश्चर्य से निरीक्षण करता रहे। लेकिन कोई भी समस्या जो परमेश्वर और मेरे बीच आती है, वह अनाज्ञाकारिता का परिणाम होती है। कोई भी समस्या जो तब आती है जब मैं परमेश्वर की आज्ञा मानता हूँ (और ऐसी बहुत परेशानियाँ होंगी) मेरे आनन्द को बढ़ाती है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरा स्वर्गीय पिता जानता है और मेरा ख़्याल रखता है, और मैं ध्यान से देख सकता हूँ और प्रतीक्षा करता हूँ कि वह मेरी समस्याओं को कैसे सुलझाएगा।

दिसम्बर 15

परमेश्वर के ग्रहणयोग्य

अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर,
जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।
2 तीमुथियुस 2:15।

यदि आप अपने हर विश्वास को अच्छी तरह से व्यक्त नहीं कर पाते, तो जब तक न कर पाएँ तब तक मेहनत से अध्ययन करें। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे, तो दूसरे लोग उन आशीषों से वंचित रह सकते हैं जो सत्य को जानने से आती हैं। परमेश्वर के सत्यों को स्पष्टता से और समझने योग्य ढंग से अपने आप को बार-बार सुनाने का घोर प्रयत्न करें, और जब आप उसे किसी और के साथ बाँटेंगे, तो परमेश्वर उसी व्याख्या को इस्तेमाल करेगा। लेकिन आपको परमेश्वर के उस रसकुण्ड में से होकर जाने के लिए तैयार होना चाहिए जहाँ अंगूरों को रौंदा जाता है। परमेश्वर के सत्यों को स्पष्टता से व्यक्त करने के लिए आपको संघर्ष, प्रयोग, और बार-बार बोलकर अभ्यास करना चाहिए। और फिर वह समय आएगा जब यही शब्द किसी और के लिए परमेश्वर की शक्ति का दाखरस बन जाएँगे। लेकिन यदि आप परिश्रम और लगन से काम नहीं करेंगे और यह कहेंगे कि "मैं इस सत्य को अपने शब्दों में व्यक्त करने के लिए अध्ययन और संघर्ष नहीं करूँगा; मैं आराम से बैठा रहूँगा और किसी और के शब्दों का इस्तेमाल कर लूँगा," तो इन शब्दों का न तो आपके लिए कोई मूल्य होगा और न ही दूसरों के लिए। अपने आप को यह सुनाने की कोशिश करें कि आपके विश्वास के अनुसार परमेश्वर का सम्पूर्ण, अपरिवर्तनीय सत्य क्या है, और ऐसा करने पर आप परमेश्वर को यह मौका देंगे कि वह इसे आपके द्वारा किसी और को पहुँचा दे।

जिन बातों पर आपने इतनी आसानी से विश्वास कर लिया है, उन्हें विचारने के लिए अपने मन को उभारने की आदत बना लें। आपका दृष्टिकोण सचमुच आपका नहीं होता जब तक आप कष्ट और अध्ययन के द्वारा उसे अपना नहीं बना लेते। जिस लेखक या वक्ता से आप सबसे ज़्यादा सीखते हैं, वह वह व्यक्ति नहीं जिससे आप ऐसी बात सीखते हैं जिसे आप पहले नहीं जानते थे, बल्कि वह व्यक्ति है जो ऐसे सत्य को लेने में आपकी मदद करता है, जिस पर आप अकेले में संघर्ष करते रहे हैं, उसे व्यक्त करता है, और स्पष्टता और साहस से बोलता है।

दिसम्बर 16

परमेश्वर के सामने मल्लयुद्ध करना

परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो ...और प्रार्थना...करते रहो...।
इफिसियों 6:13, 18।

आपको उन बातों के *विरुद्ध* मल्लयुद्ध करना सीखना होगा जो परमेश्वर के साथ आपके सम्पर्क में बाधा डालती हैं, और लोगों के *लिए* प्रार्थना में मल्लयुद्ध करना होगा: परन्तु परमेश्वर *से* प्रार्थना में मल्लयुद्ध करना बाइबल में नहीं पाया जाता। यदि आप कभी भी परमेश्वर से मल्लयुद्ध करेंगे, तो आप अपने बाकी जीवन के लिए अपंग हो जाएँगे। यदि आप परमेश्वर को पकड़ लेते हैं और उससे मल्लयुद्ध करते हैं, जैसे याकूब ने किया, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि परमेश्वर ऐसी रीति से काम कर रहा है जो आपको पसन्द नहीं, तो आप उसे आपके किसी जोड़ को उखाड़ देने के लिए बाध्य कर देते हैं (उत्पत्ति 32:24-25 देखें)। परमेश्वर की रीतियों से मल्लयुद्ध करने के द्वारा अपंग न बनें, बल्कि ऐसे व्यक्ति बनें जो इस संसार की बातों के साथ परमेश्वर के सामने मल्लयुद्ध करता है, क्योंकि "...हम उसके द्वारा...जयवन्त से भी बढ़कर हैं..." (रोमियों 8:37)। परमेश्वर के सामने मल्लयुद्ध उसके राज्य को प्रभावित करता है। यदि आप मुझसे कहते हैं कि मैं आपके लिए प्रार्थना करूँ, और मैं मसीह में सम्पूर्ण नहीं हूँ, तो मेरी प्रार्थना सफल नहीं होती। लेकिन यदि मैं मसीह में सम्पूर्ण हूँ, तो मेरी प्रार्थना हर समय विजय लाती है। प्रार्थना तब ही प्रभावशाली होती है जब सम्पूर्णता होती है - "परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो...।"।

परमेश्वर की सिद्ध इच्छा और उसकी उस स्वीकार करनेवाली इच्छा के बीच हमेशा फ़र्क करें, जिसका इस्तेमाल वह हमारे जीवन में अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए करता है। परमेश्वर की सिद्ध इच्छा बदलती नहीं। लेकिन हमें जिससे मल्लयुद्ध करना पड़ता है, वह उसकी स्वीकार करनेवाली इच्छा होती है या वे विभिन्न बातें होती हैं जिन्हें वह हमारे जीवन में आने की अनुमति देता है। उसकी स्वीकार करनेवाली इच्छा जिन बातों को अनुमति देती है, उनकी ओर हमारी प्रतिक्रिया ही हमें उसकी सिद्ध इच्छा को देखने की स्थिति पर लाती हैं। "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं..." (रोमियों 8::28) यानि उन्हें जो परमेश्वर की सिद्ध इच्छा - मसीह यीशु में उसकी बुलाहट - के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं। परमेश्वर की स्वीकृति देनेवाली इच्छा वह परीक्षा है जिसे वह अपने सच्चे पुत्र और पुत्रियों को प्रकट करने के लिए इस्तेमाल करता है। हमें कायर होते हुए और बिना सोचे समझे यह नहीं कहना चाहिए कि, "हाँ, यह प्रभु की इच्छा है।" हमें परमेश्वर *से* लड़ने या मल्लयुद्ध करने की ज़रूरत नहीं, लेकिन हमें परमेश्वर के सामने *चीज़ों के साथ* मल्लयुद्ध करने की ज़रूरत है। आलस्य में हार मान लेने से सावधान रहें। इसके बजाय, एक शानदार लड़ाई लड़े और आप अपने आप को परमेश्वर के सामर्थ्य से सशक्त पाएँगे।

दिसम्बर 17

छुटकारा - उस आवश्यकता को उत्पन्न करना जिसे वह स्वयं सन्तुष्ट करता है।

शारीरिक मनुष्य परमेश्वर की आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता,
क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं...।"
1 कुरिन्थियों 2:14।

परमेश्वर का सुसमाचार स्वयं सुसमाचार की आवश्यकता का एहसास उत्पन्न करता है। क्या सुसमाचार उन लोगों से छिपा हुआ है जो सेवक बन चुके हैं ? नहीं, पौलुस ने कहा, "परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होनेवालों ही के लिए पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिए, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है..." (2 कुरिन्थियों 4:3-4)। अधिकतर लोग अपने आप को पूरी तरह से नैतिक समझते हैं, और उन्हें सुसमाचार की ज़रूरत का कोई एहसास नहीं होता। वह परमेश्वर ही है जो इस ज़रूरत को उत्पन्न करता है, लेकिन मनुष्य को तब तक इसका कोई बोध नहीं होता जब तक परमेश्वर अपने आप को प्रकट नहीं करता। यीशु ने कहा, "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा..." (मत्ती 7:7)। लेकिन परमेश्वर तब तक नहीं दे सकता जब तब एक व्यक्ति माँगता नहीं। यह बात नहीं कि वह हमें किसी चीज़ से वंचित रखना चाहता है, लेकिन उसने छुटकारे के मार्ग के लिए यही योजना ठहराई है। हमारे माँगने के द्वारा, परमेश्वर अपनी प्रक्रिया को चालू कर देता है, और हम में ऐसी चीज़ की रचना करता है जो हमारे माँगने से पहले अस्तित्व में नहीं थी। छुटकारे की भीतरी वास्तविकता यह है कि वह लगातार सृष्टि करता है। और जैसे-जैसे छुटकारा हमारे अन्दर परमेश्वर के जीवन को उत्पन्न करता है, वह उन चीज़ों को भी उत्पन्न करता है जो उस जीवन का अंग हैं। वह एकमात्र चीज़ जो किसी ज़रूरत को पूरा कर सकती है, वह चीज़ है जिसने उस आवश्यकता को पैदा किया। छुटकारे का अर्थ यही है - वह उत्पन्न करता है और सन्तुष्ट भी करता है।

यीशु ने कहा, "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खींचूँगा" (यूहन्ना 12:32)। जब हम अपने ही अनुभवों का प्रचार करते हैं, तो लोगों को रुचि हो सकती है, लेकिन ये अनुभव आवश्यकता का एहसास नहीं जगाते। लेकिन एक बार जब यीशु को "ऊँचे पर चढ़ाया जाता है," तो परमेश्वर का आत्मा उनके अन्दर एक जागरूकता पैदा करता है कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता है। परमेश्वर के छुटकारे का रचनात्मक सामर्थ्य लोगों के मनों में सिर्फ़ सुसामाचार प्रचार के द्वारा काम करता है। लोगों के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभव बाँटना कभी उनका उद्धार नहीं करता, बल्कि छुटकारे की सच्चाई उनका उद्धार करती है। "जो बातें *मैंने* तुमसे कहीं हैं, वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं" (यूहन्ना 6:63)।

दिसम्बर 18

विश्वासयोग्यता की परीक्षा

हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं...।
रोमियों 8:28।

एक विश्वासयोग्य व्यक्ति ही सचमुच विश्वास करता है कि परमेश्वर उसकी परिस्थितियों पर नियन्त्रण रखता है। हम अपनी परिस्थितियों के महत्त्व की क़दर नहीं करते हैं, और कहते हैं कि परमेश्वर नियन्त्रण में है, लेकिन इसपर सचमुच विश्वास नहीं करते। हम यह मानकर व्यवहार करते हैं जैसे कि जो कुछ हो रहा है, वह पूरी तरह से मनुष्यों के नियन्त्रण में है। हर परिस्थिति में विश्वासयोग्य होने का अर्थ यह है कि हमारी वफ़ादारी एक ही व्यक्ति,यानि, प्रभु यीशु मसीह, के प्रति है। परमेश्वर हमारी परिस्थितियों को अचानक तोड़ डालता है, जो हमें परमेश्वर के प्रति हमारी बेवफ़ाई का एहसास दिलाता है कि हमने यह नहीं पहचाना कि इस परिस्थिति को उसी ने ठहराया था। हमने बिलकुल नहीं देखा कि वह क्या पूरा करने की कोशिश कर रहा है, और वही घटना हमारे जीवन में दोबारा नहीं आएगी। हमारी विश्वासयोग्यता की परीक्षा यहीं आती है। यदि हम कठिन परिस्थितियों में भी परमेश्वर की आराधना करना सीख जाएँगे, तो यदि परमेश्वर चाहे, वह हमारी परिस्थितियों को जल्दी ही बेहतर बना सकता है।

यीशु मसीह के प्रति विश्वासयोग्य होना वह सबसे कठिन काम है जिसे करने की हम आज कोशिश करते हैं। हम अपने काम के प्रति, दूसरों की सेवा करने के प्रति, या किसी भी और चीज़ के प्रति विश्वासयोग्य होंगे; लेकिन हमसे यह न कहें कि हम यीशु मसीह के प्रति विश्वासयोग्य हों। हमारा प्रभु संसार से ज़्यादा मसीही कार्यकर्ताओं के द्वारा राजगद्दी से उतारा जाता है। हम परमेश्वर के साथ ऐसे पेश आते हैं जैसे कि वह कोई मशीन हो जिसका काम सिर्फ़ यह है कि वह हमें आशीष दे, और हम यीशु को सिर्फ़ एक और कार्यकर्ता समझते हैं।

विश्वासयोग्यता का लक्ष्य यह नहीं कि हम परमेश्वर के लिए काम करेंगे, बल्कि यह कि वह हमारे द्वारा काम करने के लिए स्वतन्त्र होगा। परमेश्वर हमें अपनी सेवा के लिए बुलाता है और हमारे ऊपर ज़बरदस्त ज़िम्मेदारियाँ डालता है। वह हमारी ओर से यह प्रत्याशा करता है कि हम बुड़बुड़ाएँगे नहीं, और अपनी ओर से वह कोई सफ़ाई नहीं देता। परमेश्वर हमें वैसे ही इस्तेमाल करना चाहता है जैसे उसने अपने पुत्र को इस्तेमाल किया।

हमारे सन्देश का केन्द्रबिन्दु

मैं मिलाप कराने नहीं, पर तलवार चलाने आया हूँ।
मत्ती 10:34।

ऐसे व्यक्ति के साथ कभी हमदर्दी न करें जिसकी परिस्थिति से आप इस निष्कर्ष पर आते हैं कि परमेश्वर उनके साथ सख़्ती से व्यवहार कर रहा है। परमेश्वर हमारी सोच से कहीं ज़्यादा कोमल है, और कभी-कभी वह हमें मौका देता है कि हम किसी के साथ सख़्ती से पेश आएँ, ताकि वह खुद कोमल जन के रूप में दिखाई दे। यदि एक व्यक्ति परमेश्वर के पास नहीं जा सकता, तो इसका कारण यह है कि उसके पास कोई गोपनीय बात है जिसे वह छोड़ना नहीं चाहता - वह अपना पाप मान सकता है, लेकिन किसी भी कीमत पर वह उस चीज़ को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। ऐसे लोगों के साथ हमदर्दी का व्यवहार करना असम्भव है। हमें उनके जीवन की गहराइयों में समस्या की जड़ तक पहुँचना होगा, और ऐसा करने से सन्देश के प्रति बैर और नाराज़गी पैदा होगी। लोग परमेश्वर की आशीष चाहते हैं, लेकिन वे ऐसी बात को सहन नहीं कर सकते जो भेदते हुए मामले के मध्यबिन्दु तक पहुँच जाती है।

यदि आप परमेश्वर की रीति के प्रति संवेदनशील हैं, तो उसका सेवक होने के नाते, आपका सन्देश निर्दयी और हठी होगा, और गहराइयों में चोट पहुँचाएगा। यदि ऐसा नहीं होगा, तो चंगाई नहीं होगी। हमें सन्देश को इतनी प्रबलता से सुनाना होगा, कि एक व्यक्ति के छिपने की सम्भावना न रहे, और वह सन्देश की सच्चाई को लागू करने पर बाध्य हो जाए। लोगों के साथ उनकी परिस्थिति में निपटारा करें, जब तक कि वे अपनी असली ज़रूरत को पहचानना शुरू न कर दें। इसके बाद, उनके जीवन के लिए यीशु के आदर्श को ऊँचा उठाएँ। उनका प्रत्युत्तर यह हो सकता है कि, "हम वैसे तो कभी नहीं बन सकते।" फिर यह प्रहार करें कि, "यीशु मसीह कहता है कि आपको ऐसा ही बनना है।" "लेकिन हम ऐसे किस तरह बन सकते हैं ?" "नहीं बन सकते, जब तक कि आपके पास एक नया आत्मा न हो" (लूका 11:13)।

इससे पहले कि आपका सन्देश किसी काम का हो सके, एक आवशयकता के एहसास का होना ज़रूरी है। इस संसार में हज़ारों ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के बिना भी खुश हैं। लेकिन यदि हम यीशु के बिना सचमुच खुश और नैतिक हो सकते, तो यीशु क्यों आया ? वह इसलिए आया क्योंकि उस प्रकार की खुशी और शान्ति सिर्फ़ सतही है। यीशु मसीह अपने आप के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध पर आधारित न होनेवाली हर प्रकार की शान्ति के आर-पार "तलवार चलाने" आया।

सही प्रकार की सहायता

मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूँगा।
यूहन्ना 12:32।

हम में से बहुत कम लोगों को इसकी थोड़ी भी समझ है कि यीशु मसीह क्यों मरा। यदि मनुष्यों को सिर्फ़ हमदर्दी ही की ज़रूरत है, तो मसीह का क्रूस निरर्थक है और उसकी कोई ज़रूरत नहीं। संसार को जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह ''थोड़ा सा प्रेम'' नहीं बल्कि एक मुख्य शल्य चिकित्सा है।

जब आप किसी ऐसे व्यक्ति के आमने-सामने आते हैं जो आत्मिक रूप से खोया हुआ है, तो अपने आप को क्रूस पर लटके हुए यीशु मसीह की याद दिलाएँ। यदि वह व्यक्ति किसी और रीति से परमेश्वर तक पहुँच सकता है, तो मसीह का क्रूस अनावश्यक है। यदि आप यह सोचते हैं कि आप अपनी हमदर्दी और समझ से खोए हुए लोगों की सहायता कर रहे हैं, तो आप यीशु मसीह के प्रति विश्वासघाती हैं। मसीह के साथ आपका अपना सम्बन्ध सही होना चाहिए, और आपको अपने जीवन को दूसरों की मदद करने में बहा देना चाहिए, परमेश्वर की रीति से, मनुष्य की ऐसी रीति से नहीं जो परमेश्वर को अनदेखा करती है। आज संसार के धर्म का विषय है एक सुखद और विरोध रहित ढंग से सेवा करना।

लेकिन हमारी एकमात्र प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि हम क्रूस पर चढ़ाए यीशु मसीह को प्रस्तुत करें - उसे हर समय ऊँचे पर चढ़ाएँ (1 कुरिन्थियों 2:2 देखें)। हर विश्वास जो मसीह के क्रूस में दृढ़ता से जमा हुआ न हो, वह लोगों को भटका देगा। यदि कार्यकर्ता खुद यीशु मसीह पर विश्वास करता है और छुटकारे की वास्तविकता पर भरोसा रखता है, तो जिन लोगों से वह बात करता है, वे ज़रूर प्रभावित होंगे। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यीशु मसीह के साथ कार्यकर्ता का सरल सम्बन्ध मज़बूत और बढ़ता हुआ होना चाहिए। परमेश्वर के लिए उसकी उपयोगिता इसी पर निर्भर करती है, किसी और बात पर नहीं।

नए नियम के एक कार्यकर्ता की बुलाहट है पाप का खुलासा करना और यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट करना। इसलिए, वह हमेशा मनोहर और मैत्रीपूर्ण नहीं हो सकता, परन्तु उसे एक मुख्य शल्य चिकित्सा करने के लिए कठोर होने के लिए तैयार होना चाहिए। हम परमेश्वर के द्वारा यीशु मसीह को ऊँचे पर उठाने के लिए भेजे गए हैं, अद्भुत और सुन्दर भाषण देने के लिए नहीं। हमें उतनी ही गहराई से दूसरों का परीक्षण करने के लिए तैयार होना चाहिए जितनी गहराई से परमेश्वर ने हमारा परीक्षण किया है। हमें सत्य को समझानेवाले बाइबल के अनुच्छेदों को भाँपने के लिए ध्यानमग्न होना चाहिए, और फिर उन्हें काम में लाना चाहिए।

दिसम्बर 21

अनुभव या परमेश्वर का प्रकटित सत्य ?

हमने...वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें,
जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।
1 कुरिन्थियों 2:12।

मेरा अनुभव छुटकारे को वास्तविक नहीं बनाता - छुटकारा तो पहले से एक वास्तविकता है। छुटकारे का मेरे लिए तब तक कोई अर्थ नहीं जब तक वह मेरे सचेत जीवन के द्वारा कार्य नहीं करता। जब मैं नए सिरे से जन्म लेता हूँ, तो परमेश्वर का आत्मा मुझे मेरे और मेरे अनुभवों के परे ले जाता है, और मुझे यीशु मसीह के साथ एक कर देता है। यदि मैं सिर्फ़ अपने व्यक्तिगत अनुभवों को लेकर रह जाता हूँ, तो मैं ऐसी चीज़ के साथ रह जाता हूँ जो छुटकारे से नहीं पैदा होती। लेकिन छुटकारे से पैदा होनेवाले अनुभव अपने आप को साबित करते हैं, मुझे मेरे परे ले जाने के द्वारा, इस स्थिति तक कि मैं अनुभवों को वास्तविकता का आधार मानते हुए उनकी ओर फिर कभी ध्यान नहीं देता। इसके बजाय, मैं यह देखता हूँ कि सिर्फ़ वास्तविकता ने अनुभवों को पैदा किया। मेरे अनुभवों की कोई कीमत नहीं जब तक वे मुझे सत्य के स्रोत, यानि, यीशु मसीह के पास नहीं रखते।

यदि आप अपने अन्दर वास करनेवाले पवित्र आत्मा को रोकने की कोशिश करेंगे, इस अभिलाषा से कि वह और भीतरी आत्मिक अनुभव उत्पन्न करे, तो आप पाएँगे कि वह आपकी पकड़ को तोड़ डालेगा और आपको फिर से ऐतिहासिक मसीह के पास ले जाएगा। ऐसे किसी अनुभव का समर्थन न करें जिसका स्रोत परमेश्वर नहीं और जिसका परिणाम परमेश्वर में विश्वास नहीं। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आपका अनुभव मसीही-विरोधी होगा, चाहे आपको कोई भी दर्शन या अन्तर्दृष्टि क्यों न मिली हो। क्या यीशु मसीह आपके अनुभवों का प्रभु है, या आप अपने अनुभवों को उससे ऊँचा स्थान देते हैं ? क्या आपका कोई भी अनुभव आपके लिए आपके प्रभु से ज़्यादा प्रिय है ? आपको परमेश्वर को अपने ऊपर प्रभु होने की अनुमति देनी चाहिए, और किसी ऐसे अनुभव की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए जिसके ऊपर वह प्रभु न हो। फिर एक ऐसा समय आएगा जब परमेश्वर आपको आपके ही अनुभव से बेचैन कर देगा, और आप ईमानदारी से कह सकेंगे कि, "मुझे इसकी परवाह नहीं कि मैं क्या अनुभव करता हूँ - मुझे परमेश्वर के बारे में पूरा निश्चय है।

यदि आपको अपने अनुभवों के बारे में बात करने की आदत है, तो अपने आप के साथ कठोरता और सख़्ती से पेश आएँ। अनुभव पर आधारित विश्वास वास्तव में विश्वास नहीं होता; एकमात्र विश्वास वह होता है जो परमेश्वर के प्रकटित सत्य पर आधारित होता है।

दिसम्बर 22

पिता का हमें खींचना

कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले।
यूहन्ना 6:44।

जब परमेश्वर मुझे अपनी ओर खींचना शुरू करता है, तो मेरी इच्छा की समस्या तुरन्त बीच में आ जाती है। परमेश्वर ने जिस सच्चाई को प्रकट किया है, क्या मैं उसकी ओर सकारात्मक प्रतिक्रिया करूँगा ? क्या मैं उसके पास आऊँगा ? जब परमेश्वर बुलाता है, तो आत्मिक मामलों पर विचार-विमर्श या सलाह मशवरा करना अनुपयुक्त और परमेश्वर के प्रति निरादरपूर्ण होता है। जब परमेश्वर बोलता है, तो दूसरों के साथ कभी विचार-विमर्श न करें (गलातियों 1:15-16 देखें)। विश्वास बौद्धिक क्रिया का परिणाम नहीं, बल्कि मेरी उस इच्छा का परिणाम होता है, जिसके द्वारा मैं अपने आपको समर्पित करता हूँ। क्या मैं अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर के भरोसे रखते हुए समर्पित करूँगा, और क्या मैं सिर्फ़ उस पर कार्यवाही करने के लिए तैयार होऊँगा जो वह कहता है ? यदि मैं ऐसा करूँगा, तो पाऊँगा कि जिस वास्तविकता में मैं स्थिर हूँ, वह उतनी ही निश्चित है जितना परमेश्वर का सिंहासन है।

सुसमाचार सुनाते समय, हमेशा इच्छा के मामले पर ध्यान केन्द्रित करें। विश्वास को विश्वास करने की *इच्छा* से आना चाहिए। समर्पण इच्छा का होना चाहिए, समर्पण समझाने-बुझाने या शक्तिशाली तर्क के प्रति नहीं होना चाहिए। मुझे परमेश्वर और उसके सत्य पर विश्वास रखते हुए, जान-बूझकर बाहर निकलना चाहिए जब तक कि मैं अपने कार्यों पर नहीं, बल्कि सिर्फ़ परमेश्वर पर भरोसा करने लगूँ। बाधा तब आती है जब मैं परमेश्वर पर नहीं, बल्कि अपनी ही मानसिक समझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे तैयार रहना चाहिए कि मैं अपनी भावनाओं को अनदेखा करूँ और उन्हें पीछे छोड़ दूँ। मुझे विश्वास करने की *इच्छा* करनी चाहिए। लेकिन यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कि मैं एक शक्तिशाली, दृढ़ निश्चय से अपने आप को चीज़ों को देखने के अपने पुराने ढंगों से दूर न कर दूँ। ज़रूरी है कि मैं अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित कर दूँ।

हर व्यक्ति की सृष्टि इस योग्यता के साथ की गई है कि वह अपनी पकड़ के परे पहुँचने की कोशिश कर सकता है। लेकिन वह परमेश्वर है, जो मुझे खींचता है, और पहले स्थान पर उसके साथ मेरा सम्बन्ध बौद्धिक नहीं, बल्कि एक भीतरी, व्यक्तिगत सम्बन्ध है। मैं इस सम्बन्ध में परमेश्वर के आश्चर्यकर्म के द्वारा और विश्वास करने की अपनी इच्छा के द्वारा आता हूँ। इसके बाद मैं अपने जीवन में बदलाव के चमत्कार की समझ और कदर को महसूस करने लगता हूँ।

दिसम्बर 23

प्रायश्चित में सहभागी होना

पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का...। गलातियों 6:14।

यीशु मसीह का सुसमाचार हमेशा हमारी इच्छा को फ़ैसले के लिए विवश करता है। क्या मैंने मसीह के क्रूस पर न्याय के अनुसार पाप पर परमेश्वर के न्याय को स्वीकार किया है? क्या मुझे यीशु की मृत्यु में थोड़ी सी भी रुचि है? क्या मैं उसकी मृत्यु में उसके साथ एक होना चाहता हूँ - कि मैं पाप, सांसारिकता, और अपने आप में सारी रुचि के प्रति पूरी तरह मर जाऊँ? क्या मैं यीशु के साथ इतनी क़रीबी से एक होने के लिए तरसता हूँ कि उसे और उसके उद्देश्यों को छोड़, किसी और चीज़ के लिए मेरा कोई महत्त्व नहीं रह जाता? शिष्यता का महान सौभाग्य यह है कि मैं अपने आप को मसीह के क्रूस के झण्डे के तले समर्पित कर सकता हूँ, और इसका अर्थ है पाप के प्रति मृत्यु। आपको यीशु से अकेले में मिलना है और या तो उससे यह कहने का फ़ैसला करना है कि आप नहीं चाहते कि आपके अन्दर पाप मरे, या फिर यह कि आप किसी भी कीमत पर उसकी मृत्यु में उसके साथ एक होना चाहते हैं। जब आप भरोसेमन्द विश्वास के साथ उसपर कार्यवाही करेंगे जो हमारे प्रभु ने क्रूस पर किया, तो आप उसी समय एक अलौकिक ढंग से उसकी मृत्यु में उसके साथ एक हो जाएँगे। और आप एक उच्चतर ज्ञान के द्वारा जान लेंगे कि आपका पुराना जीवन "उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया" (रोमियों 6:6)। इसका सबूत, कि आपका पुराना जीवन "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने" के द्वारा मर गया है, वह आसानी होगी जिससे आपके अन्दर परमेश्वर का जीवन आपको यीशु मसीह की आज्ञा मानने की योग्यता देता है।

कभी-कभी हमारा प्रभु हमें इसकी झलक दिखाता है कि यदि हम पर उसकी कृपा न होती, तो हम कैसे होते। यह उसकी उस बात की पुष्टि है कि, "...मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)। यही कारण है कि मसीहियत की बुनियाद प्रभु यीशु के प्रति एक व्यक्तिगत, जोशपूर्ण भक्ति है। परमेश्वर के राज्य से अपने पहले परिचय के आनन्द को हम उसका उद्देश्य समझने की ग़लती कर बैठते हैं। लेकिन हमें अपने राज्य में लाने का परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि हम समझ सकें कि यीशु मसीह के साथ हमारे एक हो जाने का सारा अर्थ क्या है।

दिसम्बर 24

छिपा हुआ जीवन

...तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।
कुलुस्सियों 3:3।

परमेश्वर का आत्मा "मसीह के साथ परमेश्वर में छिपे हुए" जीवन की सरल परन्तु सर्वशक्तिमान सुरक्षा की गवाही देता है और उसकी पुष्टि करता है। पौलुस नए नियम की अपनी पत्रियों में इस बात को हमेशा बाहर लाता रहा। हम ऐसे बात करते हैं जैसे कि पवित्र किया गया जीवन जीना वह सबसे अनिश्चित और असुरक्षित काम है जो हम कर सकते हैं। लेकिन यह सबसे ज़्यादा सुरक्षित चीज़ है जो सम्भव है, क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर इसमें और इसके पीछे है। सबसे ख़तरनाक़ और अनिश्चित काम है परमेश्वर के बिना जीने की कोशिश करना। जिस व्यक्ति का नए सिरे से जन्म हुआ है, उसके लिए ग़लती करने से ज़्यादा आसान होता है परमेश्वर के साथ एक सही सम्बन्ध में जीना, बशर्ते कि हम परमेश्वर की चेतावनियों की ओर ध्यान दें और "ज्योति में चलें" (यूहन्ना 1:7)।

जब हम पाप से छुटकारा पाने, "आत्मा से परिपूर्ण" होने (इफिसियों 5:18), और "ज्योति में चल(ने)" के बारे में विचार करते हैं, तो हमारे मन में एक महान पहाड़ की चोटी की तस्वीर आती है। वह हमें बड़ा ऊँचा और अद्‌भुत दिखाई देता है, और हम कहते हैं कि, "मैं इतनी ऊँची जगह पर कभी नहीं रह सकता!" लेकिन जब हम परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा वहाँ पहुँच जाते हैं, तो हम पाते हैं कि वह पहाड़ की चोटी नहीं, बल्कि एक पठार है, जहाँ जीने और बढ़ने के लिए बहुत जगह है। "तू ने मेरे पैरों के लिए स्थान चौड़ा कर दिया, और मेरे पैर नहीं फिसले" (भजन संहिता 18:36)।

जब आप यीशु को सचमुच देख लेंगे, तो मैं आपको निश्चित रूप से बता सकता हूँ कि आप उसपर सन्देह नहीं करेंगे। यदि आप उसे तब देख लेंगे जब वह कहता कि, "तुम्हारा मन न घबराए..." (यूहन्ना 14:27), तो मैं आपको निश्चित रूप से बता सकता हूँ कि आप चिन्तित नहीं होंगे। जब वह उपस्थित हो, तो सन्देह करना असम्भव होता है। हर समय जब आप यीशु के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क में होते हैं, तो उसके वचन आपके लिए सच्चे होते हैं। "अपनी शान्ति मैं तुम्हें दिए जाता हूँ" (यूहन्ना 14:27) - ऐसी शान्ति जो एक असंयमित भरोसा लाती है और आपको सिर से लेकर पैरों तक, पूरी तरह ढक लेती है। "...तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है," और यीशु मसीह की शान्ति, जिसे कोई भंग नहीं कर सकता, आपको दे दी गई है।

दिसम्बर 25

उसका जन्म और हमारा नया जन्म

एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा
जिस का अर्थ यह है "परमेश्वर हमारे साथ"।
मत्ती 1:23।

इतिहास में उसका जन्म। "...वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा" (लूका 1:35)। यीशु मसीह इस संसार *में* पैदा हुआ, इस संसार *से* नहीं। वह इतिहास में से नहीं निकला; वह बाहर से इतिहास में आया। यीशु मसीह वह सबसे उत्तम मानव नहीं है जिस पर मानव जाति घमण्ड कर सकती है - वह ऐसा जन है जिसके लिए मानव जाति कोई श्रेय नहीं ले सकती। वह मनुष्य होते हुए परमेश्वर नहीं बना, बल्कि परमेश्वर होते हुए देहधारी हुआ - परमेश्वर बाहर से मानव शरीर में आया। उसका जीवन सबसे दीन द्वार से आनेवाला सबसे ऊँचा और सबसे पवित्र है। हमारे प्रभु का जन्म एक आगमन था - मानव रूप में परमेश्वर का प्रकटन।

मुझ में उसका जन्म। "हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिए फिर जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ" (गलातियों 4:19)। जैसे हमारा प्रभु बाहर से मानव के इतिहास में आया, उसे मेरे अन्दर भी बाहर से आना है। क्या मैंने अपने व्यक्तिगत मानव जीवन को परमेश्वर के पुत्र के लिए एक "बैतलहम" बनने दिया है ? मैं परमेश्वर के राज्य के क्षेत्र में तब तक प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि मैं ऊपर से नए सिरे से ऐसा जन्म न ले लूँ जो शारीरिक जन्म से बिलकुल फ़र्क है। "तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है" (यूहन्ना 3:7)। यह एक आज्ञा नहीं, बल्कि परमेश्वर के अधिकार पर आधारित एक सच्चाई है। नए जन्म का सबूत यह है कि मैं अपने आप को परमेश्वर को इतनी सम्पूर्णता से सौंप देता हूँ कि "मसीह का रूप मुझ में बनता है।" और एक बार जब "मसीह का रूप मुझ में बन" जाता है, तो उसी समय उसका स्वभाव मेरे द्वारा काम करना शुरू कर देता है।

परमेश्वर शरीर में प्रकट। यह यीशु मसीह के द्वारा मनुष्य के छुटकारे से आपके लिए और मेरे लिए इतने गम्भीर रूप से सम्भव किया गया है।

दिसम्बर 26

“ज्योति में चलो”

यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें,
तो...उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।
(1 यूहन्ना 1:7)।

मसीह के क्रूस के द्वारा प्रायश्चित से पाप से पूरा छुटकारा पाने को सिर्फ़ सचेत स्तर पर पाप से मुक्ति समझना एक भारी भूल होती है। कोई भी पूरी तरह यह नहीं जानता कि पाप क्या है जब तक उसका नया जन्म नहीं हो जाता। पाप ही वह चीज़ है जिसका यीशु मसीह ने कलवरी पर सामना किया था। मुझे पाप से छुटकारा मिला है, इस का सबूत यह होता है कि मैं अपने भीतर पाप की असली प्रकृति को जानता हूँ। एक व्यक्ति के सचमुच यह जानने के लिए कि पाप क्या है, यीशु मसीह के प्रायश्चित के पूरे काम और गहरे स्पर्श की, यानि, उसकी सम्पूर्ण सिद्धता को पाने की ज़रूरत होती है।

पवित्र आत्मा गहरे अचेत क्षेत्र के साथ-साथ सचेत क्षेत्र में भी प्रायश्चित के कार्य को हम पर लागू करता है। जब तक हम परमेश्वर के आत्मा के बेजोड़ सामर्थ्य को पूरी तरह से नहीं समझ लेते, तब तक हम 1 यूहन्ना 1:7 के अर्थ को नहीं समझते, जो कहता है कि, “उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।” यह पद सिर्फ़ सचेतन पाप की ओर नहीं, बल्कि पाप की गहरी समझ की ओर भी इशारा करता है, जिसे सिर्फ़ मेरे अन्दर वास करनेवाला पवित्र आत्मा पूरा कर सकता है।

मुझे “जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही...ज्योति में चल(ना) है...” मेरे अपने विवेक के प्रकाश में नहीं, बल्कि परमेश्वर की ज्योति में। यदि मैं किसी चीज़ को रोक कर या छिपा कर रखे बिना, वहाँ चलूँगा, तो यह अद्‌भुत सत्य मुझपर प्रकट होगा कि, “...उसके पुत्र यीशु का लोहू (मुझे) सब पापों से शुद्ध करता है” ताकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर मुझ में फटकारने के लिए कुछ न देख पाए। सचेत स्तर पर यह इसके बारे में एक दुःखपूर्ण जानकारी पैदा करता है कि असल में पाप क्या है। मुझ में काम करते हुए, पाप के प्रति पवित्र आत्मा की नफ़रत के साथ, परमेश्वर का प्रेम मुझ से उन चीज़ों से नफ़रत करवाता है जो परमेश्वर की पवित्रता के अनुकूल नहीं होतीं। “ज्योति में चलने” का अर्थ यह है कि हर वह चीज़ जो अन्धकार की है, मुझे ज्योति के मध्य की ओर प्रेरित करती है।

जहाँ लड़ाई जीती या हारी जाती है

यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल, यदि तू लौट आए...।
यिर्मयाह 4:1

हमारी लड़ाइयाँ सबसे पहले परमेश्वर की उपस्थिति में हमारी इच्छा के छिपे हुए स्थानों में लड़ी जाती हैं, खुले आम नहीं। परमेश्वर का आत्मा मुझे कसकर पकड़ लेता है और मैं परमेश्वर के साथ एकान्त में आकर उसके सामने लड़ाई लड़ने के लिए विवश हो जाता हूँ। यदि मैं ऐसा नहीं करूँगा, तो हर बार लड़ाई हार जाऊँगा। लड़ाई एक मिनट की हो सकती है या एक साल की, लेकिन यह मुझपर निर्भर होगा, परमेश्वर पर नहीं। चाहे वह कितना भी समय ले, मुझे परमेश्वर के सामने मल्लयुद्ध करना होगा, और मुझे त्याग करने या त्याग किए जाने के नरक से होकर जाने का संकल्प करना होगा। जिस व्यक्ति ने परमेश्वर के सामने लड़ाई लड़कर विजय पाई है, उसके ऊपर किसी चीज़ का सामर्थ्य नहीं होता।

मुझे कभी यह नहीं कहना चाहिए कि, "मैं कठिन परिस्थितियों में पड़ने की प्रतीक्षा करूँगा, और फिर मैं परमेश्वर को परखूँगा।" ऐसा करने की कोशिश सफल नहीं होगी। पहले मुझे परमेश्वर और अपने आप के बीच मुद्दे को सुलझाना होगा, अपने मन के गुप्त स्थानों में जहाँ कोई दूसरा दखल न दे सके। इसके बाद मैं आगे बढ़ सकता हूँ, निश्चितता से जानते हुए कि लड़ाई जीत ली गई है। यदि आप वहाँ लड़ाई हार जाएँगे, तो संसार के सामने क्लेश, विपत्ति, और हार उतनी ही निश्चित होंगी जितने निश्चित परमेश्वर के नियम हैं। लड़ाई हार जाने का कारण यह है कि मैं इसे पहले बाहरी संसार में लड़ता हूँ। परमेश्वर के साथ एकान्त में आ जाएँ, उसके सामने लड़ाई को लड़ें, और हमेशा के लिए मामले का फ़ैसला कर लें।

दूसरे लोगों के साथ निपटारा करते समय, हमारा रवैया यह होना चाहिए कि हम उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार फ़ैसला करने के लिए बाध्य करें। परमेश्वर के प्रति समर्पण ऐसे ही शुरू होता है। अकसर तो नहीं, लेकिन कभी-कभार परमेश्वर हमें एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पर - हमारे जीवन के एक चौराहे पर, ले आता है। उस स्थान से हम या तो एक और अधिक धीमे, आलसी, और बेकार मसीही जीवन की ओर बढ़ते हैं, या हम और अधिक प्रज्वलित होते जाते हैं, और परमेश्वर के सर्वोच्च के लिए अपना सर्वोत्तम देते हैं - उसकी महिमा का लिए अपना सर्वश्रेष्ठ।

दिसम्बर 28

लगातार होनेवाला मन फिराव

...यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे।
मत्ती 18:3।

हमारे प्रभु के ये शब्द हमारे शुरुआती मन फिराव की ओर इशारा करते हैं, लेकिन हमें बच्चों की तरह, लगातार परमेश्वर की ओर फिरते रहना चाहिए, और अपने जीवन के हर दिन लगातर मन फिराव करते रहना चाहिए। यदि हम परमेश्वर की योग्यताओं के बजाय अपनी योग्यताओं पर भरोसा करेंगे, तो हम ऐसे परिणामों को उत्पन्न करेंगे जिनके लिए परमेश्वर हमें ज़िम्मेदार ठहराएगा। जब अपनी प्रभुता के द्वारा, परमेश्वर हमें नई परिस्थितियों में लाता है, तो हमें तुरन्त यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि हमारा शारीरिक जीवन परमेश्वर के आत्मा की आज्ञाओं का पालन करते हुए हमारे आत्मिक जीवन के अधीन रहे। बीते दिनों में हमने उचित प्रत्युत्तर दिया है, इसका अर्थ यह नहीं कि आगे भी हम ऐसा ही करेंगे। आत्मिक के प्रति शारीरिक का प्रत्युत्तर एक लगातार होनेवाला मन फिराव होना चाहिए, लेकिन यही वह स्थिति है जहाँ हम आज्ञाकारी होने से इनकार कर देते हैं। हमारी स्थिति चाहे जो भी हो, परमेश्वर का आत्मा कभी नहीं बदलता और उसका उद्धार अपरिवर्तित रहता है। लेकिन हमें "नए मनुष्यत्व को पहन..." लेना है (इफिसियों 4:24)। हर बार जब हम अपने मन फिराने से इनकार करते हैं, तो परमेश्वर हमें जवाबदेह ठहराता है, और वह हमारे इनकार को जानबूझकर की गई अनाज्ञाकारिता मानता है। हमारे शारीरिक जीवन को हम पर शासन नहीं करना चाहिए - परमेश्वर को हमारे अन्दर शासन करना चाहिए।

लगातार मन फिराव करने से इनकार करना हमारे आत्मिक जीवन की बढ़त में एक बाधा डाल देता है। हमारे जीवन में हठ के क्षेत्र होते हैं, जहाँ हमारा घमण्ड परमेश्वर के सिंहासन पर अपमान उण्डेल देता है और कहता है कि, "मैं अधीन नहीं होऊँगा।" हम अपनी स्वाधीनता और अपने हठ को अपना ईश्वर बना देते हैं और उन्हें ग़लत नाम से पुकारते हैं। हमारे जीवन के पूरे-पूरे क्षेत्र हैं जो अभी तक अधीनता में नहीं लाए गए हैं, और यह सिर्फ़ लगातार होनेवाले मन फिराव के द्वारा हो सकता है। धीरे-धीरे, परन्तु निश्चितता के साथ, हम परमेश्वर के आत्मा के लिए सारे क्षेत्र पर अधिकार कर सकते हैं।

दिसम्बर 29

भगोड़ा या शिष्य ?

इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।
यूहन्ना 6:66।

जब परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा अपने वचन से आपको अपनी इच्छा का स्पष्ट दर्शन देता है, तो आपको उस दर्शन की "ज्योति में चल(ना)" चाहिए (1 यूहन्ना 1:7)। आपका मन और आपकी आत्मा इससे रोमांचित हो सकते हैं, लेकिन यदि आप उसकी "ज्योति में" न "चलें," तो आप दासत्व के उस स्तर तक गिर जाएँगे, जो परमेश्वर का इरादा कभी नहीं था। मानसिक रूप से "स्वर्गीय दर्शन" (प्रेरितों के काम 26:19) की आज्ञा न मानना आपको ऐसे विचारों और मतों का दास बना देगा जो यीशु मसीह के लिए बिलकुल पराए हैं। किसी और की ओर देखते हुए यह न कहें कि, "यदि वह ऐसे मत रखकर भी समृद्ध हो सकता है, तो मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकता ?" आपको उस दर्शन की "ज्योति में चल(ना)" है जो *आपको* दिया गया है। अपने साथ दूसरों की तुलना न करें; न ही उनपर न्याय करें - यह परमेश्वर और उनके बीच का मामला है। जब आप पाते हैं कि आपका कोई प्रिय और प्रबलता से थामा हुआ मत उस "स्वर्गीय दर्शन" का विरोध करता है, तो वाद-विवाद करना शुरू न करें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आपके अन्दर एक सम्पत्ति और व्यक्तिगत अधिकार की भावना आ जाएगी; यीशु ने इन बातों को कोई महत्त्व नहीं दिया। वह इन चीज़ों को अपने आप से पराई चीज़ों की जड़ मानता था - "...किसी का जीवन उस की सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता" (लूका 12:15)। यदि हम देखते और समझते नहीं, तो यह इसलिए है क्योंकि हम अपने प्रभु की शिक्षा के बुनियादी सिद्धान्तों को अनदेखा करते हैं।

हमारा झुकाव यह होता है कि हम हाथ पर हाथ धरकर अपने अद्‌भुत अनुभव में खोए रहते हैं। लेकिन यदि परमेश्वर के प्रकाश से नए नियम का कोई मापदण्ड हम पर प्रकट किया जाता है, और हम उसके स्तर तक पहुँचने की कोशिश नहीं करते, और न ही कोशिश करने की इच्छा रखते हैं, तो हम पीछे हटने लगते हैं। इसका अर्थ यह होता है कि आपका विवेक सच्चाई का प्रत्युत्तर नहीं देता। एक सत्य पर से परदा हट जाने पर आप पहले के समान कभी नहीं रह सकते। वह पल या तो आप पर उस व्यक्ति की छाप लगा देता है जो यीशु मसीह के शिष्य होने के नाते और अधिक भक्ति से आगे बढ़ता है, या ऐसे व्यक्ति की जो एक भगोड़े के रूप में उल्टा फिर जाता है।

बाइबल की उद्धरण सूची

	mm /dd
उत्पत्ति	
5:24	10/12
9:13	12/6
12:8	1/6
13:9	5/25
15:12	1/19
16: 1-15	1/19
17: 1	1/19,5/25, 7/20
18:17	3/20,3/27
21:8-14	12/10
21:15-19	12/10
22:2	4/26, 11/11
22:3	11/11
22:9	1/8
22:16-17	11/17
24:27	11/14
32:24-25	12/16
41:40	12/5
निर्गमन	
2:11	10/13
3:4	4/18
3:10-11	10/13
3:14	10/4, 10/14
14:13	9/8
16:20	1/6
20:19	2/12
34:29	4/22
व्यवस्थाविवरण	
5:32	6/28
28:14	10/25
33:27	5/24
24: 15, 22	7/8
24:19,21	7/9
१ शमूएल	
3:9,15	1/30
3:10	2/13
15:22	6/8
२ शमूएल	
23:16	9/3
१ राजा	
2:28	4/19
19:5	2/17
19:12	8/13

	mm /dd
२ राजा	
2:11-12, 13-15,23	8/11
२ इतिहास	
15:17	4/15
नहेम्याह	
8:10	4/14
अय्यूब	
13:15	5/8, 10/31
42:10	6/20
भजन संहिता	
18:25-26	4/26,6/22
18:29	5/15
18:36	12/24
25:12	6/2,6/3
25:13	6/2,6/3
25:14	6/3
37:4	3/20
37:5	7/5
37:7	7/4, 8/1
37:8	7/4
37:34	8/1
40:8	1/29,8/25, 8/31
46:1	2/27
46:2	7/20
46:10	2/22
51:4	11/19, 12/7
55:22	4/13
87:7	2/9,5/16, 12/30
91:1	7/4
91:1, 10	8/2
91:15	5/19
97:2	1/3
106:6-7	2/11
116:12-13	5/2
118:27	2/6
123:2	11/24
123:3	11/23
139	1/9
नीतिवचन	
3:5-6	6/27
29:18	5/9

बाइबल की उद्धरण सूची

mm /dd

सभोपदेशक

3:15	12/31
9:10	4/23

यशयाह

1:10-11	3/15
6:1	7/13
6:1,5	7/18
6:5	7/3
6:7	7/3
6:8	1/14,1/16, 9/30
8: 11	1/29, 1/30
9:6	4/13
26:3	2/11
35:7	7/6
40:26	2/10
40:28	2/9
40:29	4/14
40:31	3/19,7/20, 10/3
42:4	10/12
45:22	1/22, 2/2, 2/11, 11/26, 12/6
49:2	1/19,2/14
49:5	9/21
50:7	3/15
50: 10-11	1/19
52:12	12/31
53:1	11/24
53:3	6/23
53:10	12/2
55: 1	6/10
59:16	3/30
60:1	2/19
61:1	3/14

यिर्मयाह

1:8	6/27
2:2	1/21
4:1	12/27
39:18	6/27
45:5	4/27,4/28

यहेजकेल

37:3	6/1
37:12	6/1

योना

4:2	5/9

mm /dd

नहुम

1:3	7/29

हबक्कूक

2:3	3/11,5/2

मलाकी

2:16	11/23

मत्ती

1:23	12/25
3: 11	1/28, 8/22
3:17	10/13
4:1	9/18
4:19	1/14,9/19
5:3	6/9,7/21 8/21
5:3-11	7/25
5:8	3/26
5:8, 11	7/21
5:11	10/6, 11/3
5:20	7/24,8/27
5:23	9/26
5:23-24	7/27,9/24, 12/11
5:24	9/26
5:25	6/30
5:25-26	7/1
5:26	6/30, 7/1
5:29-30	1/30
5:30	6/29
5:39	7/14
5:41	9/11, 9/25
5:45	6/9,8/24
5:48	6/29,9/20
6:6	8/23,9/16
6:7	9/16
6:8	3/20,4/27, 8/6
6:10	6/3
6:23	8/27
6:25	1/27,5/21, 5/23
6:26	1/26
6:26-28	5/18
6:28	1/26
6:30	1/26, 1/27
6:33	4/20,5/21, 10/30
6:34	1/27
7:1	6/17,6/22
7:2	6/22

बाइबल की उद्धरण सूची

	mm /dd
7:3-5	6/17
7:7	4/27,7/16, 12/17
7:8	5/26,8/24, 9/16
7:9	8/24, 10/11
7:11	7/16
7: 12	8/24
7:13-14	7/7
8:26	8/12
9:28	10/27
9:38	10/16, 10/17
10:24	9/23, 11/22
10:27	2/14
10:34	3/24,7/22, 12/19
11:1	8/1
11:6	8/29
11:25	9/14, 10/10, 10/17
11:28	6/11,8/19, 8/20,9/13, 10/8, 10/14,
10/22,	11/4
11:29	1/28,4/14
11:30	4/14
12:13	2/16
13:22	1/26,1/27, 5/19,5/23
13:58	7/9
14:29	3/28
14:29-30	6/18
14:31	6/18
15: 18-20	7/26
16:21-23	8/10
16:24	9/13, 12/9, 12/11
17:20	10/31
18:3	4/29,8/28, 12/28
18:5	5/31
19:29	6/20
20:22	9/12
20:28	2/23
22:14	1/14
23:8	9/22
23:11	2/25
23:27	4/3
25:14-30	4/20
25:21	3/5
26:33-35	3/1
26:36,38	4/5
26:38	9/5
26:42	5/22
26:46	2/18

	mm /dd
26:56	9/5
26:69-75	1/5,8/16
28:10	7/10
28:16	10/l4
28:18-19	10/14, 10/27
28:19	5/6,9/4, 10/26, 10/27

मरकुस

4:10	1/13
4:19	8/31, 11/23
4:34	1/12
6:31	2/20
6:45	7/28
6:49	7/28
9:1-9	3/22
9:1-29	6/16
9:2	10/1
9:2-8	7/29
9:5-6	10/2
9:9	4/7
9:14-18	10/1
9:14-23	10/2
9:22	10/2
9:28-29	10/3
10:21	9/28
10:28	3/12
10:29	3/12
10:32	3/15
11: 16	11/8
11: 17	11/8
14:3-4	9/2
14:6	2/21
14:9	9/2
14:54	10/21
16:12	4/9
16:13	4/9

लूका

1:35	8/8, 12/25
2:46,49	8/7
2:49	8/8
4:13	4/5
4:18	3/14
4:26-27,33	7/2
8:1-3	1/11
8:2	8/16
9:23	11/2

बाइबल की उद्धरण सूची

	mm /dd
9:28-42	8/29
9:33	8/1
9:34	7/29
9:51	8/3
9:55	1/29
9:57	9/27
9:57-62	3/12
9:58-59,61	9/27
9:61	5/30
9:62	8/13
10:17-20	10/27
10:18-20	1/7
10:20	4/24,8/30
11:1	8/28
11:5-8	9/12
11:9	6/10
11:9-13	10/22
11:10	6/9,6/10, 9/12
11:11-13	9/12
11:13	1/30, 6/9, 12/19
12:8	3/1
12:15	12/29
12:22	1/2
12:40	3/29
14:26	2/2,3/19, 5/7,5/11, 6/19,7/22, 9/28, 11/2
14:26-33	3/12
14:26-27,33	5/7
14:28	5/7
14:30	5/7
15:10	8/10
17:20-21	10/19
18:1	12/13
18:1-8	9/12
18:9-14	6/12
18:22	6/13,8/18
18:22-23	8/17
18:23	8/18
18:31	8/3,8/4,9/23
18:31,34	8/5
18:39,41	2/29
19:42	4/3
21:19	5/20
22:27	2/23
22:28	9/19
22:33	1/8, 4/26

	mm /dd
22:53	6/24
23:26	1/11
23:33	9/23
24:21	2/7
24:26	4/8
24:32	3/22
24:47	10/15
24:49	5/27,5/31, 8/1, 9/4
24:51	5/17
यूहन्ना	
1:12	8/15
1:29	9/18,10/15, 10/29
1:35-36	7/20
1:35-37	10/12
1:38-39	6/12
1:42	6/12
1:48	9/10
2:5	3/28
2:24-25	5/31,7/30
2:25	9/27,10/5
3:3	1/20,8/15
3:4	8/15
3:5	11/28
3:7	8/15, 12/25
3:16	3/13,9/21
3:17	9/2
3:19	10/5
3:19-21	6/30,7/18
3:29	3/24,3/25
3:30	3/24, 10/12
4:7	1/18, 1/21
4:11	2/26,2/27
4:14	9/7
5:19	9/9
5:30	8/3
5:39-40	5/6
6:29	9/6
6:35	10/11
6:44	12/22
6:63	1/3,3/10, 8/26, 12/17
6:66	3/9,9/19, 12/29
6:67,70	3/9
7:17	6/8,7/27, 10/10
7:38	5/18,8/21, 8/30,9/2, 9/3,9/6,9/7
7:39	5/27

बाइबल की उद्धरण सूची

	mm /dd
8:36	11/18
9:1-41	4/9
9:25	4/9
10:3	8/16
10.30	7/19,12/12
11:6	10/11
11:7-8	3/28
11:26-27	11/6
11:40	8/29
11:41	2/13,8/9
12:24	6/19
12:27-28	6/25
12:32	2/1,7/17, 11/9,12/17,12/20
12:35	8/27
12:36	4/16
13	2/19
13:1-17	3/6
13:3-5	6/15,7/11
13:13	7/19
13: 13, 16	9/22
13:14	2/19,9/11
13:15	9/11
13:16	10/16
13:17	6/8
13:34-35	9/20
13:36	1/5
13:37-38	1/4,6/16
14:1	2/27,4/29, 5/28, 7/5
14:1,27	4/21, 12/24
14:8	4/21
14:9	1/7,4/21, 10/29, 10/30
14:12,13	10/17
14:13	6/7
14:15	2/12,11/2
14:23	6/12
14:26	1/13
14:27	8/26,12/14
14:31	2/20
15:1--4	1/7
15:4	6/14
15:5	12/23
15:7	6/7,9/16, 10/14
15:8	3/11
15: 11	8/31
15: 12	5/11
15:13	2/24

	mm /dd
15:13-14	8/25
15: 13, 15	6/16
15:14	2/13
15: 15	1/7, 8/25
15:16	1/24,8/3, 9/25,9/29, 10/25
15:22-24	10/29
16:7	1/7
16:8	11/19, 12/7
16:12	4/7
16:13-14	11/29
16:23	5/28,5/29
16:24	8/28
16:26	8/6,8/9
16:26-27	5/29,8/6
16:30-32	2/28
16:32	4/4
16:33	4/4, 8/2, 12/4
17	5/22
17:2	4/8
17:3	5/8,5/27
17:4	9/13, 11/21
17:6	9/4
17:15-16	11/27
17:19	2/8, 12/3
17:21	5/22
17:21-23	2/8
17:22	1/20,3/20, 4/18,4/27, 5/22, 5/29, 12/12
18:36	10/19
19:30	10/28, 11/21
20:11-18	8/16
20:14,16	8/16
20:21	3/3,3/5, 10/26
20:22	1/5
20:24-29	8/16
20:25	8/16
20:28	1/18,8/16
21:7	4/17
21:15-17	8/16
21:16	6/19
21:17	2/9,3/1,3/2, 3/3,3/5, 8/16,10/18
21:18-19	1/5,9/13
21:21-22	11/15

बाइबल की उद्धरण सूची

प्रेरितों के काम

	mm /dd
1:8	1/18, 2/4, 2/15,3/10, 4/1, 9/4,9/5, 9/6, 10/14
2:4	9/5
2:33	5/27
4:12	12/8
9:5	7/18
9:16	3/5
9:17	4/2
13:22	4/2
17:28	6/2
20:24	3/4,3/5, 10/14
24:16	5/13
26:14	l/28
26: 15	1/29
26:16	1/24
26:17-18	1/10
26:19	1/24,3/11, 12/29

रोमियों

1:1	1/31,2/2,2/3
1:14	7/15
2:1	6/22,
2: 17-24	6/17
3:24	11/28
4:3	3/19
5:5	2/24,4/30, 5/11,7/2, 10/18
5:8	10/20
5:10	10/28
5:12	10/5
5:12-19	10/6
6:3	1/15
6:4	1/15,4/8
6:5	4/11,9/13
6:6	4/10, 12/23
6:9-11	4/12
6: II	4/10,4/11
6:13	10/9
6:16	3/14
6:19	9/15
7:9, 14	12/1
7:18	5/24,6/1
8:16	10/22
8:26	11/7, 11/8
8:27,34	4/1
8:27	11/8
8:28	10/30, 11/7, 12/16, 12/18
8:35	5/19
8:37	3/7,5/19, 10/24, 12/16
8:39	3/7, 10/20
9:3	1/31, 2/24
12: l	1/8,6/13, 12/5, 12/10
12:1-2	6/8
12:2	5/13,9/9, 11/14
14:7	2/15

१ कुरिन्थियों

1:2	10/4
1: 17	2/1
1:21,23	11/25
1:26-31	8/4
1:30	7/22, 7/23, 10/20, 11/13, 12/8
2:2	1/24,3/13, 4/2, 10/25, 11/26, 12/20
2:4	7/17,12/3
2:12	12/21
2:14	12/17
3:3	3/23
3:9	4/23
3:10-15	5/7
4:9-13	2/3
6:19	2/19,3/4, 3/18,8/9, 9/4, 11/1, 11/8, 12/5
6:19-20	7/15
9:16	2/2,9/29, 10/15
9:22	2/24, 10/25
9:27	2/15,3/17, 12/5
10: 11-13	4/19
10:13	9/17
10:31	11/16, 11/22
12:26	2/15
13	1/29, 11/12
13:4	4/30
13:4-5	7/5, 10/23
13:4-8	10/18
15:10	11/30

२ यैंहृयहृत्रृषें

1:20	4/20, 11/17
2:14-15	10/24
3:5	2/15
3:18	1/23,4/22
4:2	9/15
4:3--4	12/17

बाइबल की उद्धरण सूची

	mm /dd
4:5	2/23
4:10	5/14, 5/15
5:7	5/1, 10/31
5:9	3/17
5:10	3/16
5:14	2/4
5:15	10/29
5:17	11/12
5:17-18	10/23
5:17-19	10/28
5:20	7/17
5:21	4/6, 10/7, 10/29
6:1	6/26
6:4	3/6
6:4-5, 10	6/26
7:1	3/18
7:4	3/7
7:10	1/21, 12/7
8:9	2/25
9:8	5/16
10:4	9/8
10:5	2/11,6/14, 9/8,9/9,9/14, 10/24, ll/18
11 :3	9/14
12:9	9/13
12:15	2/24, 2/25
13	11/12

गलातियों

1:15	1/25,1/31
1: 15-16	1/17, 10/6, 12/22
1: 16	1/30, 2/3, 3/18, 7/8, 11/11
2:20	3/8, 3/21, 4/10, 11/3, 1l/13, 11/18, 12/23
2:21	12/5
4:19	3/18,5/13,8/8, 8/9,9/16,9/18, 10/6, 10/29, 12/7, 12/25
4:22	12/10
5: 1	5/6
5:16	3/23
5:24	12/9
6:14 1	1/25, 11/26, 11/27, 12/23

इफिसियों

1:7	11/20, 12/8
1:18	5/15
2:6	2/15
2:8	3/21
3:19	4/12
4:13	7/12,9/23
4:23	5/13
4:24	12/28, 12/30
4:30	5/13,5/14
5:14	2/16
5:18	9/7,12/24
6:13,18	12/16
6:18	5/3

फिलिप्पियों

1:20-21	1/1
2:5	3/18,3/30, 3/31,5/20
2: 12	5/10,5/15, 12/5
2:12-13	6/6, 7/7
2: 17	2/5
3:10	4/8,7/11, 7/12
3:12	5/2,6/28, 12/2
3: 13-14	6/28
4:12	2/5, 2/23
4:13	10/3
4:19	5/14,8/29, 9/13

कुलुस्सियों

1:24	2/3,7/14, 8/8,9/30, 11/9, 12/13
1:27	7/23
3:3	1/23,4/24, 4/28,6/2, 6/14,8/31 11/16,12/24

१ थिस्सलुनिकियोंठु

3:2	11/10
4:3	1/15,7/22, 10/20
5:17	5/26
5:19	8/13,8/14
5:23	1/9, 1/30
5:23-24	7/22,8/14

१ तीमुथियुस

1:13	2/23
3:16	4/6

२ तीमुथियुस

2: 15	3/17,12/15
4:2	3/10,4/25
4:6	2/6
4:16-17	4/22

बाइबल की उद्धरण सूची

	mm /dd

इब्रानियों

2:9	11/21
2:10	4/8, 7/7, 8/30,9/8
2:18	9/17
3:14	8/29
4:12	3/1
4:15	9/18
4: 15-16	9/17
5:8	7/19,9/22
7:25	4/1
9: 11-15	4/5
9:26	10/5
10:9	5/31
10:14	12/8
10:19	5/4
10:24-25	7/10
11:6	10/30
11 :8	1/2,3/19
11 :27	4/9,5/2
12:1-2	8/25
12:2	3/17,3/29, 8/26,8/31
12:5	8/14
12:6	4/14
13:5	6/4
13:5-6	6/4,6/5,8/29
13:13	4/24, 9/19

याकूब

1:4	7/31
1:5	6/9
1:14	9/18
2:10	12/1
4:3	6/10
4:8	11/4
4:8-10	6/10

१ पतरस

	mm /dd
1:5	4/19,7/23
1 :16	9/1
2:9	6/21
2:24	4/6
4:1-3	9/15
4:12	2/3,5/15
4:13	11/5
4:17	5/5
4:19	8/10, 11/5

२ पतरस

1:4	5/16
1:4-5	6/15
1:5	5/10,6/15
1:5,7	5/11
1:8	5/12
1:13	7/10
3:9	5/11

१ यूहन्ना

1:6-7	8/13
1:7	1/9,1/20, 2/28,3/11, 3/16, 8/13, 8/24,8/30,9/20,10/10, 11/12, 12/26, 12/29
2:2	10/15
4:18	2/21
3:2	4/29 .
3:9	8/15
3:16	6/16
5:16	3/31

३ यूहन्ना

7	10/18

यहूदा

20	10/21

प्रकाशितवाक्य

1:7	7/29
1:17	5/24
2:7	8/2, 12/4
3:10	2/22,5/8
4:1	3/27
4:11	7/19
12:11	11/29
13:8	4/6

उसके सर्वोच्च के लिए मेरा सर्वोत्तम के पाठकों की बढ़ती हुई संगति का अंग
बनने के लिए लॉगऑन और पंजीकरण करें।

www.myutmost.info